الجزء ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ

उन की तरफ़	तुम लौट कर जाओगे	जब	तुम्हारे पास	उज़्र लाएंगे

قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)	अल्लाह	हमें बता चुका है	तुम्हारा	हरगिज़ हम यक़ीन न करेंगे	उज़्र न करो	आप (स) कह दें

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

पोशीदा	जानने वाले	तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल	तुम्हारे अ़मल	अल्लाह	और अभी देखेगा

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	अब क़स्में खाएंगे	94	तुम करते थे	वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ

उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो	उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो	उन की तरफ़	वापस जाओगे तुम	जब	तुम्हारे आगे

اِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	वह कमाते	थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना	पलीद	बेशक वह

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ	तुम्हारे आगे	वह क़स्में खाते हैं

لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا

कुफ़्र में	बहुत सख़्त	देहाती	96	नाफ़रमान	लोग	से	राज़ी नहीं होता

وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम	कि वह न जानें	और ज़ियादा लाइक़	और निफ़ाक़ में

رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ

लेते हैं (समझते हैं)	जो	देहाती	और से (बाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)

مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ

उन पर	गर्दिशें	तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं	तावान	जो वह ख़र्च करते हैं

دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ

जो	देहाती	और से (बाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ

नज़्दीकियां	जो वह ख़र्च करें	और समझते हैं	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं

عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ

उन के लिए	नज़्दीकी	यक़ीनन वह	हां हां	रसूल	और दुआएं	अल्लाह से

ع ١٢ ١٠ ١
سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

99	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	अपनी रहमत	में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़्र लाएंगे। कह दो कि उज़्र न करो, हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अ़मल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़स्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, बेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे क़स्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो बेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो ख़र्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियों और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ़) समझते हैं, हां हां! यक़ीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ़) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ

और जिन लोगों	और अन्सार	मुहाजरीन	से	सब से पहले	और सबक़त करने वाले

اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ

उन के लिए	और तैयार किया उस ने	उस से	और वह राज़ी हुए	राज़ी हुआ अल्लाह उन से	नेकी के साथ	उस की पैरवी की

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ

यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۚ وَمِنْ

और से (बाज़)	मुनाफ़िक़ (जमा)	देहाती	से बाज़	तुम्हारे इर्द गिर्द	और उन में जो	100	कामयाबी बड़ी

اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ نَحْنُ

صح ٥ عند المتقدمين ١٢ وقف منزل

हम	तुम नहीं जानते उन को	निफ़ाक़	पर	अड़े हुए हैं	मदीने वाले

نَعْلَمُهُمْ ۭ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع

101	अज़ीम	अज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	फिर	दो बार	जल्द हम उन्हें अज़ाब देंगे	जानते हैं उन्हें

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ

बुरा	और दूसरा	एक अ़मल अच्छा	उन्हों ने मिलाया	अपने गुनाहों का	उन्हों ने एतराफ़ किया	और कुछ और

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ

लेलें आप (स)	102	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	माफ़ कर दे उन्हें	कि	अल्लाह	क़रीब है

مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	और दुआ करो	उस से	और साफ़ कर दो	तुम पाक कर दो	ज़कात	उनके माल (जमा)	से

اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ

कि	क्या उन्हें इल्म नहीं	103	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	सुकून	आप (स) की दुआ	बेशक

اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

सदक़ात	और क़ुबूल करता है	अपने बन्दे	से-की	तौबा	क़ुबूल करता है	वह	अल्लाह

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ

अल्लाह	पस अब देखेगा	तुम किए जाओ अ़मल	और कह दें आप (स)	104	निहायत मेह्रबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	और यह कि अल्लाह

عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

जानने वाला पोशीदा	तरफ़	और जल्द लैटाए जाओग	और मोमिन (जमा)	और उसका रसूल (स)	तुम्हारे अ़मल

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ

मौक़ूफ़ रखे गए	और कुछ और	105	तुम करते थे	वह जो	सो वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

106	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तौबा क़ुबूल कर ले उन की	और ख़्वाह	वह उन्हें अ़ज़ाब दे	ख़्वाह	अल्लाह के हुक्म पर

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अन्सार में से, और जिन्हों ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। **(100)**

और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ हैं, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अ़ज़ाब देंगे, फिर वह अ़ज़ाबे अ़ज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। **(101)**

और कुछ और हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्हों ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अ़मल मिला लिया, क़रीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(102)**

आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआ़ए (ख़ैर) करें, बेशक आप(स) की दुआ़ उन के लिए (बाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला,जानने वाला है। **(103)**

क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है, और क़ुबूल करता है सदक़ात और यह कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(104)**

और आप (स) कहदें तुम अ़मल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अ़मल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। **(105)**

और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौक़ूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अ़ज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(106)**

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ

दरमियान	और फूट डालने को	और कुफ़्र के लिए	नुक़्सान पहुँचाने को	मस्जिद	उन्हों ने बनाई	और वह लोग जो

الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ

पहले	से	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	उस ने जंग की	उस के वासते जो	और घात की जगह बनाने के लिए	मोमिनों (जमा)

وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ

वह यक़ीनन	गवाही देता है	और अल्लाह	भलाई	मगर (सिर्फ़)	हम ने चाहा	नहीं	और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى

तक़्वा	पर	बुन्याद रखी गई	बेशक वह मस्जिद	कभी	उस में	आप (स) न खड़े होना	107	झूटे हैं

مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ

कि	वह चाहते हैं	ऐसे लोग	उस में	आप (स) खड़े हों उस में	कि	ज़ियादा लाइक़	दिन	पहले	से

يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	सो क्या वह जो	108	पाक रहने वाले	महबूब रखता है	और अल्लाह	वह पाक रहें

عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	जो- जिस	या	बेहतर	और खुशनूदी	अल्लाह से	तक़्वा (ख़ौफ़)	पर

عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	दोज़ख़ की आग	में	उस को लेकर	सो गिर पड़ी	गिरने वाला	खाई	किनारा	पर

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا

बुन्याद रखी	जो कि	उन की इमारत	हमेशा रहेगी	109	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता

ع ١٣ ١١ ٢ رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

110	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिल	यह कि टुकड़े हो जाएं	मगर	उन के दिल	में	शक

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ

और उन के माल	उन की जानें	मोमिन (जमा)	से	ख़रीद लिए	बेशक अल्लाह

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

सो वह मारते हैं	अल्लाह की राह	में	वह लड़ते हैं	जन्नत	उन के लिए	उस के बदले

وَيُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और इंजील	तौरात में	सच्चा	उस पर	वादा	और मारे जाते हैं

وَالْقُرْاٰنِ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

पस खुशियां मनाओ	अल्लाह से	अपना वादा	ज़ियादा पूरा करने वाला	और कौन	और कुरआन

بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

111	अज़ीम	कामयाबी	वह	और यह	उस से	तुम ने सौदा किया	जो कि	सो अपने सौदे पर

और वह लोग जिन्हों ने मस्जिद ज़रार (नुक़्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़्र करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यक़ीनन झूटे हैं। (107)

आप (स) उस में कभी न खड़े होना, बेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक़्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक़ है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)

सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के ख़ौफ़ और (उस की) खुशनूदी पर रखी, वह बेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)

वह इमारत जिस की उन्हों ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (110)

बेशक अल्लाह ने ख़रीद लीं मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और कुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर खुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

التَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ

रुकूअ़ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले

السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

बुराई	से	और रोकने वाले	नेकी का	हुक्म देने वाले	सिज्दा करने वाले

وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ

नहीं है	112	मोमिन (जमा)	और खुशख़बरी दो	अल्लाह की हुदूद की	और हिफ़ाज़त करने वाले

لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ

मुश्रिकों के लिए	वह बख़्शिश चाहें	कि	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	नबी के लिए

وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ

कि वह	उन पर	जब ज़ाहिर हो गया	उस के बाद	क़राबतदार	वह हों	ख़्वाह

اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

अपने बाप के लिए	इब्राहीम (अ)	बख़्शिश चाहना	और न था	113	दोज़ख़ वाले

اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ

कि वह	उस पर	ज़ाहिर हो गया	फिर जब	उस से	जो उस ने वादा किया	एक वादे के सबब	मगर

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं है	114	बुर्दबार	नर्म दिल	इब्राहीम (अ)	बेशक	उस से	वह बेज़ार हो गया	अल्लाह का दुश्मन

لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ

उन पर	वाज़ेह करदे	जब तक	जब उन्हें हिदायत दे दी	बाद	कोई क़ौम	कि वह गुमराह करे

مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ

बादशाहत	उस के लिए	बेशक अल्लाह	115	जानने वाला	हर शै का	बेशक अल्लाह	वह परहेज़ करें	जिस

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए नहीं	और वह मारता है	वही ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى

पर	अल्लाह	अल्बत्ता तवज्जुह फ़रमाई	116	और न मददगार	कोई हिमायती	से	अल्लाह के सिवा	कोई

النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ

में	उस की पैरवी की	वह जिन्हों ने	और अन्सार	और मुहाजरीन	नबी (स)

سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ

एक फ़रीक़	दिल (जमा)	फिर जाएं	जब क़रीब था	उस के बाद	तंगी	घड़ी

مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

117	निहायत मेहरबान	इन्तिहाई शफ़ीक़	उन पर	बेशक वह	उन पर	फिर वह मुतवज्जुह हुआ	उन से

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ़ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (क़ाइम करदा) हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (112)

नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायां) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के क़राबतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (113)

और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस (बाप) से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दबार थे। (114)

और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (115)

बेशक अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। (116)

अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अन्सार पर, वह जिन्हों ने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि क़रीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (117)

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ

उन पर	तंग होगई	जब	यहां तक कि	पीछे रखा गया	वह जो	वह तीन	और पर

الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ

कि	और उन्हों ने जान लिया	उन की जानें	उन पर	और वह तंग हो गई	बावजूद कुशादगी	ज़मीन

لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ

ताकि वह तौबा करें	वह मुतवज्जुह हुआ उन पर	फिर	उस की तरफ़	मगर	अल्लाह	से	नहीं पनाह

ع ١٤ ٨ ٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

डरो अल्लाह से	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	118	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक अल्लाह

وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ

और जो	मदीने वालों को	न था	119	सच्चे लोग	साथ	और हो जाओ

حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

अल्लाह के रसूल (स)	से	कि वह पीछे रहजाते	देहातियों में से	उन के इर्द गिर्द

وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ

नहीं पहुँचती उन को	इस लिए कि वह	यह	उन की जान	से	अपनी जानों को	और यह कि ज़ियादा चाहें वह

ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

और न वह क़दम रखते हैं	अल्लाह की राह	में	कोई भूख	और न	और न कोई मुशक़्क़त	कोई पयास

مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا

मगर	कोई चीज़	दुश्मन	से	और न वह छीनते हैं	काफ़िर (जमा)	गुस्सा हों	ऐसा क़दम

كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿١٢٠﴾

120	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करता	बेशक अल्लाह	नेक अ़मल	उस से	लिखा जाता है उन के लिए

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ

और न तै करते हैं	और न बड़ा	छोटा	ख़र्च	वह ख़र्च करते हैं	और न

وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا

जो	बेहतरीन	अल्लाह	ताकि जज़ा दे उन्हें	लिखा जाता है उन के लिए	मगर	कोई वादी (मैदान)

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

पस क्यों न कूच करे	सब के सब	कि वह कूच करें	मोमिन (जमा)	और नहीं है	121	वह करते थे (उन के आमाल)

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ

दीन में	ताकि वह समझ हसिल करें	एक जमाअ़त	उन से (उन की)	हर गिरोह	से

ع ١٥ ٩ ٤ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ع

122	बचते रहें	ताकि वह (अ़जब नहीं)	उन की तरफ़	वह लौटें	जब	अपनी क़ौम	और ताकि वह डर सुनाएं

और उन तीन पर (जिन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गईं (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतवज्जुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (118)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (119)

(लाइक़) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह ज़ियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुँचती कोई प्यास, और न कोई मुशक़्क़त, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा क़दम रखते हों कि काफ़िर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अ़मल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। (120)

और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या ज़ियादा) ख़र्च नहीं करते और न वह तै करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन के आमाल की उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। (121)

और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअ़त कूच करे ताकि वह समझ हासिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी क़ौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अ़जब नहीं कि वह बचते रहें। (122)

ऐ मोमिनों! अपने नज़्दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहीए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएं सख़्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे उस पर गरां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है, मोमिनों पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। (129)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ

नज़्दीक तुम्हारे	वह जो	लड़ो	वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	और जान लो	सख़्ती	तुम्हारे अन्दर	और चाहिए कि वह पाएं	कुफ़्फ़ार से (काफ़िर)

مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ الربع

कहते हैं	बाज़	तो उन में से	कोई सूरत	नाज़िल की जाती	और जब	123	परहेज़गारों के साथ

اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह लोग जो ईमान लाए	सो जो	ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस

فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا

और जो	124	खुशियां मनाते हैं	और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	वह लोग जो

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

क्या नहीं वह देखते	125	काफ़िर (जमा)	और वह	और वह मरे	उन की गन्दगी

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

फिर	दो बार	या	एक बार	हर साल में	आज़माए जाते हैं	कि वह

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

कोई सूरत	और उतारी जाती है	और जब	126	नसीहत पकड़ते हैं	वह	और न	न वह तौबा करते हैं

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ

फिर	कोई	देखता है तुम्हें	क्या	बाज़ (दूसरे)	को	उन में से (कोई एक)	देखता है

انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	क्योंकि वह	उन के दिल	अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

गरां	तुम्हारी जानें (तुम)	से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया	127	समझ नहीं रखते

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

इन्तिहाई शफ़ीक़	मोमिनों पर	तुम पर	हरीस (बहुत ख़ाहिशमन्द)	तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे	जो	उस पर

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है	तो कह दें	फिर अगर वह मुंह मोड़ें	128	निहायत मेहरबान

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ع ١٦ ٧ ٥

129	अज़ीम	अर्श	मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया	उस पर

المنزل ۳

اٰيَاتُهَا ١٠٩ ❀ (١٠) سُوْرَةُ يُوْنُسَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

रुकूआत 11 — (10) सूरह यूनुस / यूनुस (अ) — आयात 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ (١) اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि भेजी	कि	तअ़ज्जुब	लोगों को	क्या हुआ	1	हिक्मत वाली	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	कि	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और ख़ुशख़बरी दे	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक आदमी	तरफ़- पर

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ (٢)

2	खुला	जादूगर	यह	बेशक	काफ़िर (जमा)	बोले	उन का रब	पास	सच्चा	पाया

وقف النبی ﷺ

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस ने	अल्लाह	बेशक तुम्हारा रब

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا

मगर	सिफ़ारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर करता है	अर्श पर	क़ाइम हुआ	फिर

مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٣) اِلَيْهِ

उसी की तरफ़	3	सो क्या तुम ध्यान नहीं करते	पस उस की बन्दगी करो	तुम्हारा रब	अल्लाह	वह है	उस की इजाज़त	बाद

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

दोबारा पैदा करेगा	फिर	पहली बार पैदा करता है	बेशक वही	सच्चा	अल्लाह	वादा	सब	तुम्हारा लौट कर जाना

لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह लोग जो	इन्साफ़ के साथ	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	वह लोग जो	ताकि जज़ा दे

لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ (٤)

4	वह कुफ़्र करते थे	क्यों कि	दर्दनाक	और अ़ज़ाब	खौलता हुआ	से	पीना है (पानी)	उन के लिए

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ

मन्ज़िलें	और मुक़र्रर कर दीं उस की	नूर (चमकता)	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ

हक़ (दुरुस्त तदबीर) से	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा किया	और हिसाब	बरस (जमा)	गिनती	ताकि तुम जान लो

يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٥) اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

और दिन	रात	बदलना	में	बेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियां	वह खोल कर बयान करता है

وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ (٦)

6	परहेज़गारों के लिए	निशानियां हैं	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने पैदा किया	और जो

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रह्म करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअ़ज्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छः (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर क़ाइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम धयान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अ़ज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़्र करते थे। (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5) बेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी पर	और वह राज़ी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	बेशक

وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	7	ग़ाफ़िल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर	और वह मुत्मइन हो गए

مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहन्नम	उन का ठिकाना

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ

उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٩﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ

ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ़	9	नेमत	बाग़ात	में	नहरें

وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ़	और ख़ातिमा	सलाम	उस में	और मुलाक़ात के वक़्त की दुआ़

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ ع ١٠ ٦

भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10	सारे जहान

لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ

में	हमारी मुलाक़ात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीआ़द	उन की तरफ़	तो फिर हो चुकी होती

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا

वह हमें पुकारता है	कोई तक्लीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी

لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ

चल पड़ा	उस की तक्लीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या (और)	बैठा हुआ	या (और)	अपने पहलू पर (लेटा हुआ)

كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ

हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तक्लीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो

لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا

और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ

हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुजरिमों की	क़ौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे

خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन

बेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर मुत्मइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)
यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बाग़ात में। (9)
उस में उन की दुआ़ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाक़ात की दुआ़ "सलाम" है, और उन की दुआ़ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है। (10)
और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीआ़द, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)
और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तक्लीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)
और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्हों ने ज़ुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)
फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर (उन के सामने)	पढ़ी जाती हैं	और जब

لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ

मेरे लिए	नहीं है	आप कह दें	बदलदो इसे	या	इस के अ़लावा	कोई क़ुरआन	तुम ले आओ	हम से मिलने की

اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ

मेरी तरफ़	वहि की जाती है	मगर जो	मैं नहीं पैरवी करता	अपनी	जानिब	से	उसे बदलूं	कि

اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ

आप कह दें	15	बड़ा	दिन	अ़ज़ाब	अपना रब	मैं ने नाफ़रमानी की	अगर	डरता हूँ	बेशक मैं

لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۫ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ

तहक़ीक़ मैं रह चुका हूँ	उस की	और न ख़बर देता तुम्हें	तुम पर	न पढ़ता मैं उसे	अगर चाहता अल्लाह

فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

उस से जो	बड़ा ज़ालिम	सो कौन	16	अ़क़्ल से काम लेते तुम	सो क्या न	इस से पहले	एक उम्र	तुम में

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

फ़लाह नहीं पाते	बेशक वह	उस की आयतों को	या झुटलाए	झूट	अल्लाह पर	बान्धे

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ

न ज़रर पहुंचा सके उन्हें	जो	अल्लाह के सिवा	से	और वह पूजते हैं	17	मुज्रिम (जमा)

وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के पास	हमारे सिफ़ारिशी	यह सब	और वह कहते हैं	और न नफ़ा दे सके उन्हें

قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन	में	और न	आस्मानों में	वह नहीं जानता	उस की जो	अल्लाह	क्या तुम ख़बर देते हो	आप (स) कह दें

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ

लोग	और न थे	18	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बालातर	वह पाक है

اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

से	पहले हो चुकी	बात	और अगर न	फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	उम्मते वाहिद	मगर

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	19	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	उस में जो	उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	तेरा रब

لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	तो कह दें	उस के रब से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी

ع ۲ ۱۰ ۷
الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۲۰﴾

20	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	अल्लाह के लिए	ग़ैब

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अ़लावा तुम कोई और क़ुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिब से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, बेशक मुजरिम फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रर पहुँचा सकें और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं। आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मते वाहिद, फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तक्लीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगें) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ ख़ुफ़िया तदबीर (बना सकता है), बेशक तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है ख़ुश्की में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से ख़ुश हुए, उस (कश्ती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगईं, और उन्हों ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का वबाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा हैं) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ह मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन वालों ने ख़याल किया कि वह उस पर क़ुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ

हीला	उन के लिए	उसी वक़्त	उन्हें पहुँची	तक्लीफ़	बाद	रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब

فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	जो तुम हीले साज़ी करते हो	वह लिखते हैं	हमारे फ़रिश्ते	बेशक	ख़ुफ़िया तदबीर	सब से जल्द	अल्लाह	आप (स) कह दें	हमारी आयात	में

هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ

कश्ती में	तुम हो	जब	यहां तक	और दर्या	ख़ुश्की में	तुम्हें चलाता है	जो कि	वही

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ

तुन्द ओ तेज़	एक हवा	उस पर आई	उस से	और वह ख़ुश हुए	पाकीज़ा	हवा के साथ	उन के साथ	और वह चलें

وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا

वह पुकारने लगे	उन्हें	घेर लिया गया	कि वह	और उन्हों ने जान लिया	हर जगह (हर तरफ़)	से	मौज	और उन पर आई

اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ

तो हम ज़रूर होंगे	उस	से	तू नजात दे हमें	अलबत्ता अगर	दीन (बन्दगी)	उस के	ख़ालिस हो कर	अल्लाह

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ

नाहक़	ज़मीन	में	सरकशी करने लगे	वह	उस वक़्त	उन्हें नजात दे दी	फिर जब	22	शुक्रगुज़ार (जमा)	से

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؗ

दुनिया	ज़िन्दगी	फ़ाइदे	तुम्हारी जानों	पर	तुम्हारी शरारत	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ

मिसाल	इस के सिवा नहीं	23	तुम करते थे	वह जो	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	तुम्हें लौटना	हमारी तरफ़	फिर

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

ज़मीन का सब्ज़ा	उस से	तो मिला जुला निकला	आस्मान से	हम ने उसे उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी

مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	पकड़ ली	जब	यहां तक कि	और चौपाए	लोग	खाते हैं	जिस से

زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ

आया	उस पर	क़ुदरत रखते हैं	कि वह	ज़मीन वाले	और ख़याल किया	और मुज़ैयन हो गई	अपनी रौनक़

اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ

वह न थी	गोया कि	कटा हुआ ढेर	तो हम ने कर दिया	या दिन के वक़्त	रात में	हमारा हुक्म

بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	24	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	कल

يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहे	और हिदायत देता है	सलामती का घर	तरफ़	बुलाता है

لِلَّذِيۡنَ اَحۡسَنُوا الۡحُسۡنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرۡهَقُ وُجُوۡهَهُمۡ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ

और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्हों ने भलाई की	वह लोग जो कि

اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيۡنَ كَسَبُوا

उन्हों ने कमाईं	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग

السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۭ بِمِثۡلِهَا ۙ وَتَرۡهَقُهُمۡ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह	से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराइयां

مِنۡ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغۡشِيَتۡ وُجُوۡهُهُمۡ قِطَعًا مِّنَ الَّيۡلِ مُظۡلِمًا ؕ

तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला	कोई

اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوۡمَ نَحۡشُرُهُمۡ

हम इकटठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग

جَمِيۡعًا ثُمَّ نَقُوۡلُ لِلَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا مَكَانَكُمۡ اَنۡتُمۡ وَشُرَكَآؤُكُمۡ ۚ

और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्हों ने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब

فَزَيَّلۡنَا بَيۡنَهُمۡ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمۡ مَّا كُنۡتُمۡ اِيَّانَا تَعۡبُدُوۡنَ ﴿٢٨﴾

28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًاۢ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ اِنۡ كُنَّا عَنۡ عِبَادَتِكُمۡ

तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह	पस काफ़ी

لَغٰفِلِيۡنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبۡلُوۡا كُلُّ نَفۡسٍ مَّآ اَسۡلَفَتۡ وَرُدُّوۡٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29	अलबत्ता बेख़बर (जमा)

ع ١٠ ٣ النصف ٨

مَوۡلٰىهُمُ الۡحَقِّ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿٣٠﴾ قُلۡ مَنۡ

कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	सच्चा	उन का (अपना) मौला

يَّرۡزُقُكُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ اَمَّنۡ يَّمۡلِكُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ

और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़्क़ देता है तुम्हें

وَمَنۡ يُّخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَيُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ مِنَ الۡحَىِّ وَمَنۡ يُّدَبِّرُ الۡاَمۡرَ ؕ

तदबीर करता है काम	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और कौन

فَسَيَقُوۡلُوۡنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلۡ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الۡحَقُّ ۚ

सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	अल्लाह	सो वह बोल उठेंगे

فَمَاذَا بَعۡدَ الۡحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصۡرَفُوۡنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	32	तुम फिरे जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया

حَقَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيۡنَ فَسَقُوۡٓا اَنَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٣٣﴾

33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्हों ने नाफ़रमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	बात	सच्ची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26) और जिन लोगों ने बुराइयां कमाईं (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27) और जिस दिन हम उन सब को इकटठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28) पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29) वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30) आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़्क़ देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहदें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31) पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32) उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्हों ने नाफ़रमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप (स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? (34) आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हक़दार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (ख़ुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (35) और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, बेशक गुमान हक़ (की मुआ़रिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, बेशक अल्लाह खूब जानता है जो वह करते हैं। (36) और यह क़ुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुक्म के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तस्दीक़ करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़्सील है, उस में कोई शक नहीं कि यह तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से है। (37) क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि उन्हों ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्हों ने क़ाबू नहीं पाया, और उस की हक़ीक़त अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? (39) और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (40) और अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अ़मल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। (41)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۭ قُلِ اللّٰهُ

अल्लाह	आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करता है

مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۭ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۭ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ

राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कहदें	हक़ की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۣ

सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक़ दार	हक़ की तरफ़ (सही)

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ۭ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ

नहीं काम देता	गुमान	बेशक	मगर गुमान	उन के अक्सर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा

مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا

यह-इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	खूब जानता है	बेशक अल्लाह	कुछ भी	हक़	से (का)

الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ

उस की जो	तस्दीक़	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	क़ुरआन

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	तमाम जहानों	रब	से	उस में	कोई शक नहीं	किताब	और तफ़्सील	उस से पहले

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ

जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या

اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको

بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ

झुटलाया	उसी तरह	उस की हक़ीक़त	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं क़ाबू पाया	वह जो

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ

खूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ　ع ٤ ٩

तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	मेरे अ़मल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर	40	फ़साद करने वालों को

اَنْتُمْ بَرِيْۗـــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदेह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदेह नहीं	तुम

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

ख़्वाह	बहरे	सुनाओगे	तो क्या तुम	आप (स) की तरफ़	कान लगाते हैं	जो (बाज़)	और उन में से

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ

अन्धे	राह दिखा दोगे	पस क्या तुम	आप (स) की तरफ़	देखते हैं	जो (बाज़)	और उन से	42	वह अक़्ल न रखते हों

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	कुछ भी	लोग	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	43	वह देखते न हों	ख़्वाह

النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا

मगर	वह न रहे थे	गोया	जमा करेगा उन्हें	और जिस दिन	44	ज़ुल्म करते हैं	अपने आप पर	लोग

سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	वह लोग	अलबत्ता ख़सारे में रहे	आपस में	वह पहचानेंगे	दिन से (की)	एक घड़ी

بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

वह जो	बाज़ (कुछ)	हम तुझे दिखा दें	और अगर	45	हिदायत पाने वाले	वह न थे	अल्लाह से मिलने को

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي

पर	गवाह	अल्लाह	फिर	उन का लौटना	पस हमारी तरफ़	हम तुम्हें उठालें	या	वादा करते हैं हम उन से

مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला कर दिया गया	उन का रसूल	आगया	पस जब	रसूल	उम्मत	और हर एक के लिए	46	जो वह करते हैं

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं	47	ज़ुल्म नहीं किए जाते	और वह	इन्साफ़ के साथ

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا

जो	मगर	और न नफ़ा	किसी नुक़्सान	अपनी जान के लिए	नहीं मालिक हूँ मैं	आप कह दें	48	सच्चे	तुम हो

شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۭ اِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً

एक घड़ी	पस न ताख़ीर करेंगे वह	उन का वक़्त	आजाएगा	जब	एक वक़्त मुक़र्रर	हर एक उम्मत के लिए	चाहे अल्लाह

وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

या दिन के वक़्त	रात को	उस का अ़ज़ाब	अगर तुम पर आए	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	49	जल्दी करेंगे वह	और न

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ۭ

उस पर	तुम ईमान लाओगे	वाक़े होगा	जब	क्या फिर	50	मुज्रिम (जमा)	उस से - उस की	जल्दी करते हैं	क्या है वह

اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	उन लोगों को जो	कहा जाएगा	फिर	51	तुम जल्दी मचाते	उस की	और अलबत्ता तुम थे	अब

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	तुम कमाते थे	वह जो	मगर	तुम्हें बदला दिया जाता	क्या नहीं	हमेशगी	अ़ज़ाब	तुम चखो

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं
आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम
बहरों को सुनाओगे? अगरचे वह
अ़क़्ल न रखते हों। (42)
और उन में से बाज़ देखते हैं
आप(स) की तरफ़, तो क्या
आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे?
अगरचे वह देखते न हों। (43)
बेशक अल्लाह ज़ुल्म नहीं करता
लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग
अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं। (44)
और जिस दिन (योमे हश्र) वह उन्हें
जमा करेगा गोया वह (दुनिया में)
न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी,
आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह
ख़सारे में रहे जिन्हों ने झुटलाया
अल्लाह से मिलने को, और वह
हिदायत पाने वाले न थे। (45)
और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे
दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं
या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें,
पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है,
फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो
वह करते हैं। (46)
हर एक उम्मत के लिए एक रसूल
है, पस जब उन का रसूल आगया,
उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ
फ़ैसला कर दिया गया, और उन
पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (47)
और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा)
होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48)
आप (स) कह दें मैं अपनी जान के
लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़्सान
का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह
चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक
वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त
आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताख़ीर
करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49)
आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर
तुम पर उस का अ़ज़ाब आए रात को
या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस
की मुज्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50)
क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा
(उस वक़्त) तुम उस पर ईमान
लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता
तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51)
फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम
हमेशगी का अ़ज़ाब चखो, तुम्हें
वही बदला दिया जाता है जो तुम
कमाते थे। (52)

ع ١٣ / ١٠ وقف النبی

وَيَسْتَنْۢبِــُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿۵۳﴾

53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	बेशक वह	मेरे रब की क़सम	हां	आप कह दें	वह	क्या सच है	और आप (स) से पूछते हैं

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِی الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

पशेमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फ़िदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ	उस ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	हर एक शख़्स के लिए	हो	और अगर

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾

54	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला होगा	अज़ाब	वह देखेंगे	जब

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	बेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	बेशक	याद रखो

اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۶﴾

56	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ

सीनों (दिलों) में	उस के लिए जो	और शिफ़ा	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तहक़ीक़ आगई तुम्हारे पास	लोगो	ऐ

وَهُدًی وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۵۷﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ

और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़्ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत

فَبِذٰلِكَ فَلْیَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ

जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह- यह	वह ख़ुशी मनाएं	सो उस पर

اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ

हुक्म दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़्क़	से	तुम्हारे लिए	अल्लाह

لَكُمْ اَمْ عَلَی اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللّٰهِ

अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	ख़याल	और क्या	59	तुम झूट बान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें

الْكَذِبَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَی النَّاسِ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़्ल करने वाला	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट

اَكْثَرَهُمْ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَمَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ ع ٦ / ١١

से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर

قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَیْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِیْضُوْنَ

जब तुम मशग़ूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अ़मल	और नहीं करते	क़ुरआन

فِیْهِ ؕ وَمَا یَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا

और न	ज़मीन में	एक ज़र्रा	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	ग़ाइब	और नहीं	उस में

فِی السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۱﴾

61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस	से	छोटा	और न	आस्मान	में

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहदें हां! मेरे रब की क़सम! बेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)
और अगर हर ज़ालिम शख़्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फ़िदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अ़ज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (54)
याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! बेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)
वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)
ऐ लोगो! तहक़ीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57)
आप (स) कहदें, अल्लाह के फ़ज़्ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर ख़ुशी मनाएं, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)
आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हराम बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)
और उन लोगों का क्या ख़याल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)
और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ कुरआन पढ़ते हो, और न कोई अ़मल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़बर) होते हैं जब तुम उस में मशग़ूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़र्रा बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	न कोई ख़ौफ़	अल्लाह के दोस्त	बेशक	याद रखो

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	में	बशारत	उन के लिए	63	और वह तक़्वा करते रहे	ईमान लाए	वह लोग जो

وَفِى الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह	अल्लाह	बातों में	तबदीली नहीं	आख़िरत	और में

وقف لازم

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	ग़लबा	बेशक	उन की बात	तुम्हें ग़मगीन करे	और न	64	बड़ी	कामयाबी

جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कुछ	अल्लाह के लिए	बेशक	याद रखो	65	जानने वाला	सुनने वाला	वह	तमाम

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	पुकारते हैं	वह लोग जो	पैरवी करते हैं	क्या - किस	ज़मीन में	और जो

اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	वह	और नहीं	गुमान	मगर	वह नहीं पैरवी करते	शरीक (जमा)	अल्लाह

يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाया	जो - जिस	वही	66	अटकलें दौड़ाते हैं

فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	सुनने वाले लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	दिखाने वाला (रौशन)	और दिन	उस में

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِىُّ ؕ لَهٗ مَا

जो	उस के लिए	बेनियाज़	वह	वह पाक है	बेटा	अल्लाह	बना लिया	वह कहते हैं

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ

कोई	तुम्हारे पास	नहीं	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो	उस के लिए	दलील

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	आप (स) कह दें

لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

फिर	उन को लौटना	हमारी तरफ़	फिर	दुनिया में	कुछ फ़ाइदा	69	वह फ़लाह नहीं पाएंगे

عٓ ۲ الثلثة

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	वह कुफ़्र करते थे	उस के बदले	शदीद	अज़ाब	हम चखाएंगे उन्हें

याद रखो! बेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक़्वा (ख़ौफ़े ख़ुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए बशारत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। बेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! बेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ़) गुमान की पैरवी करते हैं, ओर वह सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिम करो और दिन रौशन, बेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह बेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, बेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़्र करते थे। (70)

وقف لازم

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	ख़बर (क़िस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो

مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

पस तुम मुक़र्रर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क़ियाम

اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ

मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुबाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम

وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ

मेरा अजर	तो - सिर्फ़	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो

اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने उसे झुटलाया	72	फ़रमांबरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ़)

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

और हम ने ग़र्क़ कर दिया	जांशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कश्ती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की क़ौम	तरफ़	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर

فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى

पर	हम मुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से क़ब्ल	उस को	उन्हों ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएं

قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى

तरफ़	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)

فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	अपनी निशानियों के साथ	उस के सरदार	फ़िरऔन

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

76	खुला	अलबत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ़	से	हक़	आया उन के पास	तो जब

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक़ के लिए (निस्बत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर

وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का क़िस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गरां है मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुक़र्रर (पक्का) कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71)
फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फ़रमांबरदारों में से। (72)
तो उन्हों ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जाँनशीन बनाया, और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73)
फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएं उस (बात) पर जिसे वह उस से क़ब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74)
फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75)
तो जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76)
मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक़ की निस्बत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77)
वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ

जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फ़िरऔन	और कहा

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	उन्हों ने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा

مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ

काम	नहीं दुरुस्त करता	बेशक अल्लाह	अभी बातिल कर देगा उसे	बेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो

ع ٨ ١٢ ١٣ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾

82	मुजरिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख़्वाह	अपने हुक्म से	हक़	अल्लाह	और हक़ कर देगा	81	फ़साद करने वाले

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	से (के)	ख़ौफ़ की वजह से	उस की क़ौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न

وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ

और बेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फ़िरऔन	और बेशक	वह आफ़त में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार

لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी क़ौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता- से

فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्हों ने कहा	84	फ़रमांबरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۵﴾ ۙ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ

से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	क़ौम का	तख़्ता-ए-मशक़	न बना हमें	ऐ हमारे रब

الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ

कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	86	काफ़िर (जमा)	क़ौम

لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا

और क़ाइम करो	क़िबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी क़ौम के लिए

الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ

बेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और ख़ुशख़बरी दो	नमाज़

اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ

दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फ़िरऔन	तू ने दिए

رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۸۸﴾

88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर

और फ़िरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79) फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80) फिर उन्हों ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे बातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81) और अल्लाह हक़ को अपने हुक्म से हक़ (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82) सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम के चन्द लड़के ख़ौफ़ की वजह से फ़िरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फ़िरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83) और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। (84) तो उन्हों ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की क़ौम का तख़्ता-ए-मशक़। (85) और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से छुड़ादे। (86) और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी क़ौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर क़िब्ला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ क़ाइम करो, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो। (87) और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

उस ने फ़रमाया तुम्हारी दुआ़ कुबूल हो चुकी है सो तुम दोनों साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो नावाक़िफ़ हैं। (89) और हम ने बनी इस्राईल को पार कर दिया दर्या से, पस फ़िरऔ़न और उस के लशकर ने सरकशी और ज़ियादती से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उसको ग़रक़ाबी ने आ पकड़ा वह कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं हूँ फ़रमांबरदारों में से। (90) क्या अब? (ईमान की बात करता है) और अलबत्ता पहले तो नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से रहा। (91) सो आज हम तुझे तेरे बदन से बचाएंगे (ग़रक़ नहीं करेंगे) ताकि तू (तेरी लाश) उन के लिए जो तेरे बाद आएं (इब्रत की) एक निशानी रहे, और बेशक लोगों में से अक्सर हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं। (92) और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया, और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया पाकीज़ा चीज़ों से, सो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उन के पास इल्म आगया, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला करेगा रोज़े क़ियामत जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (93) पस अगर तू उस (के बारे) में शक में हो तो हम ने उतारा तेरी तरफ़, तो उन लोगों से पूछ जो तुझ से पहले किताब पढ़ते हैं, तहक़ीक़ तेरे पास हक़ आगया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस शक करने वालों से न होना। (94) और न उन लोगों से होना जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह की आयतों को, फिर तुम ख़सारा पाने वालों से हो जाओ। (95) बेशक जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गई वह ईमान न लाएंगे। (96) अगरचे उन के पास हर निशानी आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें। (97)

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

राह	और न चलना	सो तुम दोनों साबित क़दम रहो	तुम्हारी दुआ़	कुबूल हो चुकी	उस ने फ़रमाया

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ

पस पीछा किया उन का	दर्या	बनी इस्राईल को	और हम ने पार कर दिया	89	नावाक़िफ़ हैं	उन लोगों की जो

فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ

वह कहने लगा	ग़रक़ाबी	जब उसे आ पकड़ा	यहां तक कि	और ज़ियादती	सरकशी	और उस का लशकर	फ़िरऔ़न

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल	उस पर	वह जिस पर ईमान लाए	सिवाए	माबूद	नहीं	कि वह	मैं ईमान लाया

وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ

से	और तू रहा	पहले	और अलबत्ता तू नाफ़रमानी करता रहा	क्या अब	90	फ़रमांबरदार (जमा)	से	और मैं

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

तेरे बाद आएं	उन के लिए जो	ताकि तू रहे	तेरे बदन से	हम तुझे बचा लेंगे	सो आज	91	फ़साद करने वाले

اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ ع وَلَقَدْ بَوَّاْنَا ع ١٠ ١٤

और अलबत्ता हम ने ठिकाना दिया	92	ग़ाफ़िल हैं	हमारी निशानियां	से	लोगों में से	अक्सर	और बेशक	एक निशानी

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ

पाकीज़ा चीज़ें	से	और हम ने रिज़्क़ दिया उन्हें	अच्छा	ठिकाना	बनी इस्राईल

فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	बेशक	इल्म	आगया उन के पास	यहां तक कि	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ

में शक में	तू है	पस अगर	93	वह इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में जो	रोज़े क़ियामत

مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

तुम से पहले	किताब	पढ़ते हैं	वह लोग जो	तो पूछ लें	तेरी तरफ़	हम ने उतारा	उस से जो

لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾ لا

94	शक करने वाले	से	पस न होना	तेरा रब	से	हक़	तहक़ीक़ आगया तेरे पास

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	फिर तू हो जाए	अल्लाह	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	से	और न होना

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

तेरा रब	बात	उन पर	साबित हो गई	बेशक वह लोग जो	95	ख़सारा पाने वाले

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ لا وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

97	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	हर निशानी	आजाए उन के पास	ख़्वाह	96	वह ईमान न लाएंगे

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ

जब	क़ौम यूनुस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न

اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ

और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अ़ज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ

वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक मुद्दत तक

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाएं	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू

اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्मे इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِى

और नहीं फ़ाइदा देतीं	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अ़क्ल नहीं रखते

الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا

मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियां

مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ

तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाक़िआत)	जैसे

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से

ع ١٠ ١١ ١٥ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक़ हम पर

فِىْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِىْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दीन	से	किसी शक में

وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठालेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और हरगिज़ न होना	सब से मुँह मोड़ कर	दीन के लिए	अपना मुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ

न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुश्रिकीन	से

وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक़सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनुस (अ) की क़ौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अ़ज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक मुद्दत तक नफ़ा पहुँचाया। (98)
और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में हैं सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाएं। (99)
और किसी शख़्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़्र की) गन्दगी उन लोगों पर जो अ़क़्ल नहीं रखते। (100)
आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियां और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फ़ाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101)
तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाक़िआत का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102)
फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103)
आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन (के मुतअ़ल्लिक़) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104)
और यह कि अपना मुँह सब से मोड़ कर दीन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (105)
और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़्सान पहुँचा सके, फ़िर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ

तेरा चाहे	और अगर	उस के सिवा	उस का	तो नहीं हटाने वाला	कोई नुक़सान	अल्लाह	पहुँचाए तुझे	और अगर

بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ

और वह	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिसे	उस को	वह पहुँचाता है	उस के फ़ज़्ल को	तो नहीं कोई रोकने वाला	भला

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

से	हक़	पहुँच चुका तुम्हारे पास	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	107	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपनी जान के लिए	उस ने हिदायत पाई	तो सिर्फ़	हिदायत पाई	तो जो	तुम्हारा रब

يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى

वहि होती है	जो	और पैरवी करो	108	मुख़्तार	तुम पर	मैं	और नहीं	उस पर (बुरे को)	वह गुमराह हुआ

اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع ١١/١٦

109	फ़ैसला करने वाला	बेहतरीन	और वह	अल्लाह	फ़ैसला कर दे	यहां तक कि	और सबर करो	तुम्हारी तरफ़

آيَاتُهَا ١٢٣ ❀ (١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

आयात 123 — (11) सूरह हूद / हूद (अ) — रुकूआत 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

1	ख़बरदार	हिक्मत वाले	पास	से	तफ़्सील की गईं	फिर	इस की आयात	मज़बूत की गईं	यह किताब	अलिफ़ लाम रा

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا

मग़फ़िरत तलब करो	और यह कि	2	और ख़ुशख़बरी देने वाला	डराने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह के सिवा	इबादत करो	यह कि न

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्रर	वक़्त	तक	अच्छी	मताअ़	वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें	उस की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब

وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	तो बेशक मैं	फिर जाओ	और अगर तुम	अपना फ़ज़्ल	फ़ज़्ल वाला	हर	और देगा

يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾ اَلَاۤ

याद रखो	4	क़ुदरत वाला	हर शै	पर	और वह	लौटना है तुम्हें	अल्लाह की तरफ़	3	बड़ा	एक दिन

اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ

अपने कपड़े	पहनते हैं	जब	याद रखो	उस से	ताकि छुपालें	अपने सीने	दोहरे करते हैं	बेशक वह

يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

5	दिलों के भेद	जानने वाला	बेशक वह	और जो वह ज़ाहिर करते हैं	जो वह छुपाते हैं	वह जानता है

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुक़सान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख़्तार नहीं हूँ, (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ वहि हुई है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गईं, फिर तफ़सील की गईं हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्ररा वक़्त तक, और देगा हर फ़ज़्ल वाले को अपना फ़ज़्ल, और अगर तुम फिर जाओ तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (4)

याद रखो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

الجزء ١٢

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

उस का रिज़्क़	अल्लाह	पर	मगर	ज़मीन	में (पर)	चलने वाला	से (कोई)	और नहीं

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾

6	रौशन किताब	में	सब कुछ	और उस के सोंपे जाने की जगह	उस का ठिकाना	और वह जानता है

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ

और था	छः (6) दिन	में	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जो - जिस	और वही

عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ

आप कहें	और अगर	अ़मल में	बेहतर	तुम में कौन	ताकि तुम्हें आज़माए	पानी पर	उस का अर्श

اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

नहीं यह	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	तो ज़रूर कहेंगे वह	मौत - मरना	बाद	उठाए जाओगे	कि तुम

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ

एक मुद्दत	तक	अ़ज़ाब	उन से	हम रोक रखें	और अगर	7	खुला	जादू	मगर (सिर्फ़)

مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا

टाला जाएगा	न	उन पर आएगा	जिस दिन	याद रखो	क्या रोक रही है उसे	तो वह ज़रूर कहेंगे	गिनी हुई - मुऐयन

ع ٨ / ١ عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنَا

हम चखादें	और अगर	8	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जिस	उन्हें	और घेरलेगा	उन से

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾

9	नाशुक्रा	अलबत्ता मायूस	बेशक वह	उस से	हम छीन लें वह	फिर	कोई रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान को

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

जाती रहीं	तो वह ज़रूर कहेगा	उसे पहुँची	सख़्ती के बाद	नेमत (आराम)	उसे चखादें	और अगर

السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا

जिन लोगों ने सब्र किया	मगर	10	शेख़ीख़ोर	इतराने वाला	बेशक वह	मुझ से	बुराइयां

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11	बड़ा	और सवाब	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक	और अ़मल किए

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ

उस से	और तंग होगा	तेरी तरफ़	वहि किया गया	जो	कुछ हिस्सा	छोड़ दोगे	तो शायद (क्या) तुम

صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ

उस के साथ	आया	या	ख़ज़ाना	उस पर	उतरा	क्यों न	कि वह कहते हैं	तेरा सीना (दिल)

مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾

12	इख़्तियार रखने वाला	हर शै	पर	और अल्लाह	डराने वाले	कि तुम	इसके सिवा नहीं	फ़रिश्ता

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने)
वाला नहीं, मगर उस का रिज़्क़
अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है,
और वह जानता है उस का ठिकाना
और उस के सोंपे जाने की जगह,
सब कुछ रौशन किताब (लौहे
महफ़ूज़) में है। (6)
और वही है जिस ने पैदा किए
आस्मान और ज़मीन छः दिन में,
और उस का अर्श पानी पर था,
ताकि तुम्हें वह आज़माए कि तुम
में कौन बेहतर है अ़मल में? और
अगर आप (स) कहें कि तुम मरने
के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग
ज़रूर कहेंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया
कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7)
और अगर हम उन से अ़ज़ाब रोक
रखें एक मुद्दते मुऐयन तक वह
ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक
रही है? याद रखो! जिस दिन उन
पर (अ़ज़ाब) आएगा उन से न
टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा
जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (8)
और अगर हम इन्सान को अपनी
तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा
चखादें फिर वह उस से छीन लें,
तो बेशक वह मायूस, नाशुक्रा
हो जाता है। (9)
और अगर हम उसे सख़्ती के बाद
आराम चखा दें जो उसे पहुँची
हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से
बुराइयां जाती रहीं, बेशक वह
इतराने वाला शेख़ी ख़ोर है। (10)
मगर जिन लोगों ने सब्र किया
और नेक अ़मल किए यही लोग हैं
जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा
सवाब है। (11)
तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का)
कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ वहि
किया गया है, और उस से तुम्हारा
दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि
उस पर क्यों न उतरा कोई ख़ज़ाना
या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों
न) आया? इस के सिवा नहीं कि
तुम डराने वाले हो और अल्लाह
हर शै पर इख़्तियार रखने वाला
है। (12)

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहदें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सको	और तुम बुला लो

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ

कोई माबूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें

اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा

وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

15	कमी किए जाएंगे (नुक़्सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अ़मल	उन के लिए	हम पूरा कर देंगे	और उस की ज़ीनत

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا

जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आख़िरत में	उन के लिए	वह जो कि	यही लोग

صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नाबूद हुए	उस में	उन्हों ने किया

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى

मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता

اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ

से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम

الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ

बेशक वह हक़	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना	गिरोहों में

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो

وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا

याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्हों ने	यही हैं	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	मुन्किर (जमा)	वह	आख़िरत से	और वह	कजी	और उस मे ढून्डते हैं

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (क़ुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)
फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14)
जो कोई चाहता है दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अ़मल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15)
यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्हों ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। (16)
पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, बेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17)
और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)
जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (19)

أُولَٰٓئِكَ لَمْ يَكُونُوا۟ مُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم

उन के लिए	और नहीं है	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं हैं	यह लोग

وقف لازم

مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۘ يُضَٰعَفُ لَهُمُ ٱلْعَذَابُ ۚ مَا

न	अ़ज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा	से

كَانُوا۟ يَسْتَطِيعُونَ ٱلسَّمْعَ وَمَا كَانُوا۟ يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ

वह जिन्हों ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताक़त रखते थे

خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ

शक नहीं	21	वह इफ़तिरा करते थे (झूट बान्धते थे)	जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक़्सान किया

أَنَّهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ هُمُ ٱلْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟

और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	22	सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले	वह	आख़िरत में	कि वह

ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَخْبَتُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ هُمْ

उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे	और आजिज़ी की	नेक

فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ ٱلْفَرِيقَيْنِ كَٱلْأَعْمَىٰ وَٱلْأَصَمِّ وَٱلْبَصِيرِ

और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा	दोनों फ़रीक़	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे

ع ١٦ ٢ ٢

وَٱلسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا

और हम ने भेजा	24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते	मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं	और सुनता

نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا

सिवाए	न परस्तिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)

ٱللَّهَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ ٱلْمَلَأُ

सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह

ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ مَا نَرَىٰكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَىٰكَ

और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की क़ौम के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

ٱتَّبَعَكَ إِلَّا ٱلَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِىَ ٱلرَّأْىِ وَمَا نَرَىٰ

हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से	नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए	तेरी पैरवी करें

لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ

तुम देखो तो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम ख़याल करते हैं तुम्हें	फ़ज़ीलत	कोई	हम पर	तुम्हारे लिए

إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَءَاتَىٰنِى رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِۦ

अपने पास से	रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से	वाज़ेह दलील	पर	मैं हूँ	अगर

فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَٰرِهُونَ ﴿٢٨﴾

28	बेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं	तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अ़ज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आख़िरत में सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले हैं। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (बे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा ख़याल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ेह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं? और तुम उस से बेज़ार हो। (28)

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ

और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी क़ौम

اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّىْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

एक क़ौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	बेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला

تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ

मैं हांक दूँ उन्हें	अगर	अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी क़ौम	29	जहालत करते हो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ

और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम ग़ौर नहीं करते

الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْٓ اَعْيُنُكُمْ

तुम्हारी आँखें	हक़ीर समझती हैं	उन लागों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّىْٓ

बेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	खूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त

فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ

सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ

بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۳۳﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِىْٓ اِنْ

अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को

اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۟ قف

तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़

فَعَلَىَّ اِجْرَامِىْ وَاَنَا بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَاُوْحِىَ اِلٰى نُوْحٍ ٣ ع ١١ ٣

नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर

اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ

पस तू ग़मगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी क़ौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह

بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कश्ती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो

وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۷﴾

37	डूबने वाले	बेशक वह	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अज़र तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक क़ौम हो कि जहालत करते हो। (29) और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30) और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हक़ीर समझती हैं (तुम हक़ीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह खूब जानता है (अगर एसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से हूंगा। (31) वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चों में से है। (32) उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33) और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34) क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35) और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी क़ौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36) और तू हमारे सामने कश्ती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, बेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَصۡنَعُ الۡفُلۡكَ ۚ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ ؕ

उस से (पर)	वह हँसते	उस की क़ौम	से (के)	सरदार	उस पर	गुज़रते	और जब भी	कश्ती	और वह बनाता था

قَالَ اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا تَسۡخَرُوۡنَ ؕ ﴿۳۸﴾ فَسَوۡفَ

सो अनक़रीब	38	तुम हंसते हो	जैसे	तुम से (पर)	हसेंगे	तो बेशक हम	हम से (पर)	तुम हँस्ते हो	अगर	उस ने कहा

تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ﴿۳۹﴾

39	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतरता है	उस को रुस्वा करे	ऐसा अज़ाब	किस पर आता है	तुम जान लोगे

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَفَارَ التَّنُّوۡرُ ۙ قُلۡنَا احۡمِلۡ فِيۡهَا مِنۡ

से	उस में	चढ़ा ले	हम ने कहा	तन्नूर	और जोश मारा	हमारा हुक्म	जब आया	यहां तक कि

كُلٍّ زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ وَاَهۡلَكَ اِلَّا مَنۡ سَبَقَ عَلَيۡهِ الۡقَوۡلُ

हुक्म	उस पर	हो चुका	जो	मगर	और अपने घर वाले	दो (नर मादा)	हर एक जोड़ा

وَمَنۡ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيۡلٌ ﴿۴۰﴾ وَقَالَ ارۡكَبُوۡا فِيۡهَا

इस में	सवार हो जाओ	और उस ने कहा	40	मगर थोड़े	उस पर	ईमान लाए	और न	ईमान लाया	और जो

بِسۡمِ اللّٰهِ مَجۡرٖٮهَا وَمُرۡسٰٮهَا ؕ اِنَّ رَبِّىۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۴۱﴾ وَهِىَ تَجۡرِىۡ

चली	और वह	41	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला	मेरा रब	बेशक	और उसका ठहरना	उस का चलना	अल्लाह के नाम से

بِهِمۡ فِىۡ مَوۡجٍ كَالۡجِبَالِ ۚ وَنَادٰى نُوۡحُ ا۟بۡنَهٗ وَكَانَ فِىۡ مَعۡزِلٍ

किनारे में	और था	अपना बेटा	नूह (अ)	और पुकारा	पहाड़ जैसी	लहरों में	उन को ले कर

يّٰبُنَىَّ ارۡكَبۡ مَّعَنَا وَلَا تَكُنۡ مَّعَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِىۡۤ

मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ	उस ने कहा	42	काफ़िरों के साथ	और न रहो	हमारे साथ	सवार हो जा	ऐ मेरे बेटे

اِلٰى جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِىۡ مِنَ الۡمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الۡيَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ

अल्लाह का हुक्म	से	आज	कोई बचाने वाला नहीं	उस ने कहा	पानी से	वह बचा लेगा मुझे	किसी पहाड़ की तरफ़

اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيۡنَهُمَا الۡمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِيۡنَ ﴿۴۳﴾

43	डूबने वाले	से	तो वह हो गया	मौज	उन के दरमियान	और आगई	जिस पर वह रहम करे	सिवाए

وَقِيۡلَ يٰۤاَرۡضُ ابۡلَعِىۡ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقۡلِعِىۡ وَغِيۡضَ الۡمَآءُ

पानी	और खुश्क कर दिया गया	थम जा	और ऐ आस्मान	अपना पानी	निगल ले	ऐ ज़मीन	और कहा गया

وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَى الۡجُوۡدِىِّ وَقِيۡلَ بُعۡدًا لِّلۡقَوۡمِ

लोगों के लिए	दूरी	और कहा गया	जूदी पहाड़ पर	और जा लगी	काम	और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)

الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۴﴾ وَنَادٰى نُوۡحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِىۡ

मेरा बेटा	बेशक	ऐ मेरे रब	पस उस ने कहा	अपना रब	नूह (अ)	और पुकारा	44	ज़ालिम (जमा)

مِنۡ اَهۡلِىۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۴۵﴾

45	हाकिम (जमा)	सब से बड़ा हाकिम	और तू	सच्चा	तेरा वादा	और बेशक	मेरे घर वालों में से

قرأ حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

الربع

और वह (नूह अ) कश्ती बनाता था और जब भी उस की क़ौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हँस्ते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हँस्ते हो तो बेशक हम (भी) तुम पर हँसेंगे जैसे तुम हँस्ते हो। (38) सो अनक़रीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अज़ाब। (39) यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कश्ती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (ग़र्क़ाबी का) हुक्म हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40) और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, बेशक अलबत्ता मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (41) और वह (कश्ती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42) उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुक्म से, सिवाए उस के जिस पर वह रहम करे, और उन के दरमियान मोज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शामिल) हो गया। (43) और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को खुश्क कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कश्ती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44) और पुकारा नूह (अ) ने अपने रब को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ

नाशाइस्ता	अ़मल	बेशक वह	तेरे घर वाले	से	नहीं	बेशक वह	ऐ नूह (अ)	उस ने फ़रमाया

فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ

से	तू हो जाए	कि	बेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	इल्म	उस का	तुझ को	ऐसी बात कि नहीं	सो मुझ से सवाल न कर

الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ

मुझे	ऐसी बात कि नहीं	मैं सवाल करूँ तुझ से	कि	तुझ से	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	46	नादान (जमा)

بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	नुक़्सान पाने वाले	से	हो जाऊं	और तू मुझ पर रहम न करे	और अगर तू न बख़्शे मुझे	इल्म	उस का

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ

और गिरोह पर	तुझ पर	और बरकतें	हमारी तरफ़ से	सलामती के साथ	उतर जाओ तुम	ऐ नूह (अ)	कहा गया

مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾

48	दर्दनाक	अ़ज़ाब	हम से	उन्हें पहुँचेगा	फिर	हम उन्हें जल्द फ़ाइदा देंगे	और कुछ गिरोह	तेरे साथ	से - जो

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

तुम	तुम उन को जानते थे	न	तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं उसे	ग़ैब की ख़बरें	से	यह

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ ع

49	परहेज़गारों के लिए	अच्छा अन्जाम	बेशक	पस सब्र करो	इस से पहले	से	तुम्हारी क़ौम	और न

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

कोई माबूद	तुम्हारा नहीं	अल्लाह	तुम इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	क़ौमे आ़द	और तरफ़

غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

उस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	ऐ मेरी क़ौम	50	झूट बान्धते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम	नहीं	उस के सिवा

اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾

51	क्या फिर तुम समझते नहीं	जिस ने मुझे पैदा किया	पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा सिला	नहीं	कोई अजर (सिला)

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ

आस्मान	वह भेजेगा	उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	और ऐ मेरी क़ौम

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

और रूगर्दानी न करो	तुम्हारि कुव्वत	तरफ़ (पर)	कुव्वत	और तुम्हें बढ़ाएगा	ज़ोर की बारिश	तुम पर

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	कोई दलील (सनद) ले कर	तू नहीं आया हमारे पास	ऐ हूद (अ)	वह बोले	52	मुज्रिम हो कर

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	ईमान लाने वाले	तेरे लिए (तुझ पर)	हम	और नहीं	तेरे कहने से	अपने माबूद	छोड़ने वाले

الوقف على فاصبر احسن والیق ١٢
معانقة ٩ عند المتأخرين ١٢

उस ने फ़रमाया, ऐ नूह (अ)!
बेशक वह तेरे घर वालों में
से नहीं, बेशक उस के अ़मल
नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात
का सवाल न कर जिस का तुझे
इल्म नहीं, बेशक मैं तुझे नसीहत
करता हूँ कि तू नादानों में से (न)
हो जाए, (46)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी
पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से
ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का
मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे
न बख़्शे और मुझ पर रह्म न करे
तो मैं नुक़्सान पाने वालों में से
हो जाऊं। (47)
कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी
तरफ़ से सलामती के साथ उतर
जाओ और बरकतें हों तुझ पर,
और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ
हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें
जल्द (दुनिया में) फ़ाइदा देंगे,
फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अ़ज़ाब
दर्दनाक। (48)
यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी
तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन
को जानते थे इस से पहले और न
तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस
सब्र करो, बेशक परहेज़गारों का
अन्जाम अच्छा है। (49)
क़ौमे आ़द की तरफ़ उन के भाई
हूद (अ) (आए), उस ने कहा
ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत
करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई
माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट बान्धते
हो (इफ़्तिरा करते हो) (50)
ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से
कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला
सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे
पैदा किया, फिर क्या तुम समझते
नहीं? (51)
और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से
बख़्शिश मांगो, फिर उसी की
तरफ़ रुजूअ़ करो (तौबा करो),
वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की
बारिश भेजेगा, और तुम्हें कुव्वत
पर कुव्वत बढ़ाएगा और मुज्रिम
हो कर रूगर्दानी न करो। (52)
वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास
कोई सनद ले कर नहीं आया, और
हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों
को तेरे कहने से, और हम तुझ पर
ईमान लाने वाले नहीं। (53)

إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ

अल्लाह	गवाह करता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	बुरी तरह	हमारा माबूद	किसी	तुझे आसेब पहुँचाया है	मगर	हम कहते हैं	नहीं

وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا

सब	सो मक्र (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में	उस के सिवा	54	तुम शरीक करते हो	उन से	बेज़ार हूँ	बेशक मैं	और तुम गवाह रहो

ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ مَّا مِن دَابَّةٍ

कोई	चलने वाला	नहीं	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह पर	मैं ने भरोसा किया	बेशक मैं	55	मुझे मोहलत न दो	फिर

إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِن

फिर अगर	56	सीधा	रास्ता	पर	मेरा रब	बेशक	उस को चोटी से	पकड़ने वाला	वह	मगर

تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا

कोई और क़ौम	मेरा रब	और क़ाइम मुक़ाम कर देगा	तुम्हारी तरफ़	उस के साथ	जो मुझे भेजा गया	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	तुम रूगर्दानी करोगे

غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

57	निगहबान	हर शै	पर	मेरा रब	बेशक	कुछ	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

अपनी	रहमत से	उस के साथ	और वह लोग जो ईमान लाए	हूद (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	और जब

وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ

अपना रब	आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	आद	और यह	58	सख़्त	अज़ाब	से	और हम ने उन्हें बचा लिया

وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأُتْبِعُوا فِي

में	और उन के पीछे लगादी गई	59	ज़िददी	हर सरकश	हुक्म	और पैरवी की	अपने रसूल	और उन्हों ने नाफ़रमानी की

هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ

अपना रब	वह मुन्किर हुए	आद	बेशक	याद रखो	और रोज़े क़ियामत	लानत	इस दुनिया

وقف لازم ع ٥

أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन का भाई	और समूद की तरफ़	60	हूद की क़ौम	आद के लिए	फटकार	याद रखो

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ

ज़मीन से	पैदा किया तुम्हें	वह - उस	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए	नहीं	अल्लाह की इबादत करो

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ

नज़दीक	मेरा रब	बेशक	रुजूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	फिर	सो उस से बख़्शिश मांगो	उस में	और बसाया तुम्हें उस ने

مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا

क्या तू हमें मना करता है	इस से क़ब्ल	मरकज़े उम्मीद	हम में (हमारे दरमियान)	तू था	ऐ सालेह (अ)	वह बोले	61	क़ुबूल करने वाला

أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾

62	क़वी शुबाह में	उस की तरफ़	तू हमें बुलाता है	उस से जो	शक में हैं	और बेशक हम	हमारे बाप दादा	उसे जिस की परस्तिश करते थे	कि हम परस्तिश करें

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेब पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा बेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मक्र (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (क़ब्ज़े में लिए हुए है) बेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और क़ाइम मुक़ाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर शै पर निगहबान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख़्त अज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्हों ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफ़रमानी की, और हर सरकश ज़िददी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े क़ियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की क़ौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख़्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, बेशक मेरा रब नज़दीक है, क़ुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से क़ब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थीं) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम क़वी शुबाह में हैं। (62)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)
और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़्सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अ़ज़ाब पकड़लेगा। (64)
फिर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)
फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रुस्वाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66)
और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)
गोया वह कभी यहां बसे ही न थे, याद रखो! बेशक क़ौमे समूद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)
और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास खुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)
फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से ख़ौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, बेशक हम क़ौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)
और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे खुशख़बरी दी इसहाक़ (अ), और इसहाक़ (अ) के बाद याक़ूब (अ) की। (71)
वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालांकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, बेशक यह एक अ़जीब बात है। (72)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ غَيْرَ

सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन	रहमत

تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِىْٓ

में	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी क़ौम	63	नुक़्सान

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

64	क़रीब (बहुत जल्द)	अ़ज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ

वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं

غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला

مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْىِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

66	ग़ालिब	क़वी	वह	तुम्हारा रब	बेशक	उस दिन की	और रुस्वाई से	अपनी रहमत से	उस के साथ

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ ۙ

67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्हों ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا

फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्किर हुए	समूद	बेशक	याद रखो	उस में	न बसे थे	गोया

لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ ع ٨/٦

सलाम	वह बोले	खुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर

قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ

उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम	उस ने कहा

لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ

तुम डरो मत	वह बोले	ख़ौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते

اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

सो हम ने उसे खुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	क़ौमे लूत	तरफ़	बेशक हम भेजे गए हैं

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ

क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याक़ूब (अ)	इसहाक़ (अ)	और से (के) बाद	इसहाक़ (अ) की

وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

72	अ़जीब	एक चीज़ (बात)	यह	बेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	और यह	बुढ़या	हालांकि मैं

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ

वह बोले	क्या तू तअ़ज्जुब करती है	से	अल्लाह का हुक्म	अल्लाह की रहमत	और उस की बरकतें	तुम पर

اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ

ऐ घर वालो	बेशक वह	ख़ूबियों वाला	बुज़ुर्गी वाला	73	फिर जब	जाता रहा	से (का)	इब्राहीम (अ)	ख़ौफ़

وَجَاۗءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ

और उस के पास आगई	ख़ुशख़बरी	हम से झगड़ने लगा	में	क़ौमे लूत	74	बेशक	इब्राहीम (अ)

لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَاۗءَ

बुर्दबार	नर्म दिल	रुजूअ़ करने वाला	75	ऐ इब्राहीम (अ)	ऐराज़ कर	इस से	बेशक यह	आचुका

اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا

तेरे रब का हुक्म	और बेशक उन	उन पर आगया	अ़ज़ाब	न टलाया जाने वाला	76	और जब

جَاۗءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا

आए	हमारे फ़रिश्ते	लूत (अ) के पास	वह ग़मगीन हुआ	उन से	और तंग हुआ	उन से	दिल में	और बोला	यह

يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَاۗءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۭ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا

बड़ा सख़्ती का दिन	77	और उस के पास आई	उस की क़ौम	दौड़ती हुई	उस की तरफ़	और उस से क़ब्ल

يَعْمَلُوْنَ السَّـيِّاٰتِ ۭ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۗءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ

वह करते थे	बुरे काम	उस ने कहा	ऐ मेरी क़ौम	यह	मेरी बेटियां	यह	निहायत पाकीज़ा

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिए	पस डरो	अल्लाह	और न रुस्वा करो मुझे	मेरे मेहमानों में	क्या नहीं	तुम से (तुम में)	एक आदमी

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ

नेक चलन	78	वह बोले	तू तो जानता है	नहीं	हमारे लिए	तेरी बेटियों में	कोई	हक़

وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً

और बेशक तू	ख़ूब जानता है	हम क्या	चाहते हैं?	79	उस ने कहा	काश कि	मेरे लिए (मेरा)	तुम पर	कोई ज़ोर

اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

या मैं पनाह लेता	तरफ़	मज़बूत पाया	80	वह बोले	ऐ लूत (अ)	बेशक हम	भेजे हुए	तुम्हारा रब

لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे	तुम तक	सो ले निकल	अपने घर वालों के साथ	कोई हिस्सा	से (का)	रात	और न मुड़ कर देखे

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۭ

तुम में से	कोई	सिवा	तुम्हारी बीवी	बेशक वह	उस को पहुँचने वाला	जो	उन को पहुँचेगा

اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾

बेशक	उन का वादा	सुबह	क्या नहीं	सुबह	नज़्दीक	81

वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की क़ुदरत पर) तअ़ज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! बेशक वह ख़ूबियों वाला, बुज़ुर्गी वाला है। (73)
फिर जब इब्राहीम (अ) का ख़ौफ़ जाता रहा, और उस के पास ख़ुशख़बरी आगई, वह हम से क़ौमे लूत (अ) (के बारे) में झगड़ने लगा। (74)
बेशक इब्राहीम (अ) बुर्दबार, नर्म दिल रुजूअ़ करने वाला। (75)
ऐ इब्राहीम (अ)! उस से एराज़ कर (यह ख़याल छोड़ दे) बेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और बेशक उन पर न टलाया जाने वाला अ़ज़ाब आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76)
और जब हमारे फ़रिशते लूत (अ) के पास आए वह उस से ग़मगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख़्ती का दिन है। (77)
और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती हुई आई, ओर वह उस से क़ब्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78)
वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (ग़र्ज़) नहीं, और बेशक तू ख़ूब जानता है हम किया चाहते हैं? (79)
उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई ज़ोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80)
वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! बेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगा, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी बीवी के सिवा कोई, बेशक जो उन को पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), बेशक उन पर (अ़ज़ाब के) वादे का वक़्त सुबह है, क्या सुबह नज़्दीक नहीं? (81)

ع ١٥ النصف ٧

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا

उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (बुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब

حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۭ

तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह ब तह	कंकर (संगरेज़े)	पत्थर

وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ

शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह	और नहीं

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ

उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ

और बेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	बेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا

पूरा करो	और ऐ मेरी क़ौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ

उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप

وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में	और न फिरो

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ

ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहबान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले	तुम हो

اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ

हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परस्तिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़

فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दबार (बाविक़ार)	अलबत्ता तू	बेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में

يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर	क्या तुम देखते हो (क्या ख़याल है)	ऐ मेरी क़ौम

رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ

जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के ख़िलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी

عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا

और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस क़द्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से

تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

88	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का बुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। **(82)**

तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। **(83)**

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और बेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। **(84)**

और ऐ मेरी क़ौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो। **(85)**

अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। **(86)**

वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) बेशक तुम ही बाविक़ार, नेक चलन हो? **(87)**

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़याल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (ख़ुद) उस के ख़िलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस क़द्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूँ। **(88)**

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ

जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी क़ौम

قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ

तुम से	क़ौमे लूत	और नहीं	क़ौमे सालेह	या	क़ौमे हूद	या	क़ौमे नूह (अ)

بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ

निहायत मेह्रबान	मेरा रब	बेशक	उस की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	और बख़्शिश मांगो	89	कुछ दूर

وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا

और बेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्हों ने कहा	90	मुहब्बत वाला

لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا

हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	ज़ईफ़ (कमज़ोर)	अपने दरमियान	तुझे देखते हैं

بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	91	ग़ालिब

وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	बेशक	पीठ पीछे	अपने से परे	और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	बेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम करते रहो	ऐ मेरी क़ौम

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا

और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अ़ज़ाब	उस पर आता है	कौन - किस?

اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا

शुऐब (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	और जब आया	93	इन्तिज़ार	तुम्हारे साथ	मैं बेशक

وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

कड़क (चिंघाड़)	उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से	अपनी रहमत से	उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَا

याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए	अपने घरो में	सो सुबह की उन्हों ने

ع ١٢ ٨ ٨ بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰي

मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए	दूरी है

بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ

فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

97	दुरुस्त	फ़िरऔन का हुक्म	और न	फ़िरऔन का हुक्म	तो उन्हों ने पैरवी की

और ऐ मेरी क़ौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अ़ज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो क़ौमे नूह (अ) या क़ौमे हूद (अ) या क़ौमे सालेह (अ) को, और क़ौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। **(89)**
और अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो, बेशक मेरा रब निहायत मेह्रबान, मुहब्बत वाला है। **(90)**
उन्हों ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और बेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। **(91)**
उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, बेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे अहाता (क़ाबू) किए हुए है। **(92)**
और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अ़ज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। **(93)**
और जब हमारा हुक्म आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। **(94)**
गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। **(95)**
और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, **(96)**
फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्हों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की और फ़िरऔन का हुक्म दुरुस्त न था। **(97)**

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۗ وَبِئْسَ

और बुरा	दोज़ख़	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी क़ौम	आगे होगा

الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ بِئْسَ

बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)

الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا

उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बस्तियों की ख़बरें	से	यह	99	उन्हें इन्आम दिया गया	इन्आम

قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपनी जानों पर	उन्हों ने ज़ुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकीं	क़ाइम (मौजूद)

فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए

مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۗ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾

101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुक्म	आया	जब	कुछ भी

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۗ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

उस की पकड़	बेशक	ज़ुल्म करते हों	और वह	बस्तियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब	पकड़	और ऐसी ही

اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۗ

आख़िरत का अज़ाब	उस के लिए है जो डरा	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	102	दर्दनाक सख़्त

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾

103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे	एक दिन	यह

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا

मगर	कोई शख़्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)	एक मुद्दत के लिए	मगर	और हम नहीं हटाते पीछे

بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ

दोज़ख़	सो में	बदबख़्त	जो लोग	पस	105	और कोई ख़ुश बख़्त	कोई बदबख़्त	सो उन में	उस की इजाज़त से

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

आस्मान (जमा)	जब तक हैं	उस मे	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीख़ना	उस में	उन के लिए

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۗ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾

107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	बेशक	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

जब तक हैं	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	ख़ुश बख़्त हुए	वह लोग जो	और जो

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۗ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98)

और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इन्आम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बस्तियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकीं हैं। (100)

और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक्म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्हों ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बस्तियों को पकड़ता है और वह ज़ुल्म करते हों, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102)

बेशक इस में अलबत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104)

जब वह दिन आएगा कोई शख़्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई ख़ुश बख़्त। (105)

पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, बेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग ख़ुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا

जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में	पस तू न रह

يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ

उन का हिस्सा	उन्हें पूरा फेर देंगे	और बेशक हम	उस से क़ब्ल	उन के बाप दादा	पूजते थे

ع ۹ ۱۴ ۹ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ

उस में	सो इख़्तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	109	घटाए बग़ैर

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ

अलबत्ता शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी	एक बात	और अगर न

مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ

उन के अ़मल	तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और बेशक	110	धोके में डालने वाला	उस से

اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ

तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम क़ाइम रहो	111	बाख़बर	जो वह करते हैं	बेशक वह

مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى

तरफ़	और न झुको	112	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक वह	और सरकशी न करो	तुम्हारे साथ

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी	ज़ुल्म किया उन्हों ने	वह जिन्हों ने

اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا

कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ़	नमाज़	और क़ाइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे	फिर	मददगार - हिमायती

مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى

नसीहत	यह	बुराइयां	मिटा देती हैं	नेकियां	बेशक	रात	से (के)

لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाया नहीं करता	अल्लाह	बेशक	और सब्र करो	114	नसीहत मानने वालों के लिए

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ

से	रोकते	साहबे ख़ैर	तुम से पहले	से	क़ौमें	से	पस क्यों न हुए

الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ

और पीछे रहे	उन से	हम ने बचा लिया	से - जो	थोड़े	मगर	ज़मीन में	फ़साद

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾

116	गुनाहगार	और वह थे	उस में	जो उन्हें दी गई	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

117	नेकोकार	जब कि वहां के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	कि हलाक कर दे	तेरा रब	और नहीं है

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफ़िर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से क़ब्ल उन के बाप दादा पूजते थे, और बेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बग़ैर पूरा फेर देंगे। (109)

और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (क़ुरआन की तरफ़) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110)

और बेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, बेशक जो वह करते हैं वह उस से बाख़बर है। (111)

सो तुम क़ाइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, बेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112)

और उन की तरफ़ न झुको जिन्हों ने ज़ुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113)

और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों तरफ़ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, बेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114)

और सब्र करो, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115)

पस तुम से पहले जो क़ौमें हुईं उन में साहबाने ख़ैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़्ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थीं, और वह गुनाहगार थे। (116)

और तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे जबकि वहां के लोग नेकोकार हों। (117)

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

और अगर	चाहता	तेरा रब	तो कर देता	लोग (जमा)	उम्मत	एक	और वह हमेशा रहेंगे

مُخْتَلِفِيْنَ ۝١١٨ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ

इख़्तिलाफ़ करते हुए	118	मगर	जो - जिस	रहम किया	तेरा रब	और उसी लिए	पैदा किया उन्हें	और पूरी हुई	बात

رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝١١٩ وَكُلًّا

तेरा रब	अलबत्ता भर दूँगा	जहन्नम	से	जिन (जमा)	और इन्सान	इकट्ठे	119	और हर बात

نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ

हम बयान करते हैं	तुझ पर	से	ख़बरें (अहवाल)	रसूल (जमा)	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	उस से	तेरा दिल	और तेरे पास आया

فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٢٠ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

में	इस	हक़	और नसीहत	और याद दिहानी	मोमिनों के लिए	120	और कह दें	वह लोग जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝١٢١ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا

ईमान नहीं लाते	तुम काम किए जाओ	पर	अपनी जगह	हम	काम करते हैं	121	और तुम इन्तिज़ार करो	हम भी

مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٢٢ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ

मुन्तज़िर (जमा)	122	और अल्लाह के पास	ग़ैब	आस्मानों	और ज़मीन	और उसी की तरफ़	बाज़गश्त	काम

كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٣ ع ١٠/١٤

तमाम	सो उस की इबादत करो	और भरोसा करो	उस पर	और नहीं	तुम्हारा रब	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	उस से जो	तुम करते हो	123

آيَاتُهَا ١١١ ❀ (١٢) سُوْرَةُ يُوْسُفَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

आयात 111 — (12) सूरह यूसुफ़ / यूसुफ़ (अ) — रुकुआत 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الۗرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا

अलिफ़ लाम रा	यह	आयतें	किताब	रौशन	1	बेशक हम ने	उसे नाज़िल किया	क़ुरआन	अ़रबी

لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ

ताकि तुम	समझो	2	हम	बयान करते हैं	तुम पर	बहुत अच्छा	क़िस्सा	इस लिए कि

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ڰ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ

हम ने भेजा	तुम्हारी तरफ़	यह	क़ुरआन	और तहक़ीक़	तू था	इस से क़ब्ल	अलबत्ता - से

الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ

बेख़बर (जमा)	3	जब	कहा	यूसुफ़ (अ)	अपने बाप से	ऐ मेरे बाप	बेशक मैं	मैं ने देखा

اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤

ग्यारह (11)	सितारे	और सूरज	और चाँद	मैं ने उन्हें देखा	अपने लिए	सिजदा करते	4

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118) मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूँगा जिन्नों और इन्सानों से इकट्ठे। (119) और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120) और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121) और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122) और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़गश्त है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1) बेशक हम ने उसे क़ुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2) हम तुम पर बहुत अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह क़ुरआन भेजा और तहक़ीक़ तुम उस से क़ब्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3) (याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! बेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिजदा करते देखा। (4)

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ

तेरे लिए	वह चाल चलेंगे	अपने भाई	पर (से)	अपना ख़्वाब	न बयान करना	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा

كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ

और उसी तरह	5	खुला	दुश्मन	इन्सान के लिए (का)	शैतान	बेशक	कोई चाल

يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ

अपनी नेमत	और मुकम्मल करेगा	बातों	अन्जाम निकालना	से	और सिखाएगा तुझे	तेरा रब	चुन लेगा तुझे

عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ

इस से पहले	तेरे बाप दादा	पर	उस ने उसे पूरा किया	जैसे	याक़ूब (अ) के घर वाले	और पर	तुझ पर

ع ٦ ١١ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ)	में	बेशक हैं	6	हिक्मत वाला	इल्म वाला	तेरा रब	बेशक	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)

وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿٧﴾ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ

ज़ियादा प्यारा	और उस का भाई	ज़रूर यूसुफ़ (अ)	उन्हों ने कहा	जब	7	पूछने वालों के लिए	निशानियां	और उस के भाई

اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ﴿٨﴾ ۚ

8	सरीह	अलबत्ता ग़लती में	हमारा बाप	बेशक	एक जमाअ़त	जब कि हम	हम से	हमारा बाप	तरफ़ (को)

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	मुँह (तवज्जुह)	तुम्हारे लिए	ख़ाली हो जाए	किसी सर ज़मीन	उसे डाल आओ	या	यूसुफ़ (अ)	मार डालो

وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا

न क़त्ल करो	उन से	एक कहने वाला	कहा	9	नेक (जमा)	लोग	उस के बाद	से	और तुम हो जाओ

يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

चलता (मुसाफ़िर)	कोई	उठाले उस को	कुआं	अन्धा (गहरा)	में	और उसे डाल आओ	यूसुफ़ (अ)

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ)	पर (बारे में)	तू हमारा भरोसा नहीं करता	क्या हुआ तुझे	ऐ हमारे अब्बा	कहने लगे	10	तुम करने वाले हो (करना ही है)	अगर

وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١١﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا

और बेशक हम	और खेले कूदे	वह खाए	कल	हमारे साथ	उसे भेज दे	11	अलबत्ता ख़ैर ख़्वाह	उस के	और बेशक हम

لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ

और मैं डरता हूँ	उसे	तुम लेजाओ	कि	ग़मगीन करता है	बेशक मुझे	उस ने कहा	12	अलबत्ता मुहाफ़िज़	उस के

اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह बोले	13	बेख़बर (जमा)	उस से	और तुम	भेड़िया	उसे खाजाए	कि

اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾

14	ज़ियांकार	उस सूरत में	बेशक हम	एक जमाअ़त	और हम	भेड़िया	उसे खा जाए

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)

और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करेगा, और याक़ूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक़ (अ) पर उसे पूरा किया, बेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)

बेशक यूसुफ़ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)

जब उन्हों ने कहा ज़रूर यूसुफ़ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअ़त (क़वी) हैं, बेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)

यूसुफ़ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तवज्जुह तुम्हारे लिए ख़ाली (ख़ास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)

कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ़ (अ) के बारे में हमारा एतिबार नहीं करता, और बेशक हम तो उस के ख़ैर ख़ाह हैं। (11)

कल उसे हमारे साथ भेजदे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और बेशक हम उस के मुहाफ़िज़ हैं। (12)

उस ने कहा बेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से बेख़बर रहो। (13)

वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़वी जमाअ़त हैं, उस सूरत में बेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِىْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

कुआं	अन्धा	में	उसे डालदें	कि	और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	वह उस को ले गए	फिर जब

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

15	न जानते होंगे	और वह	उस	उन का काम	कि तू उन्हें ज़रूर जताएगा	उस की तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا

दौड़ने गए	हम	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	16	रोते हुए	अन्धेरा पड़े	अपने बाप के पास	और वह आए

نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ

और नहीं	भेड़िया	तो उसे खागया	अपना असबाब	पास	यूसुफ़ (अ)	और हम ने छोड़ दिया	आगे निकलने

اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ الثلثة

उस की क़मीस	पर	और वह आए (लाए)	17	सच्चे	और ख़्वाह हों हम	हम पर	बावर करने वाला	तू

بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ

पस सब्र	एक बात	तुम्हारे दिल	तुम्हारे लिए	बना ली	बल्कि	उस ने कहा	झूटा	खून के साथ

جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ

एक क़ाफ़िला	और आया	18	जो तुम बयान करते हो	पर	मदद चाहता हूँ	और अल्लाह	अच्छा

فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ

एक लड़का	यह	आहा - ख़ुशी की बात	उस ने कहा	अपना डोल	पस उस ने डाला	अपना पानी भरने वाला	पस उन्हों ने भेजा

وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ

और उन्हों ने उसे बेच दिया	19	वह करते थे	उसे जो	जानने वाला	और अल्लाह	माले तिजारत समझ कर	और उसे छुपा लिया

بِثَمَنٍ ۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٢

20	बेरग़बत, बेज़ार	से	उस में	और वह थे	गिनती के	दिरहम	खोटे	दाम

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ

उसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख	अपनी औरत को	मिसर	से	उसे ख़रीदा	वह जो, जिस	और बोला

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ) को	हम ने जगह दी	और इस तरह	बेटा	हम उसे बना लें	या	हम को नफ़ा पहुँचाए	कि	शायद

فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	बातें	अन्जाम निकालना	से	और ताकि उसे सिखाएं	ज़मीन (मुल्क)	में

عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

पहुँच गया	और जब	21	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अपने काम पर

اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	नेकी करने वाले	हम जज़ा देते हैं	और उसी तरह	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे अ़ता किया	अपनी कुव्वत

फिर जब वह उसे लेगए और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डालदें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। **(15)**

और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। **(16)**

बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खागया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। **(17)**

और वह उस की क़मीस़ पर झूटा खून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। **(18)**

और (उधर) एक क़ाफ़िला आया, पस उन्हों ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा ख़ुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्हों ने उसे माले तिजारत समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह खूब जानता है जो वह करते थे। **(19)**

और उन्हों ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। **(20)**

और मिसर के जिस शख़्स ने उस को ख़रीदा उस ने कहा अपनी औरत को: इसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अन्जाम निकालना (ख़ाबों की ताबीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। **(21)**

और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। **(22)**

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ

दरवाज़े	और बन्द कर दिए	अपने आप को रोकने से	उस का घर	में	उस	वह औरत जो	और उसे फुसलाया

وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ

और रहना सहना	बहुत अच्छा	मेरा मालिक	बेशक वह	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा	आजा जल्दी कर	और बोली

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَاۤ اَنْ

कि	अगर न होता	उस का	और वह इरादा करते	उस का	और बेशक उस औरत ने इरादा किया	23	ज़ालिम (जमा)	भलाई नहीं पाते	बेशक

رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

और बेहयाई	बुराई	उस से	हम ने फेर दिया	उसी तरह	अपना रब	दलील	वह देखे

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ

और औरत ने फाड़ दी	दरवाज़ा	और दानों दौड़े	24	बरगुज़ीदा	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

क्या सज़ा?	वह कहने लगी	दरवाज़े के पास	औरत का ख़ावन्द	और दोनों को मिला	पीछे से	उस की क़मीस

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

25	दर्दनाक अज़ाब	या	क़ैद किया जाए	यह कि	सिवाए	बुराई	तेरी बीवी से	इरादा किया	जो - जिस

قَالَ هِىَ رَاوَدَتْنِىْ عَنْ نَّفْسِىْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ

उस के लोग	से	एक गवाह	और गवाही दी	मेरा नफ़्स	से	मुझे फुसलाया	उस	उस ने कहा

اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	झूटे	से	और वह	तो वह सच्ची	आगे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	अगर

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ

से	और वह	तो वह झूटी	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	और अगर

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक यह	उस ने कहा	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस़	देखा	तो जब	27	सच्चे

كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ

उस	से - को	जाने दे	यूसुफ़ (अ)	28	बड़ा	तुम्हारा फ़रेब	बेशक	तुम औरतों का फ़रेब

ع ٣ ٩ ١٣ وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

और कहा	29	ख़ताकार (जमा)	से	तू है	बेशक तू	अपने गुनाह की	और ऐ औरत बख़्शिश मांग

نِسْوَةٌ فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ

से	अपना गुलाम	फुसला रही है	अज़ीज़ की बीवी	शहर में	औरतें

نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

30	खुली	गुमराही	में	बेशक हम उसे देखती हैं	उस की मुहब्बत	जगह पकड़ गई है	उस का नफ़्स

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने
फुसलाया वह जिस के घर में थे
अपने आप को रोकने (क़ाबू रखने)
से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और
बोली आजा जल्दी कर, उस ने
कहा अल्लाह की पनाह! बेशक वह
(अज़ीज़े मिस्र) मेरा मालिक है, उस
ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा
(रखा), बेशक ज़ालिम भलाई नहीं
पाते। (23)
और बेशक उस औरत ने उस
का इरादा किया और वह भी उस
का इरादा करते, अगर यह न
होता कि वह अपने रब की दलील
देख लेते, उस तरह हम ने उस से
फेर दी बुराई और बेहयाई, बेशक
वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से
था। (24)
और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े,
और उस औरत ने उस की क़मीस
फाड़ दी पीछे से, और दोनों को
उस का ख़ाविन्द दरवाज़े के पास
मिला, वह कहने लगी उस की
क्या सज़ा जिस ने तेरी बीवी से
बुरा इरादा किया? सिवाए उस के
कि वह क़ैद किया जाए या दर्दनाक
अज़ाब दिया जाए। (25)
उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने
मुझे मेरे नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से
फुसलाया और गवाही दी उस के
लोगों में से एक गवाह ने कि अगर
उस की क़मीस आगे से फटी हुई है
तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ)
झूटों में से है। (26)
और अगर उस की क़मीस़ पीछे
से फटी हुई है तो वह झूटी है
और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से
है। (27)
तो जब उस की क़मीस पीछे से
फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह
तुम औरतों का फ़रेब है, बेशक
तुम्हारा फ़रेब बड़ा है। (28)
यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने
दे और ऐ औरत! अपने गुनाह
की बख़्शिश मांग, बेशक तू ही
ख़ताकारों में से है। (29)
और शहर में औरतों ने कहा,
अज़ीज़ की बीवी ने फुसलाया है
अपने गुलाम को उस के नफ़्स
(की हिफ़ाज़त) से, उस की मुहब्बत
(उस के दिल में) जगह पकड़ गई
है, बेशक हम उसे खुली गुमराही
में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फ़रेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्हों ने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुअ़ब (हुस्न) छागया और उन्हों ने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। **(31)** वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह क़ैद कर दिया जाएगा और बेइज़्ज़त लोगों मे से होगा। **(32)** उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे क़ैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती हैं, अगर तू ने मुझ से उन का फ़रेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से हूंगा। **(33)** सो उस के रब ने उस की दुआ कुबूल करली, पस उस से उन का फ़रेब फेर दिया, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। **(34)** फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर क़ैद में डाल दें एक मुद्दत तक। **(35)** और उस के साथ दो जवान क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए, उन में से एक ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की ताबीर बतलाइए, बेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। **(36)** उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, बेशक मैं ने उस क़ौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। **(37)**

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً

एक महफ़िल	उन के लिए	और तैयार की	उन की तरफ़	दावत भेजी	उन का फ़रेब	उस ने सुना	फिर जब

وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا

फिर जब	उन पर (उनके सामने)	निकल आ	और कहा	एक एक छुरी	उन में से	हर एक को	और दी

رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ز وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ط

बशर	नहीं यह	अल्लाह की	पनाह	और कहने लगीं	अपने हाथ	और उन्हों ने काट लिए	उन पर उस का रुअ़ब छागया	उन्हों ने उसे देखा

اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ط

उस में	तुम ने मलामत की मुझे	जो कि	सो यह वही है	वह बोली	31	बुज़ुर्ग	फ़रिश्ता	मगर	यह	नहीं

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ط وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ

मैं कहती हूँ उसे	जो	उस ने न किया	और अगर	तो उस ने बचा लिया	उस का नफ़्स	से	और मैं ने उसे फुसलाया

لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

ज़ियादा पसन्द	क़ैद	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	32	बेइज़्ज़त (जमा)	से	और अलबत्ता होजाएगा	अलबत्ता क़ैद कर दिया जाएगा

اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ

माइल हो जाऊंगा	उन का फ़रेब	मुझ से	और अगर न फेरा	उस की तरफ़	मुझे बुलाती हैं	उस से जो	मुझ को

اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ

उस से	पस फेर दिया	उस का रब	उस की (दुआ)	सो क़ुबूल कर ली	33	जाहिल (जमा)	से	और मैं हूंगा	उन की तरफ़

كَيْدَهُنَّ ط اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا

उन्हों ने देखीं	जब	बाद	उस के	उन्हें सूझा	फिर	34	जानने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक वह	उन का फ़रेब

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ ع وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ط قَالَ ع ٦ ١٤

कहा	दो जवान	क़ैद ख़ाना	उस के साथ	और दाख़िल हुए	35	एक मुद्दत तक	उसे ज़रूर क़ैद में डालें	निशानियां

اَحَدُهُمَآ اِنِّىْٓ اَرٰىنِىْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّىْٓ اَرٰىنِىْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ

ऊपर	उठाए हुए हूँ	मैं देखता हूँ	दूसरा	और कहा	शराब	निचोड़ रहा हूँ	बेशक मैं देखता हूँ	उन में से एक

رَاْسِىْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ط نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

से	बेशक हम तुझे देखते हैं	उस की ताबीर	हमें बतलाइए	उस से	परिन्दे	खा रहे हैं	रोटी	अपना सर

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا

मैं तुम्हें बतलादूंगा	मगर	जो तुम्हें दिया जाता है	खाना	तुम्हारे पास नहीं आएगा	उस ने कहा	36	नेकोकार (जमा)

بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ط ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِىْ رَبِّىْ ط اِنِّىْ تَرَكْتُ

मैं ने छोड़ा	बेशक मैं	मेरा रब	मुझे सिखाया	उस से जो	यह	वह आए तुम्हारे पास	कि	क़ब्ल	उस की ताबीर

مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	इन्कार करते हैं	वह	आख़िरत से	और वह	अल्लाह पर	जो ईमान नहीं लाते	वह क़ौम	दीन

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ

नहीं है	और याक़ूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की

لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا

हम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं	कि	हमारे लिए

وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ

ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर

السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ ط

39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद	क़ैद खाना

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ

तुम	तुम ने रख लिए हैं	नाम	मगर	उस के सिवा	तुम पूजते	नहीं

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

अल्लाह का	मगर	हुक्म	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी	नहीं	और तुम्हारे बाप दादा

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	सीधा दीन	यह	सिर्फ़ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न	उस ने हुक्म दिया

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا

तुम में से एक	जो	क़ैद ख़ाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते	अक्सर लोग

فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ

परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक	सो वह पिलाएगा

مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ الَّذِیْ فِیْهِ تَسْتَفْتِیٰنِ ﴿۴۱﴾ ط وَقَالَ

और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फ़ैसला हो चुका	उस के सर से

لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ

पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह	उस ने गुमान किया	उस से जिस

٥ ع ٧ ١٥ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ سِنِیْنَ ﴿۴۲﴾ ع

42	चन्द बरस	क़ैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना	शैतान

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْۤ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ

वह खाती हैं	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह	और कहा

سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ

ऐ मेरे सरदारो	ख़ुश्क	और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात

اَفْتُوْنِیْ فِیْ رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾

43	ताबीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	में (की)	बतलाओ मुझे ताबीर

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक़ (अ) और याक़ूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे क़ैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे क़ैद ख़ाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फ़ैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअ़ल्लिक़) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह क़ैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे ख़ुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की ताबीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देने वाले हो (ताबीर देना जानते हो)। (43)

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

44	जानने वाले	ख़्वाब (जमा)	ताबीर देना	हम	और नहीं	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ

उस की ताबीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा

فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ

गाएं	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ

और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही हैं	मोटी ताज़ी

يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ

खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	ख़ुश्क

سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا

थोड़ा जितना	मगर	उस के ख़ोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا

जो	खाजाएंगे	सख़्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो	से - जो

قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए	तुम ने रखा

عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ ۧ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ ع ٦ ١٦

मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में	एक साल

بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ

क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	क़ासिद	उस के पास आया	पस जब	उसे

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

50	वाक़िफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	बेशक	अपने हाथ	उन्हों ने काटे	वह जो	औरतें

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ

पनाह	वह बोलीं	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा

لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ

ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हम ने मालूम की	नहीं	अल्लाह की

الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ

ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह बेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने	मैं	हक़ीक़त

اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	दग़ाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और बेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	बेशक मैं

उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं जानते)। (44) और वह जो उन दोनों (में) से बचा था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45) ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें (ख़्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी ताज़ी गायों को खा रही हैं सात दुबली पतली गाएं, और सात ख़ोशे सब्ज़ हैं और दूसरे ख़ुश्क, ताकि मैं लोगों के पास लौट कर जाऊं शायद वह आगाह हों। (46) उस ने कहा तुम सात साल लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर जो तुम काटो तो उसे उस के खोशे में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो तुम उस में से खालो। (47) फिर उस के बाद आएंगे सात (7) सख़्त साल, खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिए (बचा) रखा, सिवाए उस के जो तुम थोड़ा बचाओगे। (48) फिर उस के बाद एक साल आएगा उस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी और वह उस में (रस) निचोड़ेंगे। (49) और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ, पस जब क़ासिद उस के पास आया तो उस ने कहा अपने मालिक के पास लौट जाओ और उस से पूछो उन औरतों का क्या हाल है? जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे, बेशक मेरा रब उन के फ़रेब से खूब वाक़िफ़ है। (50) बादशाह ने (उन औरतों से) कहा तुम्हारा क्या हाले (वाक़ी) था जब तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया वह बोलीं अल्लाह की पनाह! हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की (नहीं पाई) अज़ीज़े (मिस्र) की औरत बोली अब हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया और वह बेशक सच्चों में से है (सच्चा है)। (51) (यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए था) ताकि वह जान ले कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं की, और बेशक अल्लाह चलने नहीं देता दग़ाबाज़ों का फ़रेब। (52)

الجزء ١٣

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا

मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ़्स	बेशक	अपना नफ़्स	और पाक (बेकुसूर) नहीं कहता

مَا رَحِمَ رَبِّىْ ؕ اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ

ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	मेरा रब	बेशक	मेरा रब	जिस पर रहम किया

بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِىْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا

हमारे पास	आज	बेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब	अपनी ज़ात के लिए	उस को ख़ास करूँ	उस को

مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ

हिफ़ाज़त करने वाला	बेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	ख़ज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा	54	अमीन	बाविक़ार

عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ

जहां	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ़ (अ) को	हम ने क़ुदरत दी	और उसी तरह	55	इल्म वाला

يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं	चाहते वह

ع ٨ ١ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ

और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	बेहतर	और आख़िरत का बदला अलबत्ता

اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाख़िल हुए	यूसुफ़ (अ)	भाई

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِىْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ

क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उस ने	उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया	और जब

اَنِّىْٓ اُوْفِى الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِىْ

मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरीन	और मैं	पैमाना	पूरा करता हूँ	कि मैं

بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ

उस के मुतअ़ल्लिक़	हम ख़्वाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास	तुम्हारे लिए	तो कोई नाप नहीं	उस को

اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

उन की पूंजी	और तुम रख दो	अपने ख़िदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम	उस का बाप

فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	अपने लोग	तरफ़	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا

हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप	तरफ़	वह लौटे	पस जब	62	फिर आजाएं

الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	निगहबान हैं	उस के	और बेशक हम	नाप (ग़ल्ला) लाएं	हमारा भाई	हमारे साथ	पस भेज दें	नाप

और मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहता, बेशक नफ़्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)
और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (ख़िदमत) के लिए ख़ास करूँ, फिर जब (मलिक) ने उस से बात की कहा बेशक तुम आज हमारे पास बाविक़ार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)
उस ने कहा मुझे (मुक़र्रर) कर दे मुल्क के ख़ज़ानों पर, बेशक मैं हिफ़ाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)
और उसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क पर क़ुदरत दी, वह उस में जहां चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)
और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आख़िरत का बदला बेहतर है। (57)
और यूसुफ़ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाख़िल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)
और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ। (59)
फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (ग़ल्ला) नहीं मेरे पास, और न मेरे पास आना। (60)
वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से ख़्वाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)
और उस ने अपने ख़िदमतगारों को कहा उन की पूंजी (ग़ल्ले की क़ीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएं। (62)
पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (ग़ल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेजदें कि हम ग़ल्ला लाएं, और बेशक उसके निगहबान हैं। (63)

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

इस से पहले	उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़	मैं ने तुम्हारा एतिबार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअ़ल्लिक़	क्या मैं तुम्हारा एतिबार करूँ	उस ने कहा

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا

उन्हों ने खोला	और जब	64	तमाम मेह्रबानों से बड़ा मेह्रबानी करने वाला	और वह	निगहबान	बेहतर	सो अल्लाह

مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا

ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्हों ने पाई	अपना सामान

مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا

अपना भाई	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने घर	और हम ग़ल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह	क्या चाहते हैं हम

وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ

हरगिज़ न भेजूँगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (ग़ल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ	और ज़ियादा लेंगे

مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ

यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

66	निगहबान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह	कहा उस ने	अपना पुख़्ता अ़हद	उन्हों ने उसे दिया	फिर जब	तुम्हें	घेर लिया जाए

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ

से	और दाख़िल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाख़िल होना	ऐ मेरे बेटो	और उस ने कहा

اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह	से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का	सिवा	हुक्म	नहीं

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक्म दिया	जहां से	वह दाख़िल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ

दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह	से (की)	उन से (उन्हें)	वह बचा सकता

يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और बेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याक़ूब (अ)

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ ع وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ ٨ ع ١١ ٢

अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाख़िल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग

اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	बेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

उस ने कहा मैं उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिबार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा एतिबार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहबान है, और वह तमाम मेह्रबानों से बड़ा मेह्रबानी करने वाला है। (64)

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो उन्हों ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाएं हैं) थोड़ा ग़ल्ला है। (65)

उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तमु मुझे अल्लाह का पुख़्ता अ़हद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्हों ने उसे (याक़ूब अ) को पुख़्ता अ़हद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66)

और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाख़िल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67)

और जब वह दाख़िल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याक़ूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और बेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68)

और जब वह यूसुफ़ के पास दाख़िल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा बेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ

अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब

ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿٧٠﴾

70	अलबत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ क़ाफ़ले वालो	मुनादी करने वाला	एलान किया	फिर

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾ قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ

पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्हों ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्हों ने मुँह किया	वह बोले

الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾

72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए	बादशाह

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ

ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम खूब जानते हो	अल्लाह की क़सम	वह बोले

وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾

74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्हों ने कहा	73	चोर (जमा)	और हम नहीं

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي

हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा	कहने लगे वह

الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ

फिर	अपना भाई	ख़रजी (बोरा)	पहले	उन की ख़रजियों (बोरों) से	पस शुरूअ किया	75	ज़ालिमों को

اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۚ كَذَٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ

न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला

لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ نَرْفَعُ

हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता

دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ ۗ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوا إِنْ

अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम	जो - जिस	दरजे

يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ

अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से क़ब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया

وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

खूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया

بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا

बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77	जो तुम बयान करते हो

كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾

78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का

फिर जब उन का सामान तैयार
कर दिया अपने भाई के सामान में
(पानी) पीने का प्याला रखदिया,
फिर एक मुनादी करने वाले न
एलान किया ऐ क़ाफ़ले वालो! तुम
अलबत्ता चोर हो। (70)
वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले,
क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)
उन्हों ने कहा, हम बादशाह का
पैमाना नहीं पाते, और जो कोई
वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट
का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा)
और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम
खूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं
आए कि मुल्क में फ़साद करें, और
हम चोर नहीं। (73)
फिर उन्हों ने कहा अगर तुम झूटे
हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या
सज़ा है? (74)
कहने लगे उस की सज़ा यह है कि
पाया जाए जिस के सामान में पस
वही है उस का बदला, उस तरह
हम ज़ालिमों को साज़ा देते हैं। (75)
पस उन की बोरों से (तलाश
करना) शुरूअ किया अपने भाई के
बोरे से पहले, फिर उस को अपने
भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी
तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए
तदबीर की वह बादशाह के दीन में
(क़ानून के मुताबिक़) अपने भाई
को न ले सकता था मगर यह कि
अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशिय्यत
हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस
के हम चाहें, और हर साहबे इल्म
के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)
बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी
कि थी उस से क़ब्ल उस के भाई
ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात
को) अपने दिल में छुपाया और
उन पर ज़ाहिर न किया, कहा
तुम बदतर दरजे में हो और तुम
जो बयान करते हो अल्लाह खूब
जानता है। (77)
कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस
का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस
उस की जगह हम में से एक को
रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान
करने वालों में से है। (78)

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ

उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा

اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ ع ٩ ١١ ٣

मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	बेशक हम जब

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ

तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा

مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ

पस हरगिज़ न	यूसुफ़ (अ)	बारे में	जो तक़्सीर की तुम ने	और उस से क़ब्ल	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद

اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ

और वह	हुक्म दे (तदबीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन	टलूँगा

خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ

बेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला

ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا

और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा

لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا

उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहबान	ग़ैब के

وَالْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ

बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और बेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस	और क़ाफ़ला

سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ

अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है

اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى

और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह	सब को	उन्हें	कि मेरे पास ले आए

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ

से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से

الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى

यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की क़सम	वह बोले	84	घुट रहा था	पस वह	ग़म

تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا

बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ़	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार	तुम हो जाओ

بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म	अपनी बेक़रारी

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों से होंगे, (79)

फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख़्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक़्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूँगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदबीर निकाले, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (80)

अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ़ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहबान (बाख़बर) न थे। (81)

और पूछ लें उस बस्ति से जिस में हम थे, और उस क़ाफ़ले से जिस में हम आए हैं, और बेशक हम सच्चे हैं। (82)

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। (83)

और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़ब्त कर रहा था)। (84)

वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। (85)

उस ने कहा मैं तो अपनी बेक़रारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (86)

يٰبَنِىَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا

और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो

مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	बेशक वह	अल्लाह की रहमत	से

الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا

हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्हों ने कहा	उस पर - सामने	वह दाख़िल हुए	फिर जब	87	काफ़िर (जमा)

وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

नाप (ग़ल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाक़िस)	पूंजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख़्ती	और हमारे घर

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ

कहा	88	सदक़ा करने वाले	जज़ा देता है	बेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदक़ा करें

هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾

89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें ख़बर है

قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِىْ ز

मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ़ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ़ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले

قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	बेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है

لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

तुझे पसन्द किया (फ़ज़ीलत दी)	अल्लाह की क़सम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ

तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और बेशक	हम पर	अल्लाह

الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ اِذْهَبُوْا

तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे	आज

بِقَمِيْصِىْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِىْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج

बीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी क़मीस ले कर

ع ۱۰ ۱۲ ۲ وَاْتُوْنِىْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ

क़ाफ़ला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)

قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ

कि	अगर न	यूसुफ़	हवा (ख़ुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	बेशक मैं	उन का बाप	कहा

الربع تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۵﴾

95	पुराना	अपना वहम	में	बेशक तू	अल्लाह की क़सम	वह कहने लगे	94	मुझे बहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ़ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87)

फिर जब वह उस के सामने दाख़िल हुए उन्हों ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख़्ती, और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (ग़ल्ला) दें, और हम पर सदक़ा करें, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को जज़ा देता है। (88)

(यूसुफ़ अ) ने कहा क्या तुम्हें ख़बर है? तुम ने यूसुफ़ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89)

वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ़ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, बेशक जो डरता है और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90)

कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत दी है और हम बेशक ख़ताकार थे। (91)

उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। (92)

तुम मेरी यह क़मीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93)

और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, बेशक मैं यूसुफ़ (अ) की ख़ुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा बहक गया है। (94)

वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! बेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया और उस ने कुर्ता उस (याकूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (बीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)
वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख़्शिश मांगिए हमारे गुनाहों की, बेशक हम ख़ताकार थे। (97)
उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश मांगूंगा, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)
फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्र में दिलजमई के साथ दाख़िल हो। (99)
और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊंचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबीर, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया जब मुझे क़ैद ख़ाने से निकाला, और तुम सब को गाऊं से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदबीर करने वाला है, बेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)
ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अ़ता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमांबरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)
यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्हों ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कुर्ता) डाला	ख़ुशख़बरी देने वाला	आया	कि	फिर जब

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	(तरफ़) से	बेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	बोला

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

97	ख़ताकार (जमा)	थे	बेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख़्शिश मांग	ऐ हमारे बाप	वह बोले

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

98	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वह	बेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए	मैं बख़्शिश मांगूंगा	जल्द	उस ने कहा

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो	और कहा	अपने माँ बाप	उस ने ठिकाना दिया अपने पास	यूसुफ़ (अ) पर (पास)	वह दाख़िल हुए	फिर जब

مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ

तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊंचा बिठाया	99	अम्न (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्र

وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَاىَ

मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए

مِنْ قَبْلُ ۡ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّىْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِىْٓ اِذْ اَخْرَجَنِىْ

मुझे निकाला	जब	मुझ पर	और बेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले

مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ

झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊं	से	तुम सब को	और ले आया	क़ैद ख़ाना	से

الشَّيْطٰنُ بَيْنِىْ وَبَيْنَ اِخْوَتِىْ ۭ اِنَّ رَبِّىْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۭ

जिस के लिए चाहे	उमदा तदबीर करता है	मेरा रब	बेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ

मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अ़ता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह

وَعَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया

اَنْتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ

और मुझे मिला	फ़रमांबरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आख़िरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ

तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्हों ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे

وَمَآ اَكۡثَرُ النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ

उस पर	और तुम नहीं मांगते उन से	103	ईमान लाने वाले	तुम चाहो	अगरचे	अक्सर लोग	और नहीं

ع ١١ / ١١ / ٥

مِنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ اٰيَةٍ

निशानियां	और कितनी ही	104	सारे जहानों के लिए	नसीहत	मगर	यह नहीं	कोई अजर

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ يَمُرُّوۡنَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ عَنۡهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿١٠٥﴾

105	मुँह फेरने वाले	उन से	लेकिन वह	उन पर	वह गुज़रते हैं	और ज़मीन	आस्मानों में

وَمَا يُؤۡمِنُ اَكۡثَرُهُمۡ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمۡ مُّشۡرِكُوۡنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوۡۤا

पस किया वह बेख़ौफ़ हो गए	106	मुश्रिक (जमा)	और वह	मगर	अल्लाह पर	उन में अक्सर	और ईमान नहीं लाते

اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ غَاشِيَةٌ مِّنۡ عَذَابِ اللّٰهِ اَوۡ تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً

अचानक	घड़ी (क़ियामत)	उन पर आजाए	या	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	छा जाने वाली (आफ़त)	कि उन पर आए

وقف النبی ﷺ

وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿١٠٧﴾ قُلۡ هٰذِهٖ سَبِيۡلِىۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ۚ قف

अल्लाह की तरफ़	मैं बुलाता हूँ	मेरा रास्ता	यह	आप कह दें	107	उन्हें ख़बर न हो	और वह

عَلٰى بَصِيۡرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىۡ ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿١٠٨﴾

108	मुश्रिक (जमा)	से	और मैं नहीं	और अल्लाह पाक है	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	मैं	दानाई पर (समझ बूझ के मुताबिक़)

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰى ؕ

बस्तियों वाले	से	उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर-सिर्फ़	तुम से पहले	और हम ने नहीं भेजा

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	अन्जाम	हुआ	कैसा - क्या	पस वह देखते	ज़मीन (मुल्क) में	क्या पस उन्हों ने सैर नहीं की

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٠٩﴾

109	पस क्या तुम समझते नहीं	जिन्हों ने परहेज़ किया	उन के लिए जो	बेहतर	और अलबत्ता आख़िरत का घर	उन से पहले

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ

उन के पास आई	उन से झूट कहा गया	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	रसूल (जमा)	मायूस होने लगे	जब	यहां तक

نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿١١٠﴾

110	मुज्रिम (जमा)	क़ौम	से	हमारा अ़ज़ाब	और नहीं फेरा जाता	हम ने जिन्हें चाहा	पस बचा दिए गए	हमारी मदद

لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ

नहीं है	अक़्लमन्दों के लिए	इब्रत (नसीहत)	उन के क़िस्से	में	है	अलबत्ता

حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ

उस से (अपने से) पहली	वह जो	तसदीक़	और लेकिन (बल्कि)	बनाई हुई	बात

ع ١٢ / ٧ / ٦

وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿١١١﴾

111	जो ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	हर बात	और तफ़सील (बयान)

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्रिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेख़ौफ़ हो गए कि उन पर अल्लाह के अ़ज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें ख़बर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्रिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले बस्तियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्हों ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ? और अलबत्ता आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्हों ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्हों ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अ़ज़ाब नहीं फेरा जाता मुज्रिमों की क़ौम से। (110)

अलबत्ता उन के क़िस्सों में अक़्लमन्दों के लिए इब्रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक़ है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ-लाम-मीम-रा - यह किताब (क़ुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया हक़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बग़ैर तुम देखते हो उसे, फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुद्दत मुक़र्ररा तक, अल्लाह काम की तदबीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लो। (2) और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाईं) और हर क़िस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो क़िस्म के (तल्ख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3) और ज़मीन में पास पास क़त्आत हैं, और बाग़ात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाख़ों वाली और बग़ैर दो शाख़ों की, एक ही पानी से (हालांकि) सैराब की जाती हैं, और हम बेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाइक़े में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (4) और अगर तुम तअ़ज्जुब करो तो उन का यह कहना अजब हैः जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनों में तौक़ होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

آيَاتُهَا ٤٣ ❀ سُوْرَةُ الرَّعْدِ (١٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6	(13) सूरतुर रअ़्द गरज	आयात 43

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ

हक़	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम मीम रा

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)

بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ

और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अ़र्श पर	क़रार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बग़ैर

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदबीर करता है	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	चलता है	हर एक

بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝٢ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا

उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यक़ीन कर लो	अपना रब	मिलने का

رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

दो, दो क़िस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)

يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٣

3	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ

और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बाग़ात	पास पास	क़ित्आत	ज़मीन	और में

صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا

उन का एक	और हम फ़ज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाख़ों वाली	और बग़ैर	एक जड़ से दो शाख़ों वाली

عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٤

4	अ़क़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	ज़ाइक़ा	में	दूसरा	पर

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ

ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अ़जब	तुम तअ़ज्जुब करो	और अगर

جَدِيْدٍ ڛ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ

में	तौक़ (जमा)	और वही हैं	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई

اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥

5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही हैं	उन की गर्दनों

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ

से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अ़ज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى

पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	सज़ाएं	उन से क़ब्ल

ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۶﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अ़ज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	उन का ज़ुल्म

لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرٌ

डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी

ع وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿۷﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ

सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7	हादी	और हर क़ौम के लिए

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ

जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है	और जो	रहम (जमा)

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ

बात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतबा	सब से बड़ा	और ज़ाहिर

وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾

10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो	पुकार कर - उस को	और जो

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ

वह उसकी हिफ़ाज़त करते हैं	और उस के पीछे	उस (इन्सान) के आगे से	पहरेदार	उस के

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا

जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी क़ौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह	बेशक	अल्लाह का हुक्म	से

بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी क़ौम से	इरादा करता है अल्लाह	और जब	अपने दिलों में (अपनी हालत)

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا

उम्मीद दिलाने को	डराने को	बिजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11	कोई मददगार	उस के सिवा

وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	उस की तारीफ़ के साथ	गरज	और पाकीज़गी बयान करती है	12	बोझल	बादल	और उठाता है

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ

जिस	उसे	फिर गिराता है	गरजने वाली बिजलियां	और वह भेजता है	उस के डर से	से

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾

13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ते हैं	और वह	वह चाहता है

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अ़ज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल (इब्रत नाक) सज़ाएं, और बेशक तुम्हारा रब उनके ज़ुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और बेशक तुम्हारा रब सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतबा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता बात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, बेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह ख़ुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते उस के डर से (उस की तस्बीह करते हैं) और वह गरजने वाली बिजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ

वह जवाब नहीं देते	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	और जिन को	हक़	पुकारना	उस को

لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَاۗءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

वह	और नहीं	उस के मुँह तक	ताकि पहुँच जाए	पानी की तरफ़	अपनी हथेलियां	जैसे फैला दे	मगर	कुछ भी	उन को

بِبَالِغِهٖ ۭ وَمَا دُعَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝١٤ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ

और अल्लाह ही को सिजदा करता है	14	गुमराही	में	सिवाए	काफ़िर (जमा)	पुकार	और नहीं	उस तक पहुँचने वाला

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ

सुब्ह	और उन के साए	या नाख़ुशी से	ख़ुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में	जो

وَالْاٰصَالِ ۝١٥ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۭ

अल्लाह	कह दें	और ज़मीन	आस्मानों का रब	कौन	पूछें	15	और शाम

السجدة ٢

قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا

कुछ नफ़ा	अपनी जानों के लिए	वह बस नहीं रखते	हिमायती	उस के सिवा	तो क्या तुम बनाते हो	कह दें

وَّلَا ضَرًّا ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ اَمْ هَلْ

क्या	या	और बीना (देखने वाला)	नाबीना (अन्धा)	बराबर होता है	क्या	कह दें	और न नुक़्सान

تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ڬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ خَلَقُوْا

उन्हों ने पैदा किया है	शरीक	अल्लाह के लिए	वह बनाते हैं	क्या	और उजाला	अन्धेरे (जमा)	बराबर हो जाएगा

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	कह दें	उन पर	पैदाइश	तो मुशतबह होगई	उस के पैदा करने की तरह

وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَسَالَتْ

सो बह निकले	पानी	आस्मानों से	उस ने उतारा	16	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	यकता	और वह

اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۭ وَمِمَّا

और उस से जो	फूला हुआ	झाग	नाला	फिर उठा लाया	अपने अपने अन्दाज़े से	नदी नाले

يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاۗءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ

झाग	असबाब	या	ज़ेवर	हासिल करने (बनाने) को	आग में	उस पर	तपाए हैं

مِّثْلُهٗ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ڛ فَاَمَّا

सो	और बातिल	हक़	अल्लाह	बयान करता है	उसी तरह	उसी जैसा

الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاۗءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ

लोग	जो नफ़ा पहुँचाता है	और लेकिन	सूख कर	दूर हो जाता है	झाग

فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝١٧ۭ

17	मिसालें	अल्लाह	बयान करता है	इसी तरह	ज़मीन में	तो ठहरा रहता है

उस को पुकारना हक़ है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ़ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुँह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14) और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, ख़ुशी से या न ख़ुशी से, और सुबह ओ शाम उन के साए (भी)। (15) आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़्सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्हों ने (मख़लूक़) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। (16) उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से वह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं ज़ेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (ज़ाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है (बाक़ी रहता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (17)

وقف النبی ﷺ

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ۭ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ

यह कि	अगर	उस का (हुक्म)	न माना	और जिन लोगों ने	भलाई	अपने रब (का हुक्म)	उन्हों ने मान लिया	उन के लिए जिन्हों ने

لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ

उन के लिए	वही हैं	उस को	कि फ़िदये में देदें	उस के साथ	और उस जैसा	सब	जो कुछ ज़मीन में	उन के लिए (उन का)

ع ٢/١ ٨ النصف

سُوْۗءُ الْحِسَابِ ڏ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

जानता है	पस क्या जो	18	बिछाना (जगह)	और बुरा	जहन्नम	और उन का ठिकाना	हिसाब	बुरा

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۭ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

समझते हैं	इस के सिवा नहीं	अन्धा	वह	उस जैसा	हक़	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	कि जो

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾

20	पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार	और वह नहीं तोड़ते	अल्लाह का अ़हद	पूरा करते हैं	और वह जो कि	19	अ़क़्ल वाले

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

अपना रब	और वह डरते हैं	जोड़ा जाए	कि	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	जोड़े रखते हैं	और वह जो कि

وَيَخَافُوْنَ سُوْۗءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَاۗءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ

अपना रब	ख़ुशी	हासिल करने के लिए	उन्हों ने सब्र किया	और वह लोग जो	21	हिसाब	बुरा	और ख़ौफ़ खाते हैं

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

और टाल देते हैं	और ज़ाहिर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च किया	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ

हमेशगी	बाग़ात	22	आख़िरत का घर	उन के लिए	वही हैं	बुराई	नेकी से

يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ

और फ़रिश्ते	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से (में)	नेक हुए	और जो	वह उस में दाख़िल होंगे

يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

पस ख़ूब	तुम ने सब्र किया	इस लिए कि	तुम पर	सलामती	23	हर दरवाज़ा	से	उन पर	दाख़िल होंगे

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ

उस को पुख़्ता करना	उस के बाद	अल्लाह का अ़हद	तोड़ते हैं	और वह लोग जो	24	आख़िरत का घर

وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ

यही हैं	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं	कि वह जोड़ा जाए	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	और वह काटते हैं

لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ

और तंग करता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	कुशादा करता है	अल्लाह	25	बुरा घर	और उनके लिए	लानत	उन के लिए

ع ٣/٨ ٩

وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

26	मताअ़ हक़ीर	मगर (सिर्फ़)	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	दुनिया	ज़िन्दगी से	और वह ख़ुश हैं

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में देदें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18)
क्या जो शख़्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक़ है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अ़क़्ल वाले ही समझते हैं। (19)
वह जो कि अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं, और पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार नहीं तोड़ते। (20)
और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21)
और जिन लोगों ने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से ख़र्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही हैं जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22)
हमेशगी के बाग़ात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की बीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23)
(यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस ख़ूब है आख़िरत का घर। (24)
और जो लोग अल्लाह का अ़हद उस को पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25)
अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ़ हक़ीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ़ करे। **(27)**
जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। **(28)**
जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, उन के लिए ख़ुशहाली है और अच्छा ठिकाना। **(29)**
इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहदें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ़ है (रुजूअ़ करता हूँ)। **(30)**
और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे बात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुंचती रहेगी, या उतरेगी क़रीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। **(31)**
और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अ़ज़ाब) कैसा था? **(32)**
पस क्या जो हर शख़्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहदें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी) बात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। **(33)**

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आप कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	उतारी गई	क्यों न	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ٢٧ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ

और इत्मीनान पाते हैं	ईमान लाए	जो लोग	27	रुजूअ़ करे	जो	अपनी तरफ़	और राह दिखाता है	जिस को चाहता है	गुमराह करता है

قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ٢٨ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	28	दिल (जमा)	इत्मीनान पाते हैं	अल्लाह के ज़िक्र से	याद रखो	अल्लाह के ज़िक्र से	जिन के दिल

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ٢٩ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ

में	हम ने तुम्हें भेजा	इसी तरह	29	ठिकाना	और अच्छा	उन के लिए	ख़ुशहाली	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए

اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	वह जो कि	उन पर (उन को)	ताकि तुम पढ़ो	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी हैं	उस उम्मत

وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

और उस की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	मेरा रब	वह	कह दें	रहमान के	मुन्किर होते हैं	और वह

مَتَابِ ٣٠ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ

ज़मीन	उस से	फट जाती	या	पहाड़	उस से	चलाए जाते	ऐसा कुरआन	यह के (होता)	और अगर	30	मेरा रुजूअ़

اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۭ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْــــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

कि	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ	तमाम	काम	अल्लाह के लिए	बल्कि	मुर्दे	उस से	या बात करने लगते

لَّوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ

उन्हें पहुँचेगी	वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	और हमेशा	सब	लोग	तो हिदायत दे देता	अगर अल्लाह चाहता

بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का वादा	आजाए	यहां तक	उन के घर	से (के)	क़रीब	या उतरेगी	सख़्त मुसीबत	उस के बदले जो उन्हों ने किया (आमाल)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ٣١ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ ع ٥ ١٠

तो मैं ने ढील दी	तुम से पहले	रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता	31	वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता	बेशक अल्लाह

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ٣٢ اَفَمَنْ هُوَ قَاۗىِٕمٌ

निगरान	वह	पस क्या जो	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की पकड़ की	फिर	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلٰي كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ تُنَبِّــــُٔـوْنَهٗ

तुम उसे बतलाते हो	या	उन के नाम लो	आप कहदें	शरीक (जमा)	अल्लाह के	और उन्हों ने बना लिए	जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	पर

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۭ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया	बल्कि ख़ुशनुमा बना दिए गए	बात	से	महज़ ज़ाहिरी	या	ज़मीन में	उस के इल्म में नहीं	वह जो

مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ٣٣

33	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	और जो - जिस	राह	से	और वह रोक दिए गए	उन के फ़रेब

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	निहायत तक्लीफ़देह	और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	अ़ज़ाब	उन के लिए

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ

परहेज़गार (जमा)	वादा किया गया	और जो कि	जन्नत	कैफ़ियत	34	कोई बचाने वाला	अल्लाह से	उन के लिए

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى

अन्जाम	यह	और उस का साया	दाइम	उस के फल	नहरें	उस के नीचे	बहती हैं

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

हम ने उन्हें दी	और वह लोग जो	35	जहन्नम	काफ़िरों	और अन्जाम	परहेज़गारों (जमा)

الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ

इन्कार करते हैं	जो	गिरोह	और बाज़	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	उस से जो	वह ख़ुश होते हैं	किताब

بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और न शरीक ठहराऊं	अल्लाह	मैं इबादत करूँ	कि	मुझे हुक्म दिया गया	इस के सिवा नहीं	आप कहदें	उस की बाज़

اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ

और अगर	अरबी ज़बान में	हुक्म	हम ने उस को नाज़िल किया	और उसी तरह	36	मेरा ठिकाना	और उसी की तरफ़	मैं बुलाता हूँ

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	तेरे लिए नहीं	इल्म (वहि)	जब कि तेरे पास आगया	बाद	उन की ख़्वाहिशात	तू ने पैरवी की

ع ٥/٦ ١١ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता हम ने भेजे	37	और न कोई बचाने वाला	कोई हिमायती

وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ

लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और नहीं हुआ	और औलाद	बीवियां	उन को	और हम ने दी

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

जो वह चाहता है	मिटा देता है अल्लाह	38	एक तहरीर	हर वादे के लिए	अल्लाह की इजाज़त से	बग़ैर	कोई निशानी

وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

कुछ हिस्सा	तुम्हें दिखा दें हम	और अगर	39	अस्ल किताब (लौहे महफ़ूज़)	उस के पास	और बाक़ी रखता है

الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

और हम पर (हमारा काम)	पहुँचाना	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	तो इस के सिवा नहीं	हम तुम्हें वफ़ात दें	या	हम ने उन से वादा किया	वह जो कि

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ

उस के किनारे	से	उस को घटाते	ज़मीन	कि हम चले आते हैं	क्या वह नहीं देखते	40	हिसाब लेना

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۭ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

41	हिसाब लेने वाला	जल्द	और वह	उस के हुक्म को	कोई पीछे डालने वाला नहीं	हुक्म फ़रमाता है	और अल्लाह

उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब है, अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब निहायत तक्लीफ़देह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। **(34)**
और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अन्जाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। **(35)**
और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से ख़ुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज़ (बातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहदें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊं, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। **(36)**
और उसी तरह हम ने इस (क़ुरआन) को अरबी ज़बान में हुक्म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। **(37)**
और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। **(38)**
और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाक़ी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफ़ूज़ है। **(39)**
और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अ़ज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। **(40)**
क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है, कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। **(41)**

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ط يَعْلَمُ

वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चलीं

مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ط وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

42	आक़िबत का घर	किस के लिए	काफ़िर	और अ़नक़रीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख़्स)	जो कमाता है

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ط قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ

गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहदें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ لا وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ع ﴿٤٣﴾ ع ٦ ١٢

43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (١٤) سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 — (14) सूरह इब्राहीम — आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ قف كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब	अलिफ़ लाम रा

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا

जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	ख़ूबियों वाला	ज़बरदस्त	रास्ता	तरफ़	उन का रब	हुक्म से

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿٢﴾

2	सख़्त	अ़ज़ाब	से	काफ़िरों के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

اِلَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

से	और रोकते हैं	आख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾

3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कजी	और उस में ढून्डते हैं	अल्लाह का रास्ता

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ط فَيُضِلُّ اللّٰهُ

फिर गुमराह करता है अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर	कोई रसूल	और हम ने नहीं भेजा

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ط اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾

5	शुक्र गुज़ार	हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह के दिन	और याद दिला उन्हें

और जो उन से पहले थे उन्हों ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख़्स, और अ़नक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िबत का घर किस के लिए है। **(42)** और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफ़ी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। **(43)**

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरों से नूर की तरफ़, ग़ालिब, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, **(1)** उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब से ख़राबी है। **(2)** जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं आख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। **(3)** और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहकाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(4)** और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआत के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। **(5)**

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी क़ौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब

اِذْ اَنْجٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अ़ज़ाब	वह तुम्हें पहुँचाते थे	फ़िरऔ़न की क़ौम	से	जब उस ने नजात दी तुम्हें

وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और ज़ुबह करते थे

ع ٦ ١٣ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

तुम शुक्र करोगे	अलबत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब	से

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ

और कहा	7	बड़ा सख़्त	मेरा अ़ज़ाब	बेशक	तुम ने नाशुक्री की	और अलबत्ता अगर	तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा

مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुक्री करोगे	अगर	मूसा (अ)

ع ٦ عند المتقدمين ١٢ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٨﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ لَا يَعْلَمُهُمْ

उन की ख़बर नहीं	उन के बाद	और वह जो	और समूद	और आ़द	नूह (अ) की क़ौम

اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ

अपने हाथ	तो उन्हों ने लौटाए	निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए

فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	बेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में

الثلثة وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ

उन के रसूल	कहा	9	तरद्दुद में डालते हुए	उस की तरफ़	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो	शक	अलबत्ता में	और बेशक हम

اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाता है	और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुबाह - शक	क्या अल्लाह में

لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

एक मुद्दत मुक़र्ररा	तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़्शदे तुम्हें

قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	बशर	सिर्फ़	तुम	नहीं	वह बोले

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

10	रौशन	दलील, मोजिज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे	उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न की क़ौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अ़ज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे, और तुम्हारी औ़रतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (6)

और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है। (7)

और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुक्री करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। (8)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिए) क़ौमे नूह (अ), आ़द और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ़ बुलाते हो हम शक में हैं तरद्दुद में डालते हुए। (9)

उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ़ हम जैसे बशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

उन के रसूलों ने उन से कहा (बेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे बशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के बग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोजिज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11)

और हमे किया हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12)

और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दीन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13)

और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। (14)

और उन्हों ने (अंबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15)

उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16)

वह उसे घूंट घूंट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। (17)

उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा लेगई) जो उन्हों ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठिक ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़्लूक़। (19)

और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ

एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	बशर	सिर्फ़	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ

कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَآ

हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (बग़ैर)

اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ

जो	पर	और हम ज़रूर सब्र करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दीं	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें

اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٢ ١٤

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमे ईज़ा देते हो

لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ

ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद करदेंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ़	तो वहि भेजी

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا

और उन्हों ने फ़तह मांगी	14	वईद (एलाने अज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के बाद

وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहन्नम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूंट घूंट पिएगा	16	पीप वाला

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ

मिसाल	17	सख़्त	अज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ़

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ

आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अमल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए

لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्हों ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें लेजाए	वह चाहे	अगर	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मख़्लूक़	और लाए

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا

बेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी क़द्र	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे	तुम्हारे

قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ

या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर	वह कहेंगे

ع ٣ ٩ ١٥ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ؏ (٢١) وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ

अमर	फ़ैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	नहीं हमारे लिए	हम सब्र करें

اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ

था	और न	फिर मैं ने उस के ख़िलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	बेशक अल्लाह

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ

मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ

फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम

اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	बेशक	उस से क़ब्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	बेशक मैं इन्कार करता हूँ

عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٢٢) وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अ़ज़ाब

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ

अपना रब	हुक्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (٢٣) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا

मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुह्फ़ा-ए-मुलाक़ात

كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ (٢٤)

24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	पाकीज़ा	जैसे दरख़्त	कलिमाए तय्यबा (पाक बात)

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ

मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रब	हुक्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٢٥) وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ

नापाक बात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (٢٦)

26	कुछ भी क़रार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, बेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी क़द्र अल्लाह का अ़ज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सब्र करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21)

और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फ़ैसला हो गया शैतान बोला बेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के ख़िलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, बेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़ब्ल मुझे शरीक बनाया, बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (22)

और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रब के हुक्म से, उस में उन का तुह्फ़ाए मुलाक़ात "सलाम" है। (23)

क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक बात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24)

वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रब के हुक्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (25)

और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी क़रार नहीं। (26)

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है

وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙۗ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؏ ٢٧ ع ٦ ١٦

27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आख़िरत में

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ

अपनी क़ौम	और उतारा	नाशुक्री से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्हों ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा

دَارَ الْبَوَارِ ۙ ٢٨ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ٢٩ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	28	तबाही का घर

اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ

तुम्हारा लौटना	फिर बेशक	फ़ाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शरीक

اِلَى النَّارِ ٣٠ قُلْ لِّعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहन्नम	तरफ़

وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ

कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिर	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च करें

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ٣١ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ

उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ

दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से

بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ٣٢ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	32	नहरें (नदियां)	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	उस के हुक्म से

دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ٣٣ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا

जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	एक दस्तूर पर चलने वाले

سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ

इन्सान	बेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगो तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी

لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ٣٤ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ ع ٥ ١٧

बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	बेशक बड़ा ज़ालिम

هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ٣٥

35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अम्न की जगह	यह शहर

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। **(27)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल दिया, और अपनी क़ौम को उतारा तबाही के घर में। **(28)**

वह जहन्नम है वह उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। **(29)**

और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गश्त) जहन्नम की तरफ़ है। **(30)**

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ क़ाइम करें और उस में से ख़र्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। **(31)**

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क़, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए नहरों को। **(32)**

और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, **(33)**

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगो तुम उसे शुमार में न लासकोगे, बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। **(34)**

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अम्न की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगें। **(35)**

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ

पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	बेशक वह	ऐ मेरे रब

تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	तो बेशक तू	मेरी नाफ़रमानी की	और जो - जिस	मुझ से	बेशक वह	मेरी पैरवी की

رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ

बग़ैर	मैदान	अपनी ओलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	बेशक मैं	ऐ हमारे रब	36	निहायत मेहरबान

ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

ताकि क़ाइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नज़्दीक	खेती वाली

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़

وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिज़्क़ दे

اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है	बेशक तू

مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	38	आस्मान	में	और न	ज़मीन मे	चीज़	से - कोई

وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ

अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	बेशक	और इस्हाक़ (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - में	बख़्शा मुझे

الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ

मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	क़ाइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब	39	दुआ

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ

और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और क़ुबूल फ़रमा	ऐ हमारे रब

ع ٦ ١٨ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ

तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	क़ाइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को

اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ڛ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ

उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ़	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर	अल्लाह

لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ

उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक

رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ़	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, बेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की तो बेशक तू बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36)

ऐ हमारे रब! बेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बग़ैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज़्दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ क़ाइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज़्क़ दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमरे रब! बेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापे में बख़्शा इस्माइल (अ) और इस्हाक़ (अ), बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ क़ाइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को बख़्शदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेख़बर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अ़ज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुद्दत के लिए मोहलत देदे कि हम तेरी दावत क़ुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़ब्ल क़स्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। **(44)** और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। **(45)** और उन्हों नें अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे हैं उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। **(46)** पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। **(47)** जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। **(48)** और तू देखेगा मुज्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। **(49)** उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। **(50)** ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, बेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। **(51)** यह (क़ुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अ़क़्ल वाले नसीहत पकड़ें। **(52)**

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) क़ुरआन की। **(1)**

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

और डराओ	लोग	वह दिन	उन पर आएगा	अ़ज़ाब	तो कहेंगे	वह लोग जो	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ

ऐ हमारे रब	हमें मोहलत दे	तरफ़	एक मुद्दत	थोड़ी	हम क़ुबूल करलें	तेरी दावत	और हम पैरवी करें	रसूल (जमा)

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ ﴿۴۴﴾ وَّسَكَنْتُمْ

या-क्या न	तुम थे	तुम क़स्में खाते	इस से क़ब्ल	तुम्हारे लिए नहीं	कोई ज़वाल	**44**	और तुम रहे थे

فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ

में	घर (जमा)	जिन लोगों	ने ज़ुल्म किया	अपनी जानों पर	और ज़ाहिर हो गया	तुम पर	कैसा	हम ने (सुलूक) किया	उन से

وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ

और हम ने बयान की	तुम्हारे लिए	मिसालें	**45**	और उन्हों ने दाओ चले	अपने दाओ	और अल्लाह के आगे	उन के दाओ

وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

और अगरचे	था	उन का दाओ	कि टल जाए	उस से	पहाड़	**46**	पस तू हरगिज़ ख़याल न कर	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾ ط يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ

अपना वादा	अपने रसूल	बेशक अल्लाह	ज़बरदस्त	बदला लेने वाला	**47**	जिस दिन	बदल दी जाएगी	ज़मीन

غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَتَرَى

मुख़्तलिफ़ ज़मीन	और आस्मान (जमा)	वह निकल खड़े होंगे	अल्लाह के आगे	यकता	सख़्त क़हर वाला	**48**	और तू देखेगा

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ ج سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ

मुज्रिम (जमा)	उस दिन	बाहम जकड़े हुए	में	ज़न्जीरें	**49**	उन के कुर्ते	से - के

قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾ ۙ لِيَجْزِىَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا

गन्धक	और ढांप लेगी	उन के चहरे	आग	**50**	ताकि बदला दे	अल्लाह	हर जान	जो

كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا

उस ने कमाया (कमाई)	बेशक अल्लाह	तेज़ हिसाब लेने वाला	**51**	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	लोगों के लिए	और ताकि वह डराए जाएं

بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾ ع ۱۱ ۱۹

उस से	और ताकि वह जान लें	उस के सिवा नहीं	वह माबूद	यकता	और ताकि नसीहत पकड़ें	अ़क़्ल वाले	**52**

آيَاتُهَا ۹۹ ❀ سُوْرَةُ الْحِجْرِ (۱۵) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ۶

आयात 99 — (15) सूरतुल हिज्र (पत्थर) — रुकुआ़त 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱﴾

अलिफ़ लाम रा	यह	आयतें	किताब	और क़ुरआन	वाज़ेह - रौशन	**1**

الجزء ١٤

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ٢

2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफ़िर हुए	आर्ज़ू करेंगे	बसा औक़ात

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

पस अनक़रीब	उम्मीद	और ग़फ़लत में रखे उन्हें	और फ़ाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो

يَعْلَمُوْنَ ٣ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ

एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया	और नहीं	3	वह जान लेंगे

مَّعْلُوْمٌ ٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ٥

5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुक़र्ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है	4	मुक़र्ररा वक़्त

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ٦

6	दीवाना	बेशक तू	याद दिहानी (क़ुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया	ऐ वह	और वह बोले

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٧ مَا نُنَزِّلُ

हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर	फ़रिश्तों को	हमारे पास तू नहीं ले आता	क्यों

الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ٨ اِنَّا نَحْنُ

हम	बेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे	हक़ के साथ	मगर	फ़रिश्ते

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ٩ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ

से	और यक़ीनन हम ने भेजे	9	निगहबान	उस के	और बेशक हम	याद दिहानी (क़ुरआन)	हम ने नाज़िल किया

قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ١٠ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह	में	तुम से पहले

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ١٢

12	मुज्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह	11	इस्तिहज़ा करते	उस से	वह थे

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ١٣ وَلَوْ فَتَحْنَا

हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है	उस पर	वह ईमान नहीं लाएंगे

عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ١٤ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

बान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में	वह रहें	आस्मान	से	कोई दरवाज़ा	उन पर

ع ١ٵ ١ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ١٥ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ

आस्मान	में	और यक़ीनन हम ने बनाए	15	सिहर ज़दह	लोग	हम	बल्कि	हमारी आँखें

بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ١٦ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए	और उसे ज़ीनत दी	बुर्ज (जमा)

رَّجِيْمٍ ١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ١٨

18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे	जो	मगर	17	मर्दूद

बाज़ औक़ात काफ़िर आर्ज़ू करेंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फ़ाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें ग़फ़लत में डाले रखे, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुक़र्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुक़र्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफ़िर) बोले ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने क़ुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहबान हैं। (9) और यक़ीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिहर ज़दह हैं। (15) और यक़ीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا

उस में	और हम ने उगाई	पहाड़	उस में (पर)	और हम ने रखे	हम ने उस को फैला दिया	और ज़मीन

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

और जो-जिस	सामाने मईशत	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	19	मौज़ूं	हर शै	से

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا

और नहीं	उस के ख़ज़ाने	हमारे पास	मगर	कोई चीज़	और नहीं	20	रिज़्क़ देने वाले	उस के लिए	तुम नहीं

نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا

फिर हम ने उतारा	भरी हुई	हवाएं	और हम ने भेजी	21	मालूम - मुनासिब	अन्दाज़े से	मगर	हम उस को उतारते

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	ख़ज़ाने करने वाले	उस के	तुम	और नहीं	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	पानी	आस्मान	से

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	23	वारिस (जमा)	और हम	और हम मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	अलबत्ता हम	और बेशक हम

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِنَّ

और बेशक	24	पीछे रह जाने वाले	और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	तुम में से	आगे गुज़रने वाले

رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا　ع ٢ ١٠ ٢

और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	25	इल्म वाला	हिक्मत वाला	बेशक वह	उन्हें जमा करेगा	वह	तेरा रब

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجَآنَّ

और जिन (जमा)	26	सड़ा हुआ	सियाह गारे से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

तेरा रब	कहा	और जब	27	आग बे धुएं की	से	उस से पहले	हम ने उसे पैदा किया

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

28	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान	बनाने वाला	बेशक मैं	फ़रिश्तों को

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	सिजदा करते हुए	उस के लिए	तो गिर पड़ो	अपनी रूह से	उस में	और फूंकूं	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	फिर जब

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ

साथ	वह हो	उस ने इन्कार किया कि	इब्लीस	सिवाए	30	सब के सब	वह सब	फ़रिश्तों	पस सिजदा किया

السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	32	सिजदा करने वाले	साथ	कि तू न हुआ	तुझे क्या हुआ	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	31	सिजदा करने वाले

لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾

33	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	तू ने उस को पैदा किया	इन्सान को	कि सिजदा करूँ	मैं नहीं हूँ

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19) और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं। (20) और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21) और हम ने हवाएं भेजीं (पानी से) भरी हुईं, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22) और बेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23) और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं तुम में से आगे गुज़र जाने वाले, और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं पीछे रह जाने वाले। (24) और बेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा करेगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25) और तहक़ीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26) और जिनों को उस से पहले हम ने बे धुएं की आग से पैदा किया। (27) और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29) पस सिजदा किया सब के सब फ़रिश्तों ने, (30) इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31) अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32) उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	34	मर्दूद	बेशक तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने कहा

اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ

तक	मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	35	रोज़े इन्साफ़	तक	लानत

يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ

वक़्त	दिन	तक	37	मोहलत दिए जाने वाले	से	बेशक तू	उस ने कहा	36	जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे

الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	तू ने मुझे गुमराह किया	जैसा कि	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	38	मालूम (मुक़र्रर)

فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

उन में से	तेरे बन्दे	सिवाए	39	सब	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	ज़मीन में

الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ

बेशक	41	सीधा	मुझ तक	रास्ता	यह	उस ने फ़रमाया	40	मुख़्लिस (जमा)

عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ

तेरी पैरवी की	जो - जिस	मगर	कोई ज़ोर	उन पर	तेरे लिए (तेरा)	नहीं	मेरे बन्दे

مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

43	सब	उन के लिए वादा गाह	जहन्नम	और बेशक	42	बहके हुए (गुमराह)	से

ع ١٩ ٣
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

44	तक़्सीम शुदह	एक हिस्सा	उन से	हर दरवाज़े के लिए	दरवाज़े	सात	उस के लिए

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ

सलामती के साथ	तुम उन में दाख़िल हो जाओ	45	और चश्मे	बाग़ात	में	परहेज़गार	बेशक

آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ

पर	भाई भाई	कीना	से	उन के सीने	में	जो	और हम ने खींच लिया	46	बेख़ौफ़ ओ ख़तर

سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا

उस से	वह	और न	कोई तक्लीफ़	उस में	उन्हें न छुएगी	47	आमने सामने	तख़्त (जमा)

بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ

और यह कि	49	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	मैं	कि बेशक	मेरे बन्दों	ख़बर दे दो	48	निकाले जाएंगे

وقف لازم
عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾

51	इब्राहीम (अ)	मेहमान	से - का	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	50	दर्दनाक	अज़ाब	वह (ही)	मेरा अज़ाब

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

52	डरने वाले (डरते हैं)	तुम से	हम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस पर (पास)	वह दाख़िल हुए (आए)	जब

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्नत) से निकल जा बेशक तू मर्दूद है। (34)
और बेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (क़ियामत) तक लानत है। (35)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगें। (36)
उस ने फ़रमाया बेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37)
उस दिन तक जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (38)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39)
सिवाए उन में से जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं। (40)
उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41)
बेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42)
और बेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43)
उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44)
बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (होंगे)। (45)
तुम उन में सलामती के साथ बेख़ौफ़ ओ ख़तर दाख़िल हो जाओ। (46)
और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47)
उस में उन्हें कोई तक्लीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48)
मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49)
और यह कि मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है। (50)
और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्हों ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं इल्म वाले की। (53)
उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में खुशख़बरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की खुशख़बरी देते हो? (54)
वह बोले हम ने तुम्हें खुशख़बरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)
उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)
उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)
वह बोले बेशक हम भेजे गए हैं मुजरिमों की एक क़ौम की तरफ़, (58)
सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)
सिवाए उस की औरत के, हम ने फ़ैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)
पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)
उस ने कहा बेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)
वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अ़ज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)
और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं और बेशक हम सच्चे हैं। (64)
पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और खुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)
और हम ने उस की तरफ़ उस बात का फ़ैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)
और शहर वाले खुशियां मनाते आए। (67)
उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)
और अल्लाह से डरो और मुझे ख़्वार न करो। (69)
वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70)
उस ने कहा यह मेरी बेटियां हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)
(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की क़सम यह लोग बेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِىْ

क्या तुम मुझे खुशख़बरी देते हो	उस ने कहा	53	इल्म वाला	एक लड़का	बेशक हम तुम्हें खुशख़बरी देते हैं	डरो नहीं	उन्हों ने कहा

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِىَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

हम ने तुम्हें खुशख़बरी दी	वह बोले	54	तुम खुशख़बरी देते हो	सो किस बात	बुढ़ापा	मुझे पहुँच गया	कि	पर - में

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ

से	मायूस होगा	और कौन	उस ने कहा	55	मायूस होने वाले	से	आप न हों	सच्चाई के साथ

رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا

ऐ	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	उस ने कहा	56	गुमराह (जमा)	सिवाए	अपना रब	रहमत

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ

सिवाए	58	मुजरिम (जमा)	एक क़ौम	तरफ़	भेजे गए	हम बेशक	वह बोले	57	भेजे हुए (फ़रिश्तो)

اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ

से	बेशक वह	हम ने फ़ैसला कर लिया है	उस की औरत	सिवाए	59	सब	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	हम	घर वाले लूत के

الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ ع ١٦ ٤

लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	61	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	लूत (अ) के घर वाले	आए	पस जब	60	पीछे रह जाने वाले

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	शक करते	उस में	वह थे	उस के साथ जो	हम आए हैं तुम्हारे पास	बल्कि	वह बोले	62	ऊपरे (ना आशना)

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

से	एक हिस्सा	अपने घर वालों को	पस ले निकलें आप	64	अलबत्ता सच्चे	और बेशक हम	हक़ के साथ	और हम तुम्हारे पास आए हैं

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا

और चले जाओ	कोई	तुम में से	पीछे मुड़ कर देखे	और न	उन के पीछे	और खुद चलें	रात

حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

यह लोग	जड़	कि	बात	उस	उस की तरफ़	और हम ने फ़ैसला भेजा	65	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	खुशियां मनाते	शहर वाले	और आए	66	सुबह होते	कटी हुई

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِىْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

69	और मुझे ख़्वार न करो	अल्लाह	और डरो	68	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	मेरे मेहमान	यह लोग	कि	उस ने कहा

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىْٓ اِنْ

अगर	मेरी बेटियां	यह	उस ने कहा	70	सारे जहान	से	हम ने तुझे मना किया	क्या नहीं	वह बोले

كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِىْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	मदहोश थे	अपने नशे	अलबत्ता में	बेशक वह	तुम्हारी जान की क़सम	71	करने वाले (करना है)	तुम हो

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُشۡرِقِيۡنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلۡنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस	में	बेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से	पत्थर	उन पर	और हम ने बरसाए

لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

निशानी	उस	में	बेशक	76	सीधा	रास्ते पर	और बेशक वह	75	ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए

لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٧٧﴾ وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ﴿٧٨﴾ فَانۡتَقَمۡنَا

हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	एयका (बन) वाले (क़ौमे शुऐब)	थे	और तहक़ीक़	77	ईमान वालों के लिए

ع ١٩ / ٥ — وقف لازم

مِنۡهُمۡ‌ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ

हिज्र वाले	और अलबत्ता झुटलाया	79	खुले	रास्ते पर	और बेशक वह दोनों	उन से

الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿٨١﴾

81	मुँह फेरने वाले	उस से	पस वह थे	अपनी निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	80	रसूल (जमा)

وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا اٰمِنِيۡنَ ﴿٨٢﴾

82	बेख़ौफ़ ओ ख़तर	घर	पहाड़ (जमा)	से	और वह तराशते थे

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ﴿٨٣﴾ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا

जो	उन के	तो न काम आया	83	सुबह होते	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا

और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया हम ने	और नहीं	84	वह कमाया करते थे

بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَـقِّ‌ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ‌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ

दरगुज़र करना	पस दरगुज़र करो	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	और बेशक	हक़ के साथ	मगर	उन के दरमियान

الۡجَمِيۡلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الۡخَـلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنٰكَ

हम ने तुम्हें दीं	और तहक़ीक़	86	जानने वाला	पैदा करने वाला	वह	तुम्हारा रब	बेशक	85	अच्छा

سَبۡعًا مِّنَ الۡمَثَانِىۡ وَالۡقُرۡاٰنَ الۡعَظِيۡمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ

हरगिज़ न बढ़ाएं आप	87	अज़्मत वाला	और क़ुरआन	बार बार दोहराई जाने वाली	से	सात

عَيۡنَيۡكَ اِلٰى مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ وَلَا تَحۡزَنۡ

और न ग़म खाएं	उन के	कई जोड़े	उस को	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें

عَلَيۡهِمۡ وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلۡ اِنِّىۡۤ اَنَا

मैं	बेशक मैं	और कह दें	88	मोमिनों के लिए	अपने बाज़ू	और झुका दें	उन पर

النَّذِيۡرُ الۡمُبِيۡنُ‌ ﴿٨٩﴾ كَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَى الۡمُقۡتَسِمِيۡنَ ﴿٩٠﴾

90	तक़्सीम करने वाले	पर	हम ने नाज़िल किया	जैसे	89	डराने वाला अ़लानिया

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने
आ लिया। (73)
पस हम ने उस (बस्ती) का ऊपर
का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा)
कर दिया, और हम ने उन पर
खिंगर के पत्थर बरसाए। (74)
बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने
वालों के लिए निशानियां हैं। (75)
और बेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते
पर (वाक़े) है। (76)
बेशक उस में ईमान वालों के लिए
निशानी है। (77)
और तहक़ीक़ क़ौमे शुऐब (अ) के
लोग ज़ालिम थे। (78)
और हम ने उन से बदला लिया,
और वह दोनों (बस्तियां वाक़े हैं)
एक खुले रास्ते पर। (79)
और अलबत्ता "हिज्र" के रहने
वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80)
और हम ने उन्हें अपनी निशानियां दीं
पस वह उन से मुँह फेरने वाले थे। (81)
और वह पहाड़ों से बेख़ौफ़ ओ
ख़तर घर तराशते थे। (82)
पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने
आ लिया। (83)
तो जो वह कमाया करते थे (उन का
क्या धरा) उन के काम न आया। (84)
और हम ने आस्मानों और ज़मीन
को और जो उन के दरमियान है
नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत)
के साथ, और बेशक क़ियामत
ज़रूर आने वाली है पस अच्छी
तरह माफ़ करो। (85)
बेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने
वाला, जानने वाला है। (86)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-
फ़ातिहा की) बार बार दोहराई
जाने वाली सात (आयात) दीं और
अज़्मत वाला क़ुरआन। (87)
आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न
बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें)
(उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने
उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को
दीं, और उन पर ग़म न खाएं,
और आप (स) अपने बाज़ू झुका दें
मोमिनों के लिए। (88)
और कह दें बेशक मैं अ़लानिया
डराने वाला हूँ। (89)
जैसे हम ने तक़्सीम करने वालों
(तफ़्रिक़ा परदाज़ों) पर अ़ज़ाब
नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)
सो तेरे रब की क़सम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)
उस की बाबत जो वह करते थे। (93)
पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94)
बेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के ख़िलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफ़ी हैं। (95)
जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह अनक़रीब जान लेंगे। (96)
और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)
तो तस्बीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हम्द के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98)
और अपने रब की इबादत करते रहें यहां तक कि आप (स) के पास यक़ीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)
वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)
उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)
उस ने इन्सान को पैदा किया नुत्फ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)
और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (5)
और तुम्हारे लिए उन में खूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ

वह लोग जो	उन्हों ने कर दिया	क़ुरआन	टुकड़े टुकड़े	91	सो तेरे रब की क़सम	हम ज़रूर पूछेंगे उन से

اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ الربع فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ

सब	92	उस की बाबत जो	वह करते थे	93	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	जिस का	तुम्हें हुक्म दिया गया

وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ

और एराज़ करें	से	मुश्रिक (जमा)	94	बेशक हम	काफ़ी हैं तुम्हारे लिए	मज़ाक़ उड़ाने वाले	95	जो लोग

يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

बनाते हैं	अल्लाह के साथ	माबूद	कोई दूसरा	पस अनक़रीब	वह जान लेंगे	96	और अलबत्ता	हम जानते हैं

اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

बेशक तुम	तंग होता है	तुम्हारा सीना (दिल)	उस से	जो वह कहते हैं	97	तो तस्बीह करें	हम्द के साथ	अपना रब	और हो

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع ٦

से	सिज्दा करने वाले	98	और इबादत करें	अपना रब	यहां तक कि	आए आप (स) के पास	यक़ीनी बात	99

اٰيَاتُهَا ١٢٨ ❀ سُوْرَةُ النَّحْلِ (١٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

आयात 128 — (16) सूरतुन नहल — शहद की मक्खी — रुकूआत 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म	सो उस की जल्दी न करो	वह पाक है	और बरतर	उस से जो

يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

वह शरीक बनाते हैं	1	वह नाज़िल करता है	फ़रिश्ते	वहि के साथ	से	अपने हुक्म	पर	जिसे चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ

से	अपने बन्दे	कि	तुम डराओ	कि वह	नहीं	कोई माबूद	सिवाए	मेरे	पस मुझ से डरो	2	उस ने पैदा किए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

आस्मान (जमा)	और ज़मीन	हक़ (हिक्मत) के साथ	बरतर	उस से जो	वह शरीक करते हैं	3	पैदा किया उस ने

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾ وَالْاَنْعَامَ

इन्सान	से	नुत्फ़ा	फिर नागहां	वह	झगड़ालू	खुला	4	और चौपाए

خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

उस ने उन को पैदा किए	तुम्हारे लिए	उन में	गर्म सामान	और फ़ाइदे (जमा)	उन में से	तुम खाते हो	5

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿٦﴾

और तुम्हारे लिए	उन में	खूबसूरती-शान	जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	और जिस वक़्त	सुबह को चराने ले जाते हो	6

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ

हलकान कर के	बग़ैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ़	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते हैं

الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۷﴾ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ

और ख़च्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़	तुम्हारा रब	बेशक	जानें

وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर

ع ٩

اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ

उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही	9	सब

شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से	पीना

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ

हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और ज़ैतून	खेती

الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَسَخَّرَ

और मुसख़्ख़र किया	11	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	फल (जमा)

لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

12	वह अक़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	उस के हुक्म से	मुसख़्ख़र

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

बेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

जो - जिस	और वही	13	वह सोचते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا

और तुम निकालो	ताज़ा	गोश्त	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़्ख़र किया

مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ

पानी चीरने वाली	कश्ती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहां जानें हलकान किए बग़ैर तुम पहुँचने वाले न थे। बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और ख़च्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और ज़ैतून, और खजूर, और अंगूर और हर क़िस्म के फल, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, बेशक उस में अ़क़्ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कीं मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग ब रंग की, बेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا

और रास्ते	और नहरें - दर्या	तुम्हें ले कर	कि झुक न पड़े	पहाड़	ज़मीन में - पर	और डाले (रखे)

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ

क्या - पस जो	16	रास्ता पाते हैं	वह	और सितारा	और अ़लामतें	15	राह पाओ	ताकि तुम

يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ

अल्लाह की नेमत	तुम शुमार करो	और अगर	17	क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते	पैदा नहीं करता	उस जैसा जो	पैदा करे

لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

जो तुम छुपाते हो	जानता है	और अल्लाह	18	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस को पूरा न गिन सकोगे

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ

वह पैदा नहीं करते	अल्लाह	सिवाए	वह पुकारते हैं	और जिन्हें	19	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो

شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ

और वह नहीं जानते	ज़िन्दा	नहीं	मुर्दे	20	पैदा किए गए	और वह (ख़ुद)	कुछ भी

اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ع ١٢ ٢ ٨

ईमान नहीं रखते	पस जो लोग	एक (यकता)	माबूद	तुम्हारा माबूद	21	वह उठाए जाएंगे	कब

بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ

कि	यक़ीनी बात	22	तकब्बुर करने वाले (मग़रूर)	और वह	मुन्किर (इन्कार करने वाले)	उन के दिल	आख़िरत पर

اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	तकब्बुर करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	वह छुपाते हैं	जो	जानता है	अल्लाह

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ

कहानियां	वह कहते हैं	तुम्हारा रब	नाज़िल किया	क्या	उन से	कहा जाए	और जब

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ

क़ियामत के दिन	पूरे	अपने बोझ (गुनाह)	अन्जामे कार वह उठाएंगे	24	पहले लोग

وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ

बुरा	ख़ूब सुन लो	इल्म के बग़ैर	वह गुमराह करते हैं	उन के जिन्हें	बोझ	और कुछ

مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى ع ٣ ٩

पस आया	उन से पहले	वह लोग जो	तहक़ीक़ मक्कारी की	25	जो वह लादते हैं

اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

से	छत	उन पर	पस गिर पड़ी	बुन्याद (जमा)	से	उन की इमारत	अल्लाह

فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	उन्हें ख़याल न था	जहां से	से	अ़ज़ाब	और आया उन पर	उन के ऊपर

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए) ताकि तुम राह पाओ। **(15)** और अ़लामतें (बनाईं) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। **(16)** क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? **(17)** और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। **(18)** और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। **(19)** और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद पैदा किए गए हैं। **(20)** मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। **(21)** तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आख़िरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मग़रूर हैं। **(22)** यक़ीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। **(23)** और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। **(24)** अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, ख़ूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। **(25)** जो उन से पहले थे उन्हों ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अ़ज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। **(26)**

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ

वह जो कि	मेरे शरीक	कहां	और कहेगा	वह उन्हें रुस्वा करेगा	क़ियामत के दिन	फिर

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ

रुस्वाई	बेशक	इल्म (इल्म वाले)	दिए गए	वह लोग जो	कहेंगे	उन (के बारे) में	झगड़ते	तुम थे

الْيَوْمَ وَالسُّوْۗءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٧ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	27	काफ़िर (जमा)	पर	और बुराई	आज

ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ بَلٰٓى اِنَّ

बेशक	हां हां	कोई बुराई	हम न करते थे	पैग़ामे इताअ़त	पस डालेंगे	अपने ऊपर	ज़ुल्म करते हुए

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٨ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	दरवाज़े	सो तुम दाख़िल हो	28	तुम करते थे	वह जो	जानने वाला	अल्लाह

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٢٩ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

उन लोगों से जिन्हों ने परहेज़गारी की	और कहा गया	29	तकब्बुर करने वाले	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	उस में	हमेशा रहोगे

مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوْا خَيْرًا ۭ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ

में	भलाई की	उन के लिए जो लोग	बहतरीन	वह बोले	तुम्हारा रब	उतारा	क्या

هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ۭ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٠

30	परहेज़गारों का घर	और क्या ख़ूब	बेहतर	और आख़िरत का घर	भलाई	दुनिया	इस

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उन के लिए	नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	वह उन में दाख़िल होंगे	हमेशगी	बाग़ात

مَا يَشَاۗءُوْنَ ۭ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣١ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ

उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	31	परहेज़गार (जमा)	अल्लाह	जज़ा देता है	ऐसी ही	जो वह चाहेंगे

الْمَلٰۗىِٕكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا

उस के बदले जो	जन्नत	तुम दाख़िल हो	सलामती तुम पर	वह कहते हैं	पाक होते हैं	फ़रिश्ते

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٢ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह कि	मगर (सिर्फ़)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	32	तुम करते थे (आमाल)

اَمْرُ رَبِّكَ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ

और नहीं ज़ुल्म किया उन पर	उन से पहले	वह लोग जो	किया	ऐसा ही	तेरा रब	हुक्म

اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٣٣ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचीं	33	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और बल्कि	अल्लाह

ع ٩/١٠ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٤

34	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लिया	जो उन्हों ने किया (आमाल)

फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे बेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफ़िरों पर। (27)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअ़त का पैग़ाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)

सो तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)

और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आख़िरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या ख़ूब है! परहेज़गारों का घर। (30)

हमेशगी के बाग़ात, जिन में वह दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)

अपने आमाल के बदले जन्नत में दाख़िल हो। क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं, या तेरे रब का हुक्म आए, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (ख़ुद) ज़ुल्म करते थे। (33)

पस उन्हें पहुँचीं उन के आमाल की बुराइयां, और उन्हें घेर लिया उस (अ़ज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (34)

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुशरिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)
और तहक़ीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)
अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)
और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) क़सम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)
ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)
जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि "हो जा" तो वह हो जाता है। (40)
और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज्रत कि उस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बड़ा है, काश वह (हिज्रत से रह जाने वाले) जानते। (41)
जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवाए	हम परस्तिश करते	न	चाहता अल्लाह	अगर	उन्हों ने शिर्क किया	वह लोग जो	और कहा

مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ

कोई शै	उस के (हुक्म के) सिवा	और न हराम ठहराते हम	हमारे बाप दादा	और न	हम	कोई - किसी शै

كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا

मगर	रसूल (जमा)	पर (ज़िम्मे)	पस क्या है	उन से पहले	वह लोग जो	किया	उसी तरह

الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ

कि	रसूल	हर उम्मत	में	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	35	साफ़ साफ़	पहुँचा देना

اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ

अल्लाह	जिसे हिदायत दी	सो उन में से बाज़	तागूत (सरकश)	और बचो	अल्लाह	इबादत करो तुम

وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا

फिर देखो	ज़मीन में	पस चलो फिरो	गुमराही	उस पर	साबित हो गई	बाज़	और उन में से

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ

उन की हिदायत के लिए	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	अगर	36	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	वह गुमराह करता है	जिसे	हिदायत नहीं देता	तो बेशक अल्लाह

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ

जो मर जाता है	अल्लाह	नहीं उठाएगा	अपनी क़सम	अपनी सख़्त	अल्लाह की	और उन्हों ने क़सम खाई

بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ ۙ

38	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	सच्चा	उस पर	वादा	क्यों नहीं

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और ताकि जान लें	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हैं	जो	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे

اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ

कि हम कहते हैं	जब हम उस का इरादा करें	किसी चीज़ को	हमारा फ़रमाना	उस के सिवा नहीं	39	झूटे थे	कि वह

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ ع ٦ / ١١

उस के बाद	अल्लाह के लिए	उन्हों ने हिज्रत कि	और वह लोग जो	40	तो वह हो जाता है	हो जा	उस को

مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ وقف لازم

काश	बहुत बड़ा	आख़िरत	और बेशक अजर	अच्छी	दुनिया में	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	कि उन पर ज़ुल्म किया गया

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	भरोसा करते हैं	और अपने रब पर	उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	41	वह जानते

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ

और नहीं	हम ने भेजे	तुम से पहले	मर्दों के सिवा	हम वहि करते हैं	उन की तरफ़	पस पूछो	याद रखने वाले

اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۳﴾ بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ

अगर	तुम हो	नहीं जानते	43	निशानियों के साथ	और किताबें	और हम ने नाज़िल की	तुम्हारी तरफ़

النصف

الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۴۴﴾

याददाशत (किताब)	ताकि वाज़ेह कर दो	लोगों के लिए	जो नाज़िल किया गया	उन की तरफ़	और ताकि वह	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	44

اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الۡاَرۡضَ

क्या बेख़ौफ़ हो गए हैं	जिन लोगों ने	दाओ किए	बुरे	कि	धंसादे	अल्लाह	उन को	ज़मीन

اَوۡ يَاۡتِيَهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۴۵﴾ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ

या	उन पर आए	अज़ाब	उस जगह से	वह ख़बर नहीं रखते	45	या	उन्हें पकड़ ले

فِىۡ تَقَلُّبِهِمۡ فَمَا هُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿۴۶﴾ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ

में	उन को चलते फिरते	पस नहीं	वह	आजिज़ करने वाले	46	या	उन्हें पकड़ ले	पर (बाद)	डराना	पस बेशक

رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۴۷﴾ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنۡ شَىۡءٍ

तुम्हारा रब	इन्तिहाई शफ़ीक़	निहायत रहम करने वाला	47	क्या उन्हें ने नहीं देखा	तरफ़	जो पैदा किया	अल्लाह	जो चीज़

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الۡيَمِيۡنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمۡ

ढलते हैं	उस के साए	से	दाएं	और बाएं	सिजदा करते हुए	अल्लाह के लिए	और वह

دٰخِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾ وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ مِنۡ

आजिज़ी करने वाले	48	और अल्लाह के लिए सिजदा करता है	जो	में	आस्मानों	और जो	ज़मीन में	से

دَآبَّةٍ وَّالۡمَلٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوۡنَ رَبَّهُمۡ مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ

जानदार	और फ़रिश्ते	और वह	तकब्बुर नहीं करते	49	वह डरते हैं	अपना रब	से	उन के ऊपर

ع ٦ ١٢
السجدة ٣

وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۩﴿۵۰﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوۡۤا اِلٰهَيۡنِ اثۡنَيۡنِ ۚ

और वह (वही) करते हैं	जो	उन्हें हुक्म दिया जाता है	50	और कहा	अल्लाह	न	तुम बनाओ	दो माबूद	दो

اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ﴿۵۱﴾ وَلَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

इस के सिवा नहीं	वह	माबूद	यकता	पस मुझ ही से	तुम मुझ से डरो	51	और उसी के लिए	जो	आस्मानों में

وَالۡاَرۡضِ وَلَهُ الدِّيۡنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ تَتَّقُوۡنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمۡ

और ज़मीन	और उसी के लिए	इताअ़त ओ इबादत	लाज़िम	तो क्या अल्लाह के सिवा	तुम डरते हो	52	और जो	तुम्हारे पास

مِّنۡ نِّعۡمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيۡهِ تَجۡـَٔرُوۡنَ ﴿۵۳﴾

कोई नेमत	अल्लाह की तरफ़ से	फिर	जब	तुम्हें पहुँचती है	तक्लीफ़	तो उस की तरफ़	तुम रोते (चिल्लाते) हो	53

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنۡكُمۡ اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡكُمۡ بِرَبِّهِمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۵۴﴾

फिर	जब	खोलदे (दूर कर देता है)	सख़्ती	तुम से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़	तुम में से	अपने रब के साथ	वह शरीक करता है	54

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भेजे, हम वहि करते हैं उन की तरफ़, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43) निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (44) जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अ़ज़ाब आजाए जहां से उन को ख़बर ही न हो, (45) या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46) या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रहम तरने वाला है। (47) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते हैं, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिजदा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48) और अल्लाह को सिजदा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर नहीं करते। (49) वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (50) और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51) और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताअ़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचती है तो उसी की तरफ़ तुम रोते चिल्लाते हो। (53) फिर वह जब तुम से सख़्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ

और वह मुक़र्रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुक्री करें

لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا

उस से जो	तुम से ज़रूर पुछा जाएगा	अल्लाह की क़सम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो

كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56	तुम झूट बान्धते थे

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ ج

58	गुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को	ख़ुशख़बरी दी जाए	और जब

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ

या	रुसवाई के साथ	या उस को रखे	ख़ुशख़बरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	क़ौम (लोग)	से	छुपता फिरता है

يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दबादे (दफ़न करदे)

بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ ع ع١٠ ١٣

60	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	शान बुलन्द	और अल्लाह के लिए	बुरा	हाल	आख़िरत पर

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के ज़ुल्म के सब्ब	लोग	अल्लाह	गिरिफ़्त करे	और अगर

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ

न पीछे हटेंगे	उन का वक़्त	आगया	फिर जब	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	वह ढील देता है उन्हें

سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ

और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी

اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ

जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट	उन की ज़बानें

وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहक़ीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की क़सम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ

और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي

जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं	63	दर्दनाक अ़ज़ाब

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

64	वह ईमान लाए हैं	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

ताकि वह उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठालो, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मक़र्रर करते हैं, जिन (माबूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उस का चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस "बुराई" की ख़ुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (59) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के ज़ुल्म के सब्ब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दते मुक़र्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की क़सम! तहक़ीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

وَاللّٰهُ اَنْـزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ

में	बेशक	उस की मौत	बाद	ज़मीन	उस से	फिर जिन्दा किया	पानी	आस्मान	से	उतारा	और अल्लाह

ع ٨ ١٤ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ

हम पिलाते हैं तुम को	अलबत्ता इब्रत	चौपाए	में	तुम्हारे लिए	और बेशक	65	वह सुनते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस

مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	पीने वालों के लिए	ख़ुशगवार	ख़ालिस	दूध	और खून	गोबर	दरमियान	से	उन के पेट (जमा)	में	उस से जो

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا

और रिज़्क़	शराब	उस से	तुम बनाते हो	और अंगूर	खजूर	फल (जमा)	और से

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوْحٰی رَبُّكَ اِلَی

तरफ़ - को	तुम्हारा रब	और इल्हाम किया	67	अक़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस	में	बेशक	अच्छा

النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	छतरियां बनाते हैं	और उस से जो	दरख़्त	और से - में	घर (जमा)	पहाड़ (जमा)	से - में	तू बनाले	कि	शहद की मक्खी

ثُمَّ كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ

से	निकलती है	नर्म ओ हमवार	अपना रब	रस्ते	फिर चल	हर क़िस्म के फल	से - के	खा	फिर

بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

इस	में	बेशक	लोगों के लिए	शिफ़ा	उस में	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	पीने की एक चीज़	उन के पेट (जमा)

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ

जो	और तुम में से बाज़	वह मौत देता है तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	69	सोचते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

يُّرَدُّ اِلٰۤی اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ

जानने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ	इल्म	बाद	वह वे इल्म हो जाए	ताकि	नाकारा - नाक़िस उम्र	लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़

ع ٩ ١٥ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰی بَعْضٍ فِی الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पस नहीं	रिज़्क़	में	बाज़	पर	तुम में से बाज़	फ़ज़ीलत दी	और अल्लाह	70	क़ुदरत वाला

فُضِّلُوْا بِرَآدِّیْ رِزْقِهِمْ عَلٰی مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ

बराबर	उस में	पस वह	उन के हाथ	जो मालिक हुए	पर - को	अपना रिज़्क़	लौटा देने वाले	फ़ज़ीलत दिए गए

اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

बीवियां	तुम में से	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	71	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह	पस क्या नेमत से

وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ

से	और तुम्हें अ़ता की	और पोते	बेटे	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारे लिए	और बनाया (पैदा किया)

الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	इन्कार करते हैं	वह	और अल्लाह की नेमत	वह मानते हैं	तो क्या बातिल को	पाक चीज़

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65) और बेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुक़ामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध ख़ालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए ख़ुशगवार। (66) और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज़्क़ (हासिल करते हो) बेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल रखते हैं। (67) और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख़्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते हैं। (68) फिर खा हर क़िस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रस्तों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) उस के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, उस में लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ़ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद बेइल्म हो जाए, बेशक अल्लाह जानने वाला, क़ुदरत वाला है। (70) और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में, पस जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई वह अपना रिज़्क़ लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71) और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अ़ता कीं, तो क्या वह बातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ

से	रिज़्क़	उन के लिए	इख़्तियार नहीं	जो	अल्लाह	सिवाए	से	और परस्तिश करते हैं

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ج فَلَا تَضْرِبُوْا

पस न चस्पां करो	73	और न वह कुदरत रखते हैं	कुछ	और ज़मीन	आस्मानों

لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ط اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ

बयान किया	74	नहीं जानते	और तुम	जानता है	अल्लाह	बेशक	मिसालें	अल्लाह के लिए

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ

हम ने उसे रिज़्क़ दिया	और जो	किसी शै	पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	मिल्क में आया हुआ	एक गुलाम	एक मिसाल	अल्लाह

مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ط هَلْ

क्या	और ज़ाहिर	पोशीदा	उस से	ख़र्च करता है	सो वह	अचछा	रिज़्क़	अपनी तरफ़ से

يَسْتَوٗنَ ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ

और बयान किया	75	नहीं जानते	उन में से अक्सर	बल्कि	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़	वह बराबर हैं

اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ

और वह	किसी शै पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	गूंगा	उन में से एक	दो आदमी	एक मिसाल	अल्लाह

كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ لا اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ط هَلْ يَسْتَوِيْ

बराबर	क्या	कोई भलाई	वह न लाए	वह भेजे उस को	जहां कहीं	अपना आक़ा	पर	बोझ

هُوَ لا وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ لا وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ع ع ١٠/٦/١٦

76	सीधी	राह	पर	और वह	अ़द्ल के साथ	हुक्म देता है	और जो	वह - यह

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	काम (आना) क़ियामत	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें

كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ط اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

77	कुदरत वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	उस से भी क़रीब	वह	या	जैसे झपकना आँख

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا لا

कुछ भी	तुम न जानते थे	तुम्हारी माँएं	पेट (जमा)	से	तुम्हें निकाला	और अल्लाह

وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ لا لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाया

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ط مَا يُمْسِكُهُنَّ

थामता उन्हें	नहीं	आस्मान की फ़िज़ा	में	हुक्म के पाबन्द	परिन्दा	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा

اِلَّا اللّٰهُ ط اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह	सिवाए

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख़्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क़ का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्पां न करो अल्लाह पर मिसालें, बेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शै पर इख़्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क़ दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर हैं? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं,बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख़्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आक़ा पर बोझ है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अद्ल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा क़रीब है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्हों ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, बेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां है। (79)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ

खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह

الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ

अपना क़ियाम	और दिन	अपने कूच के दिन	तुम हल्का पाते हो उन्हें	घर (डेरे)	चौपाए

وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا

और बरतने की चीज़े	सामान	और उन के बाल	और उन की पशम	उन की ऊन	और से

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	और बनाया	साए	उस ने पैदा किया	उस से जो	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	80	एक वक़्त (मुद्दत)	तक

مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ

गर्मी	बचाते है तुम्हें	कुर्ते	तुम्हारे लिए	और बनाया	पनाह गाहें	पहाड़ों	से

وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अपनी नेमत	वह मुकम्मिल करता है	उसी तरह	तुम्हारी लड़ाई	बचाते हैं तुम्हें	और कुर्ते

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ

पहुँचा देना	तुम पर	तो इस के सिवा नहीं	वह फिर जाएं	फिर अगर	81	फ़रमांबरदार बनो	ताकि तुम

الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	मुन्किर हो जाते हैं उस के	फिर	अल्लाह	नेमत	वह पहचानते हैं	82	खोल कर (साफ़ साफ़)

ع ١١ ١٧ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ

न इजाज़त दी जाएगी	फिर	एक गवाह	उम्मत	हर	से	हम उठाएंगे	और जिस दिन	83	काफ़िर (जमा) नाशुक्रे

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	देखेंगे	और जब	84	उज़्र कुबूल किए जाएंगे	और न वह	उन्हों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	वह लोग

ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	मोहलत दी जाएगी	वह	और न	उन से	फिर न हल्का किया जाएगा	अज़ाब	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ

यह हैं	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	अपने शरीक	उन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	वह लोग जो	देखेंगे	और जब

شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا

फिर वह डालेंगे	तेरे सिवा	हम पुकारते थे	वह जो कि	हमारे शरीक

الثلثة اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह	तरफ़ (सामने)	और वह डालेंगे	86	अलबत्ता तुम झूटे	बेशक तुम	क़ौल	उन की तरफ़

يَوْمَئِذِ ِۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

87	इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते थे)	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	आजिज़ी	उस दिन

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेरे बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने क़याम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और बरतने की चीज़ें एक मुद्दते मुक़र्ररा तक। (80)
और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं पहाड़ो से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें है) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो। (81)
फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है। (82)
वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रे हैं। (83)
और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त दी जाएगी काफ़िरों को और न उन से उज़्र कुबूल किए जाएंगे। (84)
और (याद करो) जब ज़ालिम अज़ाब देखेंगे फिर न उन से (अज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)
और (याद करो) जब मुश्रिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ़ डालेंगे क़ौल (जवाब देंगे कि) बेशक तुम झूटे हो। (86)
और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैग़ाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ादेंगे, क्यों कि वह फ़साद करते थे। (88) और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर कुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़स्सिल बयान, और हिदायत ओ रहमत, और ख़ुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89) बेशक अल्लाह अ़दल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिश्ते दारों को (उन के हुकूक़) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90) और जब तुम (पुख़्ता) अ़हद करलो तो अल्लाह का अ़हद पूरा करो, और क़स्में पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहक़ीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, बेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91) और तुम उस औ़रत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी क़समों को अपने दरमियान दख़्ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आज़माता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (92) और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की बाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

में	हम उठाएंगे	और जिस दिन	88	वह फ़साद करते थे	क्योंकि	अ़ज़ाब	पर

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا

गवाह	आप (स) को	और हम लाएंगे	उन ही में से	उन पर	एक गवाह	हर उम्मत

عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	(मुफ़स्सिल) बयान	किताब (कुरआन)	आप पर	और हम ने नाज़िल की	इन सब पर

وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ ع ١٢ ٦ ١٨

हुक्म देता है	बेशक अल्लाह	89	मुसलमानों के लिए	और ख़ुशख़बरी	और रहमत	और हिदायत

بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ

से	और मना करता है	रिश्ते दार	और देना	और एहसान	अ़दल का

الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90	ध्यान करो	ताकि तुम	तुम्हें नसीहत करता है	और सरकशी	और नाशाइस्ता	बेहयाई

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ

क़स्में	और न तोड़ो	तुम अ़हद करो	जब	अल्लाह का अ़हद	और पूरा करो

بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	ज़ामिन	अपने ऊपर	अल्लाह	और तहक़ीक़ तुम ने बनाया	उन को पुख़्ता करना	बाद

يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

अपना सूत	उस ने तोड़ा	उस औ़रत की तरह	और तुम न हो जाओ	91	जो तुम करते हो	जानता है

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ

कि	अपने दरमियान	दख़्ल का बहाना	अपनी क़स्में	तुम बनाते हो	तुकड़े तुकड़े	कुव्वत (मज़बूती)	बाद

تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ

और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा	उस से	अल्लाह	आज़माता है तुम्हें	उस के सिवा नहीं	दूसरा गिरोह	से	बड़ा हुआ (ग़ालिब)	वह	एक गिरोह	हो जाए

لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	92	इख़्तिलाफ़ करते थे तुम	उस में	तुम थे	जो	रोज़े क़ियामत	तुम पर

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

जिसे वह चाहता है	गुमराह करता है	और लेकिन	एक उम्मत	तो अलबत्ता बना देता तुम्हें

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	तुम करते थे	उस की बाबत	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ

कोई क़दम	कि फिसले	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी क़स्में	और तुम न बनाओ

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (वबाल)	और तुम चखो	अपने जम जाने के बाद

وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ

थोड़ा	मोल	अल्लाह के अ़हद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा	अ़ज़ाब	और तुम्हारे लिए

اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ

जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	वही	अल्लाह के हां	बेशक जो

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا

उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाक़ी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो	ख़तम हो जोता है

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

कोई नेक	अ़मल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो	उस से बेहतर	उन का अजर

مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर ज़िंदगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औरत	या	मर्द हो

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا

पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर	और हम ज़रूर उन्हें देंगे

قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो	कुरआन	तुम पढ़ो

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ

और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए	नहीं	बेशक वह

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं	99	वह भरोसा करते हैं

١٣ ع ٢١ ١٩
هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ

और अल्लाह	दूसरा हुक्म	जगह	कोई हुक्म	हम बदलते हैं	और जब	100	शरीक ठहराते हैं	उस (अल्लाह) के साथ	वह

اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	वह नाज़िल करता है	उस को जो	ख़ूब जानता है

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	तुम्हारा रब	से	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहदें	101	इल्म नहीं रखते

لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मुसलमानों के लिए	और ख़ुशख़बरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो	ताकि साबित क़दम करे

और अपनी क़समों को न बनाओ अपने दरमियान दख़ल का बहाना कि कोई क़दम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में वबाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (94)

और तुम अल्लाह के अ़हद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) बेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95)

जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96)

जिस ने कोई नेक अ़मल किया वह मर्द हो या औ़रत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आख़िरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97)

पस जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98)

बेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99)

इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100)

और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (ख़ुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101)

आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक़ के साथ ताकि मोमिनों को साबित क़दम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ ख़ुशख़बरी है। (102)

और हम खूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ़ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) है, और यह वाज़ेह अ़रबी ज़बान है। (103)

बेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (104)

इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105)

जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुत्मइन हो, बल्कि जो कुफ़्र के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़्र करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (106)

यह इस लिए है कि उन्हों ने दुनिया की जिन्दगी को आख़िरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107)

यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (108)

कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ख़सरा (नुक़्सान) उठाने वाले हैं। (109)

फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने हिज्रत की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्हों ने जिहाद किया, और सब्र किया, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (110)

जिस दिन हर शख़्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख़्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (111)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ

वह जो कि	ज़बान	एक आदमी	उस को सिखाता है	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	कि वह	और हम खूब जानते हैं

يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾

103	वाज़ेह	अ़रबी	ज़बान	और यह	अ़जमी	उस की तरफ़	कजराही (निस्बत) करते हैं

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह	हिदायत नहीं देता	अल्लाह की आयतों पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

जो ईमान नहीं लाते	वह लोग	झूट	बुहतान बान्धता है	इस के सिवा नहीं	104	दर्दनाक अ़ज़ाब

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	अल्लाह का	मुन्किर हुआ	जो	105	झूटे	वह	और यही लोग	अल्लाह की आयतों पर

اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ

और लेकिन (बल्कि)	ईमान पर	मुत्मइन	जब कि उस का दिल	मजबूर किया गया	जो	सिवाए	उस के ईमान

مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह का	ग़ज़ब	तो उन पर	सीना	कुफ़्र के लिए	कुशादा करे	जो

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	उन्हों ने पसन्द किया	इस लिए कि वह	यह	106	बड़ा अ़ज़ाब

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۷﴾

107	काफ़िर (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	अल्लाह	और यह कि	आख़िरत	पर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ

और उन की आँख	और उन के कान	उन के दिल	पर	अल्लाह ने मुहर लगादी	वह जो कि	यही लोग

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ

वह	आख़िरत में	कि वह	कुछ शक नहीं	108	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	और यही लोग

الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उन्हों ने हिज्रत की	उन लोगों के लिए	तुम्हारा रब	बेशक	फिर	109	ख़सारा उठाने वाले

مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	उन्हों ने सब्र किया	उन्हों ने जिहाद किया	फिर	सताए गए	कि

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ ع ١٤ ٢٠

से	झगड़ा करता	शख़्स	हर	आएगा	जिस दिन	110	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला

نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

111	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने किया	जो	शख़्स	हर	और पूरा दिया जाएगा	अपनी तरफ़

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً

मुत्मइन	बेख़ौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने

يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ

नेमतों से	फिर उस ने नाशुक्री की	हर जगह	से	बाफ़राग़त	उस का रिज़्क़	उस के पास आता था

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا

उस के बदले जो	और ख़ौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को	अल्लाह

كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ١١٢ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ

सो उन्हों ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और बेशक उन के पास आया	112	वह करते थे

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ١١٣ فَكُلُوْا مِمَّا

उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अ़ज़ाब	तो उन्हें आ पकड़ा

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ١١٤ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ

मुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो	सिर्फ़ उस की	तुम हो

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ

पस जो	उस पर	अल्लाह के अ़लावा	पुकारा जाए	और जो	और ख़िनज़ीर का गोश्त	और ख़ून

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١١٥

115	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला	लाचार हुआ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती हैं	वह जो	और तुम न कहो

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ

बेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम	और यह	हलाल

الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ ١١٦

116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं	वह लोग जो

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ١١٧ وَعَلَى

और पर	117	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा	फ़ाइदा

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ١١٨

118	ज़ुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने ज़ुल्म किया उन पर

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन बेख़ौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क़ बाफ़राग़त आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और ख़ौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और ख़ौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112)

और बेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्हों ने उसे झुटलाया, तो अ़ज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113)

पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114)

उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और ख़ून, और ख़िनज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अ़लावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (115)

और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) न पाएंगे। (116)

(उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अ़ज़ाब दर्दनाक है। (117)

और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से क़ब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (118)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا

उन्हों ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अ़मल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	बेशक	फिर

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع ﴿١١٩﴾ ع ١٥ ٢١

119	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	और उन्हों ने इस्लाह की	उस के बाद

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ

से	और न थे	यक रुख़	अल्लाह के	फ़रमांबरदार	एक जमाअ़त (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	बेशक

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ لا شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

121	सीधी राह	तरफ़	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ

अलबत्ता - से	आख़िरत में	और बेशक वह	भलाई	दुनिया में	और उस को दी हम ने

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ؕ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ

यक रुख़	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ़	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	हफ़्ते का दिन	मुक़र्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

उस में जो	रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और बेशक	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ

हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ़	तुम बुलाओ	124	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ

बेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और बहस करो उन से	अच्छी	और नसीहत

رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	राह पाने वालों को	ख़ूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	ख़ूब जानने वाला	वह	तुम्हारा रब

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ

और अगर	उस से	जो तुम्हें तक्लीफ़ दी गई	ऐसी ही	तो उन्हें तक्लीफ़ दो	तुम तक्लीफ़ दो	और अगर

صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127	वह फ़रेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और ग़म न खाओ

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ع ﴿١٢٨﴾ ع ١٦ ٢٢

128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्हों ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	बेशक अल्लाह

फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने नादानी से बुरे अ़मल किए, फिर उस के बाद उन्हों ने तौबा की और इस्लाह कर ली, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (119)

बेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फ़रमांबरदार, यक रुख़ (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ़। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से हैं, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रुख़) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़्ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुक़र्रर किया गया जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे बहस करो जो सब से बेहतर हो, बेशक तुम्हारा रब उस को ख़ूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को ख़ूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तक्लीफ़ दो तो ऐसी ही तक्लीफ़ दो, जैसी तुम्हें तक्लीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और ग़म न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्हों ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

المنزل ٤ — الجزء ١٥

آيَاتُهَا ١١١ ❀ سُوْرَةُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْل (١٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12	(17) सूरह बनी इस्राईल औलादे याक़ूब (अ)	आयात 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ

मस्जिद	से	रातों रात	अपने बन्दे को	ले गया	वह जो	पाक

الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ

से	ताकि दिखा दें हम उसको	उस के इर्द गिर्द	बरकत दी हम ने	जिस को	मस्जिदे अक़्सा	तक	हराम

اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ① وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब	मूसा	और हम ने दी	1	देखने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक वह	अपनी निशानियां

وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۭ②

2	कारसाज़	मेरे सिवा	कि न ठहराओ तुम	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③

3	शुक्र गुज़ार	बन्दा	था	बेशक वह	नूह (अ) के साथ	हम ने सवार किया	जो - जिस	औलाद

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन	में	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	किताब	बनी इस्राईल	तरफ़ - को	साफ़ कह दिया हम ने

مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا

हम ने भेजे	दो में से पहला	वादा	आया	पस जब	4	बड़ा ज़ोर	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	दो मरतबा

عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ

शहरों के अन्दर	तो वह घुस पड़े	सख़्त	लड़ाई वाले	अपने बन्दे	तुम पर

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ

उन पर	बारी	तुम्हारे लिए	हम ने फेर दी	फिर	5	पूरा होने वाला	एक वादा	और था

وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ⑥

6	जत्था (लशकर)	ज़ियादा	और हम ने तुम्हें कर दिया	और बेटे	मालों से	और हम ने तुम्हें मदद दी

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۣ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۭ

तो उन के लिए	तुम ने बुराई की	और अगर	अपनी जानों के लिए	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अगर

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْۗءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا

और वह घुस जाएं	तुम्हारे चहरे	कि वह बिगाड़ दें	दूसरा वादा	आया	फिर जब

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ⑦

7	पूरी तरह बरबाद	जहां ग़लबा पाएं वह	और बरबाद कर डालें	पहली बार	वह घुसे उस में	जैसे	मस्जिद

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (ख़ाना कअ़बा से) मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, बेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़लबा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़्सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़लबा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

وقف لازم

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ

जहन्नम	और हम ने बनाया	हम वही करेंगे	तुम फिर (वही) करोगे	और अगर	वह तुम पर रहम करे	कि	तुम्हारा रब	उम्मीद है

لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ

सब से सीधी	वह	उस के लिए जो	रहनुमाई करता है	यह कुरआन	बेशक	8	क़ैद ख़ाना	काफ़िरों के लिए

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾ لا

9	बड़ा अजर	उन के लिए	कि	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह लोग जो	मोमिन (जमा)	और बशारत देता है

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٠﴾ ع ١

10	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और यह कि

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

11	जल्द बाज़	इन्सान	और है	भलाई की	उस की दुआ	बुराई की	इन्सान	और दुआ करता है

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ

दिन की निशानी	और हम ने बनाया	रात की निशानी	फिर हम ने मिटा दिया	दो निशानियां	और दिन	रात	और हम ने बनाया

مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

बरस (जमा)	गिनती	और ताकि तुम मालूम करो	अपने रब से (का)	फ़ज़्ल	ताकि तुम तलाश करो	दिखाने वाली

وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ

उसको लगा दी (लटका दी)	और हर इन्सान	12	तफ़्सील के साथ	हम ने बयान किया है	और हर चीज़	और हिसाब

طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾

13	खुला हुआ	और उसे पाएगा	एक किताब	रोज़े क़ियामत	उस के लिए	और हम निकालेंगे	उसकी गर्दन में	इस की क़िस्मत

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ ۭ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	हिदायत पाई	जिस	14	हिसाब लेने वाला	अपने ऊपर	आज	तू खुद	काफ़ी है	अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	पढ़ ले

يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

कोई उठाने वाला	और बोझ नहीं उठाता	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपने लिए	उस ने हिदायत पाई

وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ وَاِذَآ اَرَدْنَآ

हम ने चाहा	और जब	15	कोई रसूल	हम (न) भेजे	जब तक	अ़ज़ाब देने वाले	और हम नहीं	दूसरे का बोझ

اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا

उन पर	फिर पूरी हो गई	उस में	तो उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस के खुश हाल लोग	हम ने हुक्म भेजा	कोई बस्ती	कि हम हलाक करें

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	बस्तियां	से	हम ने हलाक कर दीं	और कितनी	16	पूरी तरह हलाक	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	बात

نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दे	गुनाहों को	तेरा रब	और काफ़ी	नूह (अ)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहन्नम काफ़िरों के लिए क़ैद ख़ाना बनाया है। (8)
बेशक यह क़ुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9)
और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अ़ज़ाब दर्दनाक। (10)
और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11)
और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12)
और हम ने हर इन्सान की क़िस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े क़ियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13)
अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू खुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14)
जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अ़ज़ाब देने वाले नहीं। (15)
और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के खुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्हों ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16)
और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला देखने वाला। (17)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا

हम ने बना दिया है	फिर	हम चाहें	जिस को	जितना हम चाहें	उस को इस (दुनिया) में	हम जल्दी दे देंगे	जल्दी	चाहता है	जो कोई

لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا

उस के लिए	और कोशिश की उस ने	आख़िरत	चाहे	जो और	18	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	मज़म्मत किया हुआ	वह दाख़िल होगा इस में	जहन्नम	उस के लिए

سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

इन को भी	हम देते हैं	हर एक	19	क़द्र की हुई (मक़्बूल)	उन की कोशिश	है - हुई	पस यही लोग	और (बशर्त यह कि) हो वह मोमिन	उस की सी कोशिश

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ

किस तरह	देखो	20	रोकी जाने वाली	तेरा रब	बख़्शिश	और नहीं है	तेरा रब	बख़्शिश	से	और उन को भी

فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾

21	फ़ज़ीलत में	और सब से बरतर	सब से बड़े दरजे	और अलबत्ता आख़िरत	बाज़ (दूसरा)	पर	उन के बाज़ (एक)	हम ने फ़ज़ीलत दी

ع ۱۲ ۲ ۲ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ؑ وَقَضٰى رَبُّكَ

तेरा रब	और हुक्म फ़रमा दिया	22	बेबस हो कर	मज़म्मत किया हुआ	पस तू बैठ रहेगा	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	तू न ठहरा

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ

बुढ़ापा	तेरे सामने	अगर वह पहुँच जाएं	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	उस के सिवा	कि न इबादत करो

اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا

बात	उन दोनों से	और कहो	और न झिड़को उन्हें	उफ़	उन्हें	तो न कह	वह दोनों	या	उन में से एक

كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا

उन दोनों पर रहम फ़रमा	ऐ मेरे रब	और कहो	मेहरबानी	से	आजिज़ी	बाज़ू	उन दोनों के लिए	और झुका दे	23	अदब के साथ

كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ

नेक (जमा)	तुम होगे	अगर	तुम्हारे दिलों में	जो	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	24	बचपन	उन्हों ने मेरी पर्वरिश की	जैसे

فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ

और मिस्कीन	उस का हक़	क़राबतदार	और दो तुम	25	बख़्शने वाला	रुजूअ करने वालों के लिए	है	तो बेशक वह

وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ

भाई (जमा)	हैं	फ़ुज़ूल ख़र्च (जमा)	बेशक	26	अन्धा धुन्द	और न फ़ुज़ूल ख़र्ची करो	और मुसाफ़िर

الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ

इन्तिज़ार में	उन से	तू मुँह फेर ले	और अगर	27	नाशुक्रा	अपने रब का	शैतान	और है	शैतान (जमा)

رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ

अपना हाथ	और न रख	28	नर्मी की बात	उन से	तो कह	तू उस की उम्मीद रखता है	अपना रब	से	रहमत

مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾

29	थका हुआ	मलामत ज़दा	फिर तू बैठा रह जाए	पूरी तरह खोलना	और न उसे खोल	अपनी गर्दन	तक - से	बन्धा हुआ

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाख़िल होगा मज़म्मत किया हुआ धकेला हुआ। (18)
और जो कोई आख़िरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मक़्बूल हुई। (19)
हम तेरे रब की बख़्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख़्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20)
देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और अलबत्ता आख़िरत के दरजे सब से बड़े, और फ़ज़ीलत में सब से बरतर हैं। (21)
अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया हुआ, बेबस हो कर। (22)
और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। (23)
और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाज़ू झुका दो मेहरबानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्हों ने बचपन में मेरी पर्वरिश की। (24)
तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो बेशक वह रुजूअ करने वालों को बख़्शने वाला है। (25)
और दो तुम क़राबतदार को उस का हक़, और मिस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। (26)
बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। (27)
और अगर तू अपने रब की रहमत (फ़राख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्मी की बात। (28)
और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (बिलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

बेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30)
और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), बेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31)
और ज़िना के क़रीब न जाओ, बेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32)
और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़्लूम मारा गया तो तहक़ीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, बेशक वह मदद दिया गया है। (33)
और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्रुफ़) न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अ़हद को पूरा करो, बेशक अ़हद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। (34)
और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराज़ू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिबार से। (35)
और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी)। (36)
और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37)
यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38)
यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39)
क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियां बना लिया, बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

अपने बन्दों से	है	बेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	बेशक

خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ٣٠ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ ع ٨ ٣

हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लिसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला

وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ٣١ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ

है	बेशक यह	ज़िना	और न क़रीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	बेशक	और तुम को

فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ٣٢ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا

मगर	अल्लाह ने हराम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई

بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ

पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहक़ीक़ हम ने कर दिया	मज़्लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ

فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ٣٣ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ

इस तरीक़े से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	बेशक वह	क़त्ल में

هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ

है	अ़हद	बेशक	अ़हद को	और पूरा करो	अपनी जवानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर	वह

مَسْــُٔوْلًا ٣٤ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ

सीधी	तराज़ू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुर्सिश किया जाने वाला

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ٣٥ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ

बेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिबार से	और सब से अच्छा	बेहतर	यह

السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــُٔوْلًا ٣٦

36	पुर्सिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ

पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	बेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल

طُوْلًا ٣٧ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ٣٨ ذٰلِكَ مِمَّآ

उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह	तमाम	37	बुलन्दी

اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की

فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ٣٩ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ

बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए

وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ٤٠ ع ١٠ ٤

40	बड़ा बोल	अलबत्ता कहते हो (बोलते हो)	बेशक तुम	बेटियां	फ़रिश्ते	से - को	और बना लिया

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ

कह दें आप (स)	41	नफ़्रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस कुरआन	में	और अलबत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया

لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ़	वह ज़रूर ढून्डते	उस सूरत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ	अगर होते

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ

सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	बरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है

وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ

और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन

لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ

कुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बख़्शने वाला	बुर्दबार	है	बेशक वह	उन की तस्बीह	तुम नहीं समझते

جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا

और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए

ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ

हम	46	नफ़्रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	कुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो

اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ

जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ़	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस ग़र्ज़ से	खूब जानते हैं

الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا

कैसी उन्हों ने चस्पां कीं	तुम देखो	47	सिह्रज़दा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)

لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا

हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधी) राह	पस वह इस्तिताअ़त नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए

عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً

पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यक़ीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां

اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِىْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ

कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (ख़याल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़्लूक़	या	50	लोहा	या

يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِىْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे)	बार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फ़रमा दें	हमे लौटाएगा

رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

51	क़रीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

الربع

और हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़्रत। (41)
आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहते हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूरत में वह अ़र्श वाले की तरफ़ ज़रूर ढून्डते कोई रास्ता। (42)
वह उस से निहायत पाक है और बरतर जो वह कहते हैं। (43)
उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और ज़मीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शै) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्बीह नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार, बख़्शने वाला है। (44)
और जब तुम कुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45)
और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम कुरआन में अपने यकता रब का ज़िक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़्रत करते हुए भाग जाते हैं। (46)
हम खूब जानते हैं कि वह उस को किस ग़र्ज़ से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिह्रज़दा आदमी की। (47)
तुम देखो! उन्हों ने तुम पर कैसी मिसालें चस्पां कीं, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअ़त नहीं पाते। (48)
और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यक़ीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49)
कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50)
या कोई और मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़यालों में उस से भी बड़ी हो। फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटकाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि क़रीब ही हो। (51)

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا

सिर्फ़	तुम रहे	कि	और तुम ख़याल करोगे	उस की तारीफ़ के साथ	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	वह पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन

قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ ع ١٢ ٥

फ़साद डालता है	शैतान	बेशक	सब से अच्छी	वह	वह जो	वह कहें	मेरे बन्दों को	और फ़रमा दें	52	थोड़ी देर

بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ

तुम्हें	खूब जानता है	तुम्हारा रब	53	खुला	दुश्मन	इन्सान का	है	शैतान	बेशक	उन के दरमियान

اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾

54	दारोग़ा	उन पर	हम ने तुम्हें भेजा	और नहीं	तुम्हें अ़ज़ाब दे	वह चाहे	अगर	या	तुम पर रह्म करे वह	वह चाहे	अगर

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ

बाज़	और तहक़ीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	में	जो कोई	खूब जानता है	और तुम्हारा रब

النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

तुम गुमान करते हो	वह जिन को	पुकारो तुम	कह दें	55	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी	बाज़ पर	नबी (जमा)

مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿۵۶﴾ اُولٰۗىِٕكَ

वह लोग	56	बदलना	और न	तुम से	तक्लीफ़	दूर करना	पस वह इख़्तियार नहीं रखते	उस के सिवा

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ

और वह उम्मीद रखते हैं	ज़ियादा क़रीब	उन से कौन	वसीला	अपना रब	तरफ़	ढून्डते हैं	वह पुकारते हैं	जिन्हें

رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنْ

और नहीं	57	डर की बात	है	तेरा रब	अ़ज़ाब	बेशक	उस का अ़ज़ाब	और वह डरते हैं	उस की रहमत

مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا

अ़ज़ाब	उसे अ़ज़ाब देने वाले	या	क़ियामत का दिन	पहले	उसे हलाक करने वाले	हम	मगर	कोई बस्ती

شَدِيْدًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ

हम भेजें	कि	और नहीं हमें रोका	58	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	सख़्त

بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً

दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	ऊँटनी	समूद	और हम ने दी	अगले लोग (जमा)	उन को	झुटलाया	यह कि	मगर	निशानियां

فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	तुम से	हम ने कहा	और जब	59	डराने को	मगर	निशानियां	और हम नहीं भेजते	उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया

اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ

और (थोहर का) दरख़्त	लोगों के लिए	आज़माइश	मगर	हम ने तुम्हें दिखाई	वह जो कि	नुमाइश	और हम ने नहीं किया	लोगों को	अहाता किए हुए

الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾ ع ٨ ٦

60	बड़ी	सरकशी	मगर (सिर्फ़)	तो नहीं बढ़ती उन्हें	और हम डराते हैं उन्हें	कुरआन में	जिस पर लानत की गई

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ़ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम ख़याल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ़ थोड़ी देर। (52) और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (53) तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रह्म करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। (54) और तुम्हारा रब खूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहक़ीक़ हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55) आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तक्लीफ़ दूर करने का, और न (तक्लीफ़) बदलने का। (56) वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (खुद) ढून्डते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा क़रीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अ़ज़ाब से डरते हैं, बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब डर (ही) की बात है। (57) और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अ़ज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। (58) और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़रीए-बसीरत ओ इब्रत, उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59) और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) क़ाबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आज़माइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर कुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

وَاِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوۡۤا اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ قَالَ

उस ने कहा	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम (अ) को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब

ءَاَسۡجُدُ لِمَنۡ خَلَقۡتَ طِيۡنًا ۚ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيۡتَكَ هٰذَا الَّذِىۡ كَرَّمۡتَ

तू ने इज़्ज़त दी	वह जिसे	यह	भला तू देख	उस ने कहा	61	मिट्टी से	तू ने पैदा किया	उस को जिसे	क्या मैं सिज्दा करूँ

عَلَىَّ لَئِنۡ اَخَّرۡتَنِ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ لَاَحۡتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا

सिवाए	उस की औलाद	जड़ से उखाड़ दूँगा ज़रूर	रोज़े क़ियामत	तक	तू मुझे ढील दे	अलबत्ता अगर	मुझ पर

قَلِيۡلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذۡهَبۡ فَمَنۡ تَبِعَكَ مِنۡهُمۡ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ

तुम्हारी सज़ा	जहन्नम	तो बेशक	उन में से	तेरी पैरवी की	पस जिस	तू जा	उस ने फ़रमाया	62	चन्द एक

جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ﴿۶۳﴾ وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ

अपनी आवाज़ से	उन में से	तेरा बस चले	जो - जिस	और फुसला ले	63	भरपूर	सज़ा

وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ

माल (जमा)	में	और उन से साझा कर ले	और पयादे	अपने सवार	उन पर	और चढ़ा ला

وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِىۡ

मेरे बन्दे	बेशक	64	धोका	मगर (सिर्फ़)	शैतान	और नहीं उन से वादा करता	और वादे कर उन से	और औलाद

لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيۡلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىۡ

वह जो कि	तुम्हारा रब	65	कारसाज़	तेरा रब	और काफ़ी	ज़ोर - ग़ल्बा	उन पर	तेरा	नहीं

يُزۡجِىۡ لَكُمُ الۡفُلۡكَ فِى الۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمۡ

तुम पर	है	बेशक वह	उस का फ़ज़्ल	से	ताकि तुम तलाश करो	दर्या में	कश्ती	तुम्हारे लिए	चलाता है

رَحِيۡمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الۡبَحۡرِ ضَلَّ مَنۡ تَدۡعُوۡنَ

तुम पुकारते थे	जो	गुम हो जाते हैं	दर्या में	तक्लीफ़	तुम्हें छूती (पहुँचती) है	और जब	66	निहायत मेहरबान

اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمۡ اِلَى الۡبَرِّ اَعۡرَضۡتُمۡ ؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ

इन्सान	और है	तुम फिर जाते हो	खुश्की की तरफ़	वह तुम्हें बचा लाया	फिर जब	उस के सिवा

كَفُوۡرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ جَانِبَ الۡبَرِّ اَوۡ يُرۡسِلَ

वह भेजे	या	खुश्की की तरफ़	तुम्हें	धंसा दे	कि	सो क्या तुम निडर हो गए हो	67	बड़ा नाशुक्रा

عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَكُمۡ وَكِيۡلًا ۙ﴿۶۸﴾ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ اَنۡ

कि	तुम बेफ़िक्र हो गए	या	68	कोई कारसाज़	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	पत्थर बरसाने वाली हवा	तुम पर

يُّعِيۡدَكُمۡ فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا مِّنَ

से - का	सख़्त झोंका	तुम पर	फिर भेज दे वह	दोबारा	उस में	वह तुम्हें ले जाए

الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ﴿۶۹﴾

69	पीछा करने वाला	उस पर	हम पर (हमारा)	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	तुम ने नाशुक्री की	बदले में	फिर तुम्हें ग़र्क़ कर दे	हवा

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61)
उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्ता अगर तू मुझे रोज़े क़ियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62)
उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो बेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63)
और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है।। (64)
बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, और तेरा रब काफ़ी है कारसाज़। (65)
तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किश्ती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश करो, बेशक वह तुम पर निहायत मेहरबान है। (66)
और जब तुम्हें दर्या में तक्लीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, खुश्की की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67)
सो क्या तुम निडर हो गए हो कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें खुश्की की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68)
या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख़्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्री के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

से	और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया	और दर्या	खुश्की में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज़्ज़त बख़्शी	और तहक़ीक़

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ ع ۷

जिस दिन	70	बड़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख़्लूक़)	उस से जो	बहुत सी	पर	और हम ने उन्हें फ़ज़ीलत दी	पाकीज़ा चीज़ें

نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ

तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेशवाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे

يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ

इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह ज़ुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे

اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ

कि तुम्हें बिचला दें	वह क़रीब था	और तहक़ीक़	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	आख़िरत में	पस वह	अन्धा

عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ

अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट बान्धो	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो	से

خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ़	अलबत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित क़दम रखते	यह कि	और अगर न	73	दोस्त

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ

अपने लिए	तुम ने पाते	फिर	मौत	और दुगनी	ज़िन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते

عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ

ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	क़रीब था	और तहक़ीक़	75	कोई मददगार	हम पर (हमारे मुक़ाबले में)

مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते	और उस सूरत में	यहां से

قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ ع ۸ ۸

ढलने से	नमाज़	क़ाइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम न पाओगे	अपने रसूल (जमा)	से	आप से पहले

الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ

है	सुबह का कुरआन	बेशक	सुबह (फ़ज्र)	और कुरआन	रात	अन्धेरा	तक	सूरज

مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

कि तुम्हें खड़ा करे	क़रीब	तुम्हारे लिए	नफ़िल (ज़ाइद)	इस (कुरआन) के साथ	सो बेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा	78	हाज़िर किया गया (फ़िरिश्तों को)

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ

सच्चा	दाख़िल करना	मुझे दाख़िल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुक़ामे महमूद	तुम्हारा रब

وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

80	मदद देने वाला	ग़ल्बा	अपनी तरफ़ से	मेरे लिए	और अ़ता कर	सच्चा	निकालना	और मुझे निकाल

और तहक़ीक़ हम ने औलादे आदम (अ) को इज़्ज़त बख़्शी, और हम ने उन्हें खुश्की और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बड़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। **(70)**
जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह ज़ुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। **(71)**
और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। **(72)**
और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है क़रीब था कि वह तुन्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। **(73)**
और अगर हम तुम्हें साबित क़दम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। **(74)**
उस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार। **(75)**
और तहक़ीक़ क़रीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। **(76)**
आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। **(77)**
सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ क़ाइम करें, और सुबह का कुरआन, बेशक सुबह का कुरआन (पढ़ने में फ़िरिश्ते) हाज़िर होते हैं। **(78)**
और रात का कुछ हिस्सा कुरआन की तिलावत के साथ बेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। **(79)**
और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अ़ता कर ग़ल्बा, मदद देने वाला। **(80)**

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

81	है ही मिटने वाला	बातिल	बेशक	बातिल	और नाबूद हो गया	आया हक़	और कह दें आप (स)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

और नहीं ज़ियादा होता	मोमिनों के लिए	और रहमत	वह शिफ़ा	जो	कुरआन	से	और हम नाज़िल करते हैं

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ

वह रूगर्दान हो जाता है	इन्सान	पर - को	हम नेमत बख़्शते हैं	और जब	82	घाटा	सिवाए	ज़ालिम (जमा)

وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى

पर	काम करता है	कह दें हर एक	83	मायूस	वह हो जाता	बुराई	उसे पहुँचती है	और जब	और पहलू फेर लेता है

ع ۹ ۹ شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ

और आप (स) से पूछते हैं	84	रास्ता	ज़ियादा सहीह	कि वह कौन	खूब जानता है	सो तुम्हारा परवरदिगार	अपना तरीक़ा

عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	तुम्हें दिया गया	और नहीं	मेरा रब	हुक्म से	रूह	कह दें	रूह	से - के बारे में

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾ وَلَىِٕنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो कि	तो अलबत्ता हम ले जाएं	हम चाहें	और अगर	85	थोड़ा सा	मगर

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ

बेशक उस का फ़ज़्ल	तुम्हारे रब से	रहमत	मगर	86	कोई मददगार	हमारे (मुक़ाबले) पर	उस के लिए	अपने वास्ते	फिर तुम न पाओ

كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى

पर	और जिन	तमाम इन्सान	जमा हो जाएं	अगर	कह दें	87	बड़ा	तुम पर	है

اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ

उन के बाज़	और अगरचे हो जाएं	इस के मानिंद	न ला सकेंगे	इस कुरआन	मानिंद	वह लाएं	कि

لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ

से	इस कुरआन	में	लोगों के लिए	और हम ने तरह तरह से बयान किया है	88	मददगार	बाज़ के लिए

كُلِّ مَثَلٍ ۡ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

तुझ पर	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे	और वह बोले	89	नाशुक्री	सिवाए	अक्सर लोग	पस कुबूल न किया	हर मिसाल

حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ

से - का	एक बाग़	तेरे लिए	या हो जाए	90	कोई चश्मा	ज़मीन से	हमारे लिए	तू रवां कर दे	यहां तक कि

نَخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

आस्मान	तू गिरा दे	या	91	बहती हुई	उस के दरमियान	नहरें	पस तू रवां कर दे	और अंगूर	खजूर (जमा)

كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

92	रूबरू	और फ़रिश्ते	अल्लाह को	या तू ले आ	टुकड़े	हम पर	जैसा कि तू कहा करता है

और कह दें हक़ आया और बातिल नाबूद हो गया, बेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81)
और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82)
और जब हम इन्सान को नेमत बख़्शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83)
कह दें हर एक अपने तरीक़े पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84)
और वह आप (स) से रूह के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85)
और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्ब कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे मुक़ाबले पर कोई मददगार। (86)
मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (87)
आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आएं तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के बाज़, बाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88)
और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुबूल न किया। (89)
और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90)
या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान बहती नहरें रवां कर दे। (91)
या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ़ एक बशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। (93)
और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएं जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्हों न कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल (बना कर) भेजा है? (94)
आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल (बना कर) उतारते। (95)
आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है, बेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (96)
और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के चहरों के बल अन्धे और गूंगे और बहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। (97)
यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्हों ने कहा क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? (98)
क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर क़ादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुक्री के सिवा क़ुबूल न किया। (99)
आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। (100)

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ

और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या

لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۭ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ

नहीं हूं मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहां तक कि	तेरे चढ़ने को

اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ ع وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ ع ٩ ١٠

उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएं	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक बशर	मगर- सिर्फ़

الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ

अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक बशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	हिदायत

فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फ़रिश्ते	ज़मीन में

مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ

है	बेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफ़ी है	कह दें	95	रसूल	फ़रिश्ता

بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का

يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे

عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ

बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और बहरे	और गूंगे	अन्धे	उन के चहरे	पर - बल

زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا النصف

और उन्हों ने कहा	हमारी आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां	हो जाएंगे हम	क्या जब

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्हों ने देखा	क्या नहीं

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम (जमा)	तो क़ुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे

اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا

जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्री के सिवा

لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾ ع ع ١١ ١١

100	तंग दिल	इन्सान	और है	ख़र्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ

और अलबत्ता हम ने दीं	मूसा (अ)	नौ (9)	खुली निशानियां	पस पूछ तू	बनी इस्राईल	जब	उन के पास आया

فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ

तो कहा	उस को	फ़िरऔन	बेशक मैं	तुझ पर गुमान करता हूँ	ऐ मूसा	जादू किया गया	101	उस ने कहा	अलबत्ता तू ने जान लिया

مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ

नहीं नाज़िल किया	इस को	मगर	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	बसीरत (जमा)	और बेशक मैं	तुझ पर गुमान करता हूँ

يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ

ऐ फ़िरऔन	हलाक शुदा	102	पस उस ने इरादा किया	कि	उन्हें निकाल दे	ज़मीन से	तो हम ने उसे ग़र्क़ कर दिया

وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا

और जो	उसके साथ	सब	103	और हम ने कहा	उस के बाद	बनी इस्राईल को	तुम रहो

الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ

ज़मीन (मुल्क)	फिर जब	आएगा	आख़िरत का वादा	हम ले आएंगे	तुम को	जमा कर के	104	और हक़ के साथ	हम ने इसे नाज़िल किया

وقف لازم

وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ

और सच्चाई के साथ	नाज़िल हुआ	और नहीं	हम ने आप (स) को भेजा	मगर ख़ुशख़बरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	105	और कुरआन	हम ने जुदा जुदा किया

لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ

ताकि तुम उसे पढ़ो	पर	लोग	ठहर ठहर कर	और हम ने उसे नाज़िल किया	आहिस्ता आहिस्ता	106	आप कह दें	तुम इस पर ईमान लाओ	या

لَا تُؤْمِنُوْا ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

तुम ईमान न लाओ	बेशक	वह लोग जिन्हें	इल्म दिया गया	इस से क़ब्ल	जब	वह पढ़ा जाता है	उन के सामने

يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ

वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	सिज्दा करते हुए	107	और वह कहते हैं	पाक है	हमारा रब	बेशक	है

وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ

वादा	हमारा रब	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	108	और वह गिर पड़ते हैं	ठोड़ियों के बल	रोते हुए	और उन में ज़ियादा करता है

السجدة ٤

خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ

आजिज़ी	109	आप कहदें	तुम पुकारो	अल्लाह	या तुम पुकारो	रहमान	जो कुछ भी	तुम पुकारोगे	सो उसी के लिए

الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ

सब से अच्छे नाम	और न बुलन्द करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न बिलकुल पस्त करो तुम	उस में	और ढून्डो	उस के दरमियान

سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

रास्ता	110	और कह दें	तमाम तारीफ़ें	अल्लाह के लिए	वह जिस ने	नहीं बनाई	कोई औलाद	और नहीं है	उस के लिए

ع ١١ ١٢ ١٢

شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

कोई शरीक	सलतनत में	और नहीं है	उस का	कोई मददगार	से, सबब	नातवानी	और उस की बड़ाई करो	ख़ूब बड़ाई	111

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने उस को कहा बेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिह्र ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने बसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आख़िरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (कुरआन को) हक़ के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतद्रीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, बेशक जिन्हें इस से क़ब्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिज़ी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहुत) बुलन्द करो और न उस में बिलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढून्डो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और ख़ूब उस की बड़ाई (बयान) करो। (111)

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं
जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर
(यह) किताब नाज़िल की, और उस
में कोई कजी न रखी। (1)
(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी)
ताकि डर सुनाए उस की तरफ़
से सख़्त अ़ज़ाब से, और मोमिनों
को खुशख़बरी दे, जो अच्छे अ़मल
करते हैं कि उन के लिए अच्छा
अजर है, (2)
वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)
और वह उन लोगों को डराए
जिन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा
बना लिया है। (4)
उस का न उन्हें कोई इल्म है
और न उन के बाप दादा को था,
बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से
निकलती है, वह नहीं कहते मगर
झूट। (5)
तो शायद आप (स) उन के पीछे
अपनी जान को हलाक करने वाले
हैं, अगर वह ईमान न लाए इस
बात पर, ग़म के मारे। (6)
जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने
उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है
ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में
कौन है अ़मल में बेहतर। (7)
और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है
बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़
चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)
क्या तुम ने गुमान किया? कि
कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले
हमारी निशानियों में से अ़जीब
थे। (9)
जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली
तो उन्हों ने कहा, ऐ हमारे रब!
हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे,
और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया
कर। (10)
पस हम ने पर्दा डाला उन के
कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल
(सुलाया)। (11)

آیَاتُهَا ١١٠ ❀ سُوْرَةُ الْكَهْفِ (١٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12	(18) सूरतुल कहफ़ ग़ार	आयात 110

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ

और न रखी	किताब (कुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

لَّهٗ عِوَجًا ۜ ١ قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ

और खुशख़बरी दे	उस की तरफ़ से	सख़्त	अ़ज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में

الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ٢

2	अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह जो	मोमिनों

مّٰكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۙ ٣ وَّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे

وَلَدًا ۗ ٤ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً

बात	बड़ी है	उन के बाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा

تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ٥ فَلَعَلَّكَ

तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤی اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ

बात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला

اَسَفًا ٦ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَی الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ

कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे

اَحْسَنُ عَمَلًا ٧ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا ؕ ٨

8	बंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अ़मल में	बेहतर

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِیْمِ كَانُوْا مِنْ

से	वह थे	और रक़ीम	असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?

اٰیٰتِنَا عَجَبًا ٩ اِذْ اَوَی الْفِتْیَةُ اِلَی الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ

ऐ हमारे रब	तो उन्हों ने कहा	ग़ार	तरफ़- में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अ़जीब

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَیِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ١٠

10	दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ़ से	हमें दे

فَضَرَبْنَا عَلٰۤی اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ عَدَدًا ۙ ١١

11	कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)

ع ١٢ ١٣ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٢﴾

12	मुद्दत	कितनी देर रहे	हिसाब रखा	दोनों गिरोह	कौन-किस	ताकि हम देखें	हम ने उन्हें उठाया	फिर

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

अपने रब पर	वह ईमान लाए	चन्द नौजवान	बेशक वह	ठीक ठीक	उनका हाल	तुझ से	बयान करते हैं	हम

وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿١٣﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا

तो उन्हों ने कहा	वह खड़े हुए	जब	उन के दिल	पर	और हम ने गिरह लगादी	13	हिदायत	और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ

अलबत्ता हम ने कही	कोई माबूद	उस के सिवा	हम पुकारेंगे	हरगिज़ न	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हमारा रब

اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ

और माबूद	उस के सिवा	उन्हों ने बना लिए	हमारी क़ौम	यह है	14	बेजा बात	उस वक़्त

لَوْلَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی

इफ़्तिरा करे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	वाज़ेह	कोई दलील	उन पर	क्यों वह नहीं लाते

عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ

अल्लाह के सिवा	और जो वह पूजते हैं	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जब	15	झूट	अल्लाह	पर

فَاْوٗٓا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	मुहैया करेगा	अपनी रहमत	से	तुम्हारा रब	फैला देगा तुम्हें	ग़ार	तरफ़-में	तो पनाह लो

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ

से	बच कर जाती है	वह निकलती है	जब	सूरज (धूप)	और तुम देखोगे	16	सहूलत	तुम्हारे काम	से

كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

बाएं तरफ़	उन से कतरा जाती है	वह ढल जाती है	और जब	दाएं तरफ़	उन का ग़ार

وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ

हिदायत दे अल्लाह	जो-जिसे	अल्लाह की निशानियां	से	यह	उस (ग़ार) की	खुली जगह	में	और वह

ع ٢ ٥ ١٤ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

17	सीधी राह दिखाने वाला	कोई रफ़ीक़	उस के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	वह गुमराह करे	और जो-जिस	पस वह हिदायत याफ़्ता

وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ

दाएं तरफ़	और हम बदलवाते हैं उन्हें	सोए हुए	हालांकि वह	बेदार	और तू उन्हें समझे

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

अगर तू झांकता	देहलीज़ पर	दोनों हाथ	फैलाए हुए	और उन का कुत्ता	और बाएं तरफ़

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

18	दहशत में	उन से	और तू भर जाता	भागता हुआ	उन से	तो पीठ फेरता	उन पर

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख़्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्हों ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14)

यह है हमारी क़ौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़्तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ बच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक कहने वाला	कहा	आपस में	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	हम ने उन्हें उठाया	और उसी तरह

كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

तुम्हारा रब	उन्हों ने कहा	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	उन्हों ने कहा	तुम कितनी देर रहे

اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ

यह	अपना रुपया दे कर	अपने में से एक	पस भेजो तुम	जितनी मुद्दत तुम रहे	खूब जानता है

اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ

खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना	पाकीज़ा तर	कौन सा	पस वह देखे	शहर	तरफ़

مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ١٩

19	किसी को	तुम्हारी	और वह ख़बर न दे बैठे	और नर्मी करे	उस से

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ

तुम्हें लौटा लेंगे	या	तुम्हें संगसार कर देंगे	तुम्हारी	अगर वह ख़बर पा लेंगे	बेशक वह

فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ٢٠ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا

हम ने ख़बरदार कर दिया	और उसी तरह	20	उस सूरत में कभी	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	अपनी मिल्लत	में

عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْۤا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ

कोई शक नहीं	क़ियामत	और यह कि	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	ताकि वह जान लें	उन पर

فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا

बनाओ	तो उन्हों ने कहा	उन का मामला	आपस में	वह झगड़ते थे	जब	उस में

عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا

वह लोग जो ग़ालिब थे	कहा	खूब जानता है उन्हें	उनका रब	एक इमारत	उन पर

عَلٰۤى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ٢١ سَيَقُوْلُوْنَ

अब वह कहेंगे	21	एक मस्जिद	उन पर	हम ज़रूर बनाएंगे	अपने काम	पर

ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

उन का कुत्ता	उन का छटा	पाँच	और वह कहेंगे	उन का कुत्ता	उन का चौथा	तीन

رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ

कह दें आप (स)	उन का कुत्ता	और उन का आठवां	सात	और कहेंगे वह	बिन देखे	बात फैंकना

رَّبِّيْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۫ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ

उन में	पस न झगड़ो	थोड़े	मगर सिर्फ़	उन्हें नहीं जानते हैं	उन की गिनती (तेदाद)	खूब जानता है	मेरा रब

اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ٢٢

22	किसी	उन में से	उनके (बारे में)	पूछ	और न	ज़ाहिरी (सरसरी)	बहस	सिवाए

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्हों ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ़, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। **(19)**

बेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। **(20)**

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्हों ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मस्जिद (इबादतगाह)। **(21)**

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है उन का कुत्ता, बिन देखे फैंकते हैं (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। **(22)**

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التّاء بعد الياء من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع ٣ ١٥ ٥

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَاْىءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۲۳ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह	तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह

رَبِّىْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۲٤ وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ

अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा क़रीब की	मेरा रब

ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۲٥ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

कितनी मुद्दत वह ठहरे	ख़ूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ

और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۲٦

26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं

وَاتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ قف

उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें

وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۲۷ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ

साथ	अपना नफ़्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِىِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

उस का चहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं

وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरें)

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ

और है	अपनी ख़ाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो

اَمْرُهٗ فُرُطًا ۲۸ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ قف فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ

सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	उस का काम

وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا

आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़्र करे (न माने)	चाहे	और जो

اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ

पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की क़नातें	उन्हें	घेर लेंगी

كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۲۹

29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	मुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए तांम्बे की मानिंद

الثلثة

और हरगिज़ किसी काम को न कहना "कि मैं कल करने वाला हूँ" (कल कर दूँगा), (23) मगर "यह कि अल्लाह चाहे" (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा क़रीब की भलाई की। (24) और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25) आप (स) कह दें अल्लाह ख़ूब जानता है वह कितनी मुद्दत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (ख़ूब) वह देखता है और क्या (ख़ूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26) और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28) और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहन्नम)। (29)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यक़ीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अ़मल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बाग़ात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31) और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग़ बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख़्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32) दोनों बाग़ अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33) और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़्ज़त हूँ। (34) और वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35) और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36) उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37) लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ

जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यक़ीनन हम	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي

बहती हैं	हमेशगी	बाग़ात	उन के लिए	यही लोग	30	अ़मल	अच्छा किया

مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे

وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔينَ

तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे

فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ ع ٩ ١٦

और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख़्तों (मसहरियों) पर	उस में

لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ

अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग़	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए

وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ

दोनों बाग़	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख़्त	और हम ने उन्हें घेर लिया

اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल	लाए

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ أَنَا أَكْثَرُ

मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था

مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ

और वह	अपना बाग़	और वह दाख़िल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा बाइज़्ज़त	माल में	तुझ से

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَآ أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

35	कभी	यह	बरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर	ज़ुल्म कर रहा था

وَّمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّي لَأَجِدَنَّ

मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ़	मैं लौटाया गया	और अगर	क़ाइम (बरपा)	क़ियामत	और मैं गुमान नहीं करता

خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ

उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से	बेहतर

أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ

फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़्र करता है

سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّي وَلَآ أُشْرِكُ بِرَبِّيٓ أَحَدًا ﴿٣٨﴾

38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37	मर्द	तुझे पूरा बनाया

وَلَوْ لَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ

अल्लाह की	मगर	नहीं कुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाख़िल हुआ	जब	और क्यों न

اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۚ ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ

कि	मेरा रब	तो क़रीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ ۙ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ

फिर तू हरगिज़ न कर सके	ख़ुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए

لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى

पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलब (तलाश)	उस को

مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ

ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने ख़र्च किया

لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

उस की मदद करती वह	कोई जमाअ़त	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ ؕ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

इख़्तियार	यहां	43	बदला लेने के क़ाबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से

لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ ۧ وَاضْرِبْ لَهُمْ ع ١٣ ٥ ١٧

उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक़

مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल

فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ

उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नबातात (सब्ज़ा)	उस से-ज़रीए	पस मिल जुल गया

الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ

माल	45	बड़ी कुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ

बेहतर	नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे

عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ

पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आर्ज़ू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक

وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ ۚ

47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ
अपने बाग़ में, तू ने कहा "माशा
अल्लाह" (जो अल्लाह चाहे वही
होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर
अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे
अपने से कम तर देखता है माल में
और औलाद में, (39)
तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे
बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे
बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से,
फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान
हो कर रह जाए। (40)
या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए,
और तू हरगिज़ न कर सके उस को
तलाश। (41)
और उस के फल (अ़ज़ाब में)
घेर लिए गए और उस में जो उस
ने ख़र्च किया था, वह उस पर
अपना हाथ मलता रह गया और
वह (बाग़) अपनी छतरियों पर
गिरा हुआ था और वह कहने लगा
ऐ काश, मैं अपने रब के साथ
किसी को शरीक न करता। (42)
और उस के लिए कोई जमाअ़त न
हुई कि अल्लाह के सिवा उस की
मदद करती, और वह बदला लेने
के क़ाबिल न था। (43)
यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक़ के
लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में,
और बेहतर है बदला देने में। (44)
और आप (स) उन के लिए बयान
करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है)
जैसे हम ने आस्मान से पानी
उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन
का सब्ज़ा मिल जुल गया (ख़ूब घना
उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया
कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और
अल्लाह हर शै पर बड़ी कुदरत
रखने वाला है। (45)
माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी
की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने
वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक
बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं
आर्ज़ू में। (46)
और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे,
और तू ज़मीन को साफ़ मैदान
देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे,
फिर हम उन में से किसी को न
छोड़ेंगे। (47)

और वह तेरे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश किए जाएंगे, (आख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्ते मौऊद न ठहराएंगे। (48)
और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुज्रिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्हों ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (49)
और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिज्दा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह (क़ौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुक्म से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)
मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाज़ू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)
और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)
और देखेंगे मुज्रिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)
और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ालू है। (54)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ बस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे

اَوَّلَ مَرَّةٍۢ ۡ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ

और रखी जाएगी	48	कोई वक़्ते मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार

الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

उस में	उस से जो	डरते हुए	मुज्रिम (जमा)	सो तुम देखोगे	किताब

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً

छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)	कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे

وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ

सामने	जो उन्हों ने किया	और वह पालेंगे	वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا ع ٦ ١٨

तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और ज़ुल्म नहीं करेगा

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ

से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम (अ) को

اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ

और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)	और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो	अपने रब का हुक्म

لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ

पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

बनाने वाला	और मैं नहीं	उन की जानें (खुद वह)	और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ

और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाज़ू	गुमराह करने वाले

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया

مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا

गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुज्रिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह

وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ ع ٧ ١٩

कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

54	झगड़ालू	हर शै से ज़ियादा	इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

और वह बख़्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब

الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ

ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अ़ज़ाब

وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا

ताकि वह फुसला दें	नाहक़ (की बातों से)	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ

और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो-जिस	मेरी आयात	और उन्हों ने बनाया	हक़	उस से

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ

जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ

और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	बेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ

اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا

पाएं हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान

اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़्शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी	जब भी

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا

वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अ़ज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्हों ने किया

مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

और हम ने मुक़र्रर किया	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	बस्तियां	और यह (उन)	58	पनाह की जगह	उस से वरे

ع ٨ ٦ ٢٠ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ۧ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى

यहां तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त	उन की तबाही के लिए

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह	मैं पहुँच जाऊँ

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا

फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह भूल गए	दोनों के दरमियान

جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुबह का खाना	हमारे पास लाओ	अपने शागिर्द को	उस ने कहा	वह आगे चले

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएं जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख़्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अ़ज़ाब। (55) और हम रसूल नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्हों ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, बेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस क़ुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57) और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अ़ज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के वरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58) और उन बस्तियों को जब उन्हों ने ज़ुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59) और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहां तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूँगा। (60) फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61) फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुबह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अ़जीब तरह से। **(63)**
मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। **(64)**
फिर उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। **(65)**
मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। **(66)**
उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। **(67)**
और तू उस पर कैसे सब्र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। **(68)**
मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सब्र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। **(69)**
ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअ़ल्लिक़, यहां तक कि मैं ख़ुद तुझ से ज़िक्र करूँ। **(70)**
फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कश्ती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को ग़र्क़ कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। **(71)**
ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। **(72)**
मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालें। **(73)**
फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। **(74)**

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ

मछली	भूल गया	तो बेशक मैं	पत्थर	तरफ़-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ

दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं

عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا

अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अ़जीब तरह

قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64	देखते हुए

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى

पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से	और हम ने इल्म दिया उसे

اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि

مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68	वाक़फ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सब्र करेगा	और कैसे	67	सब्र	मेरे साथ

قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सब्र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ

मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ ع ۹ ۱۱ ۲۱

उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कश्ती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का	तुझ से

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम ग़र्क़ कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	72	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा

لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73	मुश्किल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले

نَفْسًا زَكِيَّةً ۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	बग़ैर	पाक	एक जान

الجزء ١٦

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	बेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ

अलबत्ता तुम पहुँच गए	तो मुझे अपने साथ न रखना	इस के बाद	किसी चीज़ से	मैं तुम से पूछूँ	उस (मूसा अ) ने कहा अगर

مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨاسْتَطْعَمَآ

दोनों ने खाना मांगा	एक गावँ वालों के पास	जब वह दोनों आए	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	76	उज़्र को	मेरी तरफ़ से

اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ

वह चाहती थी	उस में (वहां) एक दीवार	फिर उन्हों ने पाई (देखी)	वह उन की ज़ियाफ़त करें	तो उन्हों ने इन्कार कर दिया कि	उस के बाशिन्दे

اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	77	उजरत	उस पर	ले लते	अगर तुम चाहते	उस ने कहा	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	कि वह गिर पड़े

هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ

उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर	अब तुम्हें बताए देता हूँ	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	जुदाई	यह

صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ

दर्या में	वह काम करते थे	ग़रीब लोगों की	सो वह थी	कश्ती	रही	78	सब्र

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

हर कश्ती	वह पकड़ लेता	एक बादशाह	उन के आगे	और था	मैं उसे ऐबदार कर दूँ	कि	सो मैं ने चाहा

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا

कि उन्हें फंसादे	सो हमें अन्देशा हुआ	दोनों मोमिन	उस के माँ बाप	तो थे	लड़का	और रहा	79	ज़बरदस्ती

طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

पाकीज़गी	उस से	बेहतर	उन का रब	कि बदला दे उन दोनों को	पस हम ने इरादा किया	80	और कुफ़्र में	सरकशी में

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ

दो यतीम	दो (2) बच्चों की	सो वह थी	दीवार	और रही	81	शफ़्क़त	और ज़ियादा क़रीब

فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ

सो चाहा कि	नेक	उन का बाप	और था	उन दोनों के लिए	ख़ज़ाना	उस के नीचे	और था	शहर में - के

رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ

से तुम्हारा रब	मेहरबानी	अपना ख़ज़ाना	और वह दोनों निकालें	अपनी जवानी	कि वह पहुँचें	तुम्हारा रब

ع ١٠/١٢ ١
وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

82	सब्र	उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर (हक़ीक़त)	यह	अपना हुक्म (मरज़ी)	से	और यह मैं ने नहीं किया

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

83	कुछ हाल	उस से- का	तुम पर- सामने	अभी पढ़ता हूँ	फ़रमा दें	ज़ुलक़रनैन	से (बाबत)	और आप (स) पूछते हैं

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75)
मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअ़ल्लिक़) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलबत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़्र को। (76)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्हों ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उजरत ले लते। (77)
उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें ताबीर (हक़ीक़ते हाल) बताए देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78)
रही कश्ती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ। (79)
और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र में न फंसादे। (80)
बस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़्क़त में बहुत ज़ियादा क़रीब हो। (81)
और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए ख़ज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हक़ीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82)
और वह आप (स) से पूछते हैं ज़ुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

बेशक हम ने उस को ज़मीन में क़ुदरत दी और हम ने उसे हर शै का सामान दिया था। **(84)** सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, **(85)** यहां तक कि वह सूरज के ग़ुरूब होने के मुक़ाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक क़ौम पाई, हम ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। **(86)** उस ने कहा, अच्छा! जिस ने ज़ुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अ़ज़ाब देगा। **(87)** और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अ़मल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अ़नक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। **(88)** फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। **(89)** यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ़ होने के मुक़ाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ़ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। **(90)** यह है (हक़ीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-(इल्म) में है। **(91)** फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। **(92)** याहं तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक क़ौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। **(93)** उन्हों ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी हैं तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। **(94)** उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो क़ुव्वत (बाज़ू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। **(95)** मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाडों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धौंको, यहां तक कि जब (धौंक कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, **(96)**

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ

सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शै	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	बेशक हम ने क़ुदरत दी

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ

चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	ग़ुरूब होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान

حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ

यह कि	या-चाहे	ऐ ज़ुलक़रनैन	हम ने कहा	एक क़ौम	उस के नज़्दीक	और उस ने पाया	दलदल

تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ

जिस ने ज़ुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ

जो	और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अ़ज़ाब	तो वह उसे अ़ज़ाब देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द

آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا

अपना काम	मुतअ़ल्लिक़	उस के लिए	और अ़नक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

तुलूअ़ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ़ होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	88	आसानी

عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا

और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक क़ौम पर

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

दो दीवारें (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूए ख़बर	जो कुछ उस के पास

وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا

उन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक क़ौम	दोनों के बीच	उस ने पाया

يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ

तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	बेशक	ऐ ज़ुलक़रनैन

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें

مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	क़ुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर क़ुदरत दी मुझे

رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़

انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	यहां तक कि	धौंको

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	97	नक़ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे

هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ

और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह

وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के बाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा

وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूंका जाएगा सूर

عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ اِلَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا

और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थीं	वह जो कि	100	बिलकुल सामने

ع ١١ ١٩ ٢ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا

कि वह बना लेंगे	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते

عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	बेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ

उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएं	क्या	फ़रमा दें

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहें हैं	कि वह	ख़याल करते हैं	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ

पस हम क़ाइम न करेंगे	उन के अमल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

उन्हों ने कुफ़्र किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	क़ियामत के दिन	उन के लिए

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِىْ وَرُسُلِىْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के बाग़ात	उन के लिए	हैं	और उन्हों ने नेक अ़मल किए

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّىْ

मेरा रब	बातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फ़रमा दें	108	जगह बदलना	वहां से	वह न चाहेंगे

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّىْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएं	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़ब लगा सकेंगे। (97) उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़र्ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98) और हम छोड़ देंगे उन के बाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99) और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100) और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(ग़फ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101) जिन लोगों ने कुफ़्र किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। बेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102) फ़रमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएं आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)! (103) वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104) यही लोग हैं जन्हों ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ाइम न करेंगे (उन के अ़मल बे वज़न होंगे)। (105) यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हँसी मज़ाक़ ठहराया। (106) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बाग़ात। (107) उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108) फ़रमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएं। (109)

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ

हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फ़क़त	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फ़रमा दें

يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع ١٢ ٩ ٣

110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अ़मल	तो उसे चाहिए कि वह अ़मल करे	अपना रब	मुलाक़ात	उम्मीद रखता है

آيَاتُهَا ٩٨ ❀ سُوْرَةُ مَرْيَمَ (١٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआ़त 6 (19) सूरह मरयम आयात 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़करिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़्किरा	1	काफ़ हा या ऐन साद

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ

सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना

شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ

अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल

مِنْ وَّرَآءِىْ وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَّرِثُنِىْ

मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बांझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद

وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

तुझे बशारत देते हैं	बेशक हम	ऐ ज़करिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याकूब (अ)	से - का	और वारिस हो

بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का

يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ

बुढ़ापा	से - की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बांझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह

عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ

तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फ़रमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद

مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ

फ़रमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से

اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी

مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ़	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अ़मल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1)
यह तज़किरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़करिया (अ) पर। (2)
(याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद बालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4)
और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5)
वह वारिस हो मेरा और औलादे याकूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6)
(इरशाद हुआ) ऐ ज़करिया (अ)! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7)
उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी बीवी बांझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8)
उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10)
फिर वह मेहराबे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ١٢ۙ وَّحَنَانًا

और शफ़क़त	12	बचपन से	नबूवत-दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)	ऐ यहया (अ)

مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ١٣ۙ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ

और न था वह	अपने माँ बाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से

جَبَّارًا عَصِيًّا ١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

और जिस दिन	वह फ़ौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14	नाफ़रमान	गर्दन कश

وقف لازم ع ٢٥

يُبْعَثُ حَيًّا ١٥ ع وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा

مَكَانًا شَرْقِيًّا ١٦ۙ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ فَاَرْسَلْنَآ

फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिक़ी	मकान

اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ١٧ قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ

पनाह में आती हूँ	बेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शक्ल बन गया	अपनी रूह (फ़रिश्ता)	उस की तरफ़

بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ١٨ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ

तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है	तुझ से	अल्लाह की

لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ١٩ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ

जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा	एक लड़का	तुझ को	ताकि अता करूँ

الربع

يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ٢٠ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ

तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी बशर ने	मुझे छुआ

هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ

और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएं	आसान	मुझ पर	वह-यह

اَمْرًا مَّقْضِيًّا ٢١ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ٢٢

22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हम्ल रह गया	21	तै शुदा	एक अम्र

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ

मर चुकी होती	अए काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया

قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ٢٣ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ

उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से क़ब्ल

اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ٢٤ وَهُزِّىْٓ

और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू

اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ٢٥ ز

25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे बचपन (ही) से नबूवत ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अ़ता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (क़ुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिक़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फ़रिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक्ल बन कर आया। (17) वह बोली बेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अ़ता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी बशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अम्र। (21) फिर उसे हम्ल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्दे ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़ब्ल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फ़रिश्ते ने) आवाज़ दीः तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूँगी। (26)
फिर वह उसे उठा कर अपनी क़ौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)
ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)
तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोलेः हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)
बच्चे ने कहाः बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)
और मुझे नबी बनाया, और जहां कहीं मैं हूँ मुझे बाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)
और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)
और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)
यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)
अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है "हो जा" पस वह हो जाता है। (35)
और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)
(फिर अहले किताब के) फ़िरक़ों ने इख़्तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)
क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ

कोई	आदमी	से	फिर अगर तू देखे	आँखें	और ठंडी कर	और पी	तू खा

فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ﴿٢٦﴾

26	किसी आदमी	आज	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	रोज़ा	रहमान के लिए	कि मैं ने नज़्र मानी है	तो कह दे

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

27	बुरी (ग़ज़ब की)	शै	तू लाई है	ऐ मरयम	वह बोले	उसे उठाए हुए	अपनी क़ौम	फिर वह उसे ले कर आई

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۚ ﴿٢٨﴾

28	बदकार	तेरी माँ	और न थी	बुरा	आदमी	तेरा बाप	था	न	ऐ हारून (अ) की बहन

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

29	बच्चा	गहवारे में	जो है	कैसे हम बात करें	वह बोले	उस की तरफ़	तो मरयम ने इशारा किया

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۭ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَّجَعَلَنِيْ

और मुझे बनाया है	30	नबी	और मुझे बनाया है	किताब	उस ने मुझे दी है	अल्लाह का बन्दा	बच्चे ने कहा बेशक मैं

مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ

जब तक मैं रहूँ	और ज़कात का	नमाज़ का	और मुझे हुक्म दिया है उस ने	मैं हूँ	जहां कहीं	बाबरकत

حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ

और सलामती	32	बदनसीब	सरकश	और उस ने मुझे नहीं बनाया	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	31	ज़िन्दा

عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ

यह	33	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाऊँगा	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	मैं पैदा हुआ	जिस दिन	मुझ पर

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ

नहीं है अल्लाह के लिए	34	वह शक करते हैं	वह जिस में	सच्ची	बात	इब्ने मरयम	ईसा (अ)

اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

वह कहता है	तो इस के सिवा नहीं	किसी काम	जब वह फ़ैसला करता है	वह पाक है	बेटा	कोई	वह बनाए	कि

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا

यह	पस उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	और बेशक	35	पस वह हो जाता है	हो जा	उस को

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ

पस ख़राबी	आपस में (बाहम)	फ़िर्क़े	फिर इख़्तिलाफ़ किया	36	सीधा	रास्ता

لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ

और देखेंगे	क्या कुछ	सुनेंगे	37	बड़ा दिन	हाज़िरी	से	काफ़िरों के लिए

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

38	खुली गुमराही	में	आज के दिन	ज़ालिम (जमा)	लेकिन	वह हमारे सामने आएंगे	जिस दिन

وقف لازم وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ

और वह	ग़फ़लत में हैं	लेकिन वह	काम	जब फ़ैसला कर दिया जाएगा	हसरत का दिन	और उन को डरावें आप (स)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا

और हमारी तरफ़	उस पर	और जो	ज़मीन	वारिस होंगे	बेशक हम	39	ईमान नहीं लाते

ع ٢ ٢٥ ٥ يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

सच्चे	बेशक वह थे	इब्राहीम (अ)	किताब में	और याद करो	40	वह लौटाए जाएंगे

نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

और न देखे	जो न सुने	तुम क्यों परस्तिश करते हो	ऐ मेरे अब्बा	अपने बाप को	जब उस ने कहा	41	नबी

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا

जो	वह इल्म	बेशक मेरे पास आया है	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	42	कुछ	तुम्हारे	और न काम आए

لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ

शैतान	परस्तिश न कर	ऐ मेरे अब्बा	43	सीधा	रास्ता	मैं तुम्हें दिखाऊँगा	पस मेरी बात मानो	तुम्हारे पास नहीं आया

اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ

कि	डरता हूँ	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	44	नाफ़रमान	रहमान का	है	शैतान	बेशक

يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ

क्या रूगर्दां	उस ने कहा	45	साथी	शैतान का	फिर तू हो जाए	रहमान	से - का	अ़ज़ाब	तुझे आपकड़े

اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

46	एक मुद्दत के लिए	और मुझे छोड़ दे	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा	तू बाज़ न आया	अगर	ऐ इब्राहीम (अ)	मेरे माबूद (जमा)	से	तू

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

47	मेहरबान	मुझ पर	है	बेशक वह	अपना रब	तेरे लिए	मैं अभी बख़्शिश मांगूँगा	तुझ पर	सलाम	उस ने कहा

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى

उम्मीद है	अपना रब	और मैं इबादत करूँगा	अल्लाह	सिवाए	तुम परस्तिश करते हो	और जो	और किनारा कशी करता हूँ तुम से

اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	और जो	वह किनारा कश होगए उन से	फिर जब	48	महरूम	अपना रब	इबादत से	कि न रहूँगा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

49	नबी	हम ने बनाया	और सब को	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)	उस को	हम ने अ़ता किया	अल्लाह	सिवाए

ع ٣ ١٠ ٦ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

50	निहायत बुलन्द	सच्चा - जमील	ज़िक्र	उन का	और हम ने किया	अपनी रहमत	से	उन्हें	और हम ने अ़ता किया

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

51	नबी	रसूल	और था	बरगुज़ीदा	था	बेशक वह	मूसा (अ)	किताब में	और याद करो

और आप (स) उन्हें हस्रत के दिन से डरावें जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह ग़फ़्लत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते। (39)
बेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40)
और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (41)
जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बाः तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मेरे पास वह इल्मे (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43)
ऐ मेरे अबबा! शैतान की परस्तिश न कर, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (44)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अ़ज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45)
उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगर्दां है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और मुझे एक मुद्दत के लिए छोड़ दे। (46)
इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूँगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है, (47)
और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48)
फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) अ़ता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49)
और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अ़ता किया और हम ने उन का ज़िक्रे जमील निहायत बुलन्द किया। (50)
और किताब में मूसा (अ) को याद करो, बेशक वह बरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

52	राज़ बताने को	और उसे नज़दीक बुलाया	दाहिनी	कोहे तूर	जानिब	से	और हम ने उसे पुकारा

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ

किताब में	और याद करो	53	नबी	हारून (अ)	उस का भाई	अपनी रहमत से	उसे	और हम ने अ़ता किया

اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ ج

54	नबी	रसूल	और थे	वादे का सच्चा	थे	बेशक वह	इस्माईल (अ)

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

55	पसन्दीदा	अपने रब के हां	और वह थे	और ज़कात	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म देते थे

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۡ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ لا ق وَّرَفَعْنٰهُ

और हम ने उसे उठा लिया	56	नबी	सच्चे	थे	बेशक वह	इदरीस (अ)	किताब में	और याद करो

مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	से	उन पर	अल्लाह ने इन्आ़म किया	वह जिन्हें	यह वह लोग	57	बुलन्द	एक मुक़ाम

مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۡ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ

औलाद	और से	नूह (अ)	साथ	सवार किया हम ने	और उन से जिन्हें	औलादे आदम	से

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۡ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	जब पढ़ी जातीं	और हम ने चुना	हम ने हिदायत दी	और उन से जिन्हें	इब्राहीम (अ) और याक़ूब (अ)

اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ السجدة فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

السَّجدة ٥

चन्द जांनशीन (ना ख़लफ़)	उन के बाद	फिर जांनशीन हुए	58	और रोते हुए	सिजदा करते हुए	वह गिर पड़ते	रहमान की आयतें

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ لا

59	गुमराही	उन्हें मिलेगी	पस अ़नक़रीब	ख़्वाहिशात	और पैरवी की	नमाज़	उन्हों ने गंवादी

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ

वह दाख़िल होंगे	पस यही लोग	नेक	और अ़मल किए	और ईमान लाया	तौबा की	जो-जिस	मगर

الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْئًا ﴿٦٠﴾ لا جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِىْ وَعَدَ

वादा किया	वह जो	हमेशगी के बाग़ात	60	कुछ-ज़रा	और उन का न नुक़्सान किया जाएगा	जन्नत

الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	61	आने वाला	उस का वादा	है	बेशक वह	ग़ाइबाना	अपने बन्दे (जमा)	रहमान

فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

62	और शाम	सुबह	उस में	उन का रिज़्क़	और उन के लिए	सिवा सलाम	बेहूदा	उस में

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

63	परहेज़गार	होंगे	जो	अपने बन्दे	से-को	हम वारिस बनाएंगे	वह जो कि	जन्नत	यह

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिब से पुकारा, और हम ने उसे राज़ बतलाने को नज़्दीक बुलाया। (52) और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अ़ता किया। (53) और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, बेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54) और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55) और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (56) और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57) यह हैं नबियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (कश्ती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याक़ूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज्दा करते और रोते हुए। (58) फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जांनशीन हुए, उन्हों ने नमाज़ गंवादी, और ख़्वाहिशाते (नफ़सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59) मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़र्रा भर भी उन का नुक़्सान न किया जाएगा, (60) हमेशगी के बाग़ात में जिन का वादा रहमान ने ग़ाइबाना अपने बन्दों से किया, बेशक उस का वादा आने वाला है। (61) और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुब्ह ओ शाम उन का रिज़्क़ है। (62) यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا

हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुक्म से	मगर	हम उतरते	और नहीं

وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ

तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित क़दम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन

ع ١٥ ٧

لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

66	ज़िन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	तो फिर	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है	65	हम नाम कोई	उस का

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾

67	कुछ भी	जब कि वह न था	इस से क़ब्ल	हम ने उसे पैदा किया	बेशक हम	इन्सान	याद करता	क्या नहीं

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	इर्द गिर्द	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	फिर	शैतान (जमा)	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	सो तुम्हारे रब की क़सम

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ

अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे	फिर	68	घुटनों के बल गिरे हुए

عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ

और नहीं	70	दाख़िल होना	ज़ियादा मुस्तहिक़ उस में	वह	उन से जो	ख़ूब वाक़िफ़	अलबत्ता	फिर	69	सरकशी करने वाला

مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّى

हम नजात देंगे	फिर	71	मुक़र्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है	यहां से गुज़रना होगा	मगर	तुम में से

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)	और हम छोड़ देंगे	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ۙ اَىُّ الْفَرِيْقَيْنِ

दोनों फ़रीक़	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयतें

خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ

वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मज्लिस	और अच्छी	बेहतर मुक़ाम

اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ

उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान	बहुत अच्छे

الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا

और ख़्वाह	अ़ज़ाब	ख़्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	ख़ूब ढील	रहमान

السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

75	लशकर	और कमज़ोर तर	बदतर मुक़ाम	वह	कौन	पस अब वह जान लेंगे	क़ियामत

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64) वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65) और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66) क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67) सो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68) फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69) फिर अलबत्ता हम उन से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाख़िल होने के ज़ियादा मुस्तहिक़ हैं। (70) और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71) फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्हों ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्हों ने कुफ़्र किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मज्लिस अच्छी है? (73) और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74) कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और ख़ूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अ़ज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	हिदायत	हिदायत हासिल की	जिन लोगों ने	अल्लाह	और ज़ियादा देता है

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ

इन्कार किया	वह जिस ने	पस क्या तू ने देखा	76	ब एतिबारे अन्जाम	और बेहतर	ब एतिबारे सवाब	तुम्हारे रब के नज़्दीक	बेहतर

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ ؕ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ

उस ने ले लिया है	या	ग़ैब	क्या वह मुत्तला हो गया है	77	और औलाद	माल	मैं ज़रूर दिया जाऊँगा	और उस ने कहा	हमारे हुक्मों का

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ ۙ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ

उस को	और हम बढ़ा देंगे	वह जो कहता है	अब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	78	कोई अ़हद	अल्लाह रहमान से

مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ ۙ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا

और उन्हों ने बना लिया	80	अकेला	और वह हमारे पास आएगा	जो वह कहता है	और हम वारिस होंगे	79	और लंबा	अ़ज़ाब से

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ ۙ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ

जल्द ही वह इन्कार करेंगे	हरगिज़ नहीं	81	मोजिबे इ़ज़्ज़त	उन के लिए	ताकि वह हों	माबूद	अल्लाह के सिवा

بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ ع ١٧ ٨

शैतान (जमा)	बेशक हम ने भेजे	क्या तुम ने नहीं देखा	82	मुख़ालिफ़	उन के	और हो जाएंगे	उन की बन्दगी से

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ ۙ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ ج

84	गिनती	उन की	सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं	उन पर	सो तुम जल्दी न करो	83	उकसाते हैं उन्हें ख़ूब उकसाना	काफ़िर (जमा)	पर

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ ۙ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ

गुनाहगार (जमा)	और हांक कर ले जाएंगे	85	मेहमान बना कर	रहमान की तरफ़	परहेज़गार (जमा)	हम जमा कर लेंगे	जिस दिन

اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ وقف لازم

रहमान के पास	जिस ने लिया हो	सिवाए	शफ़ाअ़त	वह इख़्तियार नहीं रखते	86	प्यासे	जहन्नम	तरफ़

عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ ؕ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ ۙ وقف لازم

89	बुरी	एक बात	तहक़ीक़ तुम लाए हो	88	बेटा	रहमान	बना लिया है	और वह कहते हैं	87	इक़रार

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ ۙ

90	पारा पारा	पहाड़	और गिर पड़े	ज़मीन	और टुकड़े टुकड़े हो जाए	उस से	फट पड़े	आस्मान	क़रीब है

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ ج وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ ؕ

92	बेटा	कि वह बनाए	रहमान के लिए	शायान	जब कि नहीं	91	बेटा	रहमान के लिए	कि उन्हों ने पुकारा (मन्सूब किया)

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ ؕ

93	बन्दा	रहमान	मगर आता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं तमाम (कोई)

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ ؕ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

95	अकेला	आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन	और उन में से हर एक	94	और उन का शुमार कर लिया है गिन कर	उस ने उन को घेर लिया है

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक बाक़ी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सवाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम। (76) पस क्या तू ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊँगा। (77) क्या वह ग़ैब पर मत्तला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अ़हद। (78) हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अ़ज़ाब लंबा बढ़ादेंगे। (79) और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80) और उन्हों ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोजिबे इ़ज़्ज़त हों। (81) हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुख़ालिफ़ हो जाएंगे। (82) क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें ख़ूब उकसाते रहते हैं। (83) सो तुम उन पर (नुज़ूले अ़ज़ाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84) (याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85) और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86) वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़रार। (87) और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88) तहक़ीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89) क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90) कि उन्हों ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91) जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92) नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93) उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94) और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

रहमान	उन के लिए	पैदा कर देगा	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ

और डराएं उस से	परहेज़गारों	ताकि आप ख़ुशख़बरी दें उस से	आप की ज़बान में	हम ने इसे आसान कर दिया है	पस उस के सिवा नहीं	96	मुहब्बत

قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ

तुम देखते हो	क्या	गिरोह	से	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दिए	और कितने ही	97	झगड़ालू लोग

ع ٦ ٩ النصف

مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾ ع

98	आहट	उन की	या तुम सुनते हो	कोई किसी को	उन से

آيَاتُهَا ١٣٥ ❀ (٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٨

रुकुआ़त 8 (20) सूरह ता हा आयात 135

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

उस के लिए जो	याद दिहानी	मगर	2	ताकि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ	क़ुरआन	तुम पर	हम ने नाज़िल नहीं किया	1	ता हा

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾

4	ऊंचे	और आस्मान (जमा)	ज़मीन	बनाया	से-जिस	नाज़िल किया हुआ	3	डरता है

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	उस के लिए जो	5	क़ाइम	अ़र्श पर	रहमान

فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ

बात	तू पुकार कर कहे	और अगर	6	गीली मिट्टी	नीचे	और जो	उन दोनों के दरमियान	और जो	ज़मीन में

فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَآءُ

सब नाम	उसी के लिए	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	7	और निहायत पोशीदा	भेद	जानता है	तो बेशक वह

وقف لازم

الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ

तो कहा	आग	जब उस ने देखी	9	मूसा (अ)	कोई ख़बर	तुम्हारे पास आई	और क्या	8	अच्छे

لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ

या	चिंगारी	उस से	तुम्हारे पास लाऊँ	शायद मैं	आग	देखी है	बेशक मैं ने	तुम ठहरो	अपने घर वालों को

اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّىْٓ اَنَا

मैं	बेशक मैं	11	ऐ मूसा (अ)	आवाज़ आई	वह वहां आए	जब पस	10	रास्ता	आग पर-के	मैं पाऊँ

رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

12	तुवा	पाक मैदान	बेशक तुम	अपनी जूतियां	सो उतार लो	तुम्हारा रब

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने किए अ़मल नेक उन के लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों में) मुहब्बत। (96)
पस उस के सिवा नहीं कि हम ने (क़ुरआन) को आप (स) की ज़बान में आसान कर दिया ताकि उस से आप (स) परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दें और झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)
और इन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दिए कितने ही गिरोह, क्या तुम उन में से किसी को देखते हो? या उन की आहट सुनते हो? (98)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

ता-हा। (1)
हम ने क़ुरआन तुम पर इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ। (2)
मगर उस के लिए नसीहत है जो डरता है। (3)
नाज़िल किया हुआ है (उस की तरफ़ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए। (4)
रहमान अ़र्श पर क़ाइम है। (5)
उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो उन दोनों के दरमियान है, और जो ज़मीन के नीचे है। (6)
और अगर तू पुकार कर कहे बात तो बेशक वह भेद जानता है और निहायत पोशीदा (बात को भी)। (7)
अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)
और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की ख़बर आई? (9)
जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, बेशक मैं ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)
पस जब वह वहां आए, तो आवाज़ आई ऐ मूसा (अ)! (11)
बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो अपनी जूतियां उतार लो, बेशक तुम तुवा के पाक वादी में हो। (12)

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	अल्लाह	मैं	बेशक मैं	13	उस की तरफ़ जो वहि की जाए	पस कान लगा कर सुनो	तुम्हें पसन्द किया	और मैं

اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

आने वाली	क़ियामत	बेशक	14	मेरी याद के लिए	नमाज़	और क़ाइम करो	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा

اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

उस से जो	पस तुझे रोक न दे	15	उस का जो वह कोशिश करे	शख़्स	हर	ताकि बदला दिया जाए	मैं उसे पोशीदा रखूँ	मैं चाहता हूँ

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾

17	ऐ मूसा (अ)	तेरे दाहने हाथ में	यह	और क्या	16	फिर तू हलाक हो जाए	अपनी ख़्वाहिश	और वह पीछे पड़ा	उस पर	ईमान नहीं रखता	जो

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا

इस में	और मेरे लिए	अपनी बकरियां	पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	इस पर	मैं टेक लगाता हूँ	मेरा असा	यह	उस ने कहा

مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

सांप	तो नागाह वह	पस उस ने डाल दिया	19	ऐ मूसा (अ)	उसे डाल दे	उस ने फ़रमाया	18	और भी	(ज़रूरतें) फ़ाइदे

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾

21	पहली	उस की हालत	हम जल्द उसे लौटा देंगे	और न डर	उसे पकड़ ले	फ़रमाया	20	दौड़ता हुआ

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً

निशानी	ऐब	बग़ैर किसी	सफ़ेद	वह निकलेगा	अपनी बग़ल	तक- से	अपना हाथ	और (मिला) लगा

اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ

बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़	तू जा	23	बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम तुझे दिखाएं	22	दूसरी

طَغٰى ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ ع ١ ١٠

और खोल दे	26	मेरा काम	और मेरे लिए आसान कर दे	25	मेरा सीना	मेरे लिए	कुशादा कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	24	सरकश हो गया

عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ

से	मेरा वज़ीर	मेरे लिए	और बना दे	28	मेरी बात	वह समझ लें	27	मेरी ज़बान	से- की	गिरह

اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

32	मेरे काम में	और शरीक कर दे	31	मेरी कुव्वत	मज़बूत कर उस से	30	मेरा भाई	हारून (अ)	29	ख़ानदान

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ

तू है	बेशक तू	34	कसरत से	और तुझे याद करें	33	कसरत से	हम तेरी तस्बीह करें	ताकि

بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और तहक़ीक़ हम ने एहसान किया	36	ऐ मूसा (अ)	जो तू ने मांगा	तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया	अल्लाह ने फ़रमाया	35	हमें ख़ूब देखता है

عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

38	जो इल्हाम करना था	तेरी वालिदा	तरफ़- को	हम ने इल्हाम किया	जब	37	और भी	एक बार	तुझ पर

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13)
बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और क़ाइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14)
बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख़्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15)
पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16)
और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17)
उस ने कहा यह मेरा असा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फ़ाइदे हैं। (18)
उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19)
पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20)
(अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21)
अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22)
ताकि हम तुझे दिखाएं अपनी बड़ी निशानियों में से। (23)
तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, बेशक वह सरकश हो गया है। (24)
मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25)
और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26)
और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27)
कि वह मेरी बात समझ लें। (28)
और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे ख़ानदान से, (29)
मेरा भाई हारून (अ)। (30)
उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31)
और उसे शरीक कर दे मेरे काम में। (32)
ताकि हम कसरत से तेरी तस्बीह करें, (33)
और कसरत से तुझे याद करें। (34)
बेशक तू हमें ख़ूब देखता है। (35)
अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया। (36)
और तहक़ीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37)
जब हम ने तेरी वालिदा को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था। (38)

وقف لازم

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ

दर्या	फिर उसे डाल देगा	दर्या में	फिर उसे डाल दे	सन्दूक़ में	कि तू उसे डाल

بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً

मुहब्बत	तुझ पर	और मैं ने डाल दी	और उस का दुश्मन	मेरा दुश्मन	उसे ले लेगा	साहिल पर

مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ

तो वह कह रही थी	तरी बहन	जा रही थी	जब	39	मेरी आँखो पर (मेरे सामने)	ताकि तू पर्वरिश पाए	अपनी तरफ़ से

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

उस की आँख	ताकि ठंडी हो	तेरी माँ	तरफ़	पस हम ने तुझे लौटा दिया	उस की पर्वरिश करे	जो	पर	क्या मैं तुम्हें बताऊँ

وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

और तुझे आज़माया	ग़म से	तो हम ने तुझे नजात दी	एक शख़्स	और तू ने क़त्ल करदिया	और वह ग़म न करे

فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ

वक़्ते मुक़र्रर पर	तू आया	फिर	मदयन वाले	में	कई साल	फिर तू ठहरा रहा	कई आज़माइशें

يٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ

मेरी निशानियों के साथ	और तेरा भाई	तू	तू जा	41	ख़ास अपने लिए	और हम ने तुझे बनाया	40	ऐ मूसा (अ)

وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ

उस को	तुम कहो	43	सरकश हो गया	बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़ - पास	तुम दोनों जाओ	42	मेरी याद में	और सुस्ती न करना

قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	ऐ हमारे रब	दोनों बोले	44	वह डर जाए	या	नसीहत पकड़ ले	शायद वह	नर्म बात

اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ

मैं सुनता हूँ	तुम्हारे साथ हूँ	बेशक मैं	तुम डरो नहीं	उस ने फ़रमाया	45	वह हद स बढ़े	या	हम पर	कि वह ज़ियादती करे

وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ

बनी इस्राईल	हमारे साथ	पस भेज दे	तेरा रब	बेशक हम दोनों भेजे हुए	और तुम कहो	पस जाओ उस के पास	46	और मैं देखता हूँ

وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ

और सलाम	तेरा रब	से	निशानी के साथ	हम तेरे पास आए हैं	और उन्हें अ़ज़ाब न दे

عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى

पर	अ़ज़ाब	कि	हमारी तरफ़	वहि की गई	बेशक	47	हिदायत	उस ने पैरवी की	जो - जिस	पर

مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى

अ़ता की	जिस ने	हमारा रब	उस ने कहा	49	ऐ मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पस कौन	उस ने कहा	48	और मुंह फेरा	जिस ने झुटलाया

كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

51	पहली	जमाअ़तें	हाल	फिर क्या	उस ने कहा	50	रहनुमाई की	फिर	उस की शक्ल ओ सूरत	हर चीज़

कि तू उसे सन्दूक़ में डाल, फिर
सन्दूक़ दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा
दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस
का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से
निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी
तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ़ से
(मख़्लूक़ तुझ से मुहब्बत करे) ताकि
तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39)
और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही
थी तो (आले फ़िरऔन से) कह रही
थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता)
बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे?
पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ़
लौटा दिया, ताकि उस की आँखें
ठंडी हों, और वह ग़म न करे,
और तू ने एक शख़्स को क़त्ल
कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी
ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों
से आज़माया, फिर कई साल मदयन
वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया
वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ)
(मुताबिक़ तक़्दीरे इलाही)। (40)
और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिए
बनाया। (41)
तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ
मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती
न करना मेरी याद में। (42)
तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ,
बेशक वह सरकश हो गया है। (43)
तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह
नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44)
वह बोले, ऐ हमारे रब! बेशक हम
डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती
(न) करे या हद से (न) बढ़े। (45)
उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं,
बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता
और देखता हूँ। (46)
पस उस के पास जाओ और कहो
बेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब
के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ
भेज दे और उन्हें अ़ज़ाब न दे, हम
तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ
आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस
ने हिदायत की पैरवी की। (47)
बेशक हमारी तरफ़ वहि की गई
है कि अ़ज़ाब है उस पर जिस ने
झुटलाया और मुंह फेरा। (48)
उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस
तुम्हारा रब कौन है? (49)
मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है
जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल
ओ सूरत अ़ता की फिर उस की
रहनुमाई की। (50)
उस ने कहा फिर पहली जमाअ़तों
का क्या हाल है? (51)

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न ग़लती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا

राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाईं	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

53	मुख़्तलिफ़	सब्ज़ी	से	जोड़े (अक़्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान	से	और उतारा

ع ٢ ١١
كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا

उस से	54	अक़्ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ

और हम ने उसे दिखाईं	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया

اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

हमारी ज़मीन से	कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां

بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के ख़िलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ

उस ने जमा किया	फ़िरऔन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन

كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	ख़राबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया	अपना दाओ

فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें

بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ

यह चाहते हैं	अलबत्ता जादूगर	यह दोनों	तहक़ीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्हों ने छुप कर किया	बाहम

اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

63	अच्छा	तुम्हारा तरीक़ा	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहक़ीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ)	वह बोले

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52) वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाईं उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सबज़ी की मुख़्तलिफ़ अक़्साम निकालीं। (53) तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54) उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55) और हम ने उसे (फ़िरऔन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाईं तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57) पस हम तेरे मुक़ाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58) मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59) फिर लौट गया फ़िरऔन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60) मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61) तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्हों ने छुप कर मशवरा किया। (62) वह कहने लगे तहक़ीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीक़ा ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63) लिहाज़ा अपने दाओ इकटठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहक़ीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64) वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ

उन का जादू	से	उस के	ख़याल में आईं	और उन की लाठियां	उन की रस्सियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा

اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ

तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ ख़ौफ़	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही हैं	कि वह

اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا

बेशक	जा उन्हों ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	ग़ालिब	तुम ही	बेशक तुम

صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ

जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फ़रेब	उन्हों ने बनाया

سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ

पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	सिज्दे में

اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ

पस मैं ज़रूर काटूँगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	बेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ

اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ

खजूर के तने	में - पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ़ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ

وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى

पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्हों ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अ़ज़ाब में	ज़ियादा सख़्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे

مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ

करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए

اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا

कि वह बख़्शदे हमें	अपने रब पर	बेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं

الثلثة

خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾

73	बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो बेशक	मुज्रिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	बेशक वह

وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰۗىِٕكَ

पस यही लोग	अच्छे	उस ने अ़मल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा

لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	हमेशा रहने वाले	बाग़ात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए

ع ٣ ٢٢ ١٢

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रस्सियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के ख़याल में आईं (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही हैं। (66)
तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ ख़ौफ़ महसूस किया। (67)
हम ने कहा तुम डरो नहीं, बेशक तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68)
और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है, बेशक (जो कुछ) उन्हों ने बनाया है वह जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)
पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिब) ख़िलाफ़ से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अ़ज़ाब ज़ियादा सख़्त और देर पा है। (71)
उन्हों ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ़) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)
बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख़्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है। (73)
बेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज्रिम बन कर तो बेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)
और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अ़मल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)
हमेशा रहने वाले बाग़ात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ

पस बना लेना	मेरे बन्दे	कि रातों रात लेजा	मूसा (अ)	तरफ़ - को	और तहक़ीक़ हम ने वहि की

لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

77	और न डर	पकड़ना	ख़ौफ़ होगा	न	ख़ुश्क	दर्या में	रास्ता	उन के लिए

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ؕ ﴿٧٨﴾

78	जैसा कि उन को ढांप लिया	दर्या से	उन्हें ढांप लिया	अपने लशकर के साथ	फ़िरऔन	फिर उन का पीछा किया

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ

तहक़ीक़	ऐ बनी इस्राईल	79	और न हिदायत दी	अपनी क़ौम	फ़िरऔन	और गुमराह किया

اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ

दाएं	कोहे तूर	जानिब	और हम ने तुम से वादा किया	तुम्हारा दुश्मन	से	हम ने तुम्हें नजात दी

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	से	तुम खाओ	80	और सलवा	मन्न	तुम पर	और हम ने उतारा

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِىْ ۚ وَمَنْ

और जो	मेरा ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरेगा	उस में	और न सरकशी करो	जो हम ने तुम्हें दिया

يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِىْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ

उस को जो	बड़ा बख़्शने वाला	और बेशक मैं	81	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	मेरा ग़ज़ब	उस पर	उतरा

تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ

तुझे जल्द लाई	और क्या (चीज़)	82	हिदायत पर रहा	फिर	नेक	और उस ने अ़मल किया	और वह ईमान लाया	तौबा की

عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ

मेरे पीछे	यह हैं	वह	उस ने कहा	83	ऐ मूसा (अ)	अपनी क़ौम से

وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا

आज़माइश में डाला	तहक़ीक़	पस हम ने	उस ने कहा	84	ताकि तू राज़ी हो	ऐ मेरे रब	तेरी तरफ़	और मैं ने जल्दी की

قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

पस लौटा	85	सामरी	और उन्हें गुमराह किया	तेरे बाद	तेरी क़ौम

مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ

क्या तुम से वादा नहीं किया था	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	अफ़सोस करता	गुस्से में भरा हुआ	अपनी क़ौम की तरफ़	मूसा (अ)

رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

या तुम ने चाहा	मुद्दत	तुम पर	क्या तवील हो गई	अच्छा वादा	तुम्हारा रब

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِىْ ﴿٨٦﴾

86	मेरा वादा	फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया	तुम्हारा रब	से-का	ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरे

और तहक़ीक़ हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) ख़ुश्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (ग़र्क़ होने का) डर होगा। **(77)**

फिर फ़िरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (बिलकुल ग़र्क़ कर दिया)। **(78)**

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। **(79)**

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अ़ता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा "मन्न" और "सलवा"। **(80)**

जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। **(81)**

और बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अ़मल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। **(82)**

और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी क़ौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? **(83)**

उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। **(84)**

उस ने कहा पस हम ने तहक़ीक़ तेरी क़ौम को आज़माइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। **(85)**

पस मूसा (अ) अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तवील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुद्दत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा ख़िलाफ़ी की)। **(86)**

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ

से- का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बल्कि)	अपने इख़्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने ख़िलाफ़ नहीं किया	वह बोले

زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا

एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया	क़ौम का ज़ेवर

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्हों ने कहा	गाय की आवाज़	उस के लिए	एक क़ालिब

ع ١٣ / ١٣
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۬ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

89	और न नफ़ा	नुक़्सान	उन के	और इख़्तियार नहीं रखता	बात (जवाब)	उन की तरफ़	कि वह नहीं फेरता	पस क्या वह नहीं देखते

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ

और बेशक	इस से	तुम आज़माए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से	कहा	और तहक़ीक़

رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ

हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्हों ने कहा	90	मेरी बात	और इताअ़त करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रब

عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ

ऐ हारून (अ)	उस ने कहा	91	मूसा (अ)	हमारी तरफ़	लौटे	यहां तक कि	जमे हुए	उस पर

مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

93	मेरा यह हुक्म	तो क्या तू ने नाफ़रमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब	तुझे किस चीज़ ने रोका

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ

डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा

اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	मेरी बात	और न ख़याल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़रिक़ा डाल दिया	कि तुम कहोगे

فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ

उस को	उन्हों ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल	पस क्या

فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ

फुसलाया	और इसी तरह	तो मैं ने वह डालदी	रसूल का नक़्शे क़दम	से	एक मुट्ठी	पस मैं ने मुट्ठी भर ली

لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96	मेरा नफ़्स	मुझे

مِسَاسَ ۠ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ

वह जिस	अपने माबूद	तरफ़	और देख	हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक	छूना (हाथ लगाना)

ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख़्तियार से तुम्हारे वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया क़ौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87) फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्हों ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88) भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ बात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक़्सान का इख़्तियार रखता है और न नफ़ा का। (89) और तहक़ीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आज़माए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90) उन्हों ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटें। (91) उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफ़रमानी की मेरे हुक्म की? (93) उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का ख़याल न रखा। (94) (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95) वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्हों ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96) मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिरेः न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्ते मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शै पर मुहीत है। (98)
उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (क़ुरआन) दिया। (99)
जिस ने उस से मुँह फेरा वह बेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100)
वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101)
जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (बे नूर होंगी)। (102)
आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे हो। (103)
वह जो कहते हैं हम ख़ूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ़ एक दिन रहे हो। (104)
और वह आप (स) से पहाड़ो के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105)
फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106)
और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107)
उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, बस तू सिर्फ़ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108)
उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109)
वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का अहाता नहीं कर सकते। (110)
और चेहरे झुक जाएंगे "हैय ओ क़य्यूम" (ज़िन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया। (111)
और जो कोई नेकी करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी ज़ुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़्सान का। (112)
और उसी तरह हम ने उस पर क़ुरआन नाज़िल किया अ़रबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

98	इल्म	हर शै	वसीअ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا

अपने पास से	और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	ख़बरें अहवाल	से	तुझ पर- से	हम बयान करते हैं	इसी तरह

ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِينَ

वह हमेशा रहेंगे	100	(भारी) बोझ	क़ियामत के दिन	लादेगा	तो बेशक वह	उस से	मुंह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत

فِيهِ ۚ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ

और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	क़ियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में

الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا

मगर (सिर्फ़)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को

عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ

नहीं	राह	सब से अच्छी	जब कहेगा	वह कहते हैं	वह जो	खूब जानते हैं	हम	103	दस दिन

لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ ع ١٥ ١٤

105	उड़ा कर	मेरा रब	उन्हें बिखेर देगा	तो कह दें	पहाड़ के बारे में	और वह आप से दर्याफ़्त करेंगे	104	एक दिन	मगर	रहे तुम

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيهَا عِوَجًا وَّلَآ أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा

يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۚ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ

रहमान के लिए (सामने)	आवाज़े	और पस्त होजाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे

فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ

इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअत	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ़)	बस तू न सुनेगा

الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	बात	उस की	और पसन्द करे	रहमान

وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ

"क़य्यूम"	सामने "हैय"	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते

وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

मोमिन	और वह	नेकी	से- कोई	करे	और जो	111	ज़ुल्म	बोझ उठाया	जो- जिस	और नामुराद हुआ

فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़्सान का	किसी ज़ुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा

وَّصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में

ع ٦ ١٥ ٢١

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कि	इस से क़ब्ल	क़ुरआन में	जल्दी करो	और न	सच्चा	बादशाह	सो बुलन्द ओ बरतर है अल्लाह

يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ

और हम ने हुक्म भेजा	114	इल्म	ज़ियादा दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कहिए	उस की वहि	तुम्हारी तरफ़	पूरी की जाए

اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۤئِكَةِ

फ़रिश्तों को	और (याद करो) जब हम ने कहा	115	पुख़्ता इरादा	उस में	और हम ने न पाया	तो वह भूल गया	उस से क़ब्ल	आदम की तरफ़

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	ऐ आदम (अ)	पस हम ने कहा	116	उस ने इन्कार किया	इब्लीस	सिवाए	तो सब ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो

عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ

बेशक	117	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	जन्नत से	न निकलवा दे	सो तुम्हें	और तुम्हारी बीवी का	तुम्हारा	दुश्मन

لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ لا وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

119	और न धूप में रहोगे	इस में	प्यासे रहोगे	न	और यह कि तुम	118	नंगे	और न	इस में	यह कि न भूके रहो	तुम्हारे लिए

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

दरख़्त	पर	मैं तेरी रहनुमाई करूं	क्या	ऐ आदम (अ)	उस ने कहा	शैतान	उस की तरफ़ (दिल में)	फिर वस्वसा डाला

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

उन की शर्मगाहें	उन पर	तो ज़ाहिर होगईं	उस से	पस दोनों ने खाया	120	न पुरानी हो (ज़वाल पज़ीर न हो)	और बादशाहत	हमेशगी

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ

अपना रब	आदम (अ)	और नाफ़रमानी की	जन्नत के पत्ते	से	अपने ऊपर	और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)

فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ صلے ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا

तुम दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	122	और उसे राह दिखाई	उस पर	तवज्जुह फ़रमाई	उस का रब	उस को चुन लिया	फिर	121	तो वह बहक गया

مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى ۬ لا

हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हारे पास आए	पस अगर	दुश्मन	बाज़ के	तुम में से बाज़	सब	यहां से

فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ

मुँह मोड़ा	और जिस	123	बदबख़्त होगा	और न	तो न वह गुमराह होगा	मेरी हिदायत	पैरवी की	तो जिस ने

عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	और हम उसे उठाएंगे	तंग	गुज़रान	उस के लिए	तो बेशक	मेरे ज़िक्र-नसीहत	से

اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

125	बीना-देखता	और मैं तो था	अन्धा	तू ने मुझे क्यों उठाया	ऐ मेरे रब	वह कहेगा	124	अन्धा

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

126	हम तुझे भुला देंगे	आज	और इसी तरह	तो तू ने उन्हें भुला दिया	हमारी आयात	तेरे पास आईं	इसी तरह	वह फ़रमाएगा

सो अल्लाह बुलन्द ओ बरतर है सच्चा बादशाह, और तुम क़ुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से क़ब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114)

और हम ने उस से क़ब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115)

और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, उस ने इन्कार किया। (116)

पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! बेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (117)

बेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118)

और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119)

फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूं हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पज़ीर न हो? (120)

पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121)

फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तवज्जुह फ़रमाई (तौबा क़ुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122)

फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123)

और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो बेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124)

वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) बीना (देखता) था। (125)

वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आईं तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ

और अलबत्ता अ़ज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	शदीद तरीन	आख़िरत

مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع ١٣ ١٦

128	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं	क़ौमें-जमाअ़तें

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

129	मुक़र्रर	और मीआ़द	अ़ज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी	एक बात	और अगर न

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

तुलूअ़े आफ़्ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्बीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करें

وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ

दिन	और किनारे	पस तस्बीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के गुरूब	और पहले

لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا

जोड़े	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फैलाना	130	खुश हो जाओ	ताकि तुम

مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ

तेरा रब	और अ़तिया	उस में	ताकि हम उन्हें आज़माएं	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ

उस पर	और क़ाइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर

لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا

और वह कहते हैं	132	अहले तक़्वा के लिए	और अन्जाम	तुझे रिज़्क़ देते हैं	हम	रिज़्क़	हम तुझ से नहीं मांगते

لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ

सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से	कोई निशानी	क्यों नहीं लाते

الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

तो वह कहते	इस से क़ब्ल	किसी अ़ज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले

رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

इस से क़ब्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब

اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ

पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर हैं	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع ٨ ١٧

135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127)

क्या (उस हक़ीक़त ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़ब्ल हम ने कितनी ही जमाअ़तें हलाक कर दीं, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128)

और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीआ़द मुक़र्रर (न होती) तो अ़ज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129)

पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्बीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ़-ए-आफ़ताब से पहले, और गुरूबे आफ़्ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्बीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर ज़ुहर के वक़्त) ताकि तुम खुश हो जाओ। (130)

और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आज़माएं, और तेरे रब का अ़तिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131)

और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर क़ाइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क़ (बल्कि) हम तुझे रिज़्क़ देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक़्वा के लिए है। (132)

और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133)

और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़ब्ल किसी अ़ज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़ब्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134)

आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

الجزء ١٧

آيَاتُهَا ١١٢ ❀ (٢١) سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

आयात 112 — (21) सूरतुल अम्बिया / रसूल (जमा) — रुकूआत 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत में	और वह	उन का हिसाब	लोगों के लिए	क़रीब आ गया

مُّعْرِضُوْنَ ۚ ﴿١﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

वह उसे सुनते हैं	मगर	नई	उन के रब से	कोई नसीहत	उन के पास नहीं आती	1	मुँह फेर रहे हैं

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ

और वह लोग जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	सरगोशी	और चुपके चुपके बात की	उन के दिल	ग़फ़्लत में हैं	2	खेलते हैं (खेलते हुए)	और वह

هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾

3	देखते हो	और (जबकि) तुम	जादू	क्या पस तुम आओगे	तुम ही जैसा	एक बशर	मगर	यह	क्या

قٰلَ رَبِّىْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾

4	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	बात	जानता है	मेरा रब	आप ने फ़रमाया

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا

पस वह हमारे पास ले आए	एक शायर	बल्कि वह	उस ने घड़ लिया	बल्कि	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा	बल्कि

بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٥﴾ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ

हम ने उसे हलाक किया	कोई बस्ती	उन से क़ब्ल	न ईमान लाई	5	पहले	भेजे गए	जैसे	कोई निशानी

اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِىٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं	6	ईमान लाएंगे	और क्या वह (यह)

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ

और हम ने नहीं बनाए उन के	7	तुम नहीं जानते	तुम हो	अगर	याद रखने वाले	पस पूछ लो

جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ

हम ने सच्चा कर दिया उन से	फिर	8	हमेशा रहने वाले	और वह न थे	खाना	न खाते हों	ऐसे जिस्म

الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	9	हद से बढ़ने वाले	और हम ने हलाक कर दिया	और जिस को हम ने चाहा	पस हम ने बचा लिया उन्हें	वादा

ع ١

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا

और हम ने कितनी हलाक कर दीं	10	तो क्या तुम समझते नहीं	तुम्हारा ज़िक्र	उस में	एक किताब	तुम्हारी तरफ़

مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾

11	दूसरे	गिरोह - लोग	उन के बाद	और पैदा किए हम ने	ज़ालिम	वह थीं	बस्तियां	से

अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रह्म करने वाला है
लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त)
क़रीब आ गया, और वह ग़फ़्लत
में (उस से) मुँह फेर रहे हैं। (1)
उन के पास उन के रब (की तरफ़)
से कोई नई नसीहत नहीं आती
मगर वह उसे खेलते हुए
(बे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2)
उन के दिल ग़फ़्लत में हैं और
ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी
की कि यह (मुहम्मद रसूलुल्लाह)
क्या हैं! मगर एक बशर तुम ही जैसे,
क्या (फिर भी) तुम जादू के पास
आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3)
आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब
जानता है हर बात जो आस्मानों में
और ज़मीन में (होती है) और वह
सुनने वाला जानने वाला है। (4)
बल्कि उन्हों ने कहा (यह) परेशान
ख़्वाब हैं, बल्कि उस ने घड़ लिया
है, बल्कि वह तो एक शायर है,
पस वह हमारे पास कोई निशानी
लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे
कर) भेजे गए थे। (5)
उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को
हम ने हलाक किया (निशानियां देख
कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या
यह ईमान ले आएंगे? (6)
और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से
पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़
वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से
पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7)
और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं
बनाए कि वह खाना न खाते हों, और
वह न थे हमेशा रहने वाले। (8)
फिर हम ने उन से अपना वादा
सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें
बचा लिया और जिस को हम ने
चाहा, और हम ने हद से बढ़ने
वालों को हलाक कर दिया। (9)
तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ एक
किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र
है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10)
और हम ने हलाक कर दीं कितनी
ही बस्तियां, कि वह ज़ालिम थीं,
और हम ने उन के बाद दूसरे
गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

फिर जब उन्हों ने हमारे अ़ज़ाब की आहट पाई तो उस वक़्त उस से भागने लगे। (12) तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहां तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13) वह कहने लगे हाए हमारी शामत! बेशक हम ज़ालिम थे। (14) पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहां तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15) और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16) अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17) बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को बातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से ख़राबी है जो तुम बनाते हो। (18) और उसी के लिए है जो आस्मानो में और ज़मीन में है और जो उस के पास हैं वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19) और रात दिन तस्बीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20) क्या उन्हों ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21) अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अ़र्श अ़ज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22) वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23) क्या उन्हों ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ हैं, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई हैं, अलबत्ता उन में अक्सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूगर्दानी करते हैं। (24)

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا

तुम मत भागो	12	भागने लगे	उस से	उस वक़्त वह	हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने आहट पाई	फिर जब

وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	तुम्हारी पूछ गछ हो	ताकि तुम	और अपने घर (जमा)	उस में	तुम आसाइश दिए गए	जो	तरफ़	और लौट जाओ

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन की पुकार	यह	पस रही	14	ज़ालिम	हम बेशक थे	हाए हमारी शामत	वह कहने लगे

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	और हम ने नहीं पैदा किया	15	बुझी हुई आग	कटी हुई खेती	हम ने उन्हें कर दिया

وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ

तो हम उस को बना लेते	कोई खिलौना	हम बनाएं	कि	अगर हम चाहते	16	खेलते हुए	उन के दरमियान	और जो

مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ

बातिल	पर	हक़ को	हम फेंक मारते हैं	बल्कि	17	करने वाले	अगर हम होते	अपने पास से

فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18	तुम बनाते हो	उस से जो	ख़राबी	और तुम्हारे लिए	नाबूद हो जाता है	वह	तो उस वक़्त	पस वह उस का भेजा निकाल देता है

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

वह तकब्बुर (सरकशी) नहीं करते	उस के पास	और जो	और ज़मीन में	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और दिन	रात	वह तस्बीह करते हैं	19	और न वह थकते हैं	उस की इबादत	से

لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	उन्हें उठा खड़ा करेंगे	वह	ज़मीन से	कोई माबूद	उन्हों ने बना लिया	क्या	20	वह सुस्ती नहीं करते

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ

अल्लाह	पस पाक है	अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते	अल्लाह	सिवाए	माबूद	उन दोनों में	अगर होते

رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ

और (बल्कि) वह	वह करता है	उस से जो	उस से बाज़ पुर्स नहीं करते	22	वह बयान करते हैं	उस से जो	अ़र्श	रब

يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا

लाओ (पेश करो)	फ़रमा दें	और माबूद	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिए हैं	क्या	23	बाज़ पुर्स किए जाएंगे

بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ

जो मुझ से पहले	और किताब	मेरे साथ	जो	यह किताब	अपनी दलील

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	रूगर्दानी करते हैं	पस वह	हक़	नहीं जानते	उन में अक्सर	बल्कि (अलबत्ता)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ

कि बेशक वह	उस की तरफ़	हम ने वहि भेजी	मगर	कोई रसूल	आप से पहले	और नहीं भेजा हम ने

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا

एक बेटा	अल्लाह	बना लिया	और उन्हों ने कहा	25	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा	नहीं कोई माबूद

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ

और वह	बात में	वह उस से सबक़त नहीं करते	26	मुअ़ज़्ज़ज़	बन्दे	बल्कि	वह पाक है

بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

और जो उन के पीछे	उन के हाथों में (सामने)	जो	वह जानता है	27	अ़मल करते	उस के हुक्म पर

وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	डरते रहते हैं	उस के ख़ौफ़ से	और वह	उस की रज़ा हो	जिस के लिए	मगर	और वह सिफ़ारिश नहीं करते

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ

जहन्नम	हम उसे सज़ा देंगे	पस वह शख़्स	उस के सिवा	माबूद	बेशक मैं	उन में से	कहे	और जो

ع ٢ ١٩ ٢ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ

कि	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	क्या नहीं देखा	29	ज़ालिम (जमा)	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ

पानी से	और हम ने किया	पस हम ने दोनों को खोल दिया	बन्द	दोनों थे	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ

पहाड़	ज़मीन में	और हम ने बनाए	30	क्या पस वह ईमान नहीं लाते हैं	ज़िन्दा	हर शै

اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

31	राह पाएं	ताकि वह	रास्ते	कुशादा	उस में	और हम ने बनाए	कि झुक न पड़े उन के साथ

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

32	रूगर्दानी करते हैं	उस की निशानियां	से	और वह	महफ़ूज़	एक छत	आस्मान	और हम ने बनाए

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

सब	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	पैदा किया	जिस ने	और वह

فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ

हमेशा रहना	आप (स) से क़ब्ल	किसी बशर के लिए	और हम ने नहीं किया	33	तैर रहे हैं	दाइरा (मदार) में

اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ

चखना	हर जी	34	हमेशा रहेंगे	पस वह	आप इन्तिक़ाल कर गए	क्या पस अगर

الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	तुम लौट कर आओगे	और हमारी ही तरफ़	आज़माइश	और भलाई	बुराई से	और हम तुम्हें मुब्तला करेंगे	मौत

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ़ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25) उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। (26) वह बात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक्म पर अ़मल करते हैं। (27) वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रज़ा हो, और वह उस के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं। (28) और उन में से जो कोई यह कहे कि बेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख़्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (29) क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शै को ज़िन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31) और हम ने बनाया आस्मान एक महफ़ूज़ छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32) और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33) और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिक़ाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34) हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश में मुब्तला करेंगे, और हमारी तरफ़ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

क्या यह है	एक हँसी मज़ाक़	मगर (सिर्फ़)	ठहराते तुम्हें	नहीं	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम्हें देखते हैं	और जब

الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	मुन्किर (जमा)	वह	रहमान (अल्लाह)	ज़िक्र से	और वह	तुम्हारे माबूद	याद करता है	वह जो

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾

37	तुम जल्दी न करो	अपनी निशानियां	अनक़रीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें	जल्दी (जल्द बाज़)	से	इन्सान	पैदा किया गया

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ

काश वह जान लेते	38	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا

और न	आग	अपने चेहरे	से	वह न रोक सकेंगे	वह घड़ी	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً

अचानक	आएगी उन पर	बल्कि	39	मदद किए जाएंगे	और न वह	उन की पीठ (जमा)	से

فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾

40	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	उस को लौटाना	पस न उन्हें सकत होगी	तो हैरान कर देगी उन्हें

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا

मज़ाक़ उड़ाया	उन को जिन्हों ने	आ घेरा (पकड़ लिया)	आप (स) से पहले	रसूलों की	और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ ع قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ ٣ ع ١٢ ٣

रात में	तुम्हारी निगहबानी करता है	कौन	फ़रमा दें	41	मज़ाक़ उड़ाते थे	उस के साथ (का)	थे	जो	उन में से

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	रूगर्दानी करते हैं	अपना रब	याद से	बल्कि वह	रहमान से	और दिन

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ

मदद	वह सकत नहीं रखते	हमारे सिवा	उन्हें बचाते हैं	कुछ माबूद	उन के लिए	क्या

اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ

उन को	हम ने साज़ ओ सामान दिया	बल्कि	43	वह साथी पाएंगे	हम से	और न वह	अपने आप

وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي

कि हम आ रहे हैं	क्या पस वह नहीं देखते	उम्र	उन पर- की	दराज़ हो गई	यहां तक कि	और उन के बाप दादा को

الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

इस के सिवा नहीं कि	फ़रमा दें	44	ग़ालिब आने वाले	क्या फिर वह	उस के किनारे (जमा)	से	उस को घटाते हुए	ज़मीन

اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	उन्हें डराया जाए	भी	जब	पुकार	बहरे	और नहीं सुनते हैं	वहि से	मैं तुम्हें डराता हूँ

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे माबूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुन्किर हैं। (36)
इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अनक़रीब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37)
और वह कहते हैं कि यह वादाए (अ़ज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38)
काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख़ की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39)
बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40)
और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्हों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41)
फ़रमा दें, रहमान (के अ़ज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42)
क्या हमारे सिवा उन के कुछ और माबूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43)
बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ ओ सामान दिया यहांतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुन्किरों पर तंग करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44)
आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَلَـئِنۡ مَّسَّتۡهُمۡ نَفۡحَةٌ مِّنۡ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوۡلُنَّ يٰوَيۡلَنَاۤ

हाए हमारी शामत	वह ज़रूर कहेंगे	तेरा रब	अ़ज़ाब से	एक लपट	उन्हें छुए	और अगर

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الۡمَوَازِيۡنَ الۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

क़ियामत	दिन	इंसाफ़	तराज़ू- मीज़ान	और हम रखेंगे (क़ाइम करेंगे)	46	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे

فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٌ شَيۡـًٔا ؕ وَاِنۡ كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٍ

एक दाना	वज़न बराबर	होगा	और अगर	कुछ भी	किसी शख़्स पर	तो न ज़ुल्म किया जाएगा

مِّنۡ خَرۡدَلٍ اَتَيۡنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا

और अलबत्ता हम ने अ़ता की	47	हिसाब लेने वाले	हम	और काफ़ी	हम उसे ले आएंगे	राई से - का

مُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ الۡفُرۡقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكۡرًا لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और रोशनी	फ़र्क़ करने वाली (किताब)	और हारून (अ)	मूसा (अ)

الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَيۡبِ وَهُمۡ مِّنَ السَّاعَةِ

क़ियामत	से	और वह	बग़ैर देखे	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

مُشۡفِقُوۡنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكۡرٌ مُّبٰرَكٌ اَنۡزَلۡنٰهُ ؕ اَفَاَنۡتُمۡ لَهٗ

इस के	तो क्या तुम	हम ने इसे नाज़िल किया	बाबरकत	नसीहत	और यह	49	ख़ौफ़ खाते हैं

ع ٩ الربع

مُنۡكِرُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَاۤ اِبۡرٰهِيۡمَ رُشۡدَهٗ مِنۡ قَبۡلُ

उस से क़ब्ल	हिदायत याबी (फ़हमे सलीम)	इब्राहीम (अ)	और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने दी	50	मुन्किर (जमा)

وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيۡنَ ﴿٥١﴾ اِذۡ قَالَ لِاَبِيۡهِ وَقَوۡمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيۡلُ

मूर्तियाँ	क्या है यह	और अपनी क़ौम	अपने बाप से	जब उस ने कहा	51	जानने वाले	उस के	और हम थे

الَّتِيۡۤ اَنۡتُمۡ لَهَا عٰكِفُوۡنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوۡا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا لَهَا

उन के लिए	अपने बाप दादा को	हम ने पाया	वह बोले	52	जमे बैठे हो	उन के लिए	तुम	जो कि

عٰبِدِيۡنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدۡ كُنۡتُمۡ اَنۡتُمۡ وَاٰبَآؤُكُمۡ فِىۡ ضَلٰلٍ

गुमराही में	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तहक़ीक़ तुम रहे	उस ने कहा	53	पूजा करने वाले

مُّبِيۡنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا بِالۡحَقِّ اَمۡ اَنۡتَ مِنَ اللّٰعِبِيۡنَ ﴿٥٥﴾

55	खेलने वाले (दिल लगी करने वाले)	से	तुम	या	हक़ को	क्या तुम लाए हो हमारे पास	वह बोले	54	सरीह

قَالَ بَلۡ رَّبُّكُمۡ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ الَّذِىۡ

वह जिस ने	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	रब (मालिक)	तुम्हारा रब	बल्कि	उस ने कहा

فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمۡ مِّنَ الشّٰهِدِيۡنَ ﴿٥٦﴾

56	गवाह (जमा)	से	इस बात पर	और मैं	उन्हें पैदा किया

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيۡدَنَّ اَصۡنَامَكُمۡ بَعۡدَ اَنۡ تُوَلُّوۡا مُدۡبِرِيۡنَ ﴿٥٧﴾

57	पीठ फेर कर	तुम जाओगे	कि	बाद	तुम्हारे बुत (जमा)	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा	और अल्लाह की क़सम

और अगर उन्हें तेरे रब के अ़ज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम ज़ालिम थे। (46)
और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़दल क़ाइम करेंगे तो किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अ़मल) राई के एक दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ले आएंगे, और काफ़ी हैं हम हिसाब लेने वाले। (47)
और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) को (हक़ ओ बातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अ़ता की, और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48)
जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से ख़ौफ़ खाते हैं। (49)
और यह बाबरकत नसीहत है (जो) हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम उस के मुन्किर हो? (50)
और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने उस से क़ब्ल इब्राहीम (अ) को फ़हम सलिम दी थी और हम उस के जानने वाले थे। (51)
जब उस ने कहा अपने बाप से और अपनी क़ौम से, क्या हैं यह मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे हो। (52)
वह बोले हम ने पाया अपने बाप दादा को उन की पूजा करते। (53)
उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहक़ीक़ तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह गुमराही में रहे। (54)
वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो? या दिल लगी करने वालों में से हो। (55)
उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब मालिक है आस्मानों और ज़मीन का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया और उस बात पर मैं गवाहों में से (गवाह) हूँ। (56)
और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ़ करें। (58)
कहने लगे कौन है जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह किया? बेशक वह तो ज़ालिमों में से है। (59)
बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन (बुतों) के बारे में बातें करता है, उस को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60)
बोले तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61)
उन्हों ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)! क्या यह तू ने हमारे माबूदों के साथ किया है? (62)
उस ने कहा बल्कि यह उन के बड़े ने किया है तो उन (ही) से पूछ लो अगर वह बोलते हैं। (63)
पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों में, फिर उन्हों ने कहा बेशक तुम ही ज़ालिम हो (नाहक़ पर हो)। (64)
फिर वह अपने सरों पर औन्धे किए गए (उन की मत पलट गयी), तू खूब जानता है कि यह नहीं बोलते। (65)
उस ने कहा क्या तुम फिर अल्लाह के सिवा उन की परस्तिश करते हो? जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचा सकें और न नुक़्सान पहुँचा सकें। (66)
तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (67)
वह कहने लगे उसे जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। (68)
हम ने हुक्म दिया, ऐ आग! तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा और सलामती। (69)
और उन्हों ने उस के साथ फ़रेब का इरादा किया तो हम ने उन्हें कर दिया इन्तिहाई ज़ियांकार। (70)
और हम ने उसे और लूत (अ) को उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर) बचा लिया, जिस में हम ने जहानों के लिए बरकत रखी। (71)
और उस को अ़ता किया इसहाक़ (अ) (बेटा), और याकूब (अ) पोता, और हम ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ٥٨

58	रुजूअ़ करें	उस की तरफ़	ताकि वह	उन का	एक बड़ा	सिवाए	रेज़ा रेज़ा	उस ने उन्हें कर डाला

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ٥٩

59	ज़ालिम (जमा)	से	बेशक वह	यह हमारे माबूदों के साथ	किया	कौन - किस	कहने लगे

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ٦٠ قَالُوْا

बोले	60	इब्राहीम (अ)	उस को	कहा जाता है	वह उन के बारे में बातें करता है	एक जवान	हम ने सुना है	वह बोले

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ٦١

61	वह देखें	ताकि वह	लोग	आँखें	सामने	उसे	तुम ले आओ

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ٦٢ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ

उस ने किया है	बल्कि	उस ने कहा	62	ऐ इब्राहीम (अ)	हमारे माबूदों के साथ	यह	तू ने किया	क्या तू	उन्हों ने कहा

كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ٦٣ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى

तरफ़	पस वह लौटे (सोच में पड़ गए)	63	वह बोलते हैं	अगर	तो उन से पूछ लो	यह	उन का बड़ा

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ٦٤ ثُمَّ نُكِسُوْا

फिर वह औन्धे किए गए	64	ज़ालिम (जमा)	तुम ही	बेशक तुम	फिर उन्हों ने कहा	अपने दिल

عَلٰى رُءُوْسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ٦٥ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

क्या फिर तुम परस्तिश करते हो	उस ने कहा	65	बोलते हैं	यह	नहीं	तू खूब जानता है	अपने सरों पर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ٦٦ اُفٍّ

तुफ़	66	और न नुक़्सान पहुँचा सकें तुम्हें	कुछ	न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकें	जा	अल्लाह के सिवा

لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ٦٧

67	फिर तुम नहीं समझते	क्या	अल्लाह के सिवा	परस्तिश करते हो तुम	और उस पर जिसे	तुम पर

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ٦٨

68	तुम हो करने वाले (कुछ करना है)	अगर	अपने माबूदों	और तुम मदद करो	तुम इसे जला डालो	वह कहने लगे

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ٦٩ وَاَرَادُوْا

और उन्हों ने इरादा किया	69	इब्राहीम (अ)	पर	और सलामती	ठंडी	ऐ आग तू हो जा	हम ने हुक्म दिया

بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ٧٠ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

और लूत (अ)	और हम ने उसे बचा लिया	70	बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियांकार)	तो हम ने उन्हें कर दिया	फ़रेब	उस के साथ

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ٧١ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	71	जहानों के लिए	उस में	वह जिस में हम ने बरकत रखी	सर ज़मीन	तरफ़

اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ٧٢

72	सालेह (नेकोकार)	हम ने बनाया	और सब	पोता	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ

नेक काम करना	उन की तरफ़	और हम ने वहि भेजी	हमारे हुक्म से	वह हिदायत देते थे	(जमा) इमाम (पेशवा)	और हम ने उन्हें बनाया

وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۙ ﴿٧٣﴾

73	इबादत करने वाले	हमारे ही	और वह थे	ज़कात	और अदा करना	नमाज़	और क़ाइम करना

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ

जो	बस्ती से	और हम ने उसे बचा लिया	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे दिया	और लूत (अ)

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ ﴿٧٤﴾

74	बदकार	बुरे लोग	थे	बेशक वह	गन्दे काम	करती थी

ع ٥ / ٢٥ / ٥ وَاَدْخَلْنٰهُ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ ع وَنُوْحًا

और नूह (अ)	75	(जमा) सालेह (नेकोकार)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उसे

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

बेचैनी	से	और उस के लोग	फिर हम ने उसे नजात दी	उस की	तो हम ने क़ुबूल कर ली	उस से पहले	जब पुकारा

الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ ع وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ

हमारी आयातों को	झुटलाया	जिन्हों ने	लोग	से- पर	और हम ने उस को मदद दी	76	बड़ी

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ

और दाऊद (अ)	77	सब	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	बुरे	लोग	वह थे	बेशक वह

وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ

उस में	रात में चर गईं	जब	खेती के बारे में	फ़ैस्ला कर रहे थे	जब	और सुलेमान (अ)

غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۙ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ

सुलेमान (अ)	पस हम ने उस को फ़हम दी	78	मौजूद	उनके फ़ैसले (के वक़्त)	और हम थे	एक क़ौम की बकरियां

وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

पहाड़ (जमा)	दाऊद (अ)	साथ- का	और हम ने मुसख़्ख़र कर दिया	और इल्म	हुक्म	हम ने दिया	और हर एक

يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ

सनअ़त (कारीगरी)	और हम ने उसे सिखाई	79	करने वाले	और हम थे	और परिन्दे	वह तस्बीह करते थे

لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	तुम्हारी लड़ाई	से	ताकि वह तुम्हें बचाए	तुम्हारे लिए	एक लिबास

شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ

उस के हुक्म से	चलती	तेज़ चलने वाली	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	80	शुक्र करने वाले

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

81	जानने वाले	हर शै	और हम हैं	उस में	जिस को हम ने बरकत दी है	सरज़मीन	तरफ़

और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वह हमारे हुक्म से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी नेक काम करने की, और नमाज़ क़ाइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73)

और हम ने लूत (अ) को हुक्म दिया (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग। (74)

और हम ने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75)

और (याद करो) जब उस से क़ब्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को नजात दी बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से। (76)

और हम ने उस को मदद दी उन लोगों पर जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (77)

और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक क़ौम की बकरियां चर गईं, और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे। (78)

पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फ़ैसले की) फ़हम दी और हर एक को हम ने हुक्म (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्ख़र कर दिया, वह तस्बीह करते थे और परिन्दे (भी मुसख़्ख़र किए) और करने वाले हम थे। (79)

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80)

और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्ख़र की) वह उस के हुक्म से उस सरज़मीन में (शाम) की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरकत दी, और हम हर शै को जानने वाले हैं। (81)

और शैतानों में से (मुसख़्ख़र किए) जो ग़ोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। (82)
और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। (83)
तो हम ने क़ुबूल कर ली उस की (दुआ), पस उसे जो तक्लीफ़ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। (84)
और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और ज़ुलकिफ़्ल (अ), यह सब सब्र करने वालों में से थे। (85)
और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से थे। (86)
और (याद करो) जब मछली वाले (यूनुस अ अपनी क़ौम से) ग़ुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरों में पुकारा कि (ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों (क़ुसूरवारों) में से था। (87)
फिर हम ने उस की (दुआ) क़ुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। (88)
और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। (89)
फिर हम ने उस की (दुआ) क़ुबूल कर ली और हम ने उसे अता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की बीवी को दुरुस्त (औलाद के क़ाबिल) कर दिया बेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90)

وَمِنَ الشَّيٰطِيۡنِ مَنۡ يَّغُوۡصُوۡنَ لَهٗ وَيَعۡمَلُوۡنَ عَمَلًا

काम	और करते थे	उस के लिए	जो ग़ोता लगाते थे	शैतान (जमा)	और से

دُوۡنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمۡ حٰفِظِيۡنَ ۙ ٨٢ وَاَيُّوۡبَ اِذۡ نَادٰى

जब उस ने पुकारा	और अय्यूब (अ)	82	संभालने वाले	उन के लिए	और हम थे	उस के सिवा

رَبَّهٗۤ اَنِّىۡ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ٨٣

83	रहम करने वाले	सब से बड़ा रहम करनेवाला	और तू	तक्लीफ़	मुझे पहुँची है	कि मैं	अपना रब

فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ فَكَشَفۡنَا مَا بِهٖ مِنۡ ضُرٍّ وَّاٰتَيۡنٰهُ اَهۡلَهٗ

उस के घर वाले	और हम ने दिए उसे	तक्लीफ़	उस को	जो	पस हम ने खोल दी	उस की	तो हम ने क़ुबूल कर ली

وَمِثۡلَهُمۡ مَّعَهُمۡ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَذِكۡرٰى لِلۡعٰبِدِيۡنَ ٨٤

84	इबादत करने वालों के लिए	और नसीहत	अपने पास	से	रहमत फ़रमा कर	उन के साथ	और उन जैसे

وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَاِدۡرِيۡسَ وَذَا الۡكِفۡلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيۡنَ ٨٥

85	सब्र करने वाले	से	यह सब	और ज़ुल किफ़्ल	और इदरीस (अ)	और इस्माईल (अ)

وَاَدۡخَلۡنٰهُمۡ فِىۡ رَحۡمَتِنَا ؕ اِنَّهُمۡ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ٨٦

86	नेकोकार (जमा)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उन्हें

وَذَا النُّوۡنِ اِذۡ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنۡ لَّنۡ نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ

उस पर	कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे	पस गुमान किया उस ने	ग़ुस्से में भर कर	चला गया	जब	और ज़ुन नून (मच्छली वाला)

فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنۡتَ سُبۡحٰنَكَ ۖ

तू पाक है	तेरे सिवा	कोई माबूद	कि नहीं	अन्धेरों में	तो उस ने पुकारा

اِنِّىۡ كُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ٨٧ فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيۡنٰهُ

और हम ने उसे नजात दी	उस की	फिर हम ने क़ुबूल कर ली	87	ज़ालिम (जमा)	से	मैं था	बेशक मैं

مِنَ الۡغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـنۡجِى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ٨٨ وَزَكَرِيَّاۤ

और ज़करिया (अ)	88	मोमिन (जमा)	हम नजात देते हैं	और इसी तरह	ग़म से

اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرۡنِىۡ فَرۡدًا وَّاَنۡتَ

और तू	अकेला	न छोड़ मुझे	ऐ मेरे रब	अपना रब	जब उस ने पुकारा

خَيۡرُ الۡوٰرِثِيۡنَ ٨٩ فَاسۡتَجَبۡنَا لَهٗ وَوَهَبۡنَا لَهٗ يَحۡيٰى وَاَصۡلَحۡنَا

और हम ने दुरुस्त कर दिया	यहिया (अ)	उसे	और हम ने अता किया	उस की	फिर हम ने क़ुबूल कर ली	89	वारिस (जमा)	बेहतर

لَهٗ زَوۡجَهٗ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا يُسٰرِعُوۡنَ فِى الۡخَيۡرٰتِ

नेक काम (जमा)	में	वह जल्दी करते थे	बेशक वह सब	उस की बीवी	उस के लिए

وَيَدۡعُوۡنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوۡا لَنَا خٰشِعِيۡنَ ٩٠

90	आजिज़ी करने वाले	हमारे लिए (सामने)	और वह थे	और ख़ौफ़	उम्मीद	और वह हमें पुकारते थे

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

अपनी रूह	उस में	फिर हम ने फूंक दी	अपनी शर्मगाह (इफ़्फ़त की)	उस ने हिफ़ाज़त की	और (औरत) जो

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह है	बेशक	91	जहानों के लिए	निशानी	और उस का बेटा	और हम ने उसे बनाया

اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ

अपना काम (दीन)	और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्हों ने	92	पस मेरी इबादत करो	तुम्हारा रब	और मैं	एक (यकता)	उम्मत

ع ۱۸ ٦ ٦

بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ

नेक काम	कुछ	करे	पस जो	93	रुजूअ़ करने वाले	हमारी तरफ़	सब	बाहम

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	लिख लेने वाले	उस के	और बेशक हम	उस की कोशिश	तो नाक़द्री (अकारत) नहीं	ईमान वाला	और वह

وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓي اِذَا

जब	यहां तक कि	95	लौट कर नहीं आएंगे	कि वह	जिसे हम ने हलाक कर दिया	बस्ती पर	और हराम

فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	फिसलते (दौड़ते) आएंगे	बुलन्दी (टीले)	हर	से	और वह	और माजूज	याजूज	खोल दिए जाएंगे

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ

आँखें	ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी	वह	तो अचानक	सच्चा	वादा	और क़रीब आजाएगा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا

बल्कि हम थे	इस से	ग़फ़्लत में	तहक़ीक़ हम थे	हाए हमारी शामत	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	से	तुम परस्तिश करते हो	और जो	बेशक तुम	97	ज़ालिम (जमा)

حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ

यह	अगर होते	98	दाख़िल होने वाले	तुम उस में	जहन्नम	ईंधन

اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उनके लिए	99	सदा रहेंगे	उस में	और सब	उस में दाख़िल न होते	माबूद

زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ

पहले ठहर चुकी	जो लोग	बेशक	100	(कुछ) न सुन सकेंगे	उस में	और वह	चीख़ ओ पुकार

لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	101	दूर रखे जाएंगे	उस से	वह लोग	भलाई	हमारी (तरफ़) से	उन के लिए

حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102	वह हमेशा रहेंगे	उन के दिल	जो चाहेंगे	में	और वह	उस की आहट

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91)

बेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मेरी इबादत करो। (92)

और उन्हों ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93)

पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और बेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94)

उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95)

यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96)

और सच्चा वादा क़रीब आजाएगा तो अचानक मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहक़ीक़ हम इस से ग़फ़्लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97)

बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहन्नम का ईंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98)

अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99)

उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100)

बेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101)

वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ

तुम्हारा दिन	यह है	फ़रिश्ते	और लेने आएंगे उन्हें	बड़ी	घबराहट	ग़मगीन न करेगी उन्हें

الَّذِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ

तुमार	जैसे लपेटा जाता है	आस्मान	हम लपेट लेंगे	जिस दिन	103	तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था)	वह जो

لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

बेशक हम हैं	हम पर	वादा	हम उसे लौटा देंगे	पैदाइश	पहली	जैसे हम ने इब्तिदा की	तहरीर का काग़ज़

فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

कि	नसीहत के बाद	ज़बूर में	और तहक़ीक़ हम ने लिखा	104	(पूरा) करने वाले

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا

एक बड़ी ख़बर	इस में	बेशक	105	नेक (जमा)	मेरे बन्दे	उस के वारिस	ज़मीन

لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107	तमाम जहानों के लिए	रहमत	मगर	हम ने भेजा आप (स) को	और नहीं	106	इबादत गुज़ार (जमा)	लोगों के लिए

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	कि बस	मेरी तरफ़	वहि की गई	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْۤ

जानता मैं	और नहीं	बराबरी पर	मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया	तो कह दो	वह रूगर्दानी करें	फिर अगर	108	हुक्म बरदार (जमा)

اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ

से कही गयी बात	बुलंद आवाज़	वह जानता है	बेशक वह	109	जो तुम से वादा किया गया	या दूर	क्या क़रीब?

وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾ وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ

तुम्हारे लिए	आज़माइश	शायद वह	और मैं नहीं जानता	110	जो तुम छुपाते हो	और जानता है

وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا

और हमारा रब	हक़ के साथ	तू फ़ैसला फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस (नबी) ने कहा	111	एक मुद्दत तक	और फ़ाइदा पहुँचाना

الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ع النصف ع ١٩ ٧

112	जो तुम बयान करते हो	पर	जिस से मदद तलब की जाती है	निहायत मेहरबान

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٢٢) سُوْرَةُ الْحَجِّ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10 — (22) सूरतुल हज — आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾

1	बड़ी भारी	चीज़	क़ियामत	ज़लज़ला	बेशक	अपना रब	डरो	ऐ लोगो!

उन्हें ग़मगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। (103)
जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के काग़ज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, बेशक हम पूरा करने वाले हैं। (104)
और तहक़ीक़ हम ने ज़बूर में नसीहत के बाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। (105)
बेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (बशारत) एक बड़ी ख़बर है। (106)
और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम जहानों के लिए रहमत। (107)
आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? (108)
फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यकसां तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? (109)
बेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई बात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। (110)
और मैं नहीं जानता शायद (अ़ज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। (111)
नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। (112)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। (1)

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ

वह दूध पिलाती है	जिस को	हर दूध पिलाने वाली	भूल जाएगी	तुम देखोगे उसे	जिस दिन

وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى

नशे में	लोग	और तू देखेगा	अपना हम्ल	हर हम्ल वाली (हामिला)	और गिरा देगी

وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ

और कुछ लोग जो	2	सख़्त	अल्लाह का अ़ज़ाब	और लेकिन	नशे में	और हालांकि नहीं

مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ

हर शैतान	और पैरवी करते हैं	बे जाने बूझे	अल्लाह के (बारे) में	झगड़ा करते हैं	जो

مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

उसे गुमराह करेगा	तो वह बेशक	जो दोस्ती करेगा उस से	कि वह	उस पर (उस की) निस्बत लिख दिया गया	3	सरकश

وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	4	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	और राह दिखाएगा उसे

فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ

फिर	मिट्टी से	हम ने पैदा किया तुम्हें	तो बेशक हम	जी उठना	से	शक में

مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ

और बग़ैर सूरत बनी	सूरत बनी हुई	गोश्त की बोटी से	फिर	जमे हुए खून से	फिर	नुत्फ़े से

لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى

तक	जो हम चाहें	रहमों में	और हम ठहराते हैं	तुम्हारे लिए	ताकि हम ज़ाहिर कर दें

اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ

अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा	हम निकालते हैं तुम्हें	फिर	एक मुद्दते मुक़र्ररा

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ

निकम्मी उम्र	तक	पहुँचता है	कोई	और तुम में से	फ़ौत हो जाता है	कोई	और तुम में से

لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ

ज़मीन	और तू देखता है	कुछ	इल्म (जानना)	बाद	ताकि वह न जाने

هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ

और उभर आई	वह तरोताज़ा हो गई	पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	ख़ुश्क पड़ी हुई

وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	इस लिए कि	यह	5	रौनक़दार	हर जोड़ा	से	और उगा लाई

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

6	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और यह कि वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और यह कि वह	वही बरहक़

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हम्ल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसबत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह बेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी कुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रहमों में से जो चाहें एक मुद्दत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे (की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तबई से क़ब्ल) फ़ौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है ख़ुश्क पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताज़ा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनक़दार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है, और यह कि वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (6)

और यह कि क़ियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। (7)
और लोगों में कोई (ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। (8)
(तकब्बुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रुसवाई है और हम उसे रोज़े क़ियामत जलती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे। (9)
यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (10)
और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इत्मिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आज़माइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आख़िरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। (11)
वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। (12)
वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा क़रीब है, बेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। (13)
जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए बेशक अल्लाह उन्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (14)
जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आख़िरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे क्या उस की यह तदबीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। (15)

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ

जो	उठाएगा	अल्लाह	और यह कि	उस में	नहीं शक	आने वाली	घड़ी (क़ियामत)	और यह कि

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

बग़ैर किसी इल्म	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से	7	क़ब्रों में

وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾ ۙ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ

से	ताकि गुमराह करे	अपनी गर्दन	मोड़े हुए	8	रोशन	और बग़ैर किसी किताब	और बग़ैर किसी दलील

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

रोज़े क़ियामत	और हम उसे चखाएंगे	रुसवाई	दुनिया में	उस के लिए	अल्लाह	रास्ता

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ

नहीं	और यह कि अल्लाह	तेरे हाथ	आगे भेजा	यह उस सबब जो	9	जलती आग	अ़ज़ाब

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ ع ١٠ ٨

एक किनारा	पर	अल्लाह	बन्दगी करता है	जो	लोग	और से	10	अपने बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला

فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِنْقَلَبَ عَلٰى

पर-बल	तो पलट गया	कोई आज़माइश	उसे पहुँची	और अगर	उस से	तो इत्मिनान पा लिया	भलाई	उसे पहुँच गई	फिर अगर

وَجْهِهٖ ۚ ۫ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

11	खुला	वह घाटा	यह है	और आख़िरत	दुनिया में घाटा	अपना मुँह

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह है	न उसे नफ़ा पहुँचाए	और जो	न उसे नुक़सान पहुँचाए	जो	अल्लाह के सिवा	से	पुकारता है वह

الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ ج يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ

उस के नफ़ा से	ज़ियादा क़रीब	उस का ज़रर	उस को जो	वह पुकारता है	12	दूर-इन्तिहा दर्जा	गुमराही

لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह	13	रफ़ीक़	और बेशक बुरा	दोस्त	बेशक बुरा

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए

اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ

हरगिज़ उस की मदद न करेगा	कि	गुमान करता है	जो	14	जो वह चाहता है	करता है	बेशक अल्लाह

اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ

आस्मान की तरफ़	एक रस्सी	तो उसे चाहिए कि ताने	और आख़िरत	दुनिया में	अल्लाह

ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

15	जो गुस्सा दिला रही है	उस की तदबीर	दूर कर देती है	क्या	फिर देखे	उसे काट डाले	फिर

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

16	वह चाहता है	जिस को	हिदायत देता है	और यह कि अल्लाह	रोशन	आयतें	हम ने इस को नाज़िल किया	और इसी तरह

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा (मसीही)	और साबी (सितारा परस्त)	यहूदी हुए	और जो	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	और वह जिन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और आतिश परस्त

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ

जो	सिज्दा करता है उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा?	17	मुत्तला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ

साबित हो गया	और बहुत से	इन्सान (जमा)	से	और बहुत	और चौपाए	और दरख़्त	और पहाड़

عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	कोई इज़्ज़त देने वाला	तो नहीं उस के लिए	ज़लील करे अल्लाह	और जिसे	अज़ाब	उस पर

السجدة ٦

يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ﴿١٨﴾ ۩ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ

अपने रब (के बारे) में	वह झगड़े	दो फ़रीक़	यह दो	18	जो वह चाहता है	करता है

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ

ऊपर	डाला जाएगा	आग के	कपड़े	उन के लिए	काटे गए	कुफ़्र किया	पस वह जिन्हों ने

رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾

20	और जिल्द (खालें)	उन के पेटों में	जो	उस से	पिघल जाएगा	19	खौलता हुआ पानी	उन के सर (जमा)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا

कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	21	लोहे के	गुर्ज़	और उन के लिए

ع ۱۲/۲ ۹

مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۤ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾

22	जलने का अज़ाब	और चखो	उस में	लौटा दिए जाएंगे	ग़म से (ग़म के मारे)	उस से

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

बाग़ात	नेक	और उन्हों ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

कंगन	वह पहनाए जाएंगे उस में	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोने के

और इसी तरह हम ने इस (कुरआन) को उतारा, रोशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। (16) बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुश्रिक, बेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े क़ियामत उन के दरमियान, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। (17) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख़्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, और बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18) यह दो फ़रीक़ अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्हों ने कुफ़्र किया, उन के लिए आग के कपड़े काटे जा चुके हैं, उन के सरों के ऊपर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। (19) उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) (20) और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। (21) जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अज़ाब चखो। (22) जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, बेशक अल्लाह उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। (23)

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा बात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक़ (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। **(24)** बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुक़ूक़ में) और जो उस में ज़ुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। **(25)**
और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने कअ़बा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ सिज्दा करने वालों के लिए। **(26)**
और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएं, वह आती हैं हर दूर दराज़ रास्ते से। **(27)**
ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (खुद भी) खाओ और बदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। **(28)**
फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। **(29)**
यह (है हुक्म) और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उस के रब के नज़्दीक उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल क़रार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) बुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी बात से। **(30)**

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ

राह	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई	बात	से - की	पाकीज़ा	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई

الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और वह रोकते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	24	तारीफ़ों का लाइक़

وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِ الْعَاكِفُ

रहने वाला	बराबर	लोगों के लिए	हम ने मुक़र्रर किया	वह जिसे	मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह)

فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ

से	हम उसे चखाएंगे	ज़ुल्म से	गुमराही का	उस में	इरादा करे	और जो	और परदेसी	उस में

عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ ع ٣ ١٠

कि	ख़ाने कअ़बा की जगह	इब्राहीम के लिए	हम ने ठीक कर दी	और जब	25	दर्दनाक	अ़ज़ाब

لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ

और क़ियाम करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	और पाक रखना	किसी शै	मेरे साथ	न शरीक करना

وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا

पैदल	वह तेरे पास आएं	हज का	लोगों में	और एलान कर दो	26	सिजदा करने वाले	और रुकूअ़ करने वाले

وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا

ताकि वह देखें	27	दूर दराज़	हर रास्ता	से	वह आती हैं	हर दुबली ऊँटनी	और पर

مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ

जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन	में	अल्लाह का नाम	वह याद करें (करलें)	अपने	फ़ाइदे

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا

उस से	पस तुम खाओ	मवेशी	चौपाए	से	हम ने उन्हें दिया	जो	पर

وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ

अपना मैल कुचैल	चाहिए कि दूर करें	फिर	28	मोहताज	बदहाल	और खिलाओ

وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

29	क़दीम घर	और तवाफ़ करें	अपनी नज़्रें	और पूरी करें

ذٰلِكَ ۤ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ

उसके रब के नज़्दीक	उसके लिए	बेहतर	पस वह	शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां)	ताज़ीम करे	और जो	यह

وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا

पस तुम बचो	तुम पर - तुम को	जो पढ़ दिए गए	सिवाए	मवेशी	तुम्हारे लिए	और हलाल क़रार दिए गए

الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

30	झूटी	बात	और बचो	बुत (जमा)	से	गन्दगी

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا

तो गोया	अल्लाह का	शरीक करेगा	और जो	उस के साथ	शरीक करने वाले	न	अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर

خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ

में	हवा	उस को	फेंक देती है	या	परिन्दे	पस उसे उचक ले जाते हैं	आस्मान से	वह गिरा

مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ

से	तो बेशक यह	शआइरे अल्लाह	ताज़ीम करेगा	और जो	यह	31	दूर दराज़	किसी जगह

تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ

फिर	एक मुद्दते मुक़र्रर	तक	नफ़ा (फ़ाइदे)	उस में	तुम्हारे लिए	32	(जमा) क़ल्ब (दिल)	परहेज़गारी

ع ٨ ١١ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا

क़ुरबानी	हम ने मुक़र्रर की	और हर उम्मत के लिए	33	बैते क़दीम (बैतुल्लाह)	तक	उन के पहुँचने का मुक़ाम

لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ

मवेशी	चौपाए	से	जो हम ने दिए उन्हें	पर	अल्लाह का नाम	ताकि वह लें

فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	फ़रमाबरदार हो जाओ	पस उस के	माबूदे यकता	पस तुम्हारा माबूद

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى

पर	और सब्र करने वाले	उन के दिल	डर जाते हैं	अल्लाह का नाम लिया जाए	जब	वह जो

مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करने वाले	जो उन्हें पहुँचे

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ

भलाई	उस में	तुम्हारे लिए	शआइरे अल्लाह	से	तुम्हारे लिए	हम ने मुक़र्रर किए	और क़ुरबानी के ऊँट

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا

उन के पहलू	गिर जाएं	फिर जब	क़तार बान्ध कर	उन पर	अल्लाह का नाम	पस लो तुम

فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	और सवाल करने वाले	सवाल न करने वाले	और खिलाओ	उन से	तो खाओ

لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا

और न	उन का गोश्त	हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को	36	शुक्र करो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए

دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	तुम से	तक़्वा	उस को पहुँचता	और लेकिन (बल्कि)	उन का ख़ून

لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	नेकी करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	जो उस ने हिदायत दी तुम्हें	पर	अल्लाह	ताकि तुम बड़ाई से याद करो	तुम्हारे लिए

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31) यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32) तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुद्दते मुक़र्रर तक फ़ाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम बैते क़दीम (बैतुल्लाह) के पास है। (33) और हम ने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (34) वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ क़ाइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (35) और क़ुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) मुक़र्रर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (ज़ुबह हो जाएं) तो उन में से (ख़ुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36) अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोश्त और न उन का ख़ून, बल्कि उस को पहुँचता है तक़्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (37)

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

किसी-तमाम	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	बचाव करता है	बेशक अल्लाह

خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ ع ٥ ١٢

और बेशक अल्लाह	उन पर ज़ुल्म किया गया	क्योंकि वह	जिन से लड़ते हैं	उन लोगों को	इज़्न दिया गया	38	नाशुक्रा	दग़ाबाज़

عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ

नाहक़	अपने घर (जमा) शहरों	से	निकाले गए	जो लोग	39	ज़रूर क़ुदरत रखता है	उन की मदद पर

اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

उन के बाज़ (एक को)	लोग	अल्लाह	दफ़्अ करता	और अगर न	हमारा रब अल्लाह	वह कहते हैं	मगर (सिर्फ़) यह कि

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ

ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है)	और मस्जिदें	और इबादत ख़ाने	और गिरजे	सोमए	तो ढा दिए जाते	बाज़ से (दूसरे)

فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

ताक़त वाला (तवाना)	बेशक अल्लाह	उस की मदद करता है	जो	और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह	बहुत-बकस्रत	अल्लाह	नाम	उन में

عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا

और अदा करें	मनाज़	वह क़ाइम करें	ज़मीन (मुल्क) में	हम दस्तरस दें उन्हें	अगर	वह लोग जो	40	ग़ालिब

الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

और अल्लाह के लिए अन्जाम कार	बुराई से	और वह रोकें	नेक कामों का	और हुक्म दें	ज़कात

الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ

और आद	नूह की क़ौम	इन से क़ब्ल	तो झुटलाया	तुम्हें झुटलाएं	और अगर	41	तमाम काम

وَّثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

और झुटलाया गया	और मदयन वाले	43	और क़ौमे लूत (अ)	और इब्राहीम (अ) की क़ौम	42	और समूद

مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾

44	मेरा इन्कार	हुआ	तो कैसा	मैं ने उन्हें पकड़ लिया	फिर	काफ़िरों को	पस मैं ने ढील दी	मूसा (अ)

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا

अपनी छतें	पर	गिरी पड़ी	कि वह-यह	ज़ालिम	और यह (वह)	हम ने हलाक किया उन्हें	बस्तियां	तो कितनी

وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿۴۵﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ

जो हो जाते	ज़मीन में	पस क्या वह चलते फिरते नहीं	45	गचकारी के	और बहुत महल	बेकार	और कुंएं

لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا

क्यों कि दरहक़ीक़त	उन से	सुनने लगते	या कान (जमा)	उन से	वह समझने लगते	दिल	उन के

لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ ﴿۴۶﴾

46	सीनों में	वह जो	दिल (जमा)	अन्धे हो जाते हैं	और लेकिन (बल्कि)	आँखें	अन्धी नहीं होतीं

बेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के ज़रर), बेशक अल्लाह किसी भी दग़ाबाज़ (ख़ाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। **(38)**

इज़्ने (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफ़िर) लड़ते हैं, क्यों कि उन पर ज़ुल्म किया गया, और अल्लाह बेशक उन की मदद पर ज़रूर क़ुदरत रखता है। **(39)**

जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक़, सिर्फ़ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़्अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहिबों के ख़िल्वत ख़ाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत ख़ाने और (मुसलमानों की) मस्जिदें ढा दी जातीं जिन में अल्लाह का नाम बकस्रत लिया जाता है, और अलबत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, बेशक अल्लाह तवाना, ग़ालिब है। **(40)**

वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो मनाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अन्जाम अल्लाह ही के लिए है। **(41)**

और अगर यह तुम्हें झुटलाएं तो इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम ने, और आद और समूद ने, **(42)** और इब्राहीम (अ) की क़ौम ने, और क़ौमे लूत (अ), **(43)** और मदयन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अन्जाम)! **(44)**

सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थीं, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं, और (कितने ही) कुंएं बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। **(45)**

पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहक़ीक़त अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो जाया करते हैं। **(46)**

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ط وَاِنَّ يَوْمًا

एक दिन	और बेशक	अपना वादा	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा	और हरगिज़ नहीं	अज़ाब	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

बस्तियां	और कितनी ही	47	तुम गिनते हो	उस से जो	हज़ार साल के मानिंद	तुम्हारे रब के हां

ع ١٠ ١٣ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ج وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ ع قُلْ

फ़रमा दें	48	लौट कर आना	और मेरी तरफ़	मैं ने पकड़ा उन्हें	फिर	ज़ालिम	और वह	उन को	मैं ने ढील दी

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ ج فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	49	डराने वाला आश्कारा	तुम्हारे लिए	मैं	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो!

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا

जिन लोगों ने कोशिश की	50	बाइज़्ज़त	और रिज़्क़	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अमल किए

فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا

और नहीं भेजा हम ने	51	दोज़ख़ वाले	वही हैं	आजिज़ करने (हराने)	हमारी आयात	में

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ

शैतान	डाला	उस ने आर्ज़ू की	जब	मगर	नबी	और न	रसूल	से - कोई	तुम से पहले

فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ج فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ

अल्लाह मज़बूत कर देता है	फिर	शैतान	जो डालता है	अल्लाह	पस मिटा देता है	उस की आर्ज़ू	में

اٰيٰتِهٖ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لا لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ

शैतान	जो डाला	ताकि बनाए वह	52	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपनी आयात

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ط

उन के दिल	और सख़्त	मरज़	उन के दिलों में	उन लोगों के लिए	एक आज़माइश

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ لا وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और ताकि जान लें	53	दूर - बड़ी	अलबत्ता सख़्त ज़िद में	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ

उस के लिए	तो झुक जाएं	उस पर	तो वह ईमान ले आएं	तुम्हारे रब से	हक़	कि यह	इल्म दिया गया

قُلُوْبُهُمْ ط وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

54	सीधा	रास्ता	तरफ़	वह लोग जो ईमान लाए	हिदायत देने वाला	और बेशक अल्लाह	उन के दिल

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

आए उन पर	यहां तक कि	उस से	शक	में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और हमेशा रहेंगे

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

55	मनहूस दिन	अज़ाब	या आ जाए उन पर	अचानक	क़ियामत

और तुम से अज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ करेगा, और बेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47) और कितनी ही बस्तियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48) फ़रमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आश्कारा डराने वाला हूँ। (49) पस जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है। (50) और जिन लोगों ने कोशिश की (अपने ज़अ़म में) हमारी आयात को हराने में, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51) और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्ज़ू की तो शैतान ने उस की आर्ज़ू में (वस्वसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52) ताकि (उस वस्वसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम अलबत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53) और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आएं और उस के लिए झुक जाएं उन के दिल, और बेशक अल्लाह उन लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54) और वह हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगों ने कुफ़्र किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अ़ज़ाब। (55)

उस दिन बादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फ़ैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह नेमतों के बाग़ात में होंगे। (56) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अ़ज़ाब। (57) और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा, और अल्लाह बेशक सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (58) वह अलबत्तता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह बेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59) यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, बेशक अल्लाह अलबत्तता माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (60) यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, बेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63) उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ूबियों वाला है। (64)

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	अल्लाह के लिए	उस दिन	बादशाही

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	56	नेमतों के बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ع ٩ ١٤ وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ

और जिन लोगों ने	57	अ़ज़ाबे ज़िल्लत	उन के लिए	पस वही लोग	हमारी आयात को	और झुटलाया

هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ

अलबत्ता वह उन्हें रिज़्क़ देगा	वह मर गए	या	मारे गए	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत की

اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	रिज़्क़ देने वाला	सब से बेहतर	अलबत्ता वह	और बेशक अल्लाह	अच्छा	रिज़्क़	अल्लाह

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ

अलबत्ता इल्म वाला	और बेशक अल्लाह	वह उसे पसंद करेंगे	ऐसे मुक़ाम में	वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा

حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ

उस से	उसे सताया गया	जैसे	सताया	और जो-जिस	यह	59	हिल्म वाला

ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

60	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	ज़रूर मदद करेगा उस की	ज़ियादती की गई उस पर	फिर

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	इस लिए कि अल्लाह	यह

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

इस लिए कि अल्लाह	यह	61	देखने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	रात में

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ

और यह कि	बातिल	वह	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	जो-जिसे	और यह कि	वही हक़

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ

उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	62	बड़ा	बुलन्द मरतबा	वह	अल्लाह

مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۡ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ

बेशक	सरसब्ज़	ज़मीन	तो हो गई	पानी	आस्मान	से

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ ۚ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	उसी के लिए	63	ख़बर रखने वाला	निहायत मेहरबान	अल्लाह

ع ٧ ١٥ فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

64	तमाम ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अलबत्ता वही	और बेशक अल्लाह	ज़मीन में

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ

चलती है	और कश्ती	ज़मीन में	जो	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ

ज़मीन पर	कि वह गिर पड़े	आस्मान	और वह रोके हुए है	उस के हुक्म से	दर्या में

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ

जिस ने	और वही	65	निहायत मेहरबान	बड़ा शफ़क़त करने वाला	लोगों पर	बेशक अल्लाह	उस के हुक्म से	मगर

اَحْيَاكُمْ ز ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

66	बड़ा नाशुक्रा	इन्सान	बेशक	तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	मारेगा तुम्हें	फिर	तुम्हें ज़िन्दा किया

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ

सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें	उस पर बन्दगी करते हैं	वह	एक तरीक़े इबादत	हम ने मुक़र्रर किया	हर उम्मत के लिए

فِى الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾

67	सीधी	राह	पर	बेशक तुम	अपने रब की तरफ़	और बुलाओ	उस मामले में

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	68	जो तुम करते हो	ख़ूब जानता है	अल्लाह	तो आप कह दें	वह तुम से झगड़ें	और अगर

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जिस में	रोज़े क़ियामत	तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىْ كِتٰبٍ ؕ

किताब में	यह	बेशक	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	जानता है	कि अल्लाह	क्या तुझे मालूम नहीं?

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	70	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	कोई इल्म	उस का	उन के लिए (उन्हें)	नहीं	और जो-जिस	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी उस ने

مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِىْ

में-पर	तुम पहचानोगे	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	71	कोई मददगार

وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ

उन पर जो	वह हमला कर दें	क़रीब है	नाख़ुशी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चेहरे

يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ

इस	से	बदतर	क्या मैं तुम्हें बतला दूँ?	फ़रमा दें	हमारी आयात	उन पर	पढ़ते हैं

ع ٩ ٨ ١٦ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾

72	ठिकाना	और बुरा	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	अल्लाह	जिस का वादा किया	दोज़ख़

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया जो कुछ ज़मीन में है, और कश्ती उस के हुक्म से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला निहायत मेहरबान है। (65)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66)

हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीक़े इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक़) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, बेशक तुम हो सीधी राह पर। (67)

और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम करते हो। (68)

अल्लाह रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (69)

क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, बेशक यह किताब में है, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70)

वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (ख़ुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाख़ुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फ़रमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। **(73)**

उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न जानी (जैसे) उस की क़द्र करने का हक़ था, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है। **(74)**

अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। **(75)**

वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की बाज़गश्त है। **(76)**

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो जहान में कामयाबी पाओ। **(77)**

और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़ब्ल (भी) और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! **(78)**

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

बेशक वह जिन्हें	उस को	पस तुम सुनो	एक मिसाल	बयान की जाती है	ऐ लोगो!

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ

अगरचे	एक मक्खी	पैदा कर सकेंगे	हरगिज़ न	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो

اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ

न छुड़ा सकेंगे उसे	कुछ	मक्खी	उन से छीन ले	और अगर	उस के लिए	वह जमा हो जाएं

مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	न क़द्र जानी उन्हों ने	73	और जिस को चाहा	चाहने वाला	कमज़ोर (बोदा है)	उस से

حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾ اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ

चुन लेता है	अल्लाह	74	ग़ालिब	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उस के क़द्र करने का हक़

مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾ ع

75	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और आदमियों में से	पैग़ाम पहुँचाने वाले	फ़रिश्तों में से

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना (बाज़गश्त)	अल्लाह	और तरफ़	और जो उन के पीछे	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है

الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا

और सिज्दा करो	तुम रुकूअ करो	वह लोग जो ईमान लाए	ऐ	76	सारे काम

وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ ع السجدة عند الشافعي

77	फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अच्छे काम	और करो	अपना रब	और इबादत करो

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا

और न	उस ने तुम्हें चुना	वह-उस	उस की कोशिश करना	हक़	अल्लाह (की राह) में	और कोशिश करो

جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	दीन	कोई तंगी	दीन में	तुम पर	डाली

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا

और इस में	इस से क़ब्ल	मुस्लिम (जमा)	तुम्हारा नाम रखा	वह-उस	इब्राहीम (अ)

لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

गवाह-निगरान	और तुम हो	तुम पर	तुम्हारा गवाह (निगरान)	रसूल (स)	ताकि हो

عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا

और मज़बूती से थाम लो	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	पस क़ाइम करो	लोगों पर

بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾ ع ١٠/٦ ١٧

78	मददगार	और अच्छा है	मौला	सो अच्छा है	तुम्हारा मौला (कारसाज़)	वह	अल्लाह को

آياتُها ١١٨ ❀ سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ (٢٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

आयात 118 — (23) सूरतुल मोमिनून — रुकूआत 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ ١ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों में	वह जो	1	मोमिन (जमा)	फ़लाह पाई (कामयाब हुए)

خٰشِعُوْنَ ۙ ٢ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ ٣ وَالَّذِيْنَ

और जो	3	मुँह फेरने वाले	लग़्व (बेहूदा बातों) से	वह	और जो	2	खुशूअ (आजिज़ी) करने वाले

هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ ٤ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ ٥

5	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और जो	4	अदा करने वाले	ज़कात (को)	वह

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ ٦

6	कोई मलामत नहीं	पस बेशक वह	उन के दाएं हाथ	जो मालिक हुए	या	अपनी बीवियां	पर-से	मगर

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ ٧ وَالَّذِيْنَ هُمْ

वह	और जो	7	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही	उस	सिवा	चाहे	पस जो

لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ ٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۘ ٩

9	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी नमाज़ें	पर-की	वह	और जो	8	देख भाल करने वाले	और अपने अ़हद	अपनी अमानतें

وقف لازم

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ ١٠ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا

उस में	वह	जन्नत	वारिस होंगे	जो	10	वारिस (जमा)	वह	यही लोग

خٰلِدُوْنَ ١١ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ ١٢

12	मिट्टी से	खुलासा (चुनी हुई)	से	इन्सान	और अलबत्ता हम ने पैदा किया	11	हमेशा रहेंगे

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۪ ١٣ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

जमा हुआ खून	नुत्फ़ा	हम ने बनाया	फिर	13	मज़बूत जगह	में	नुत्फ़ा	हम ने उसे ठहराया	फिर

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

हड्डियां	फिर हम ने पहनाया	हड्डियां	बोटी	फिर हम ने बनाया	बोटी	जमा हुआ खून	पस हम ने बनाया

لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ؕ ١٤

14	पैदा करने वाला	बेहतरीन	अल्लाह	पस बरकत वाला	नई	सूरत	हम ने उसे उठाया	फिर	गोश्त

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ ١٥ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ١٦

16	उठाए जाओगे	रोज़े क़ियामत	बेशक तुम	फिर	15	ज़रूर मरने वाले	उस के बाद	बेशक तुम	फिर

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ١٧

17	ग़ाफ़िल	ख़ल्क़ (पैदाइश)	से	और हम नहीं	रास्ते	सात	तुम्हारे ऊपर	और तहक़ीक़ हम ने बनाए

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

(दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन। (1)
जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं। (2)
और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3)
और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5)
मगर अपनी बीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएं हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6)
पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7)
और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद का पास रखते हैं। (8)
और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (9)
यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10)
(जन्नत) फ़िरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11)
और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12)
फिर हम ने उसे मज़बूत जगह में नुत्फ़ा ठहराया। (13)
फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुआ खून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए खून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियां बनाईं, फिर हम ने हड्डियों को गोश्त पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14)
फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15)
फिर बेशक तुम रोज़े क़ियामत उठाए जाओगे। (16)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से ग़ाफ़िल नहीं। (17)

और हम ने आस्मानों से पानी
उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर
उस को हम ने ज़मीन में ठहराया,
और बेशक हम उस को ले जाने
पर (भी) क़ादिर हैं। **(18)**
पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे
लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात,
तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं,
और उस से तुम खाते हो। **(19)**
और दरख़्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से
निकलता है, वह उगता है तेल और सालन
लिए हुए खाने वालों के लिए। **(20)**
और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में
मुक़ामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से
पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में
है, और तुम्हारे लिए उन में (और)
बहुत से फ़ाइदे हैं, और उन में से
(बाज़ को) तुम खाते हो। **(21)**
और उन पर और कश्ती पर सवार
किए जाते हो। **(22)**
और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को
उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस
उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह
की इबादत करो, उस के सिवा
तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो
क्या तुम डरते नहीं? **(23)**
तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने
कुफ़्र किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं
मगर तुम जैसा एक बशर है, वह
चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे,
और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता
फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप
दादा से यह (कभी) नहीं सुना। **(24)**
वह (कुछ भी) नहीं मगर एक
आदमी है जिस को जुनून हो गया
है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक
इन्तिज़ार करो। **(25)**
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद
फ़रमा उस पर कि उन्हों ने मुझे
झुटलाया। **(26)**
तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़
कि हमारी आँखों के सामने हमारे
हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब
हमारा हुक्म आए और तन्नूर उबलने
लगे, तो उस (कश्ती) में हर क़िस्म
के जोड़ों में से दो (एक नर एक
मादा) रख लो और अपने घर वाले
(भी सवार कर लो) उस के सिवा
(जिस के ग़र्क़ होने पर) हुक्म हो
चुका है उन में से, और मुझ से उन
के बारे में बात न करना जिन्हों ने
ज़ुल्म किया है, बेशक वह ग़र्क़ किए
जाने वाले हैं। **(27)**

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى

पर	और बेशक हम	ज़मीन में	हम ने उसे ठहराया	अन्दाज़े के साथ	पानी	आस्मानों से	और हम ने उतारा

ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

खजूर (जमा)	से-के	बाग़ात	उस से	तुम्हारे लिए	पस हम ने पैदा किए	18	अलबत्ता क़ादिर	उस का	ले जाना

وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً وقف لازم

और दरख़्त	19	तुम खाते हो	और उस से	बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	और अंगूर (जमा)

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	खाने वालों के लिए	और सालन	तेल के साथ-लिए	उगता है	तूरे सीना	से	निकलता है

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا

उन में	और तुम्हारे लिए	उन के पेटों में	उस से जो	हम तुम्हें पिलाते हैं	इब्रत-ग़ौर का मुक़ाम	चौपायों में	तुम्हारे लिए	और बेशक

مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٢٢ / ١

22	सवार किए जाते हो	और कश्ती पर	और उन पर	21	तुम खाते हो	और उन से	बहुत	फ़ाइदे

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

तुम्हारे लिए नहीं	तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	से-के	जिन्हों ने कुफ़्र किया	सरदार	तो वह बोले	23	क्या तो तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद

مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	तुम पर	कि बड़ा बन बैठे वह	वह चाहता है	तुम जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۚ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ

नहीं वह-यह	24	पहले	अपने बाप दादा से	यह	नहीं सुना हम ने	फ़रिश्ते	तो उतारता

اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ

मेरी मदद फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	25	एक मुद्दत तक	उस का	सो तुम इन्तिज़ार करो	जुनून	जिस को	एक आदमी	मगर

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

हमारी आँखों के सामने	कश्ती	तुम बनाओ	कि	उस की तरफ़	तो हम ने वहि भेजी	26	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

हर (क़िस्म) से	उस में	तो चला ले (रख ले)	और तन्नूर उबलने लगे	हमारा हुक्म	आजाए	फिर जब	और हमारा हुक्म

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

हुक्म	उस पर	पहले हो चुका	जो-जिस	सिवा	और अपने घर वाले	दो	जोड़ा

مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	ग़र्क़ किए जाने वाले	बेशक वह	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया	में-बारे में	और न करना मुझ से बात	उन में से

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	तो कहना	कश्ती	पर	तेरे साथ (साथी)	और जो	तुम	बैठ जाओ	फिर जब

الَّذِىْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۸﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا

मुबारक	मन्ज़िल	मुझे उतार	ऐ मेरे रब	और कहो	28	ज़ालिम (जमा)	क़ौम	से	हमें नजात दी	वह जिस ने

وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿۳۰﴾

30	आज़माइश करने वाले	और बेशक हम हैं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	29	उतारने वाले	बेहतरीन	और तू

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا

रसूल (जमा)	उन के दरमियान	फिर भेजे हम ने	31	दूसरा	गिरोह	उन के बाद	हम ने पैदा किया	फिर

ع ١٠ ٢ ٢ مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَقَالَ

और कहा	32	क्या फिर तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं तुम्हारे लिए	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उन में से

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

और हम ने उन्हें ऐश दिया	आख़िरत	हाज़िरी को	और झुटलाया	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	उस की क़ौम के	सरदारों

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ

उस से	तुम खाते हो	उस से जो	वह खाता है	तुम्हीं जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	में

وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا

उस वक़्त	बेशक तुम	अपने जैसा	एक बशर	तुम ने इताअ़त की	और अगर	33	तुम पीते हो	उस से जो	और पीता है

لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ

तो तुम	और हड्डियां	मिट्टी	और तुम हो गए	मर गए	जब	कि तुम	क्या वह वादा देता है तुम्हें	34	घाटे में रहोगे

مُّخْرَجُوْنَ ﴿۳۵﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا

मगर	नहीं	36	तुम्हें वादा दिया जाता है	वह जो	बईद है	बईद है	35	निकाले जाओगे

حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنْ هُوَ

वह	नहीं	37	फिर उठाए जाने वाले	हम	और नहीं	और हम जीते हैं	और हम मरते हैं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी

اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ

उस ने अर्ज़ किया	38	ईमान लाने वाले	उस पर	हम	और नहीं	झूट	अल्लाह पर	उस ने झूट बान्धा	एक आदमी	मगर

رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۳۹﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

40	पछताने वाले	वह ज़रूर रह जाएंगे	बहुत जल्द	उस ने फ़रमाया	39	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर जो	मेरी मदद फ़रमा	मेरे रब

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ

क़ौम के लिए	दूरी (मार)	ख़स ओ ख़ाशाक	सो हम ने उन्हें कर दिया	(वादाए) हक़ के मुताबिक़	चिंघाड़	पस उन्हें आ पकड़ा

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۴۲﴾

42	दूसरी - और उम्मतें	उन के बाद	हम ने पैदा की	फिर	41	ज़ालिम (जमा)

फिर तुम जब बैठ जाओ कश्ती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की क़ौम से। (28)
और कहो ऐ मेरे रब! मुझे मुबारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29)
बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आज़माइश करने वाले हैं। (30)
फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31)
फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32)
और उस की क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़री को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33)
और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअ़त की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34)
क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हडिड्यां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35)
बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36)
(और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले। (37)
वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले। (38)
उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। (39)
उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40)
पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ ख़ाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की क़ौम के लिए। (41)
फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

कोई उम्मत अपनी (मुक़र्रर) मीआ़द से न सबक़त करती है और न पीछे रह जाती है। (43)
फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लाए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफ़्साने (भूली बिसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)
फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)
फ़िरऔ़न और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)
पस उन्हों ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएं? और उन की क़ौम (के लोग) हमारी ख़िद्मत करने वाले। (47)
पस उन्हों ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)
और हम ने मरयम (अ) के बेटे (ईसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुक़ाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)
ऐ रसूलो! तुम पाक चीज़ों में से खाओ और अ़मल करो नेक, बेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)
और बेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)
फिर उन्हों ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है खुश हैं। (53)
पस उन्हें उन की ग़फ़्लत में एक मुद्दते मुक़र्ररा तक छोड़ दो। (54)
क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)
हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)
बेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57)
और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	फिर	43	पीछे रह जाती है	और न	अपनी मीआ़द	कोई उम्मत	सबक़त करती है	नहीं

رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ

उन में से एक	तो हम पीछे लाए	उन्हों ने उसे झुटलाया	उस का रसूल	किसी उम्मत में	आया	जब भी	पै दर पै	रसूल (जमा)

بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

44	जो ईमान नहीं लाए	लोगों के लिए	सो दूरी (मार)	अफ़साने	और उन्हें बना दिया हम ने	दूसरे

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾

45	खुले	और दलाइल	साथ (हमारी) अपनी निशानियां	हारून (अ)	और उन का भाई	मूसा (अ)	हम ने भेजा	फिर

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْۤا

पस उन्हों ने कहा	46	सरकश	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	और उस के सरदार	फ़िरऔ़न	तरफ़

اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا

पस उन्हों ने झुटलाया दोनो को	47	बन्दगी (ख़िदमत) करने वाले	हमारी	और उनकी क़ौम	अपने जैसे	दो (2) आदमियों पर	क्या हम ईमान ले आएं

فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ

ताकि वह लोग	किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	48	हलाक होने वाले	से	तो वह हो गए

يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى

तरफ़ (पर)	और हम ने उन्हें ठिकाना दिया	एक निशानी	और उस की माँ	मरयम का बेटा (ईसा अ)	और हम ने बनाया	49	हिदायत पा लें

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ ع ١٨ ٣ ٣

पाकीज़ा चीज़ें	से	खाओ	रसूल (जमा)	ऐ	50	और बहता हुआ पानी	ठहरने का मुक़ाम	एक बुलन्द टीला

وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह	और बेशक	51	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	बेशक मैं	नेक	और अ़मल करो

اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ

टुकड़े टुकड़े	आपस में	अपना काम	फिर उन्हों ने काट लिया	52	पस मुझ से डरो	तुम्हारा रब	और मैं	एक उम्मत, उम्मते वाहिदा

كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِىْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى

तक	उन की ग़फ़्लत में	पस छोड़ दे उन्हें	53	खुश	उन के पास	उस पर जो	हर गिरोह

حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ

हम जल्दी कर रहे हैं	55	और औलाद	माल	से	उस के साथ	हम मदद कर रहे हैं उन की	कि जो कुछ	क्या वह गुमान करते हैं	54	एक मुद्दत मुक़र्रर

لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ

डर	से	वह	जो लोग	बेशक	56	वह शऊर (समझ) नहीं रखते	बल्कि	भलाई में	उन के लिए

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	ईमान रखते हैं	अपना रब	आयतों पर	वह	और जो लोग	57	डरने वाले (सहमे हुए)	अपना रब

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا

जो वह देते हैं	देते हैं	और जो लोग	59	शरीक नहीं करते	अपने रब के साथ	वह	और जो लोग

وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ

जल्दी करते हैं	यही लोग	60	लौटने वाले	अपना रब	तरफ़	कि वह	डरते हैं	और उन के दिल

فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

उस की ताक़त के मुताबिक़	मगर	किसी को	और हम तक्लीफ़ नहीं देते	61	सबक़त ले जाने वाले हैं	उन की तरफ़	और वह	भलाइयों में

وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	बल्कि	62	ज़ुल्म न किए जाएंगे (ज़ुल्म न होगा)	और वह (उन)	ठीक ठीक	वह बतलाता है	एक किताब (रजिस्टर)	और हमारे पास

فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	करते रहते हैं	वह उन्हें	उस	अ़लावा	आमाल (जमा)	और उन के	उस से	ग़फ़्लत

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْـَٔرُوا

तुम फ़र्याद न करो	64	फ़र्याद करने लगे	उस वक़्त वह	अ़ज़ाब में	उन के ख़ुशहाल लोग	हम ने पकड़ा	यहां तक कि जब

الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ

तो तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती थीं	मेरी आयतें	अलबत्ता तुम्हें	65	तुम मदद न दिए जाओगे	हम से	बेशक तुम	आज

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	बेहूदा बकवास करते हुए	अफ़्साना गोई करते हुए	उस के साथ	तकब्बुर करते हुए	66	फिर जाते	अपनी एड़ियों के बल

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	पहले	उन के बाप दादा	नहीं आया	जो	उन के पास आया	या	कलाम	पस क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ

दीवानगी	उस को	वह कहते हैं	या	69	मुन्किर हैं	उस के	तो वह	अपने रसूल	उन्हों ने नहीं पहचाना	या

بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

उन की ख़्वाहिशात	हक़ (अल्लाह)	पैरवी करता	और अगर	70	नफ़्रत रखने वाले	हक़ से	और उन में से अक्सर	साथ हक़ बात	वह आया उन के पास	बल्कि

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ

फिर वह	उन की नसीहत	हम लाए हैं उन के पास	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	अलबत्ता दरहम बरहम हो जाता

عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ

बेहतर	तुम्हारा रब	तो अजर	अजर	क्या तुम उन से मांगते हो	71	रूगर्दानी करने वाले हैं	अपनी नसीहत से

الربع

وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

73	सीधा रास्ता	तरफ़	उन्हें बुलाते हो	और बेशक तुम	72	बेहतरीन रोज़ी दहिन्दा है	और वह

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	अलबत्ता हटे हुए हैं	राहे हक़	से	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और बेशक

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59)
और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (60)
यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हैं। (61)
और हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर ज़ुल्म न होगा। (62)
बल्कि उन के दिल इस (हक़ीक़त) से ग़फ़्लत में हैं और उन के (बुरे) आमाल उस के अ़लावा जो वह करते रहते हैं। (63)
यहां तक कि जब हम ने उन के ख़ुशहाल लोगों को पकड़ा अ़ज़ाब में, तो उस वक़्त वह फ़र्याद करने लगे। (64)
आज फ़र्याद न करो तुम, हमारी (तरफ़) से मदद न दिए जाओगे (मुतलक़ मदद न पाओगे)। (65)
अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66)
तकब्बुर करते हुए, उस के साथ अफ़्साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67)
पस क्या उन्हों ने (इस) कलामे (हक़) पर ग़ौर नहीं क्या? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68)
या उन्हों ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69)
या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक़ बात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक़ बात से नफ़्रत रखने वाले हैं। (70)
और अगर अल्लाह तआ़ला उन की ख़्वाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम बरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की बात से) रूगर्दानी कर रहे हैं। (71)
क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72)
और बेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ़। (73)
और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, बेशक वह राहे हक़ से हटे हुए हैं। (74)

और अगर हम उन पर रहम करें, और जो उन पर तक्लीफ़ है वह दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी पर अड़े रहें, भटकते फिरें। (75)

और अलबत्ता हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्हों ने आजिज़ी की, और न वह गिड़गिड़ाए। (76)

यहां तक कि जब हम ने उन पर सख़्त अ़ज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77)

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (79)

और वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, और उसी के लिए है रात और दिन का आना जाना, पस क्या तुम समझते नहीं? (80)

बल्कि उन्हों ने (वही) कहा जैसे (उन से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81)

वह बोले, क्या जब हम मर गए, और हम मिट्टी और हडि्डयां हो गए, क्या हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82)

अलबत्ता हम से वादा किया गया और इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा से यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (83)

आप (स) फ़रमां दें किस के लिए हैं ज़मीन और जो कुछ उस में है? अगर तुम जानते हो। (84)

वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए हैं, आप (स) फ़रमां दें पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (85)

आप (स) फ़रमां दें कौन है सात आस्मानों का रब और अ़र्शे अ़ज़ीम का रब? (86)

वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह का है, आप (स) फ़रमां दें पस क्या तुम नहीं डरते? (87)

आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ में है हर चीज़ का इख़्तियार? और वह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो। (88)

वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह के लिए, आप (स) फ़रमां दें फिर तुम कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِیْ طُغْیَانِهِمْ

अपनी सरकशी	में - पर	अड़े रहें	जो तक्लीफ़	जो उन पर	और हम दूर कर दें	हम उन पर रहम करें	और अगर

یَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	फिर उन्हों ने आजिज़ी न की	अ़ज़ाब में	और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा	75	भटकते रहें

وَمَا یَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِیْدٍ

सख़्त	अ़ज़ाब वाला	दरवाज़ा	उन पर	हम ने खोल दिया	जब	यहां तक कि	76	और वह न गिड़गिड़ाए

اِذَا هُمْ فِیْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ ع ٤/٧

और आँखें	कान	बनाए तुम्हारे लिए	जिस ने	और वह	77	मायूस हुए	उस में	तो उस वक़्त वह

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ

फैलाया तुम्हें	वही जिस ने	और वह	78	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत ही कम	और दिल (जमा)

فِی الْاَرْضِ وَاِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	वही जो	और वह	79	तुम जमा हो कर जाओगे	और उस की तरफ़	ज़मीन में

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا

बल्कि उन्हों ने कहा	80	क्या पस तुम समझते नहीं?	और दिन	रात	आना जाना	और उसी के लिए

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

और हम हो गए मिट्टी	हम मर गए	क्या जब	वह बोले	81	पहलों ने	जो कहा	जैसे

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا

यह	और हमारे बाप दादा	हम	अलबत्ता हम से वादा किया गया	82	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां

مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ

ज़मीन	किस के लिए	फ़रमा दें	83	पहले लोग	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह नहीं	इस से क़ब्ल

وَمَنْ فِیْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَیَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए	84	तुम जानते हो	अगर	उस में	और जो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ

और रब	सात	आस्मान (जमा)	रब	कौन	फ़रमा दें	85	क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते?

الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ﴿٨٦﴾ سَیَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ

कौन	फ़रमा दें	87	क्या पस तुम नहीं डरते?	फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का	86	अ़र्शे अ़ज़ीम

بِیَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ یُجِیْرُ وَلَا یُجَارُ عَلَیْهِ اِنْ

अगर	उस के ख़िलाफ़	और पनाह नहीं दिया जाता	पनाह देता है	और वह	हर चीज़	बादशाहत (इख़्तियार)	उस के हाथ में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَیَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	तुम जादू में फँस गए हो	फिर कहां से	फ़रमा दें	जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए	88	तुम जानते हो

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ

नहीं अपनाया अल्लाह	90	अलबत्ता झूटे हैं	और बेशक वह	सच्ची बात	हम लाए हैं उन के पास	बल्कि

مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

जो उस ने पैदा किया	माबूद	हर	ले जाता	उस सूरत में	कोई और माबूद	उस के साथ	और नहीं है	किसी को बेटा

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

91	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह	दूसरे पर	उन का एक	और चढ़ाई करता

ع ١٥ ٥

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ

ऐ मेरे रब	फ़रमा दें	92	वह शरीक समझते हैं	उस से जो	पस बरतर	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा

اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي

में	पस तू मुझे न करना	ऐ मेरे रब	93	जो उन से वादा किया जाता है	अगर तू मुझे दिखा दे

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	अलबत्ता क़ादिर हैं	जो हम वादा कर रहे हैं उन से	कि हम तुम्हें दिखा दें	पर	और बेशक हम	94	ज़ालिम लोग

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	वह बयान करते हैं	उस को जो	ख़ूब जानते हैं	हम	बुराई	सब से अच्छी भलाई	वह	उस से जो	दफ़्अ करो

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ

तेरी	और मैं पनाह चाहता हूँ	97	शैतान (जमा)	वस्वसे से	से	तेरी	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	और आप (स) फ़रमा दें

رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहता है	मौत	उन में किसी को	जब आए	यहां तक कि	98	कि वह आएं मेरे पास	ऐ मेरे रब

ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ

वह	एक बात	यह तो	हरगिज़ नहीं	मैं छोड़ आया हूँ	उस में	कोई अच्छा काम	काम कर लूँ	शायद मैं	99	मुझे वापस भेज दे

قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ

फूंका जाएगा	फिर जब	100	वह उठाए जाएंगे	उस दिन तक	एक बरज़ख़	और उन के आगे	कह रहा है

فِي الصُّوْرِ فَلَاۤ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	और न वह एक दूसरे को पूछेंगे	उस दिन	उन के दरमियान	तो न रिश्ते	सूर में

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

हल्का हुआ	और जो	102	फ़लाह पाने वाले	वह	पस वह लोग	उस का तोल (पल्ला)	भारी हुई	पस-जो-जिस

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ

जहन्नम में	अपनी जानें	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	तो वही लोग	उस का तोल (पल्ला)

خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तेवरी चढ़ाए हुए	उस में	और वह	आग	उन के चेहरे	झुलस देगी	103	हमेशा रहेंगे

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची
बात, और बेशक वह झूटे हैं। (90)
अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा
नहीं बनाया, और नहीं है उस के
साथ कोई और माबूद, उस सूरत
में हर माबूद ले जाता जो उस ने
पैदा किया होता, और उन में से
एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक
है अल्लाह उन (बातों) से जो वह
बयान करते हैं। (91)
वह जानने वाला है पोशीदा और
आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस
से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92)
आप (स) सफ़रमां दें ऐ मेरे रब!
जो उन से वादा किया जाता है
अगर तू मुझे दिखादे। (93)
ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम
लोगों में (शामील) न करना। (94)
और बेशक हम उस पर क़ादिर हैं
कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं
तुम्हें दिखा दें। (95)
सब से अच्छी भलाई से बुराई को
दफ़्अ करो, हम ख़ूब जानते हैं जो
वह बयान करते हैं। (96)
और आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे
रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ
शैतानों के वस्वसों से। (97)
और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता
हूँ कि वह मेरे पास आएं। (98)
(वह ग़फ़्लत में रहते हैं) यहां तक
कि जब उन में किसी को मौत आए
तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर
दुनिया में) वापस भेज दे। (99)
शायद मैं उस में कोई अच्छा काम
कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज़
नहीं, यह तो एक बात है जो वह
कह रहा है, और उन के आगे एक
बरज़ख़ (आड़) है उस दिन (क़ियामत)
तक कि वह उठाए जाएं। (100)
फिर जब सूर फूंका जाएगा तो न रिश्ते
रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और
न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101)
पस जिस (के आमाल) का पल्ला
भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह
(नजात) पाने वाले होंगे। (102)
और जिस (के आमाल) का पल्ला
हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्हों ने
अपनी जानों को ख़सारे में डाला, वह
जहन्नम में हमेशा रहेंगे। (103)
आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह
उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

اَلَمۡ تَكُنۡ اٰيٰتِىۡ تُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ فَكُنۡتُمۡ بِهَا تُكَذِّبُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾ قَالُوۡا

वह कहेंगे	105	तुम झुटलाते थे	उन्हें	पस तुम थे	तुम पर	पढ़ी जातीं	मेरी आयतें	क्या न थी

رَبَّنَا غَلَبَتۡ عَلَيۡنَا شِقۡوَتُنَا وَكُنَّا قَوۡمًا ضَآلِّيۡنَ ﴿۱۰۶﴾ رَبَّنَاۤ

ऐ हमारे रब	106	रास्ते से भटके हुए	लोग	और हम थे	हमारी बद बख़्ती	हम पर	ग़ालिब आ गई	ऐ हमारे रब

اَخۡرِجۡنَا مِنۡهَا فَاِنۡ عُدۡنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾ قَالَ اخۡسَـُٔوۡا فِيۡهَا

उस में	फिटकारे हुए पड़े रहो	फ़रमाएगा	107	ज़ालिम (जमा)	तो बेशक हम	दोबारा किया	फिर अगर	इस से	हमें निकाल ले

وَلَا تُكَلِّمُوۡنِ ﴿۱۰۸﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيۡقٌ مِّنۡ عِبَادِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ

वह कहते थे	हमारे बन्दों का	एक गिरोह	था	बेशक वह	108	और कलाम न करो मुझ से

رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۰۹﴾

109	रहम करने वाले	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्शदे	हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब

فَاتَّخَذۡتُمُوۡهُمۡ سِخۡرِيًّا حَتّٰۤى اَنۡسَوۡكُمۡ ذِكۡرِىۡ وَكُنۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ

उन से	और तुम थे	मेरी याद	उन्हों ने भुला दिया तुम्हें	यहां तक कि	मज़ाक़	पस तुम ने उन्हें बना लिया

تَضۡحَكُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنِّىۡ جَزَيۡتُهُمُ الۡيَوۡمَ بِمَا صَبَرُوۡۤا ۙ اَنَّهُمۡ هُمُ

वही	बेशक वह	उन्हों ने सब्र किया	उस के बदले	आज	मैं ने जज़ा दी उन्हें	बेशक मैं	110	हँसी किया करते

الۡفَآٮِٕزُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ كَمۡ لَبِثۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ عَدَدَ سِنِيۡنَ ﴿۱۱۲﴾

112	साल (जमा)	शुमार (हिसाब)	ज़मीन (दुनिया) में	कितनी मुद्दत रहे तुम	फ़रमाएगा	111	मुराद को पहुँचने वाले

قَالُوۡا لَبِثۡنَا يَوۡمًا اَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٍ فَسۡـَٔلِ الۡعَآدِّيۡنَ ﴿۱۱۳﴾

113	शुमार करने वाले	पस पूछ लें	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	वह कहेंगे

قٰلَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا لَّوۡ اَنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۱۴﴾

114	जानते होते	तुम	काश	थोड़ा (अर्सा)	मगर (सिर्फ़)	नहीं तुम रहे	फ़रमाएगा

اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّاَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۱۵﴾

115	नहीं लौटाए जाओगे	हमारी तरफ़	और यह कि तुम	(अब्स) बेकार	हम ने तुम्हें पैदा किया	कि	क्या तुम ख़याल करते हो

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ

मालिक	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हक़ीक़ी	बादशाह	अल्लाह	पस बुलन्द तर

الۡعَرۡشِ الۡكَرِيۡمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرۡهَانَ

नहीं कोई सनद	कोई और माबूद	अल्लाह के साथ	और जो पुकारे	116	इज़्ज़त वाला अर्श

لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾

117	काफ़िर (जमा)	फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे	बेशक वह	उस के रब के पास	उसका हिसाब	सो, तहक़ीक़	उस के लिए	उस के पास

وَقُلۡ رَّبِّ اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾ ع ٦

118	बेहतरीन रहम करने वाला है	और तू	और रहम फ़रमा	बख़्शदे	ऐ मेरे रब	और आप (स) कहें

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105)
वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106)
ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (107)
वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108)
बेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (109)
पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक़, यहां तक कि उन्हों ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110)
बेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्हों ने सब्र किया, बेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111)
(अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुद्दत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112)
वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113)
फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हक़ीक़त दुनिया में) जानते होते। (114)
क्या तुम ख़याल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115)
पस बुलन्द तर है अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अर्श का मालिक। (116)
और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, बेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117)
और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (118)

آيَاتُهَا ٦٤ ❀ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9	(24) सूरतुन नूर रोशनी	आयात 64

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

ताकि तुम	वाज़ेह आयतें	उस में	और हम ने नाज़िल की	और लाज़िम किया उस को	जो हम ने नाज़िल की	एक सूरत

تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

उन दोनो में से	हर एक को	तो तुम कोड़े मारो	और बदकार मर्द	बदकार औरत	1	तुम याद रखो

مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह का हुक्म	में	मेह्रबानी (तरस)	उन पर	और न पकड़े (न खाओ)	कोड़े	सौ (100)

كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ

एक जमाअत	उन की सज़ा	और चाहिए कि मौजूद हो	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫

या मुश्रिका	बदकार औरत	सिवा	निकाह नहीं करता	बदकार मर्द	2	मोमिनीन	से - कि

وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى

पर	यह	और हराम किया गया	या शिर्क करने वाला मर्द	सिवा बदकार मर्द	निकाह नहीं करती	और बदकार (औरत)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا

फिर वह न लाएं	पाक दामन औरतें	तुहमत लगाएं	और जो लोग	3	मोमिनीन

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

उन की	और तुम न कुबूल करो	कोड़े	अस्सी (80)	तो तुम उन्हें कोड़े मारो	गवाह	चार (4)

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

जिन लोगो ने तौबा कर ली	मगर	4	नाफ़रमान	वह	यही लोग	कभी	गवाही

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥ وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	5	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और उन्हों ने इस्लाह कर ली	उस के बाद

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ

उनकी जानें (खुद)	सिवा	गवाह	उन के	और न हों	अपनी बीवियां	तुहमत लगाएं

فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦

6	सच बोलने वाले	कि वह बेशक से	अल्लाह की क़सम	गवाहियाँ	चार (4)	उन में से एक	पस गवाही

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧

7	झूट बोलने वाले	से	अगर है वह	उस पर	अल्लाह की लानत	यह कि	और पाँचवीं

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फ़र्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1) बदकार औ़रत और बदकार मर्द दोनों में से हर एक को सो (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सज़ा (के वक़्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअ़त। (2) बदकार मर्द बदकार औ़रत या मुश्रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और बदकार औ़रत (भी) बदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनों पर हराम किया गया है। (3) और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औ़रतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कुबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफ़रमान लोग हैं। (4) मगर जिन लोगों न उस के बाद तौबा कर ली और उन्हों ने इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेह्रबान है। (5) और जो लोग अपनी बीवियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से हैं (सच्चा है)। (6) और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

और उस औरत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की क़सम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलबत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8) और पाँचवी बार यह कि उस औरत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सच्चों में से है (सच्चा है)। (9) और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, हिक्मत वाला है। (10) बेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअ़त हैं, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (11) जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्हों ने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12) वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे हैं। (13) और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुग़ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अ़ज़ाब। (14) जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15) जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

कि वह	अल्लाह की क़सम	चार बार गवाही	गवाही दे	अगर	सज़ा	उस औरत से	और टल जाएगी

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَاۤ اِنْ كَانَ

वह है	अगर	उस पर	अल्लाह का ग़ज़ब	यह कि	और पाँचवीं बार	8	झूटे लोग	अलबत्ता- से

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	9	सच्चे लोग	से

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ ع

तुम में से	एक जमाअ़त	बड़ा बुहतान लाए	बेशक जो लोग	10	हिक्मत वाला	तौबा कुबूल करने वाला

لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ

जो उस ने कमाया (किया)	उन में से	हर एक आदमी के लिए	बेहतर है तुम्हारे लिए	बल्कि वह	अपने लिए	बुरा	तुम उसे गुमान न करो

مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِىْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾ لَوْلَاۤ

क्यों न	11	बड़ा	अ़ज़ाब	उस के लिए	उन में से	बड़ा उस का	उठाया	और वह जिस	गुनाह से

اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	नेक	अपनों के बारे में	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	गुमान किया	तुम ने वह सुना	जब

هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا

वह न लाए	पस जब	गवाह	चार (4)	उस पर	वह लाए	क्यों न	12	नुमायान	बुहतान	यह

بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	13	वही झूटे	अल्लाह के नज़्दीक	तो वही लोग	गवाह

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ

उस में	तुम पड़े	उस में जो	ज़रूर तुम पर पड़ता	और आख़िरत	दुनिया में	और उस की रहमत	तुम पर

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ

अपने मुँह से	और तुम कहते थे	अपनी ज़बानों पर	जब तुम लाते थे उसे	14	बड़ा	अ़ज़ाब

مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

15	बहुत बड़ी (बात)	अल्लाह के नज़्दीक	हालांकि वह	हलकी बात	और तुम उसे गुमान करते थे	कोई इल्म	उस का	तुम्हें	जो नहीं

وَلَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ

तू पाक है	ऐसी बात	कि हम कहें	हमारे लिए	नहीं है	तुम ने कहा	तुम ने वह सुना	जब	और क्यों न

هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا

कभी भी	ऐसा काम	तुम फिर करो	कि	तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह	16	बड़ा	बुहतान	यह

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

18	हिक्मत वाला	बड़ा जानने वाला	और अल्लाह	आयतें (अहकाम)	तुम्हारे लिए	और बयान करता है अल्लाह	17	ईमान वाले	अगर तुम हो

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ

उन के लिए	ईमान लाए (मोमिन)	में जो	बेहयाई	फैले	कि	पसंद करते हैं	जो लोग	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

19	तुम नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और आख़िरत में	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब

ع ٢ / ٨ النصف

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

20	निहायत मेह्रबान	शफ़क़त करने वाला	और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ

क़दम (जमा)	पैरवी करता है	और जो	शैतान	क़दम (जमा)	तुम न पैरवी करो	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	और बुरी बात	बेहयाई का	हुक्म देता है	तो बेशक वह	शैतान

وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ

जिसे वह चाहता है	पाक करता है	और लेकिन अल्लाह	कभी भी	कोई आदमी	तुम से	न पाक होता	और उस की रहमत

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

और वस्अ़त वाले	तुम में से	फ़ज़ीलत वाले	और क़सम न खाएं	21	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह

اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ښ

अल्लाह की राह में	और हिज्रत करने वाले	और मिस्कीनों	क़राबत दार	कि (न) दें

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۭ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	अल्लाह बख़्शदे	कि	क्या तुम नहीं चाहते	और वह दरगुज़र करें	और चाहिए कि वह माफ़ कर दें

رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا

लानत है उन पर	मोमिन औरतें	भोली भाली अन्जान	पाक दामन (जमा)	जो लोग तुहमत लगाते हैं	बेशक	22	निहायत मेह्रबान

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ ۙ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ

उन पर (ख़िलाफ़)	गवाही देंगे	दिन	23	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	और आख़िरत	दुनिया में

اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَىِٕذٍ يُّوَفِّيْهِمُ

पूरा देगा उन्हें	उस दिन	24	वह करते थे	उस की जो	और उन के पैर	और उन के हाथ	उन की ज़बानें

اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ

नापाक (गन्दी) औरतें	25	ज़ाहिर करने वाला	बरहक़	वही	कि अल्लाह	और वह जान लेंगे	सच (ठीक ठीक)	उन का बदला	अल्लाह

لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ

और पाक मर्द (जमा)	पाक मर्दों के लिए	और पाक औरतें	गन्दी औरतों के लिए	और गन्दे मर्द	गन्दे मर्दों के लिए

ع ٣ / ٩

لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰۗىِٕكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

26	इ़ज़्ज़त की	और रोज़ी	मग़फ़िरत	उन के लिए	वह कहते हैं	उस से जो	पाक दामन हैं	यह लोग	पाक औरतों के लिए

बेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनों में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते। (19) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़क़त करने वाला, निहायत मेह्रबान है। (20) ऐ मोमिनो! तुम शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक्म देता है बेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21) और क़सम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वस्अ़त वाले कि वह क़राबतदारों को, मिस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिज्रत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (22) बेशक जो लोग पाक दामन, अन्जान मोमिन औ़रतों पर तुहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (23) जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24) उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25) गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औ़रतों के लिए हैं, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औ़रतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मग़फ़िरत और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ मोमिनों! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाख़िल न हो, यहां तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27) फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाख़िल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28) तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाख़िल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (ख़ूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29) आप (स) फ़रमां दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो वह करते हैं। (30) और आप (स) फ़रमां दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने ख़ावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने ख़ुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह ख़िदमतगार मर्द जो (औरतों से) ग़रज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाक़िफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊँ (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वालो! ताकि तुम दो जहान की कामयाबी पाओ। (31)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا

ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	तुम न दाख़िल हो	घर (जमा)	अपने घरों के सिवा	यहां तक कि	तुम इजाज़त ले लो

وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ

और तुम सलाम कर लो	पर- को	उन के (रहने) वाले	यह	बेहतर है	तुम्हारे लिए	ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	27	फिर अगर

لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

तुम न पाओ	उस में	किसी को	तो तुम न दाख़िल हो उस में	यहां तक कि	इजाज़त दी जाए	तुम्हें	और अगर	तुम्हें कहा जाए

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ

तुम लौट जाओ	तो तुम लौट जाया करो	यही	ज़ियादा पाकीज़ा	तुम्हारे लिए	और अल्लाह	वह जो	तुम करते हो	जानने वाला	28	नहीं

عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

तुम पर	कोई गुनाह	अगर	तुम दाख़िल हो	उन घरों में	ग़ैर आबाद	जिन में	कोई चीज़	तुम्हारी	और अल्लाह	जानता है

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا

जो तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	तुम छुपाते हो	29	आप फ़रमा दें	मोमिन मर्दों को	वह नीची रखें	से	अपनी निगाहें	और वह हिफ़ाज़त करें

فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ

अपनी शर्मगाहें	यह	ज़ियादा सुथरा	उन के लिए	बेशक अल्लाह	बाख़बर है	उस से जो	वह करते हैं	30	और फ़रमा दें

لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ

मोमिन औरतों को	वह नीची रखें	से	अपनी निगाहें	और वह हिफ़ाज़त करें	अपनी शर्मगाहें	और वह ज़ाहिर न करें

زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰي جُيُوْبِهِنَّ

अपनी ज़ीनत	मगर	जो	उस में से ज़ाहिर हुआ	और डाले रहें	अपनी ओढ़नियां	पर	अपने सीने (गिरेबानों)

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اٰبَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

और वह ज़ाहिर न करें	अपनी ज़ीनत	सिवाए	अपने ख़ावन्दों पर	या	बाप (जमा)	या	अपने शौहरों के बाप (ख़ुसर)	या

اَبْنَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اَبْنَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ

अपने बेटे	या	अपने शौहरों के बेटे	या	अपने भाई	या	अपने भाई के बेटे (भतीजे)	या

بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَاۗىِٕهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ

अपनी बहनों के बेटे (भान्जे)	या अपनी (मुसलमान) औरतें	या जिन के मालिक हुए	उन के दाएं हाथ (कनीज़ें)	या ख़िदमतगार मर्द

غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰي

न ग़रज़ रखने वाले	से	मर्द	या लड़के	वह जो कि	वह वाक़िफ़ नहीं हुए	पर

عَوْرٰتِ النِّسَاۗءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ

औरतों के पर्दे	और वह न मारें	अपने पाऊँ	कि वह जान (पहचान) लिया जाए	जो छुपाए हुए हैं	से

زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

अपनी ज़ीनत	और तुम तौबा करो	अल्लाह की तरफ़	सब	ऐ ईमान वालो	ताकि तुम	फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाओ	31

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ

और अपनी कनीज़ें	अपने गुलाम	से	और नेक	अपने में से (अपनी)	बेवा औरतें	और तुम निकाह करो

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾

32	इल्म वाला	वस्अत वाला	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर देगा	तंग दस्त (जमा)	अगर वह हों

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर दे	यहां तक कि	निकाह	नहीं पाते	वह लोग जो	और चाहिए कि बचे रहें

وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ

तो तुम उन से मकातिबत (आज़ादी की तहरीर) करलो	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	मालिक हों	उन में से जो	मकातिबत	चाहते हों	और जो लोग

اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ

जो उस ने तुम्हें दिया	अल्लाह का माल	से	और तुम उनको दो	बेहतरी	उन में	अगर तुम जानो (पाओ)

وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ

सामान	ताकि तुम हासिल कर लो	पाक दामन रहना	अगर वह चाहें	बदकारी पर	अपनी कनीज़ें	और तुम न मजबूर करो

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	उन की मजबूरी	बाद	तो बेशक अल्लाह	उन्हें मजबूर करेगा	और जो	दुनिया	ज़िन्दगी

رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और मिसालें	वाज़ेह	अहकाम	तुम्हारी तरफ़	हम ने नाज़िल किए	और तहक़ीक़	33	निहायत मेहरबान

ع ٨ ١٠ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	नूर	अल्लाह	34	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	तुम से पहले	गुज़रे

وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ

चिराग़	एक चिराग़	उस में	जैसे एक ताक़	उस का नूर	मिसाल	और ज़मीन

فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ

दरख़्त	से	रोशन किया जाता है	एक सितारा चमकदार	गोया वह	वह शीशा	एक शीशे में

مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ

ख़्वाह	रोशन हो जाए	उस का तेल	क़रीब है	और न मग़रिब का	न मशरिक़ का	ज़ैतून	मुबारक

لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

वह जिस को चाहता है	अपने नूर की तरफ़	रहनुमाई करता है अल्लाह	रोशनी पर रोशनी	आग	उसे न छुए

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ

हुक्म दिया	उन घरों में	35	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	लोगों के लिए	मिसालें	और बयान करता है अल्लाह

اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ ۙ

36	और शाम	सुबह	उन में	उस की	तस्बीह करते हैं	उस का नाम	उन में	और लिया जाए	कि बुलन्द किया जाए	अल्लाह

और तुम निकाह करो अपनी बेवा औरतों का और अपने नेक गुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से, और अल्लाह वस्अत वाला, इल्म वाला है। (32)
और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़्दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे गुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज़ इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (33)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किए वाज़े अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34)
अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक़ हो, उस में एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है, वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शर्क़ी है न गरबी, क़रीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35)
(यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्बत) अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुबह शाम उस की तस्बीह करते हैं। (36)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ

नमाज़	और क़ाइम रखना	अल्लाह की याद	से	और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	तिजारत	उन्हें ग़ाफ़िल नहीं करती	वह लोग

وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ ﴿٣٧﴾

37	और आँखें	दिल (जमा)	उस में	उलट जाएंगे	उस दिन से	और डरते हैं	ज़कात	और अदा करना

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

रिज़्क़ देता है	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	जो उन्हों ने किया (आमाल)	बेहतर से बेहतर	ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ

सुराब की तरह	उन के अ़मल	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	38	बेहिसाब	जिसे चाहता है

بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا

कुछ भी	उस को नहीं पाता	जब वह वहां आता है	यहां तक कि	पानी	प्यासा	गुमान करता है	चटियल मैदान में

وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ ﴿٣٩﴾

39	तेज़ हिसाब करने वाला	और अल्लाह	उस का हिसाब	तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया	अपने पास	अल्लाह	और उस ने पाया

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

उस के ऊपर से	एक (दूसरी) मौज	उस के ऊपर से	मौज	उसे ढांप लेती है	गहरा पानी	दर्या में	या जैसे अन्धेरे

سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ

तवक़्क़ो नहीं	अपना हाथ	वह निकाले	जब	बाज़ (दूसरे) के ऊपर	उस के बाज़ (एक)	अन्धेरे	बादल

يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ ع ٥ ٦ ١١

क्या तू ने नहीं देखा	40	कोई नूर	तो नहीं उस के लिए	नूर	उस के लिए	न बनाए (न दे) अल्लाह	और जिसे	तू उसे देख सके

اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ

हर एक	पर फैलाए हुए	और परिन्दे	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	उस की	पाकीज़गी बयान करता है	कि अल्लाह

قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

और अल्लाह के लिए बादशाहत	41	वह करते हैं	वह जो	जानता है	और अल्लाह	अपनी तस्बीह	अपनी दुआ़	जान ली

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ

फिर	बादल (जमा)	चलाता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	42	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों

يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

और वह उतारता है	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश	फिर तू देखे	तह ब तह	वह उस को करता है	फिर	आपस में	मिलाता है वह

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

जिस पर चाहे	उसे	फिर वह डाल देता है	ओले	से	उस में	पहाड़	से	आस्मानों से

وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

43	आँखों को	ले जाए	उस की बिजली	चमक	क़रीब है	जिस से चाहे	से	और उसे फेर देता है

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37)
ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़ियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (38)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39)
(या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तवक़्क़ो नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ़ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41)
और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42)
क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह ब तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से बारिश निकलती है, और वह आस्मानो (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, क़रीब है कि उस की बिजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّاُولِى الۡاَبۡصَارِ ﴿٤٤﴾

44	आँखों वाले (अ़क्ल मन्द)	इब्रत है	इस में	बेशक	और दिन	रात	बदलता है अल्लाह

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنۡ مَّآءٍ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰى بَطۡنِهٖ ۚ وَمِنۡهُمۡ

और उन में से	अपने पेट पर	कोई चलता है	पस उन में से	पानी से	हर जानदार	पैदा किया	और अल्लाह

مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰى رِجۡلَيۡنِ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِىۡ عَلٰٓى اَرۡبَعٍ ؕ يَخۡلُقُ اللّٰهُ

अल्लाह पैदा करता है	चार पर	कोई चलता है	और उन में से	दो पाऊँ पर	कोई चलता है

مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ

वाज़ेह	आयतें	तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	45	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	जो वह चाहता है

وَاللّٰهُ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُوۡلُوۡنَ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	और वह कहते हैं	46	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है	और अल्लाह

بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوۡلِ وَاَطَعۡنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ ؕ

उस के बाद	उस में से	एक फ़रीक़	फिर गया	फिर	और हम ने हुक्म माना	और रसूल पर	अल्लाह पर

وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	वह बुलाए जाते हैं	और जब	47	ईमान वाले	और वह नहीं

لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنۡ يَّكُنۡ لَّهُمُ الۡحَقُّ

हक़	उन के लिए	हो	और अगर	48	मुँह फेर लेता है	उन में से	एक फ़रिक़	नागहां	उन के दरमियान	ताकि वह फ़ैसला कर दे

يَاۡتُوۡۤا اِلَيۡهِ مُذۡعِنِيۡنَ ﴿٤٩﴾ ؕ اَفِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ اَمِ ارۡتَابُوۡۤا اَمۡ

या	वह शक में पड़े हैं	या	कोई रोग	क्या उन के दिलों में	49	गर्दन झुकाए	वह आते हैं उस की तरफ़

ع ١٠ ١٢ الثلثة

يَخَافُوۡنَ اَنۡ يَّحِيۡفَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ وَرَسُوۡلُهٗ ؕ بَلۡ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿٥٠﴾

50	ज़ालिम (जमा)	वही	वह	बल्कि	और उस का रसूल	उन पर	जुल्म करेगा अल्लाह	कि	वह डरते हैं

اِنَّمَا كَانَ قَوۡلَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اِذَا دُعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ لِيَحۡكُمَ

ताकि वह फ़ैसला कर दें	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	वह बुलाए जाते हैं	जब	मोमिन (जमा)	बात	इस के सिवा नहीं है

بَيۡنَهُمۡ اَنۡ يَّقُوۡلُوۡا سَمِعۡنَا وَاَطَعۡنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿٥١﴾ وَمَنۡ

और जो	51	फ़लाह पाने वाले	वही	और वह	और हम ने इताअ़त की	हम ने सुना	वह कहते हैं	कि- तो	उन के दरमियान

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَيَخۡشَ اللّٰهَ وَيَتَّقۡهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ ﴿٥٢﴾

52	कामयाब होने वाले	वही	पस वह	और परहेज़गारी करे	अल्लाह	और डरे	और उस का रसूल	इताअ़त करे अल्लाह की

وَاَقۡسَمُوۡا بِاللّٰهِ جَهۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ لَئِنۡ اَمَرۡتَهُمۡ لَيَخۡرُجُنَّ ؕ قُلۡ

फ़रमा दें	तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे	आप हुक्म दें उन्हें	अलबत्ता अगर	और ज़ोरदार क़समें	अल्लाह की	और उन्हों ने क़समें खाईं

لَّا تُقۡسِمُوۡا ۚ طَاعَةٌ مَّعۡرُوۡفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٥٣﴾

53	तुम करते हो	वह जो	ख़बर रखता है	बेशक अल्लाह	पसंदीदा	इताअ़त	तुम क़समें न खाओ

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, बेशक उस में इब्रत है अ़क्ल मन्दों के लिए। (44)
और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (45)
तहक़ीक़ हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, और अल्लाह जिसे चहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46)
और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुक्म माना, फिर उस के बाद उस में से एक फ़रीक़ फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47)
और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दे तो नागहां उन में से एक फ़रीक़ मुँह फेर लेता है। (48)
और अगर उन के लिए हक़ (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (ख़ुशी से) चले आते हैं। (49)
क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50)
मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दें, तो वह कहते है हम ने सुना और हम ने इताअ़त की और वही हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले। (51)
और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52)
और उन्हों ने अल्लाह की ज़ोरदार क़समें खाईं कि अगर आप (स) उन्हें हुक्म दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फ़रमां दें तुम क़समें न खाओ, पसंदीदा इताअ़त (मतलूब है), बेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ

फ़रमा दें	तुम इताअ़त करो अल्लाह की	और इताअ़त करो	रसूल की	फिर अगर तुम फिर गए	तो इस के सिवा नहीं	उस पर

مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۭ وَمَا عَلَى

जो बोझ डाला गया (ज़िम्मे)	और तुम पर	जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे)	और अगर	तुम इताअ़त करोगे	तुम हिदायत पालोगे	और नहीं	पर

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا

रसूल	मगर-सिर्फ़	पहुँचा देना	साफ़ साफ़	54	अल्लाह ने वादा किया	उन लोगों से जो ईमान लाए	तुम में से	और काम किए

الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

नेक	वह ज़रूर उन्हें ख़िलाफ़त देगा	ज़मीन में	जैसे	उस ने ख़िलाफ़त दी	वह लोग जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ

उन से पहले	और ज़रूर कुव्वत देगा	उन के लिए	उन का दीन	जो	उस ने पसंद किया	उन के लिए	और अलबत्ता वह ज़रूर बदल देगा उन के लिए

مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْــًٔا ۭ وَمَنْ

बाद	उन का ख़ौफ़	अम्न	वह मेरी इबादत करेंगे	वह शरीक न करेंगे	मेरा	कोई शै	और जिस

كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नाशुक्री की	उस के बाद	पस वही लोग	नाफ़रमान (जमा)	55	और तुम क़ाइम करो	नमाज़

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

और अदा करो तुम	ज़कात	और इताअ़त करो	रसूल	ताकि तुम पर	रहम किया जाए	56	हरगिज़ गुमान न करें

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ

वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	आजिज़ करने वाले हैं	ज़मीन में	उन का ठिकाना	दोज़ख़	और अलबत्ता बुरा

الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ ع ٧ ١٣

ठिकाना	57	ऐ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	चाहिए कि इजाज़त लें तुम से	वह जो कि	मालिक हुए

اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ

तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	और वह लोग जो	नहीं पहुँचे	एहतिलाम-शऊर	तुम में से	तीन	बार-वक़्त

مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ

पहले	नमाज़े फ़ज्र	और जब	उतार कर रख देते हो	अपने कपड़े	से-को	दोपहर

وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ڐ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ

और बाद	नमाज़े इशा	तीन	पर्दा	तुम्हारे लिए	नहीं तुम पर

وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۭ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى

और न उन पर	कोई गुनाह	उन के बाद-अ़लावा	फेरा करने वाले	तुम्हारे पास	तुम में से बाज़ (एक)	पर-पास

بَعْضٍ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

बाज़ (दूसरे)	इसी तरह	वाज़ेह करता है अल्लाह	तुम्हारे लिए	अहकाम	और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	58

आप (स) फ़रमां दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअ़त करो, फिर आगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी क़दर है जो उस के ज़िम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे ज़िम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअ़त करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। **(54)**

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर ख़िलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को ख़िलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इस्तेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए ख़ौफ़ के बाद ज़रूर अम्न से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुक्री की, पस वही लोग नाफ़रमान हैं। **(55)**

और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो, और रसूल की इताअ़त करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। **(56)**

हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलबत्ता बुरा ठिकाना है। **(57)**

ऐ ईमान वालो! चाहिए कि तुम्हारे गुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाज़े फ़ज्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाज़े इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औक़ात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अ़लावा (औक़ात में), तुम में से बाज़, बाज़ के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(58)**

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا

जैसे	पस चाहिए कि वह इजाज़त लें	(हदे) शऊर को	तुम में से	बच्चे	पहुँचें	और जब

اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	उन से पहले	वह जो	इजाज़त लेते थे

اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ

वह जो	औरतों में से	और ख़ाना नशीन बूढ़ी	59	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपने अहकाम

لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ

कि वह उतार रखें	कोई गुनाह	उन पर	तो नहीं	निकाह	आरज़ू नहीं रखती हैं

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ

वह बचें	और अगर	ज़ीनत को	न ज़ाहिर करते हुए	अपने कपड़े

خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى

नाबीना पर	नहीं	60	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ

कोई गुनाह	बीमार पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और न	कोई गुनाह

وَّلَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ

अपने घरों से	कि तुम खाओ	ख़ुद तुम पर	और न

اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ

या अपने भाइयों के घरों से	या अपनी माँओ के घरों से	या अपने बापों के घरो से

اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ

या अपनी फूफियों के घरों से	या अपने ताए चचाओं के घरों से	या अपनी बहनों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ

जिस (घर) की तुम्हारे क़ब्ज़े में हों	या	या अपनी ख़ालाओं के घरों से	या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से

مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ

कि	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं	या अपने दोस्त (के घर से)	उस की कुन्जियां

تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا

तुम दाख़िल हो घरों में	फिर जब	जुदा जुदा	या	साथ साथ	तुम खाओ

فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً

बाबरकत	अल्लाह के हां	से	दुआए ख़ैर	अपने लोगों को	तो सलाम करो

٨ ع ١٤ طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾

61	समझो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	पाकीज़ा

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59)

और जो ख़ाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरज़ू नहीं रखतीं, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60)

कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न ख़ुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरो से, या अपनी माँओ के घरों से, या अपने भाइयों के घरो से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से, या अपनी ख़लाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियां तुम्हारे क़बज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकटठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए ख़ैर अल्लाह के हां से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا

वह होते हैं	और जब	और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	जो ईमान लाए (यक़ीन किया)	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं

مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ

बेशक	वह उस से इजाज़त लें	जब तक	वह नहीं जाते	सब मिल कर करने का काम	पर-में	उस के साथ

الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ

और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वह जो	यही लोग	इजाज़त मांगते हैं आप (स) से	जो लोग

فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ

उन में से	आप चाहें	जिस को	तो इजाज़त दे दें	अपने काम	किसी के लिए	वह तुम से इजाज़त मांगें	पस जब

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ

बुलाना	तुम न बना लो	62	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह (से)	और बख़्शिश मांगें

الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

जो लोग	अल्लाह	तहक़ीक़ जानता है	बाज़ (दूसरे) को	अपने बाज़ (एक)	जैसे बुलाना	अपने दरमियान	रसूल को

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ

उस के हुक्म से	ख़िलाफ़ करते हैं	जो लोग	पस चाहिए कि वह डरें	नज़र बचा कर	तुम में से	चुपके से खिसक जाते हैं

اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا

जो	याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए	63	दर्दनाक	अज़ाब	या पहुँचे उन को	कोई आफ़त	पहुँचे उन पर	कि

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ

और जिस दिन	उस पर	तुम	जो-जिस	तहक़ीक़ वह जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में

يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع ٩ ٣ ١٥

64	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उन्हों ने किया	जो-जिस	फिर वह उन्हें बताएगा	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे

آيَاتُهَا ٧٧ ❀ سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ (٢٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

आयात 77 | (25) सूरतुल फ़ुरक़ान कसौटी | रुकूआत 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ﴿١﴾ لا

1	डराने वाला	सारे जहानों के लिए	ताकि वह हो	अपने बन्दे पर	नाज़िल किया फ़र्क़ करने वाली किताब (क़ुरआन)	वह जो-जिस	बड़ी बरकत वाला

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ

और नहीं है	कोई बेटा	और उस ने नहीं बनाया	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	वह जिस के लिए

لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾

2	एक अन्दाज़ा	फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया	हर शै	और उस ने पैदा किया	सलतनत में	कोई शरीक	उस का

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यक़ीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें, बेशक जो लोग आप (स) से इजाज़त मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। **(62)** तुम न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहक़ीक़ अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अज़ाब पहुँचे। **(63)** याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहक़ीक़ वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्हों ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। **(64)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर "फ़ुरक़ान" (अच्छे बुरे में फ़र्क़ और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे जहानों के लिए डराने वाला हो। **(1)** वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। **(2)**

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

पैदा किए गए हैं	बल्कि वह	कुछ	वह नहीं पैदा करते	माबूद	उस के अ़लावा	और उन्हों ने बना लिए

وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا

किसी मौत का	और न वह इख़्तियार रखते हैं	और न किसी नफ़ा का	किसी नुक़्सान का	अपने लिए	और वह इख़्तियार नहीं रखते

وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर-सिर्फ़	नहीं यह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	3	और न फिर उठने का	और न किसी ज़िन्दगी का

معانقة ١٠ عند المتأخرين ١٢

اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛ فَقَدْ جَآءُوْ

तहक़ीक़ वह आगए	दूसरे लोग (जमा)	उस पर	उस की मदद की	उस ने उसे घड़ लिया है	बहुतान-मन घड़त

ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿٤﴾ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى

पस वह पढ़ी जाती हैं	उस ने उन्हें लिख लिया है	पहले लोग	कहानियाँ	और उन्हों ने कहा	4	और झूट	ज़ुल्म

عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

राज़	जानता है	वह जो	उस को नाज़िल किया है	फ़रमा दें	5	और शाम	सुबह	उस पर

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	6	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक वह है	और ज़मीन	आस्मानों में

مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ

बाज़ार (जमा)	में	चलता (फिरता) है	खाना	वह खाता है	यह रसूल	कैसा है

لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿٧﴾ اَوْ يُلْقٰٓى

या डाला (उतारा) जाता	7	डराने वाला	उस के साथ	कि होता वह	कोई फ़रिश्ता	उस के साथ	उतारा गया	क्यों न

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम (जमा)	और कहा	उस से	वह खाता	उस के लिए कोई बाग़	या होता	कोई ख़ज़ाना	उस की तरफ़

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٨﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ

तुम्हारे लिए	उन्हों ने बयान कीं	कैसी	देखो	8	जादू का मारा हुआ	एक आदमी	मगर-सिर्फ़	नहीं तुम पैरवी करते

ع ٩/١٦

الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ

वह जो	बड़ी बरकत वाला	9	रास्ता (सीधा)	लिहाज़ा न पा सकते हैं	सो वह बहक गए	मिसालें (बातें)

اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	उस से	बेहतर	तुम्हारे लिए	वह बना दे	अगर चाहे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	10	महल (जमा)	तुम्हारे लिए	और बना दे	नहरें	जिन के नीचे

بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾

11	दोज़ख़	क़ियामत को	उस के लिए जिस ने झुटलाया	और हम ने तैयार किया	क़ियामत को

और उन्हों ने उस के अ़लावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (ख़ुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख़्तियार नहीं रखते किसी नुक़्सान का, और न किसी नफ़ा का, और न वह इख़्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3)

और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बहुतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहक़ीक़ वह आगए (उतर आए) हैं ज़ुल्म और झूट पर। (4)

और उन्हों ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती हैं (सुनाई जाती हैं) सुब्ह और शाम। (5)

आप (स) फ़रमां दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (6)

और उन्हों ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7)

या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई ख़ज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8)

ऐ नबी (स)! देखो तो उन्हों ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान कीं हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9)

बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बाग़ात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10)

बल्कि उन्हों ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख़) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)
और जब वह उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़न्जीरों से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)
(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)
आप (स) फ़रमां दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग़, जिन का वादा परहेज़गारों से किया गया है, वह उन के लिए जज़ा और लौट कर जाने की जगह है। (15)
उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)
और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह खुद रास्ते से भटक गए? (17)
वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के बाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)
पस उन्हों (तुम्हारे माबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अ़ज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे। (19)
और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यक़ीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आज़माइश, क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾

12	और चिंघाड़ती	जोश मारती	उसे	वह सुनेंगे	दूर	जगह	से	वह देखेगी उन्हें	जब

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ

वहां	वह पुकारेंगे	जकड़े हुए	तंग	किसी जगह	उस से-की	वह डाले जाएंगे	और जब

ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا

मौतें	बल्कि पुकारो	एक	मौत को	आज	तुम न पुकारो	13	मौत

كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ

वादा किया गया	जो-जिस	हमेशगी के बाग़	या	बेहतर	क्या यह	फ़रमा दें	14	बहुत सी

الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۗءُوْنَ

जो वह चाहेंगे	उस में	उन के लिए	15	लौट कर जाने की जगह	जज़ा (बदला)	उन के लिए	वह है	परहेज़गार (जमा)

خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

वह उन्हें जमा करेगा	और जिस दिन	16	ज़िम्मेदाराना	एक वादा	तुम्हारे रब के ज़िम्मे	है	हमेशा रहेंगे

وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ

तुम ने गुमराह किया	क्या तुम	तो वह कहेगा	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	और जिन्हें

عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ۭ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ

तू पाक है	वह कहेंगे	17	रास्ता	भटक गए	या वह	यह हैं-उन	मेरे बन्दे

مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ

मददगार	कोई	तेरे सिवा	हम बनाएं	कि	हमारे लिए	सज़ावार-लाइक़	न था

وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا

और वह थे	याद	वह भूल गए	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	तू ने आसूदगी दी उन्हें	और लेकिन

قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا

फेरना	पस अब तुम नहीं कर सकते हो	वह जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात)	पस उन्हों ने तुम्हें झुटला दिया	18	हलाक होने वाले लोग

وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

19	बड़ा	अ़ज़ाब	हम चखाएंगे उसे	तुम में से	वह ज़ुल्म करेगा	और जो	और न मदद करना

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ

अलबत्ता खाते थे	वह यक़ीनन	मगर	रसूल (जमा)	से	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं

الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ

तुम में से बाज़ को (किसी को)	और हम ने किया (बनाया)	बाज़ारों में	और चलते फिरते थे	खाना

لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١١ ١٧

20	देखने वाला	तुम्हारा रब	और है	क्या तुम सब्र करोगे	आज़माइश	बाज़ (दूसरों के लिए)

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

हम पर	उतारे गए	क्यों न	हम से मिलना	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	और कहा

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ

और उन्हों ने सरकशी की	अपने दिलों में	तहक़ीक़ उन्हों ने तकब्बुर किया	अपना रब	या हम देख लेते	फ़रिश्ते

عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ

मुज्रिमों के लिए	उस दिन	नहीं खुशख़बरी	फ़रिश्ते	वह देखेंगे	जिस दिन	21	बड़ी सरकशी

وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ

कोई काम	जो उन्हों ने किए	तरफ़	और हम आए (मुतवज्जुह होंगे)	22	रोकी हुई	कोई आड़ हो	और वह कहेंगे

فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا

ठिकाना	बहुत अच्छा	उस दिन	जन्नत वाले	23	बिखरा हुआ (परागन्दा)	गुबार	तो हम करदेंगे उन्हें

وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़रिश्ते	और उतारे जाएंगे	बादल से	आस्मान	फट जाएगा	और जिस दिन	24	आराम गाह	और बेहतरीन

تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا

वह दिन	और है-होगा	रहमान के लिए	सच्ची	उस दिन	बादशाहत	25	बकसरत उतरना

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ

वह कहेगा	अपने हाथों को	ज़ालिम	काट खाएगा	और जिस दिन	26	सख़्त	काफ़िरों पर

يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ

काश मैं	हाए मेरी शामत	27	रास्ता	रसूल के साथ	पकड़ लेता	ऐ काश! मैं

لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ

मेरे पास पहुँच गई	उस के बाद जब	नसीहत से	अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया	28	दोस्त	फ़लां को	न बनाता

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ

बेशक	ऐ मेरे रब	रसूल (स)	और कहेगा	29	खुला छोड़ जाने वाला	इन्सान को	शैतान	और है

قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

हर नबी के लिए	हम ने बनाए	और इसी तरह	30	मतरूक (छोड़ने के क़ाबिल)	इस कुरआन को	ठहरा लिया उन्हों ने	मेरी क़ौम

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

31	और मददगार	हिदायत करने वाला	तुम्हारा रब	और काफ़ी है	गुनाहगारों (मुज्रिमीन)	से	दुश्मन

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ

एक ही बार	कुरआन	उस पर	नाज़िल किया गया	क्यों न	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

32	ठहर ठहर कर	और हम ने उस को पढ़ा	तुम्हारा दिल	उस से	ताकि हम क़व्वी करें	इसी तरह

ع ٧
عند المتقدمين ١٢

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्हों ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहक़ीक़ उन्हों ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)

जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुज्रिमों के लिए कोई खुशख़बरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आड़ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)

और हम मुतवज्जुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ़ तो हम उन्हें परागन्दा गुबार की तरह करदेंगे। (23)

उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)

और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे बकसरत। (25)

उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त होगा। (26)

और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)

हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)

अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तन्हा छोड़ जाने वाला है। (29)

और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया (मतरूक कर रखा)। (30)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)

और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर कुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने बतद्रीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया) ठहर ठहर कर। (32)

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	33	वज़ाहत	और बहतरीन	ठीक (जवाब)	हम पहुँचा देते हैं तुम्हें	मगर	कोई बात	और वह नहीं लाते तुम्हारे पास

يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ

और बहुत बहके हुए	मुक़ाम	बदतरीन	वही लोग	जहन्नम की तरफ़	अपने मुँह	पर- बल	जमा किए जाएंगे

سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ع ٣ ١٤ ١

हारून (अ)	उस का भाई	उस के साथ	और हम ने बनाया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	34	रास्ते से

وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ

तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें	हमारी आयतें	जिन्हों ने झुटलाया	क़ौम की तरफ़	तुम दोनों जाओ	पस हम ने कहा	35	वज़ीर (मुआ़विन)

تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	और हम ने बनाया उन्हें	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	रसूल (जमा)	जब उन्हों ने झुटलाया	और क़ौमे नूह (अ)	36	बुरी तरह हलाक

اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟

और समूद	और आ़द	37	दर्दनाक	एक अ़ज़ाब	ज़ालिमों के लिए	और तैयार किया हम ने	एक निशानी

وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस को	हम ने बयान कीं	और हर एक को	38	बहुत सी	उन के दरमियान	और नस्लें	और कुएं वाले

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ

बरसाई गई	वह जिस पर	बस्ती	पर	और तहक़ीक़ वह आए	39	तबाह कर के	हम ने मिटा दिया	और हर एक को	मिसालें

مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

वह उम्मीद नहीं रखते	बल्कि	उस को देखते	तो क्या वह न थे	बुरी बारिश

نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

क्या यह	तमसख़ुर (ठट्ठा)	मगर (सिर्फ़)	वह बनाते तुम्हें	नहीं	देखते हैं तुम्हें वह	और जब	40	जी उठना

الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ

अगर न	हमारे माबूदों से	कि वह हमें बहका देता	क़रीब था	41	रसूल	भेजा अल्लाह ने	वह जिसे

اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ

अ़ज़ाब	वह देखेंगे	जिस वक़्त	वह जान लेंगे	और जल्द	उस पर	हम जमे रहते

مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ

तो क्या तु	अपनी ख़्वाहिश	अपना माबूद	जिस ने बनाया	क्या तुम ने देखा?	42	रास्ते से	कौन बदतरीन गुमराह

تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	उन के अक्सर	कि	क्या तुम समझते हो?	43	निगहबान	उस पर	हो जाएगा

اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ ع ٤ ١٥ ٢

44	राह से	बदतरीन गुमराह	बल्कि वह	चौपायों जैसे	मगर	नहीं वह	या अ़क़्ल से काम लेते हैं

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33) जो लोग अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34) और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुआ़विन बनाया। (35) पस हम ने कहा तुम दोनों उस क़ौम की तरफ़ जाओ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36) और क़ौमे नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें ग़र्क़ कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इब्रत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अ़ज़ाब। (37) और आ़द और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नस्लें। (38) और हम ने हर एक के लिए मिसालें बयान कीं (मगर उन्हों ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39) तहक़ीक़ वह आए उस (क़ौमे लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40) और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ़ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41) क़रीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अ़ज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42) क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो जाओगे? (43) क्या तुम समझते हो कि उन में से अक्सर सुनते या अ़क़्ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ

फिर	साकिन	तो उसे बनादेता	और अगर वह चाहता	दराज़ किया साया	कैसे	अपना रब	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾

46	आहिस्ता आहिस्ता	खींचना	अपनी तरफ़	हम ने समेटा उस को	फिर	45	एक दलील	उस पर	सूरज	हम ने बनाया

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ

और बनाया	राहत	और नीन्द	पर्दा	रात	तुम्हारे लिए	जिस ने बनाया	और वह

النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ

आगे	ख़ुशख़बरी	भेजीं हवाएं	जिस ने	और वही	47	उठने का वक़्त	दिन

يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ ﴿٤٨﴾ لِّنُحْیِۦَ بِهٖ

ताकि हम ज़िन्दा कर दें उस से	48	पानी पाक	आस्मान से	और हम ने उतारा	अपनी रहमत

بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

49	बहुत से	और आदमी	चौपाए	हम ने पैदा किया	उस से जो	और हम पिलाएं उसे	शहर मुर्दा

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

50	नाशुक्री	मगर	अक्सर लोग	पस कुबूल न किया	ताकि वह नसीहत पकड़ें	उन के दरमियान	और तहक़ीक़ हम ने उसे तक़सीम किया

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۖ ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों	पस न कहा मानें आप (स)	51	एक डराने वाला	हर बस्ती	में	तो हम भेज देते	हम चाहते	और अगर

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِىْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا

यह	दो दर्या	मिलाया	जिस ने	और वही	52	बड़ा जिहाद	इस के साथ	और जिहाद करें उन से

عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا

और आड़	एक पर्दा	उन दोनों के दरमियान	और उस ने बनाया	तल्ख़ बदमज़ा	और यह	ख़ुशगवार	शीरीं

مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا

नसब	फिर बनाए उस के	बशर	पानी से	पैदा किया	जिस ने	और वही	53	मज़बूत आड़

وَّصِهْرًا ۭ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	54	कुदरत वाला	तेरा रब	और है	और सुस्राल

مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۭ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ

अपना रब	पर-ख़िलाफ़	काफ़िर	और है	और न उन का नुक़्सान कर सके	न नफ़ा पहुँचाए	जो

ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ

नहीं मांगता तुम से	फ़रमा दें	56	और डराने वाला	मगर ख़ुशख़बरी देने वाला	भेजा हम ने आप को	और नहीं	55	पुश्त पनाही करने वाला

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

57	रास्ता	अपने रब तक	कि इख़्तियार करले	जो चाहे	मगर	अजर	कोई	इस पर

क्या तुम ने अपने रब की (कुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45)
फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर। (46)
और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक़्त बनाया। (47)
और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं ख़ुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजीं, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48)
ताकि उस में से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49)
और तहक़ीक़ हम ने उसे उन के दरमियान तक़सीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक्सर लोगों ने कुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50)
और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51)
पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा जिहाद करें। (52)
और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ़ का पानी) ख़ुशगवार शीरीं है और यह (दूसरा) तल्ख़ बदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक ग़ैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53)
और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्राल, और तेरा रब कुदरत वाला है। (54)
और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक़्सान कर सके, और काफ़िर अपने रब के ख़िलाफ़ पुश्त पनाही करने वाला है। (55)
और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56)
आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख़्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ

और काफ़ी है वह	उस की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान कर	जिसे मौत नहीं	हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर	और भरोसा कर

بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۚۛ ﴿٥٨﴾ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	58	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों की	गुनाहों से

وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ ع ٨ عدد المتقدمين ١٢

तो पूछो	जो रहम करने वाला	अ़र्श पर	फिर क़ाइम हुआ	छः (6) दिन	में	और जो उन दोनों के दरमियान

بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ

और क्या है रहमान	वह कहते हैं	रहमान को	तुम सिज्दा करो	उन से	कहा जाए	और जब	59	किसी बाख़बर	उस के मुतअ़ल्लिक़

اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ ۩ تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ ع ١٦ السجدة ٧ ٣

बनाए	वह जिस ने	बड़ी बरकत वाला है	60	बिदकना	उस ने बढ़ा दिया उन का	जिसे तू सिज्दा करने को कहे	क्या हम सिज्दा करें

فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

61	रोशन	और चाँद	चिराग़ (सूरज)	उस में	और बनाया	बुर्ज (जमा)	आस्मानों में

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ

कि वह नसीहत पकड़े	उस के लिए जो चाहे	एक दूसरे के पीछे आने वाला	और दिन	रात	जिस ने बनाया	और वही

اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ

ज़मीन पर	चलते हैं	वह कि	और रहमान के बन्दे	62	शुक्र गुज़ार बनना	या चाहे

هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ

रात काटते हैं	और वह जो	63	सलाम	कहते हैं वह	जाहिल (जमा)	उन से बात करते हैं	और जब	नरम चाल

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

हम से	फेर दे	ऐ हमारे रब	कहते हैं	और वह जो	64	और क़ियाम करते	सिज्दा करते	अपने रब के लिए

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ ۖ اِنَّهَا سَآءَتْ

बुरी	बेशक वह	65	लाज़िम हो जाने वाला है	उस का अ़ज़ाब	बेशक	जहन्नम का अ़ज़ाब

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ

और न	न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं	जब वह ख़र्च करते हैं	और वह लोग जो	66	और (बुरा) मुक़ाम	ठहरने की जगह

يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ

नहीं पुकारते	और वह जो	67	एतिदाल	उस के दरमियान	और है	तंगी करते हैं

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ

हराम किया अल्लाह ने	जिसे	जान	और वह क़त्ल नहीं करते	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ

اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ ۙ

68	वह दो चार होगा बड़ी सज़ा	यह	करेगा	और जो	और वह ज़िना नहीं करते	मगर जहां हक़ हो

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफ़ी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। (58)

वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अ़र्श पर क़ाइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअ़ल्लिक़ किसी बाख़बर से पूछो। (59)

और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का बिदकना और बढ़ा दिया। (60)

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। (61)

और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (62)

और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। (63)

और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। (64)

और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का अ़ज़ाब फेर दे, बेशक उस का अ़ज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। (65)

बेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। (66)

और वह लोग कि जब वह ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतिदाल की है। (67)

और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) माबूद, और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है, मगर जहां हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। (68)

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا

सिवाए	69	ख़ार हो कर	उस में	और वह हमेशा रहेगा	रोज़े क़ियामत	अ़ज़ाब	उस के लिए	दोचन्द कर दिया जाएगा

مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ

उन की बुराइयां	अल्लाह बदल देगा	पस यह लोग	नेक अ़मल	और अ़मल किए उस ने	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की

حَسَنٰتٍ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا

नेक	और अ़मल किए	और जिस ने तौबा की	70	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और है अल्लाह	भलाइयों से

فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ

झूट	गवाही नहीं देते	और वह लोग जो	71	रुजूअ़ करने का मुक़ाम	अल्लाह की तरफ़	रुजूअ़ करता है	तो बेशक वह

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

उन के रब के अहकाम से	जब उन्हें नसीहत की जाती है	और वह लोग जो	72	बुज़ुरगाना	गुज़रते हैं	बेहूदा से	वह गुज़रें	और जब

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا

ऐ हमारे रब अ़ता फ़रमा हमें	कहते हैं वह	और वह लोग जो	73	और अँधों की तरह	बहरों की तरह	उन पर	नहीं गिर पड़ते

مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

74	इमाम (पेश्वा)	परहेज़गारों का	और बना दे हमें	ठंडक आँखों की	और हमारी औलाद	हमारी बीवियां	से

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾

75	और सलाम	दुआए ख़ैर	और पेशवाई किए जाएंगे उस में	उन के सब्र की बदौलत	बाला ख़ाने	इन्आम दिए जाएंगे	यह लोग

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

तुम्हारी	परवाह नहीं रखता	फ़रमा दें	76	और मस्कन	आरामगाह	अच्छी है	उस में	वह हमेशा रहेंगे

الربع ١٧

رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۗؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77	लाज़मी	होगी	पस अनक़रीब	झुटलाया तुम ने	अगर न पुकारो तुम	मेरा रब

آيَاتُهَا ٢٢٧ ❀ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ (٢٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

आयात 227 — (26) सूरतुश शुअ़रा / शायर (जमा) — रुकूआत 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

المنزل ٥

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

हलाक कर लोगे	शायद तुम	2	रोशन किताब	आयतें	यह	1	ता सीन मीम

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

उन पर	हम उतार दें	अगर हम चाहें	3	ईमान लाते	कि वह नहीं	अपने तईं

مِّنَ السَّمَاۗءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

4	पस्त	उस के आगे	उन की गर्दनें	तो हो जाएं	कोई निशानी	आस्मान से

रोज़े क़ियामत उस के लिए अ़ज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, ख़ार हो कर। (69)

सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अ़मल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और जिस ने तौबा की और नेक अ़मल किए तो बेशक वह रुजूअ़ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ़ करने का मुक़ाम (हक़) है। (71)

और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुज़ुर्गाना (सन्जीदगी के अन्दाज़ से)। (72)

और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अँधों की तरह। (73)

और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्वा। (74)

उन लोगों को उन के सब्र की बदौलत (जन्नत के) बाला ख़ाने इन्आम दिए जाएंगे और वह उस में दुआए ख़ैर और सलाम से पेश्वाई किए जाएंगे। (75)

वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्कन। (76)

आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अ़नक़रीब (उस की सज़ा) लाज़िमी होगी। (77)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ता-सीन-मीम। (1)

यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2)

शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तईं हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3)

अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दनें पस्त हो जाएं। (4)

और उन के पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5) पस बेशक उन्हों ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की ख़बरें आएंगी (हक़ीक़त मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (6) क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस क़द्र उम्दा उम्दा हर क़िस्म की चीज़ें जोड़ा जोड़ा उगाई हैं। (7) बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं हैं ईमान लाने वाले। (8) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9) और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10) (यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11) उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देशह है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12) और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी ज़बान (ख़ूब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ़ पैग़ाम भेज। (13) और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें। (14) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15) पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम जहानों के रब के रसूल हैं। (16) कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17) फ़िरऔन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18) और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़िबती का क़त्ल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19) मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20) जब मैं तुम से डरा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूव्वत दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21) और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाया। (22) फ़िरऔन ने कहा, और क्या है सारे जहान का रब! (23)

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

उस से	हो जाते हैं वह	मगर	नई	रहमान	(तरफ़) से	कोई नसीहत	और नहीं आती उन के पास

مُعْرِضِيْنَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	ख़बरें	तो जल्द आएंगी उन के पास	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	5	रूगरदान

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ

हर क़िस्म	उस में	उगाईं हम ने	किस क़द्र	ज़मीन की तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	6	मज़ाक़ उड़ाते

زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

8	ईमान लाने वाले	उन में अक्सर	और नहीं हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	7	उम्दा	जोड़ा जोड़ा

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٩﴾ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ ع ٩ ٥

कि तू जा	मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पुकारा (फ़रमाया)	और जब	9	रहम करने वाला	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۭ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	11	क्या वह मुझ से नहीं डरते	क़ौमे फ़िरऔन	10	ज़ालिम लोग

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ

मेरी ज़बान	और नहीं चलती	मेरा सीना (दिल)	और तंग होता है	12	वह मुझे झुटलाएंगे	कि	बेशक मैं डरता हूँ

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٤﴾

14	कि वह मुझे क़त्ल (न) कर दें	पस मैं डरता हूँ	एक इल्ज़ाम	मुझ पर	और उनका	13	हारून	तरफ़	पस पैग़ाम भेज

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	पस तुम दोनों जाओ	15	सुनने वाले	तुम्हारे साथ	बेशक हम	पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ	हरगिज़ नहीं	फ़रमाया

فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿١٧﴾

17	बनी इस्राईल	हमारे साथ	तू भेज दे	कि	16	तमाम जहानों का रब	बेशक हम रसूल	तो उसे कहो

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾

18	कई बरस	अपनी उम्र के	हमारे दरमियान	और तू रहा	बचपन में	अपने दरमियान	क्या हम ने तुझे नहीं पाला	फ़िरऔन ने कहा

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَآ

मैं ने वह किया था	मूसा (अ) ने कहा	19	नाशुक्रे	से	और तू	जो तू ने किया	अपना (वह) काम	और तू ने किया

اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ

पस अ़ता किया मुझे	जब मैं डरा तुम से	तुम से	तो मैं भाग गया	20	राह से बेख़बर (जमा)	से	और मैं	जब

رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ

तू उस का एहसान रखता है मुझ पर	नेमत	और यह	21	रसूल (जमा)	से	और मुझे बनाया	हुक्म	मेरा रब

اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	सारे जहान	रब	और क्या है	फ़िरऔन ने कहा	22	बनी इस्राईल	कि तू ने गुलाम बनाया

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

24	यक़ीन करने वाले	तुम हो	अगर	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	रब है आस्मानों का	उस ने कहा

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	(मूसा अ) ने कहा	25	क्या तुम सुनते नहीं	उस के इर्द गिर्द	उन्हें जो	उस से कहा

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

27	अलबत्ता दीवाना	तुम्हारी तरफ़	भेजा गया	वह जो	तुम्हारा रसूल	बेशक	फ़िरऔन बोला	26	पहले

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम समझते हो	अगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और मग़रिब	मशरिक़	रब	मूसा (अ) ने कहा

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	क़ैदी (जमा)	से	तो मैं ज़रूर करदूँगा तुझे	मेरे सिवा	कोई माबूद	तू ने बनाया	अलबत्ता अगर	वह बोला

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ

से	अगर तू है	तू ले आ उसे	वह बोला	30	वाज़ेह	एक शै (मोजिज़ा)	अगरचे में लाऊँ तेरे पास	(मूसा अ) ने कहा

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

अपना हाथ	और उस ने खींचा (निकाला)	32	खुला (नुमायां)	अज़दहा	तो अचानक वह	अपना असा	पस मूसा (अ) ने डाला	31	सच्चे

٢ ع ٢٧ ٦

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

जादूगर	बेशक यह	अपने गिर्द	सरदारों से	फ़िरऔन ने कहा	33	देखने वालों के लिए	चमकता हुआ	तो यकायक वह

عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	तो क्या तुम हुक्म (मशवरा) देते हो	अपने जादू से	तुम्हारी सर ज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	यह चाहता है	34	दाना, माहिर

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ

ले आएं तेरे पास	36	इकट्ठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों	में	और भेज	और उस के भाई को	मोहलत दे उसे	वह बोले

بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

38	जाने पहचाने (मुअय्यन)	एक दिन	मुक़र्ररा वक़्त पर	जादूगर	पस जमा किए गए	37	माहिर	तमाम बड़े जादूगर

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ

अगर	जादूगर (जमा)	पैरवी करें	ताकि हम	39	जमा होने वाले हो (जमा होगे)	तुम	क्या	लोगों से	और कहा गया

كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا

क्या यक़ीनन हमारे लिए	फ़िरऔन से	उन्हों ने कहा	जादूगर	आए	पस जब	40	ग़ालिब (जमा)	हों वह

لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

अलबत्ता-से	उस वक़्त	और बेशक तुम	हां	उस ने कहा	41	ग़ालिब (जमा)	हम	हम हुए	अगर	कुछ इनआम

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	डालने वाले	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा	42	मुक़र्रबीन

मूसा (अ) ने कहाः रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। **(24)**
उस ने अपने इर्द गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं! **(25)**
मूसा (अ) ने कहाः रब है तुम्हारा और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा का। **(26)**
फ़िरऔन बोला, बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है अलबत्ता दीवाना है। **(27)**
मूसा (अ) ने कहाः रब है मशरिक़ का और मग़रिब का, और जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम समझते हो। **(28)**
वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं ज़रूर तुझे क़ैद करदूँगा। **(29)**
मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास एक वाज़ेह मोजिज़ा लाऊँ? **(30)**
वह बोला तू उसे ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। **(31)**
पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह अचानक नुमायां अज़दहा बन गया। **(32)**
और उस ने अपना हाथ (गरेबान से) निकाला तो नागाह वह देखने वालों के लिए चमकता दिखाई देने लगा। **(33)**
फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा बेशक यह माहिर जादूगर है। **(34)**
वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? **(35)**
वह बोले उसे और उस के भाई को मोहलत दे, और शहरों में नक़ीब भेज। **(36)**
कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर जादूगर ले आएं। **(37)**
पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअय्यन दिन, वक़्त मुक़र्ररा पर। **(38)**
और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा होगे? **(39)**
ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की, अगर वह ग़ालिब हूँ। **(40)**
जब जादूगर आए तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा क्या हमारे लिए यक़ीनी तौर पर कुछ इनआम होगा? अगर हम ग़ालिब आए। **(41)**
उस ने कहा हां! तुम उस वक़्त बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। **(42)**
कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ) डालो जो तुम डालने वाले हो। **(43)**

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ

बेशक अलबत्ता हम	फ़िरऔन	इक़्बाल से	और बोले वह	और अपनी लाठियां	अपनी रस्सियां	पस उन्हों ने डाले

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	जो उन्हों ने ढकोसला बनाया	निगलने लगा	तो यकायक वह	अपना असा	मूसा (अ)	पस डाला	44	ग़ालिब आने वाले

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى

मूसा (अ)	रब	47	सारे जहानों के रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	46	सिज्दा करते हुए	पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर

وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ

जिस ने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	बेशक वह	तुम्हें	इजाज़त दूँ	कि मैं	पहले	तुम ईमान लाए उस पर	(फ़िरऔन) ने कहा	48	और हारून (अ)

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पैर	तुम्हारे हाथ	अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम जान लोगे	पस जल्द	जादू	सिखाया तुम्हें

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

अपने रब की तरफ़	बेशक हम	कुछ नुक़्सान (हर्ज) नहीं	वह बोले	49	सब को	और ज़रूर तुम्हें सूली दूँगा	एक दूसरे के ख़िलाफ़ का	से - कि

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ

पहले	कि हम हैं	हमारी ख़ताएं	हमारा रब	हमें	बख़्शदे	कि	बेशक हम उम्मीद रखते हैं	50	लौट कर जाने वाले हैं

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع ١٨ ٣

52	पीछा किए जाओगे	बेशक तुम	मेरे बन्दों को	कि तू रातों रात ले निकल	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि की	51	ईमान लाने वाले

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ

एक जमाअ़त	यह लोग हैं	बेशक	53	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	फ़िरऔन	पस भेजा

قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56	मुसल्लह - मोहतात	एक जमाअ़त	और बेशक हम	55	गुस्से में लाने वाले	हमें	और बेशक वह	54	थोड़ी सी

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	58	उम्दा	और ठिकाने	और ख़ज़ाने	57	और चश्मे	बाग़ात	से	पस हम ने उन्हें निकाला

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ

देखा एक दूसरे को	पस जब	60	सूरज निकलते	पस उन्हों ने पीछा किया उन का	59	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया उन का

الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ

मेरे साथ	बेशक	उस ने कहा हरगिज़ नहीं	61	पकड़ लिए गए	यक़ीनन हम	मूसा (अ) के साथी	कहा (कहने लगे)	दोनों जमाअ़तें

رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ

दर्या	अपना असा	तू मार	कि	मूसा (अ)	तरफ़	पस हम ने वहि भेजी	62	वह जल्द मुझे राह दिखाएगा	मेरा रब

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	दूसरों को	उस जगह	फिर हम ने क़रीब कर दिया	63	बड़े	पहाड़ की तरह	हर हिस्सा	पस हो गया	तो वह फट गया

पस उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि बेशक फ़िरऔन के इक़्बाल से हम ही ग़ालिब आने वाले हैं। **(44)**
पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्हों ने ढकोसला बनाया था। **(45)**
पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। **(46)**
वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। **(47)**
(जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। **(48)**
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊँ काट डालूँगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम सब को सूली दूँगा। **(49)**
वह बोले कुछ हर्ज नहीं बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। **(50)**
हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। **(51)**
और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, बेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तआ़क़ुब होगा)। **(52)**
पस भेजा फ़िरऔन ने शहरों में नक़ीब। **(53)**
बेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअ़त हैं। **(54)**
और वह बेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। **(55)**
और बेशक हम एक जमाअ़त हैं मुसल्लह, मोहतात। **(56)**
(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बाग़ात और चश्मों से निकाला। **(57)**
और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। **(58)**
इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। **(59)**
पस उन्हों ने सूरज निकलते (सुबह सवेरे) उन का पीछा किया। **(60)**
पस जब दोनों जमाअ़तों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यक़ीनन हम पकड़ लिए गए। **(61)**
मूसा (अ) ने कहा, हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। **(62)**
पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना असा दर्या पर मार (उन्हों ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। **(63)**
और हम ने उस जगह दूसरों (फ़िरऔनियों) को क़रीब कर दिया। **(64)**

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

और हम ने बचा लिया	मूसा (अ)	और जो	उस के साथ	सब	65	फिर	हम ने ग़र्क़ कर दिया	दूसरों को	66

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

बेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और न	थे	उन से अक्सर	ईमान लाने वाले	67	और बेशक	तुम्हारा रब

لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِیْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ

अलबत्ता वह	ग़ालिब	निहायत मेहरबान	68	और आप पढ़ें	उन पर- उन्हें	ख़बर- वाक़िआ	इब्राहीम (अ)	69	जब	उस ने कहा	अपने बाप को

وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِیْنَ ﴿٧١﴾

और अपनी क़ौम	क्या- किस	तुम परस्तिश करते हो	70	उन्हों ने कहा	हम परस्तिश करते हैं	बुतों की	पस हम बैठे रहते हैं उन के पास	जमे हुए	71

قَالَ هَلْ یَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ یَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ یَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

उस ने कहा	क्या	वह सुनते हैं तुम्हारी	जब	तुम पुकारते हो	72	या वह नफ़ा पहुँचाते हैं तुम्हें	या वह नुक़्सान पहुँचाते हैं	73

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ یَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا

वह बोले	बल्कि	हम ने पाया	अपने बाप दादा	इसी तरह	वह करते	74	इब्राहीम (अ) ने कहा	क्या पस तुम ने देखा	किस

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّیْۤ

तुम परस्तिश करते हो	75	तुम	और तुम्हारे बाप दादा	पहले	76	तो बेशक वह	मेरे दुश्मन

اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِیْ هُوَ

मगर	सारे जहानों का रब	77	वह जिस ने	मुझे पैदा किया	पस वह	मुझे राह दिखाता है	78	और वह जो	वह

یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِیْ

मुझे खिलाता है	और मुझे पिलाता है	79	और जब	मैं बीमार होता हूँ	तो वह	मुझे शिफ़ा देता है	80	और वह जो

یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓـَٔتِیْ

मौत देगा	फिर	मुझे ज़िन्दा करेगा	81	और वह जिस से	मैं उम्मीद रखता हूँ	कि मुझे बख़्श देगा	मेरी ख़ताएं

یَوْمَ الدِّیْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِیْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿٨٣﴾

बदले के दिन	82	ऐ मेरे रब	मुझे अ़ता कर	हुक्म- हिक्मत	और मुझे मिलादे	नेक बन्दों के साथ	83

وَاجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ

और कर	मेरे लिए- मेरा ज़िक्र	अच्छा- ख़ैर	बाद में आने वालों में	84	और तू मुझे बना दे	वारिसों में से

جَنَّةِ النَّعِیْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِیْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّیْنَ ﴿٨٦﴾

जन्नत	नेमतों वाली	85	और बख़्शदे	मेरे बाप को	बेशक वह	वह है	से	गुमराह (जमा)	86

وَلَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ یَوْمَ لَا یَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

और मुझे रुस्वा न करना	जिस दिन सब उठाए जाएंगे	87	जिस दिन	न काम आएगा	माल	और न	बेटे	88

اِلَّا مَنْ اَتَی اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿٩٠﴾

मगर	जो	अल्लाह के पास आया	दिल	पाक	89	और नज़दीक कर दी जाएगी	जन्नत	परहेज़गारों के लिए	90

ع ١٧ ٨ وقف لازم

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65)
फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (66)
बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (67)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (68)
और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाक़िआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69)
जब उन्हों ने कहा अपने बाप और अपनी क़ौम को, तुम किस की परस्तिश करते हो? (70)
उन्हों ने कहा बुतों की परस्तिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71)
उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72)
या वह तुम्हें नफ़ा पहुँचाते हैं? या नुक़्सान पहुँचा सकते हैं? (73)
वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74)
इब्राहीम (अ) ने कहा: पस क्या तुम ने देखा (ग़ौर भी किया) कि तुम किस की परस्तिश करते हो? (75)
और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76)
तो बेशक वह मेरे दुश्मन हैं सिवाए सारे जहानों के रब के। (77)
वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78)
और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79)
और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफ़ा देता है। (80)
और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। (81)
और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे बदले के दिन मेरी ख़ताएं बख़्श देगा। (82)
ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म और हिक्मत अ़ता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83)
और मेरा ज़िक्रे ख़ैर (जारी) रख बाद में आने वालों में। (84)
और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85)
और मेरे बाप को बख़्शदे, बेशक वह गुमराहों में से है। (86)
और मुझे उस दिन रुस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87)
जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88)
मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐब) दिल ले कर आया। (89)
और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी। (90)

और दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी गुमराहों के लिए। (91)
और उन्हें कहा जाएगा कहां हैं वह जिन की तुम परस्तिश करते थे। (92)
अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या (ख़ुद) बदला ले सकते हैं? (93)
पस वह और गुमराह उस (जहन्नम) में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। (94)
और इब्लीस के लशकर सब के सब। (95)
वह कहेंगे जब कि वह जहन्नम में (बाहम) झगड़ते होंगे। (96)
अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। (97)
जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब के साथ बराबर ठहराते थे। (98)
और हमें सिर्फ़ मुज्रिमों ने गुमराह किया। (99)
पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (100)
और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। (101)
पस काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में) लौटना होता तो हम मोमिनों में से होते। (102)
बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और नहीं हैं उन में अक्सर ईमान लाने वाले। (103)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (104)
नूह (अ) की क़ौम ने झुटलाया रसूलों को। (105)
(याद करो) जब उन के भाई नूह (अ) ने उन से कहा तुम डरते नहीं? (106)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (107)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (108)
मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (109)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (110)
वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान ले आएं? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों ने की है। (111)
नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह क्या (काम काज) करते थे। (112)
उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर है, अगर तुम समझो। (113)
और मैं मोमिनों को (अपने पास से) दूर करने वाला नहीं। (114)
मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। (115)
बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116)
नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया। (117)

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

92	तुम परस्तिश करते थे	कहां हैं वह जो	उन्हें	और कहा जाएगा	91	गुमराहों के लिए	दोज़ख़	और ज़ाहिर कर दी जाएगी

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا

पस औन्धे मुँह डाले जाएंगे उस में	93	या बदला ले सकते हैं	वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं	क्या	अल्लाह के सिवा

هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا

उस (जहन्नम) में	और वह	वह कहेंगे	95	सब के सब	इब्लीस	और लशकर (जमा)	94	और गुमराह	वह

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ

हम बराबर ठहराते थे तुम्हें	जब	97	खुली	गुमराही	अलबत्ता में	बेशक हम थे	क़सम अल्लाह की	96	झगड़ते होंगे

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	पस नहीं हमारे लिए	99	मुज्रिम (जमा)	मगर (सिर्फ़)	और नहीं गुमराह किया हमें	98	सारे जहानों के रब के साथ

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मोमिन (जमा)	से	तो हम होते	लौटना	कि हमारे लिए	पस काश	101	ग़म ख़ार	कोई दोस्त	और न

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और बेशक	103	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं है	अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ ع ٥ ٣٦ ٩

उन से	जब कहा	105	रसूलों को	नूह (अ) की क़ौम	झुटलाया	104	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

पस डरो अल्लाह से	107	रसूल अमानत दार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	106	तुम डरते	क्या नहीं	नूह (अ)	उन के भाई

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى

पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा अजर	नहीं	अजर	कोई	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	108	और मेरी इताअ़त करो

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

जब कि तेरी पैरवी की	तुझ पर	क्या हम ईमान ले आएं	वह बोले	110	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	109	सारे जहां का पालने वाला

الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾ اِنْ حِسَابُهُمْ

उन का हिसाब	नहीं	112	वह करते थे	उस की जो	और मुझे क्या इल्म	कहा (नूह अ) ने	111	रज़ीलों ने

اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا

नहीं मैं	114	मोमिन (जमा)	हांकने वाला (दूर करने वाला)	मैं	और नहीं	113	तुम समझो	अगर	मेरे रब पर	मगर (सिर्फ़)

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ

तो ज़रूर होंगे	ऐ नूह (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह	115	साफ़ तौर पर	डराने वाला	मगर-सिर्फ़

مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

117	मुझे झुटलाया	मेरी क़ौम	बेशक	ऐ मेरे रब	(नूह अ ने) कहा	116	संगसार किए जाने वाले	से

النصف فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِىْ وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118	ईमान वाले	से	मेरे साथी	और जो	और नजात दे मुझे	एक खुला फ़ैसला	और उन के दरमियान	मेरे दरमियान	पस फ़ैसला कर दे

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

उस के बाद	ग़र्क़ कर दिया हम ने	फिर	119	भरी हुई	कश्ती में	उस के साथ	और जो	तो हम ने नजात दी उसे

الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	120	बाक़ियों को

ع ١٨ ٦ ١٠ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادُ ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

123	रसूल (जमा)	आद	झुटलाया	122	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

125	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	124	क्या तुम डरते नहीं	हूद (अ)	उन के भाई	उन से	जब कहा

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَاۤ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	उस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	126	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	खेलने को (बिला ज़रूरत)	एक निशानी	हर बुलन्दी पर	क्या तुम तामीर करते हो	127	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर (सिर्फ़)

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ

गिरिफ़्त करते हो तुम	तुम गिरिफ़्त करते हो	और जब	129	तुम हमेशा रहोगे	शायद तुम	मज़बूत शानदार महल	और तुम बनाते हो

جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىْۤ اَمَدَّكُمْ

मदद की तुम्हारी	वह जिस ने	और डरो	131	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	130	जाबिर बन कर

بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

134	और चश्मे	और बाग़ात	133	और बेटों	मवेशियों से	तुम्हारी मदद की	132	उस से जो तुम जानते हो

اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَوَعَظْتَ

ख़ाह तुम नसीहत करो	हम पर	बराबर	वह बोले	135	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ

اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	137	अगले लोग	आदत	मगर	नहीं है	136	नसीहत करने वाले	से	या न हो तुम

نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें	पस उन्हों ने झुटलाया उसे	138	अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से	हम

ع ١٨ ٧ ١١ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

140	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	139	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं थे

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

142	क्या तुम डरते नहीं	सालेह (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब	141	रसूल (जमा)	समूद	झुटलाया

पस मेरे और उन के दरमियान एक खुला फ़ैसला फ़रमा दे, और मुझे नजात दे, और (उन्हें) जो मेरे साथी ईमान वाले हैं। (118)
तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई कश्ती में सवार थे (उन्हें) नजात दी। (119)
फिर उस के बाद हम ने बाक़ियों को ग़र्क़ कर दिया। (120)
बेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (122)
(क़ौमे) आद ने रसूलों को झुटलाया। (123)
जब उन से उन के भाई हूद (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (124)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (125)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (126)
और मैं तुम से कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (127)
क्या तुम हर बुलन्दी पर बिला ज़रूरत एक निशानी तामीर करते हो? (128)
और तुम बनाते हो मज़बूत, शानदार महल कि शायद तुम हमेशा रहोगे। (129)
और जब तुम (किसी पर) गिरिफ़्त करते हो तो जाबिर (ज़ालिम) बन कर गिरिफ़्त करते हो। (130)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (131)
और उस से डरो जिस ने उस से तुम्हारी मदद की जो तुम जानते हो। (132)
(यानी) मवेशियों और बेटों से तुम्हारी मदद की। (133)
और बाग़ात और चश्मों से। (134)
बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डराता हूँ। (135)
वह बोले, बराबर है हम पर ख़ाह तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। (136)
(कुछ भी) नहीं है, मगर आदत है अगले लोगों की। (137)
और हम अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से नहीं। (138)
फिर उन्हों ने उसे झुटलाया और हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है और न थे उन के अक्सर ईमान लाने वाले। (139)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (140)
(क़ौमे) समूद ने रसूलों को झुटलाया। (141)
जब उन में से उन के भाई सालेह (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (142)

बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (143)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (144)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन पर है। (145)
क्या तुम यहां की चीज़ों (नेमतों) में बेफ़िक्र छोड़ दिए जाओगे? (146)
बाग़ात और चश्मों में। (147)
और खेतियों और नख़्लिस्तानों में जिन के ख़ोशे रस भरे हैं। (148)
और तुम ख़ुश हो कर पहाड़ों से घर तराशते हो। (149)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (150)
और तुम हद से बढ़ जाने वालों का कहा न मानो। (151)
वह जो फ़साद करते हैं ज़मीन में, और इस्लाह नहीं करते। (152)
उन्हों ने कहा इस के सिवा नहीं कि तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)
तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक बशर हो, पस अगर तुम सच्चे लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई निशानी ले आओ। (154)
सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है, एक मुअ़य्यन दिन उस के पानी पीने की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे लिए पानी पीने की बारी है। (155)
और उसे बुराई से हाथ न लगाना वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े दिन का अ़ज़ाब। (156)
फिर उन्हों ने उस की कूचें काट दीं पस पशेमान रह गए। (157)
फिर उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक उस (वाक़े) में अलबत्ता निशानी (बड़ी इब्रत) है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (158)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (159)
क़ौमे लूत (अ) ने रसूलों को झुटलाया। (160)
(याद करो) जब उन के भाई लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (161)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (162)
पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (163)
और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (164)
क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ेली) के लिए आते हो? दुनिया जहानों में से। (165)
और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۙ﴿۱۴۳﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ۚ﴿۱۴۴﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ

इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	144	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से	143	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۭ﴿۱۴۵﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِیْ مَا هٰهُنَاۤ

जो यहां है	में	क्या छोड़ दिए जाओगे तुम?	145	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर

اٰمِنِیْنَ ۙ﴿۱۴۶﴾ فِیْ جَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ ۙ﴿۱۴۷﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِیْمٌ ۚ﴿۱۴۸﴾

148	नर्म ओ नाज़ुक	उन के ख़ोशे	और खजूरें	और खेतियां	147	और चश्मे	बाग़ात में	146	बेफ़िक्र

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا فٰرِهِیْنَ ۚ﴿۱۴۹﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ۚ﴿۱۵۰﴾

150	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो अल्लाह से	149	ख़ुश हो कर	घर	पहाड़ों से	और तुम तराशते हो

وَلَا تُطِیْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِیْنَ ۙ﴿۱۵۱﴾ الَّذِیْنَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ

ज़मीन	में	फ़साद करते हैं	जो लोग	151	हद से बढ़ जाने वाले	हुक्म	और न कहा मानो

وَلَا یُصْلِحُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ ۚ﴿۱۵۳﴾ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ

मगर (सिर्फ़) एक बशर	तुम नहीं	153	सिहरज़दा लोग	से	तुम	इस के सिवा नहीं	उन्हों ने कहा	152	और इस्लाह नहीं करते

مِّثْلُنَا ۚۖ فَاْتِ بِاٰیَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۱۵۴﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا

उस के लिए	ऊँटनी	यह	उस ने कहा	154	सच्चे लोग से	तू	अगर	कोई निशानी	पस लाओ	हम जैसा

شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۚ﴿۱۵۵﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَیَاْخُذَكُمْ

सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा	बुराई से	और उसे हाथ न लगाना	155	दिन मालूम	एक बारी पानी पीने की	और तुम्हारे लिए	पानी पीने की बारी

عَذَابُ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۵۶﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِیْنَ ۙ﴿۱۵۷﴾ فَاَخَذَهُمُ

फिर उन्हें आ पकड़ा	157	पशेमान	पस रह गए	फिर उन्हों ने कूचें काट दीं उस की	156	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵۸﴾

158	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	है	और नहीं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	अ़ज़ाब

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۵۹﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِیْنَ ۚۖ﴿۱۶۰﴾ ع ١٩ ١٢ ٨

160	रसूलों को	क़ौमे लूत (अ)	झुटलाया	159	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ﴿۱۶۱﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۙ﴿۱۶۲﴾

162	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	161	क्या तुम डरते नहीं	लूत (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿۱۶۳﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	163	और मेरी इताअ़त करो	पस तुम डरो अल्लाह से

اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ﴿۱۶۴﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱۶۵﴾

165	तमाम जहानों	से	मर्दों के पास	क्या तुम आते हो	164	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾

166	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारा रब	तुम्हारे लिए	जो उस ने पैदा किया	और तुम छोड़ते हो

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّىْ

बेशक मैं	उस ने कहा	167	मुख़्रिज (बाहर निकाले जाने वाले)	से	अलबत्ता तुम ज़रूर होगे	ऐ लूत (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह

لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِىْ وَاَهْلِىْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ

तो हम ने नजात दी उसे	169	वह करते हैं	उस से जो	और मेरे घर वालों	मुझे नजात दे	ऐ मेरे रब	168	नफ़्रत करने वाले	से	तुम्हारे अ़मल से

وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

172	दूसरे	फिर हम ने हलाक कर दिया	171	पीछे रह जाने वालों में	एक बुढ़िया	सिवाए	170	सब	और उस के घर वाले

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक	173	डराए गए	बारिश	पस बुरी	एक बारिश	उन पर	और हम ने बारिश बरसाई

ع ٩ ١٦ ١٣ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾

175	निहायत मेह्रबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	174	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ

शुऐब (अ)	उन्हें	जब कहा	176	रसूल (जमा)	एयका (बन) वाले	झुटलाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

179	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो तुम अल्लाह से	178	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	177	क्या तुम डरते नहीं

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾

180	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

तराज़ू से	और वज़्न करो	181	नुक़्सान देने वाले	से	और न हो तुम	माप	तुम पूरा करो

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और न फिरो	उन की चीज़ें	लोग	और न घटाओ	182	ठीक सीधी

مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾

184	पहली	और मख़्लूक़	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	और डरो	183	फ़साद मचाते हुए

قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

हम जैसा	एक बशर	मगर-सिर्फ़	और नहीं तू	185	सिह्रज़दा (जमा)	से	तू	इस के सिवा नहीं	वह बोले (कहने लगे)

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से-का	एक टुकड़ा	हम पर	सो तू गिरा	186	झूटे	अलबत्ता-से	और अलबत्ता हम गुमान करते हैं तुझे

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّىْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने झुटलाया उसे	188	तुम करते हो	जो कुछ	ख़ूब जानता है	मेरा रब	कहा	187	सच्चे	से	अगर तू है

فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

189	बड़ा (सख़्त) दिन	अ़ज़ाब	था	बेशक वह	साइबान वाला दिन	अ़ज़ाब	पस पकड़ा उन्हें

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167)
उस ने कहा बेशक मैं तुम्हारे फ़ेले (बद) से नफ़्रत करने वालों में से हूँ। (168)
ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के वबाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169)
तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170)
सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171)
फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172)
और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई। पस किया ही बुरी बारिश (उन पर जिन्हें अ़ज़ाब से) डराया गया। (173)
बेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेह्रबान है। (175)
झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176)
(याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (179)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (180)
तुम माप पूरा करो, और नुक़्सान देने वालों में से न हो। (181)
और वज़्न करो ठीक सीधी तराज़ू से। (182)
और लोगों को उन की चीज़े घटा कर न दो, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183)
और डरो उस (ज़ाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख़्लूक़ को। (184)
कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिह्रज़दा लोगों में से है। (185)
और तू सिर्फ़ हम जैसा एक बशर है, और अलबत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186)
सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187)
शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188)
तो उन्हों ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइबान वाले दिन अ़ज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक वह बडे सख़्त दिन का अ़ज़ाब था। (189)

बेशक उस में निशानी है, और उन के अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190) और बेशक तेरा रब ग़ालिब है, निहायत मेह्रबान। (191) और बेशक यह (क़ुरआन) सारे जहानों के रब का उतारा हुआ है। (192) उस को ले कर उतरा है जिब्रील अमीन (अ)। (193) तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर सुनाने वालों में से हो। (194) रोशन वाज़ेह अ़रबी ज़बान में। (195) और बेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले पैग़म्बरों के सहीफ़ों में है। (196) क्या यह उन के लिए एक निशानी नहीं? कि इसे जानते हैं उल्माए बनी इस्राईल। (197) और अगर हम इसे किसी ग़ैर अ़रबी (ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198) फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता (फिर भी) वह इस पर ईमान लाने वाले न होते (ईमान न लाते)। (199) इसी तरह हम ने मुज्रिमों के दिलों में इन्कार दाख़िल कर दिया है। (200) वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब (न) देख लें। (201) तो वह उन पर अचानक आजाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202) फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी जाएगी। (203) पस क्या वह हमारे अ़ज़ाब को जल्दी चाहते हैं? (204) क्या तुम ने देखा (ज़रा देखो)? अगर हम उन्हें बरसों फ़ाइदा पहुँचाएं। (205) फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें वईद की जाती थी। (206) जिस से वह फ़ाइदा उठाते थे उन के क्या काम आएगा? (207) और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उस के लिए डराने वाले। (208) नसीहत के लिए (पहले भेजे) और हम ज़ुल्म करने वाले न थे। (209) और इस (क़ुरआन) को शैतान ले कर नहीं उतरे। (210) और उन को सज़ावार नहीं (वह उस के क़ाबिल नहीं) और न वह (ऐसा) कर सकते हैं। (211) बेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर कर दिए गए हैं। (212) पस अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न पुकारो कि मुबतिलाए अ़ज़ाब लोगों में से हो जाओ। (213) और तुम अपने क़रीब तरीन रिश्तेदारों को डराओ। (214) और उस के लिए अपने बाज़ू झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की मोमिनों में से। (215)

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	और बेशक	190	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और न थे	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ ع ١٠ / ١٦ / ١٤

इस के साथ (ले कर) उतरा	192	सारे जहानों का रब	अलबत्ता उतारा हुआ	और बेशक यह	191	निहायत मेह्रबान	ग़ालिब	वह

الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ

ज़बान में	194	डर सुनाने वालों में से	ताकि तुम हो	तुम्हारे दिल	पर	193	जिब्रील अमीन (अ)

عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً

एक निशानी	उन के लिए	क्या नहीं है	196	पहले (पैग़म्बर)	सहीफ़े	में	और बेशक यह	195	रोशन (वाज़ेह)	अ़रबी

اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾

198	अ़जमी (ग़ैर अ़रबी)	किसी पर	हम नाज़िल करते इसे	और अगर	197	बनी इस्राईल	उल्मा	कि जानते हैं इस को

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

यह चलाया है (इन्कार दाख़िल कर दिया है) दिलों में	इसी तरह	199	ईमान लाने वाले	इस पर	वह होते	न	उन के सामने	फिर वह पढ़ता इसे

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ

तो वह आजाएगा उन पर	201	दर्दनाक अ़ज़ाब	वह देख लेंगे	यहां तक कि	इस पर	वह ईमान न लाएंगे	200	मुज्रिमीन

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

203	मोहलत दी जाएगी	हम - हमें	क्या	फिर वह कहेंगे	202	ख़बर (भी) न होगी	और उन्हें	अचानक

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ

फिर	205	कई बरसों	हम उन्हें फ़ाइदा पहुँचाएं	अगर	क्या तुम ने देखा?	204	वह जल्दी चाहते हैं	क्या पस हमारे अ़ज़ाब को

جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾

207	वह फ़ाइदा उठाते थे	जो (जिस से)	उन के	क्या काम आएगा?	206	उन्हें वईद की जाती थी	जो	पहुँचे उन पर

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا عدد المتقدمین ٩ / ١٢

और न थे हम	नसीहत के लिए	208	डराने वाले	उस के लिए	मगर	किसी बस्ती को	और नहीं हलाक किया हम ने

ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ

उन को	और सज़ा वार नहीं	210	शैतान (जमा)	इसे ले कर	और नहीं उतरे	209	ज़ुल्म करने वाले

وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ

पस न पुकारो	212	दूर कर दिए गए हैं	सुनना	से	बेशक वह	211	और न वह कर सकते हैं

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ

अपने रिश्तेदार	और तुम डराओ	213	मुबतिलाए अ़ज़ाब	से	कि हो जाओ	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ

الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾

215	मोमिनीन	से	तुम्हारी पैरवी की	उस के लिए जिस ने	अपना बाज़ू	और झुकाओ	214	क़रीब तरीन

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	पर	और भरोसा करो	216	तुम करते हो	उस से जो	बेशक मैं बेज़ार हूँ	तो कह दें	वह तुम्हारी नाफ़रमानी करें	फिर अगर

الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِىْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾

219	सिजदा करने वाले (नमाज़ी)	में	और तुम्हारा फिरना	218	तुम खड़े होते हो	जब	तुम्हें देखता है	वह जो	217	निहायत मेह्रबान

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾

221	शैतान (जमा)	उतरते हैं	किस पर	मैं तुम्हें बताऊँ	क्या	220	जानने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक वह

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾

223	झूटे	और उन में अक्सर	सुनी सुनाई बात	डाल दिए हैं	222	गुनाहगार	बुहतान लगाने वाला	हर	पर	वह उतरते हैं

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِىْ كُلِّ وَادٍ

हर वादी में	कि वह	क्या तुम ने नहीं देखा	224	गुमराह लोग	उन की पैरवी करते हैं	और शायर (जमा)

يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	मगर	226	वह करते नहीं	जो	वह कहते हैं	और यह कि वह	225	सरगर्दां फिरते हैं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	और उन्हों ने बदला लिया	बकसरत	और अल्लाह को याद किया	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ع ١١ ٣٦ ١٥

مَا ظُلِمُوْا ۭ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

227	वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है)	लौटने की जगह (करवट)	किस	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और अ़नक़रीब जान लेंगे	कि उन पर ज़ुल्म हुआ

آيَاتُهَا ٩٣ ❀ سُوْرَةُ النَّمْلِ (٢٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकुआत 7 — (27) सूरतुन नमल — चीटीयाँ — आयात 93

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ هُدًى

हिदायत	1	रोशन, वाज़ेह	और किताब	क़ुरआन	आयतें	यह	ता सीन

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम रखते हैं	जो लोग	2	मोमिनों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	बेशक	3	यक़ीन रखते हैं	वह	आख़िरत पर	और वह

زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	यही लोग	4	भटकते फिरते हैं	पस वह	उन के अ़मल	आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए

لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾

5	सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले	वह	आख़िरत में	और वह	अ़ज़ाब	बुरा	उन के लिए

फिर अगर तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दें जो तुम करते हो बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ। (216) और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेह्रबान पर। (217) जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218) और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219) बेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220) क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221) वह उतरते हैं बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222) (शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223) और (रहे) शायर उन की पैरवी गुमराह लोग करते हैं। (224) क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दां फिरते हैं। (225) और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226) सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और अल्लाह को याद किया बकसरत, और उन्हों ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर ज़ुल्म हुआ, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया वह अ़नक़रीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तासीन - यह आयतें हैं क़ुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1) हिदायत और ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2) जो लोग नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (3) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अ़मल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4) यही हैं वह लोग जिन के लिए बुरा अ़ज़ाब है, और वह आख़िरत में सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले हैं। (5)

الثلثة

और बेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ़ से दिया जाता है। (6)
(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा बेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई ख़बर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)
पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) निदा दी गई कि बरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफ़रोज़ है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)
ऐ मूसा (अ) हक़ीक़त यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला हूँ। (9)
और तू अपना असा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू ख़ौफ़ न खा, बेशक मेरे पास रसूल ख़ौफ़ नहीं खाते। (10)
मगर जिस ने ज़ुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (11)
और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशानियों में से (यह दो मोजिज़े ले कर) फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़ (जा), बेशक वह नाफ़रमान क़ौम हैं। (12)
फिर जब उन के पास आईं हमारी निशानियां आँखे खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13)
हालांकि उन के दिलों को उस का यक़ीन था, उन्हों ने उस का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14)
और तहक़ीक़ हम ने दिया दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्हों ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर। (15)
और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, बेशक यह खुला फ़ज़्ल है। (16)

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	जब	6	इल्म वाला	हिक्मत वाला	नज़्दीक (जानिब) से	कुरआन	दिया जाता है	और बेशक तुम

لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ

अंगारा	शोला	या लाता हूँ तुम्हारे पास	कोई ख़बर	उस की	मैं अभी लाता हूँ	एक आग	मैं ने देखी है	बेशक मैं	अपने घर वालों से

لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَاۗءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ

आग में	जो	कि बरकत दिया गया	आवाज़ दी गई	उस (आग) के पास आया	पस जब	7	तुम सेंको	ताकि तुम

وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ

मैं अल्लाह	हक़ीक़त यह	ऐ मूसा (अ)	8	परवरदिगार सारे जहानों का	और पाक है अल्लाह	उस के आस पास	और जो

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ

सांप	गोया कि वह	लहराता हुआ	उसे देखा	पस जब उस ने	अपना असा	और तू डाल	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब

وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۣ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ

मेरे पास	ख़ौफ़ नहीं खाते	बेशक मैं	तू ख़ौफ़ न खा	ऐ मूसा (अ)	और मुड़ कर न देखा	वह लौट गया पीठ फेर कर

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّىْ

तो बेशक मैं	बुराई	बाद	भलाई	फिर उस ने बदल डाला	ज़ुल्म किया	जो-जिस	मगर	10	रसूल (जमा)

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ

से-के	सफ़ेद-रोशन	वह निकलेगा	अपने गरेबान में	अपना हाथ	और दाख़िल कर (डाल)	11	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

غَيْرِ سُوْۗءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا

हैं	बेशक वह	और उस की क़ौम	फ़िरऔन	तरफ़	नौ (9) निशानियां	में	किसी ऐब के बग़ैर

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

यह	वह बोले	आँखें खोलने वाली	हमारी निशानियां	आईं उन के पास	फिर जब	12	नाफ़रमान	क़ौम

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۭ

और तकब्बुर से	ज़ुल्म से	उन के दिल	हालांकि उस का यक़ीन था	उस का	और उन्हों ने इन्कार किया	13	जादू खुला

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع ١٤ ١٦

दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ दिया हम ने	14	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो देखो

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰي كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

अपने बन्दे	से	अक्सर	पर	फ़ज़ीलत दी हमें	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और उन्हों ने कहा	बड़ा इल्म	और सुलेमान (अ)

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

हमें सिखाई गई	ऐ लोगो	और उस ने कहा	दाऊद (अ)	सुलेमान (अ)	और वारिस हुआ	15	मोमिनीन

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

16	खुला	फ़ज़्ल	अलबत्ता वही	यह	बेशक	हर चीज़ से	से	और हमें दी गई	परिन्दे (जमा)	बोली

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

और जमा किया गया	सुलेमान (अ) के लिए	उस का लशकर	से	जिन्न	और इन्सान	और परिन्दे	पस वह	तरतीब में रखे जाते थे	17

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

यहां तक कि	जब वह	आए	पर	चींटियों का मैदान	कहा	एक चींटी	ऐ चींटियों	तुम दाख़िल हो

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

अपने घरों (बिलों) में	न रौन्द डाले तुम्हें	सुलेमान (अ)	और उस का लशकर	और वह	न जानते हों (उन्हें मालूम न हो)	18

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ

तो वह मुसकुराया	हँसते हुए	से	उस की बात	और कहा	ऐ मेरे रब	मुझे तौफ़ीक़ दे	कि मैं शुक्र अदा करूँ

نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا

तेरी नेमत	वह जो	तू ने इनआम फ़रमाई	मुझ पर	और पर	मेरे माँ बाप	और यह कि	मैं नेक काम करूँ

تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

तू वह पसंद करे	और मुझे दाख़िल फ़रमा	अपनी रहमत से	में	अपने बन्दे	नेक (जमा)	19	और उस ने ख़बर ली (जाइज़ा लिया)

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

परिन्दे	तो उस ने कहा	क्या है	मैं नहीं देखता	हुद हुद	क्या वह है	से	ग़ाइब हाने वाले	20

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ

अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा	सज़ा	सख़्त	या उसे ज़ुबह कर डालूँगा	या उसे ज़रूर लानी चाहिए	सनद (कोई वजह)

مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ

वाज़ेह (माकूल)	21	सो उस ने देर की	थोड़ी सी	फिर कहा	मैं ने मालूम किया है	वह जो	तुम को मालूम नहीं वह

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ ۢبِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ

और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	से	सबा	एक ख़बर	यक़ीनी	22	बेशक मैं ने	पाया (देखा)	एक औरत	वह बादशाहत करती है उन पर

وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

और दी गई है	हर शै	और उस के लिए	एक तख़्त	बड़ा	23	मैं ने पाया है उसे	और उस की क़ौम

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ

वह सिजदा करते हैं	सूरज को	अल्लाह के सिवा	और आरास्ता कर दिखाए हैं	उन्हें	शैतान	उन के आमाल

فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ

पस रोक दिया उन्हें	रास्ते से	सो वह	राह नहीं पाते	24	कि नहीं	वह सिजदा करते अल्लाह को

الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ

वह जो	निकालता है	छुपी हुई	आस्मानों में	और ज़मीन	और जानता है	जो तुम छुपाते हो

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩ ﴿٢٦﴾

और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	25	अल्लाह	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	रब	अर्शे अज़ीम	26

السجدة ٨

और सुलेमान (अ) के लिए उस का लशकर जिन्नों, इन्सानों और परीन्दों का जमा किया गया, पस वह तरतीब में रखे जाते थे। (17)
यहां तक कि वह चींटियों के मैदान में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों! तुम अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले और उन्हें ख़बर भी न हो। (18)
तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस की बात से, और कहा ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर इनआम फ़रमाई है, और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा ले। (19)
और उस ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद हुद को नहीं देखता, क्या वह ग़ाइब हो जाने वालों में से है? (20)
अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख़्त सज़ा दूँगा या उसे ज़ुबह कर डालूँगा, या उसे ज़रूर कोई माकूल वजह मेरे पास लानी (पेश करनी) चाहिए। (21)
सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर की, फिर कहा मैं ने मालूम किया है वह जो तुम को मालूम नहीं, और मैं तुम्हारे पास सबा से एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ। (22)
बेशक मैं ने एक औरत को देखा है, वह उन पर बादशाहत करती है, और (उसे) हर शै दी गई है, और उस के लिए एक बड़ा तख़्त है। (23)
मैं ने उसे और उस की क़ौम को अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़ कर) सूरज को सिजदा करते पाया है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता कर दिखाया है उन के अ़मल, पस उन्हें (सीधे) रास्ते से रोक दिया है सो वह राह नहीं पाते। (24)
और अल्लाह को (क्यों) सिजदा नहीं करते? वह जो आस्मानों में और ज़मीन में छुपी हुई (चीज़ों को) निकालता है, और जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (25)
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्शे अ़ज़ीम का मालिक है। (26)

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27) मेरा यह ख़त ले जा, पस यह उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं! (28) वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! बेशक मेरी तरफ़ एक बा वक़्अत ख़त डाला गया है। (29) बेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ़) से है और बेशक वह (यूँ है) "अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला निहायत मेहरबान है"। (30) यह कि मुझ पर (मेरे मुक़ाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फ़रमांबरदार हो कर। (31) वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैस्ला करने वाली नहीं (फ़ैस्ला नहीं करती) जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32) वह बोले हम कुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख़्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33) वह बोली, बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं, और वहां के मुअ़ज़्ज़िज़ीन को ज़लील कर दिया करते हैं, और वह उड़ी तरह करते हैं। (34) और बेशक मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते हैं क़ासिद। (35) पस जब सुलेमान (अ) के पास क़ासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो? पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफ़े से ख़ुश होते हो। (36) तू उन की तरफ़ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुक़ाबले) की उन्हें ताक़त न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे। और वह ख़ार होंगे। (37) सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख़्त मेरे पास लाएगा? इस से क़ब्ल कि वह मेरे पास फ़रमांबरदार हो कर आएं। (38) कहा जिन्नात में से एक क़वी हैकल ने, बेशक मैं उस को आप के पास इस से क़ब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं बेशक उस पर अलबत्ता कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ

मेरा ख़त	ले जा	27	झूटे	से	तू है	या	क्या तू ने सच कहा	उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ

वह कहने लगी	28	वह जवाब देते हैं	क्या	फिर देख	उन से	फिर लौट आ	उन की तरफ़	पस उसे डाल दे	यह

يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ

और बेशक वह	सुलेमान (अ)	से	बेशक वह	29	बा वक़्अत	ख़त	मेरी तरफ़	डाला गया	बेशक मेरी तरफ़	ऐ सरदारो!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ع ٢/١٧ ١٧

31	फ़रमांबरदार हो कर	और मेरे पास आओ	मुझ पर	यह कि तुम सरकशी न करो	30	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	नाम से अल्लाह के

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا

किसी मामला	फ़ैसला करने वाली	मैं नहीं हूँ	मेरे मामले में	मुझे राए दो	ऐ सरदारो!	वह बोली

حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ

और बड़े लड़ने वाले	कुव्वत वाले	हम	वह बोले	32	तुम मौजूद हो	जब तक

وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

बादशाह (जमा)	बेशक	वह बोली	33	तुझे हुक्म करना है	क्या	तू देख ले	और फ़ैसला तेरी तरफ़ (तेरे इख़्तियार में)

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً

ज़लील	वहां के	मुअ़ज़्ज़िज़ीन	और कर दिया करते हैं	उसे तबाह कर देते हैं	कोई बस्ती	जब दाख़िल होते हैं

وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

क्या (जवाब) ले कर लौटते हैं	फिर देखती हूँ	एक तोहफ़ा	उन की तरफ़	भेजने वाली	और बेशक मैं	34	वह करते हैं	और उसी तरह

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ

पस जो	माल से	क्या तुम मेरी मदद करते हो	उस ने कहा	सुलेमान (अ)	आया	पस जब	35	क़ासिद

اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ

तू लौट जा	36	ख़ुश होते हो	अपने तोहफ़े से	तुम	बल्कि	उस ने तुम्हें दिया	उस से जो	बेहतर	मुझे दिया अल्लाह ने

اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ

वहां से	और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उस की	उन को	न ताक़त होगी	ऐसा लशकर	हम ज़रूर लाएंगे उन पर	उन की तरफ़

اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا

उस का तख़्त	मेरे पास लाएगा	तुम में से कौन	उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो!	37	ख़ार होंगे	और वह	ज़लील कर के

قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ

मैं आप के पास ले आऊंगा	जिन्नात से	एक क़वी हैकल	कहा	38	फ़रमांबरदार हो कर	वह आए मेरे पास	कि	इस से क़ब्ल

بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

39	अमानतदार	अलबत्ता क़ुव्वत वाला	उस पर	और बेशक मैं	अपनी जगह से	कि आप खड़े हों	इस से क़ब्ल	उस को

قَالَ الَّذِىْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ

क़ब्ल	मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा	मैं	किताब	से-का	इल्म	उस के पास	उस ने जो	कहा

اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ

उस ने कहा	अपने पास	रखा हुआ	पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा	तुम्हारी निगाह (पलक झपके)	तुम्हारी तरफ़	कि फिर आए

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّىْ ۖۗ لِيَبْلُوَنِىْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ

और जिस	या नाशुक्री करता हूँ	आया मैं शुक्र करता हूँ	ताकि मुझे आज़माए	मेरे रब का फ़ज़्ल	से	यह

شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّىْ غَنِىٌّ

बेनियाज़	मेरा रब	तो बेशक	नाशुक्री की	और जिस	अपनी ज़ात के लिए	शुक्र करता है	तो पस वह	शुक्र किया

كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِىْٓ اَمْ تَكُوْنُ

या होती है	आया वह राह पाती (समझ जाती) है	हम देखें	उस का तख़्त	उस के लिए	शकल बदल दो	उस ने कहा	40	करम करने वाला

مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا

क्या ऐसा ही है	कहा गया	वह आई	पस जब	41	राह नहीं पाते	जो लोग	से

عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا

इस से क़ब्ल	इल्म	और हमें दिया गया	वही	गोया कि यह	वह बोली	तेरा तख़्त

وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के सिवा	वह परस्तिश करती थी	जो	और उस ने उस को रोका	42	मुसलमान-फ़रमांबरदार	और हम हैं

اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِى الصَّرْحَ ۚ

महल	तू दाख़िल हो	उस से	कहा गया	43	काफ़िरों	क़ौम से	थी	बेशक वह

فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ

बेशक यह	उस ने कहा	अपनी पिंडलियाँ	से	और खोल दी	गहरा पानी	उसे समझा	उस ने उस को देखा	पस जब

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ۬ قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ

अपनी जान	बेशक मैं ने ज़ुल्म किया	ऐ मेरे रब	वह बोली	शीशे (जमा)	से	जुड़ा हुआ	महल

٣ ع ١٣ ١٨ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى

तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	44	तमाम जहानों का रब	अल्लाह के लिए	सुलेमान (अ)	साथ	और मैं ईमान लाई

ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ

दो फ़रीक़ हो गए	वह	पस नागहां	अल्लाह की इबादत करो	कि	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

पहले	बुराई के लिए	तुम जल्दी करते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	45	बाहम झगड़ने लगे

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	तुम पर रहम किया जाए	ताकि तुम	तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से	क्यों नहीं	भलाई

उस शख़्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से क़ब्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वह मुझे आज़माए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम करने वाला है। (40) उस ने कहा उस (मलिका के इम्तिहान के लिए) उस के तख़्त की शकल बदल दो, हम देखें कि आया वह समझ जाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41) पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांबरदार)। (42) और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43) उस से कहा गया कि महल में दाख़िल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएंचे उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं, उस (सुलेमान अ) ने कहा बेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीक़े पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44) और तहक़ीक़ हम ने (क़ौम) समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक़ हो गए बाहम झगड़ने लगे। (45) उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ

बल्कि	अल्लाह के पास	तुम्हारी बदशगुनी	उस ने कहा	तेरे साथ (साथी)	और वह जो	तुझ से	बुरा शगुन	वह बोले

اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ

वह फ़साद करते थे	शख़्स	नौ (9)	शहर में	और थे	47	आज़माए जाते हो	एक क़ौम	तुम

فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

अलबत्ता हम ज़रूर शबखून मारेंगे उस पर	अल्लाह की	तुम बाहम क़सम खाओ	वह कहने लगे	48	और इस्लाह नहीं करते थे	ज़मीन (मुल्क) में

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता सच्चे हैं	और बेशक हम	उस के घर वाले	हलाकत के वक़्त	हम मौजूद न थे	उस के वारिसों से	फिर ज़रूर हम कह देंगे	और उस के घर वाले

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ

कैसा	पस देखो	50	न जानते थे	और वह	एक तदबीर	और हम ने खुफ़िया तदबीर की	एक तदबीर	और उन्हों ने मक्र किया

كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ

अब यह	51	सब को	और उन की क़ौम	हम ने तबाह करदिया उन्हें	कि हम	उन का मक्र	अन्जाम	हुआ

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	लोगों के लिए जो जानते हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	उन के ज़ुल्म के सबब	गिरे पड़े	उन के घर

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ

जब उस ने कहा	और लूत (अ)	53	और वह परहेज़गारी करते थे	वह ईमान लाए	वह लोग जो	और हम ने नजात दी

لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम	54	देखते हो	और तुम	बेहयाई	क्या तुम आगए	अपनी क़ौम से

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

लोग	तुम	बल्कि	औरतों के सिवा (औरतो को छोड़ कर)	शहवत रानी के लिए?	मर्दों के पास	आते हो

تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا

निकाल दो	उन्हों ने कहा	मगर-सिर्फ़ यह कि	उस की क़ौम	जवाब	था	पस न	55	जहालत करते हो

اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

सो हम ने उसे बचा लिया	56	पाकीज़गी पसंद करते हैं	लोग	बेशक वह	अपना शहर	से	लूत (अ) के साथी

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बरसाई	57	पीछे रह जाने वाले	से	हम ने उसे ठहरा दिया था	उस की बीवी	सिवाए	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ ع ۱۴ ۱۹

और सलाम	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	58	डराए गए	बारिश	सो क्या ही बुरा	एक बारिश	उन पर

عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ ءٰٓاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	वह शरीक ठहराते हैं	या जो	बेहतर	क्या अल्लाह	चुन लिया	वह जिन्हें	उस के बन्दों पर

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ़ से) है बल्कि तुम एक क़ौम हो (जो) आज़माए जाते हो। (47)
और शहर में थे नौ (9) शख़्स वह मुल्क में फ़साद करते थे, और इस्लाह न करते थे। (48)
वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की क़सम खाओ अलबत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबखून मारेंगे और फिर उस के वारिसों को कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे, और बेशक हम अलबत्ता सच्चे हैं। (49)
और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने (भी) एक खुफ़िया तदबीर की और वह न जानते थे (बेख़बर) थे। (50)
पस देखो उन के मक्र का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की क़ौम सब को हलाक कर डाला। (51)
अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के ज़ुल्म के सबब, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52)
और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53)
और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54)
क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55)
पस उस की क़ौम का जवाब सिर्फ़ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, बेशक यह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56)
सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57)
और हम ने उन पर एक बारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी बारिश थी डराए गए लोगों पर। (58)
आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)

الجزء ٢٠

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे लिए	और उतारा	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	भला कौन?

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

न था	बा रौनक़	बाग़ात	उस से	पस उगाए हम ने	पानी	आस्मान

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿۶۰﴾

60	कज रवी करते हैं	लोग	वह	बल्कि	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	उन के दरख़्त	कि तुम उगाओ	तुम्हारे लिए

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ

और (पैदा) किए	नदी नाले	उस के दरमियान	और (जारी) किया	क़रारगाह	ज़मीन	बनाया	भला कौन-किस

لَهَا رَوَاسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	आड़ (हदे फ़ासिल)	दो दर्या	दरमियान	और बनाया	पहाड़ (जमा)	उस के लिए

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ

वह उसे पुकारता है	जब	बेक़रार	क़ुबूल करता है	भला कौन	61	नहीं जानते	उन के अक्सर	बल्कि

وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	ज़मीन	नाइब (जमा)	और तुम्हें बनाता है	बुराई	और दूर करता है

قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ

ख़ुश्की	अन्धेरों में	तुम्हें राह दिखाता है	भला कौन	62	नसीहत पकड़ते हैं	जो	थोड़े

وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ

उस की रहमत	पहले	ख़ुशख़बरी देने वाली	हवाएं	चलाता है	और कौन	और समुन्दर

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۳﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

पहली बार पैदा करता है मख़्लूक़	भला कौन	63	यह शरीक ठहराते हैं	उस से जो	बरतर है अल्लाह	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मान से	तुम्हें रिज़्क़ देता है	और कौन	फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۶۴﴾

64	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी दलील	ले आओ तुम	फ़रमा दें	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ

ग़ैब	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं जानता	फ़रमा दें

اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۶۵﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

उन का इल्म	बल्कि थक कर रह गया	65	वह उठाए जाएंगे	कब	और वह नहीं जानते	सिवाए अल्लाह के

ع ٥ ٨ ١ فِى الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿۶۶﴾

66	अन्धे	उस से	वह	बल्कि	उस से	शक में	बल्कि वह	आख़िरत (के बारे) में

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से बा रौनक़ बाग़ उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख़्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रवी करते हैं। (60)

भला कौन है? जिस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हदे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (61)

भला कौन है? जो बेक़रार (की दुआ) क़ुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े हैं जो नसीहत पकड़ते हैं। (62)

भला कौन है जो ख़ुश्की (जंगल) और समुन्दर के अन्धेरों में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (बारिश) से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह बरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते है? (63)

भला कौन है जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64)

आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा ग़ैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आख़िरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65)

(कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में हैं, बल्कि वह उस से अन्धे हैं। (66)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا

क्या हम	और हमारे बाप दादा	मिट्टी	हम हो जाएंगे	क्या जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا

और हमारे बाप दादा	हम	यह-यही	तहक़ीक़ वादा किया गया हम से	67	निकाले जाएंगे अलबत्ता

مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا

चलो फिरो तुम	फ़रमा दें	68	अगले	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	इस से क़ब्ल

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	मुज्रिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	वह मक्र करते हैं	उस से जो	तंगी में	और आप (स) न हों	उन पर	और तुम ग़म न खाओ

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

फ़रमा दें	71	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	तुम जल्दी करते हो	वह जो-जिस	कुछ	तुम्हारे लिए	क़रीब	हो गया हो	कि	शायद

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	अलबत्ता फ़ज़्ल वाला	तुम्हारा रब	और बेशक

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا

और जो	उन के दिल	जो छुपी हुई है	खूब जानता है	तुम्हारा रब	और बेशक	73	शुक्र नहीं करते

يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ

में	मगर	और ज़मीन	आस्मानों में	ग़ाइब	कुछ	और नहीं	74	वह ज़ाहिर करते हैं

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल पर	बयान करता है	क़ुरआन	यह	बेशक	75	किताबे रोशन

اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ

और बेशक यह	76	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	वह	वह जो	अक्सर

لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	77	ईमान वालों के लिए	और रहमत	अलबत्ता हिदायत

يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

78	इल्म वाला	ग़ालिब	और वह	अपने हुक्म से	उन के दरमियान	फ़ैसला करता है

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

79	वाज़ेह हक़	पर	बेशक तुम	अल्लाह पर	पस भरोसा करो

और काफ़िरों ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम (क़ब्रों से) निकाले जाएंगे? **(67)**

तहक़ीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से क़ब्ल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहानियां हैं। **(68)**

आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुज्रिमों का! **(69)**

और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मक्र ओ फ़रेब करते हैं। **(70)**

और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। **(71)**

आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए क़रीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। **(72)**

और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। **(73)**

और बेशक तुम्हारा रब खूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते है। **(74)**

और कुछ ग़ाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। **(75)**

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। **(76)**

और बेशक यह (क़ुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। **(77)**

बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। **(78)**

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। **(79)**

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ

बेशक तुम	तुम नहीं सुना सकते	मुर्दों को	और तुम नहीं सुना सकते	बहरों को	पुकार

إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ

जब वह मुड़ जाएं	पीठ फेर कर	80	और तुम नहीं	हिदायत देने वाले	अन्धों को	से	उन की गुमराही

اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

नहीं	तुम सुनाते	मगर-सिर्फ़	जो	ईमान लाता है	हमारी आयतों पर	पस वह	फ़रमांबरदार	81

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

और जब	वाक़े (पूरा) हो जाएगा वादा (अ़ज़ाब)	उन पर	हम निकालेंगे	उन के लिए	एक जानवर	ज़मीन से

ع ٦ ١٦ ٢
تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

वह उन से बातें करेगा	क्यों कि लोग	थे	हमारी आयात पर	यक़ीन न करते	82

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ

और जिस दिन	हम जमा करेंगे	से	हर उम्मत	एक गिरोह	से जो	झुटलाते थे

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ

हमारी आयतों को	फिर वह	उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी	83	यहां तक	जब वह आजाएं	फ़रमाएगा	क्या तुम ने झुटलाया

بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

मेरी आयात को	हालांकि अहाता में नहीं लाए थे	उन को	इल्म के	या क्या	तुम करते थे	84

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

और वाक़े (पूरा) हो गया	वादा (अ़ज़ाब)	उन पर	इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया	पस वह	न बोल सकेंगे वह	85

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ

क्या वह नहीं देखते	कि हम	हम ने बनाया	रात	कि आराम हासिल करें	उस में	और दिन	देखने को

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ

बेशक	उस में	अलबत्ता निशानियां	उन लगों के लिए	ईमान रखते हैं	86	और जिस दिन	फूंक मारी जाएगी

فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

सूर में	तो घबरा जाएगा	जो	आस्मानों में	और जो	ज़मीन में

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ

सिवा	जिसे	अल्लाह चाहे	और सब	उस के आगे आएंगे	आ़जिज़ हो कर	87	और तू देखता है	पहाड़ (जमा)

تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ

तो ख़याल करता है उन्हें	जमा हुआ	और वह	चलेंगे	बादलों की तरह चलना	अल्लाह की कारीगरी

الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

वह जिस ने	ख़ूबी से बनाया	हर शै	बेशक वह	बाख़बर	उस से जो	तुम करते हो	88

बेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। (80)
और तुम अन्धों को उन की गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं। तुम सिर्फ़ (उस को) सुना सकते हो जो ईमान लाता है हमारी आयतों पर, पस वह फ़रमांबरदार हैं। (81)
और जब उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर, वह उन से बातें करेगा क्यों कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन न करते थे। (82)
और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह जमा करेंगे उन में से जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी। (83)
यहां तक कि जब वह आजाएंगे (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया था हालांकि तुम उन को (अपने) अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे (या बतलाओ) तुम क्या करते थे? (84)
और उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा हो गया, इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया था, पस वह बोल न सकेंगे। (85)
क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात को इस लिए बनाया कि वह उस में आराम हासिल करें और दिन देखने को (रोशन बनाया) बेशक उस में अलबत्ता उन लगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (86)
और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी आस्मानों में है और जो ज़मीन में हैं, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे और वह सब उस के आगे आजिज़ हो कर आएंगे। (87)
और तू पहाड़ों को देखता है तो उन्हें (अपनी जगह) जमा हुआ ख़याल करता है, और वह (क़ियामत के दिन) बादलों की तरह चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर शै को ख़ूबी से बनाया है बेशक वह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (88)

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे। (89)
और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ़ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90)
(आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शै, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91)
और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूँ। (92)
और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियां, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ता-सीम-मीम। (1)
यह वाज़ेह किताब (कुरआन) की आयतें है। (2)
हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरऔन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3)
बेशक फ़िरऔन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग (बनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को ज़ुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, बेशक वह मुफ़्सिदों में से (फ़सादी) था। (4)
और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेश्वा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ

उस दिन	घबराहट से	और वह	उस से	बेहतर	तो उस के लिए	किसी नेकी के साथ	जो आया

اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۭ هَلْ

क्या नहीं	आग में	उन के मुंह	औन्धे डाले जाएंगे	बुराई के साथ	आया	और जो	89	महफ़ूज़ होंगे

تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ

इस	रब	इबादत करूँ	कि	इसके सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया	90	तुम करते थे	जो	मगर-सिर्फ़	बदला दिए जाओगे

الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	हर शै	और उसी के लिए	उस ने मोहतरम बनाया	वह जिसे	शहर

الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ ۙ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ

अपनी ज़ात के लिए	वह हिदायत पाता है	तो इस के सिवा नहीं	हिदायत पाई	पस जो	मैं तिलावत करूँ कुरआन	और यह कि	91	मुस्लिमीन-फ़रमांबरदारों

وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और फ़रमा दें	92	डराने वालों में से (डराने वाला हूँ)	मैं	इस के सिवा नहीं	तो फ़रमा दें	गुमराह हुआ	और जो

سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١١ ٣

93	तुम करते हो	उस से जो	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	पस तुम पहचान लोगे उन्हें	अपनी निशानियां	वह जल्द दिखाएगा तुम्हें

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ سُوْرَةُ الْقَصَصِ (٢٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (28) सूरतुल क़सस किस्से — आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ

कुछ ख़बर (अहवाल)	तुम पर	हम पढ़ते हैं	2	वाज़ेह किताब	आयतें	यह	1	ता सीम मीम

مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	बेशक	3	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	ठीक ठीक	और फ़िरऔन	मूसा (अ)

عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً

एक गिरोह	कमज़ोर कर रखा था	अलग अलग गिरोह	उस के बाशिन्दे	और उस ने कर दिया	ज़मीन (मुल्क) में	सरकशी कर रहा था

مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

से	था	बेशक वह	उन की औरतों को	और ज़िन्दा छोड़ देता था	उन के बेटों को	ज़ुबह करता था	उन में से

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

कमज़ोर कर दिए गए थे	उन लोगों पर जो	हम एहसान करें	कि	और हम चाहते थे	4	मुफ़्सिद (जमा)

فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾ ۙ

5	वारिस (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	पेश्वा (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	ज़मीन (मुल्क) में

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन	और हम दिखा दें	ज़मीन (मुल्क) में	उन्हें	और हम क़ुदरत (हुकूमत) दें

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى

मूसा की माँ	तरफ़- को	और हम ने इल्हाम किया	6	वह डरते थे	जिस चीज़	उन से

اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ

और न डर	दर्या में	तो डालदे उसे	तू उस पर डरे	फिर जब	कि तू दूध पिलाती रह उसे

وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾

7	रसूलों	से	और उसे बना देंगे	तेरी तरफ़	उसे लौटा देंगे	बेशक हम	और न ग़म खा

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ

बेशक	और ग़म का बाइस	दुश्मन	उन के लिए	ताकि वह हो	फ़िरऔन के घर वाले	फिर उठा लिया उसे

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٨﴾ وَقَالَتِ

और कहा	8	ख़ताकार (जमा)	थे	और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन

امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ڰ

तू क़त्ल न कर इसे	और तेरे लिए	मेरी आँखों के लिए	ठंडक	फ़िरऔन	बीवी

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾

9	(हक़ीक़ते हाल) नहीं जानते थे	और वह	बेटा	हम बना लें इसे	या	कि नफ़ा पहुँचाए हमें	शायद

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ

उस को	कि ज़ाहिर कर देती	तहक़ीक़ क़रीब था	सब्र से ख़ाली (बेक़रार)	मूसा (अ) की माँ	दिल	और हो गया

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

10	यक़ीन करने वाले	से	कि वह रहे	उस के दिल पर	कि गिरह लगाते हम	अगर न होता

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और वह	दूर से	उस को	फिर देखती रह	उस के पीछे जा	उस की बहन को	और उस (मूसा अ की वालिदा) ने कहा

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ

वह (मूसा की बहन) बोली	पहले से	दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयां)	उस से	और हम ने रोक रखा	11	(हक़ीक़ते हाल) न जानते थे

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ

उस के लिए	और वह	तुम्हारे लिए	वह उस की पर्वरिश करें	एक घर वाले	क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें

نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ

और वह ग़मगीन न हो	उस की आँख	ताकि ठंडी रहे	उसकी माँ की तरफ़	तो हम ने लौटा दिया उस को	12	ख़ैर ख़ाह

ع ١٣ ٢ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13	वह नहीं जानते	उन में से बेशतर	और लेकिन	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	और ताकि जान ले

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इल्हाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न ग़म खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ़ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आख़िर कार) वह उन के लिए दुश्मन और ग़म का बाइस हो, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर ख़ताकार थे। (8)

और कहा फ़िरऔन की बीवी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे क़त्ल न कर, शायद हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हक़ीक़ते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेक़रार हो गया, तहक़ीक़ क़रीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की वालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हक़ीक़ते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयाँ को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के ख़ैर ख़ाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह ग़मगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अ़ता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14)
और वह शहर में दाख़िल हुआ जब कि उस के लोग ग़फ़्लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की बिरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की बिरादरी से था उस ने उस (के मुक़ाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, बेशक वह दुश्मन है खुला बहकाने वाला। (15)
उस ने अ़रज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस मुझे बख़्शदे, तो उस ने उसे बख़्श दिया, बेशक वही बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान। (16)
उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आ़म किया है तो मैं हरगिज़ न होंगा (कभी) मुज्रिमों का मददगार। (17)
पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागहां वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है। मूसा (अ) ने उस को कहा बेशक तू गुमराह है खुला। (18)
फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे क़त्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को क़त्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। (19)
और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! बेशक सरदार तेरे बारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे क़त्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, बेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। (20)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	और इल्म	हिक्मत	हम ने अ़ता किया उसे	और पूरा (तवाना) हो गया	वह पहुँचा अपनी जवानी	और जब

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत	वक़्त पर	शहर	और वह दाख़िल हुआ	14	नेकी करने वाले	हम बदला दिया करते हैं

مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

और वह (दूसरा)	उस की बिरादरी	से	यह (एक)	वह बाहम लड़ते हुए	दो आदमी	उस में	तो उस ने पाया	उस के लोग

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ

उस के दुश्मन से	वह जो	उस पर	उस की बिरादरी से	वह जो	तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी	उस के दुश्मन का	से

فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान का काम (हरकत)	से	यह	उस ने कहा	उस का	फिर काम तमाम कर दिया	मूसा (अ)	तो एक मुक्का मारा उस को

اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ

पस बख़्शदे मुझे	अपनी जान	मैं ने ज़ुल्म किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने अ़रज़ की	15	सरीह (खुला)	बहकाने वाला	दुश्मन	बेशक वह

فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

मुझ पर	तू ने इन्आ़म किया	ऐ मेरे रब जैसा कि	उस ने कहा	16	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक	तो उस ने बख़्श दिया उस को

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا

डरता हुआ	शहर में	पस सुबह हुई उस की	17	मुज्रिमों का	मददगार	तो मैं हरगिज़ न होंगा

يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ

कहा	वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है	कल	उस ने मदद मांगी थी उस से	तो यकायक वह जिस	इन्तिज़ार करता हुआ

لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ

हाथ डाले	कि	उस ने चाहा	कि	फिर जब	18	खुला	अलबत्ता गुमराह	बेशक तू	मूसा (अ)	उस को

بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ

तू क़त्ल करदे मुझे	कि	क्या तू चाहता है	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	उन दोनों का दुश्मन	वह	उस पर जो

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۢ بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا

ज़बरदस्ती करता	कि तू हो	मगर-सिर्फ़	तू चाहता	नहीं	कल	एक आदमी	जैसे क़त्ल किया तू ने

فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

और आया	19	सुधार करने वाले	से	तू हो	कि	और तू नहीं चाहता	सरज़मीन में

رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنَّ الْمَلَاَ

सरदार	बेशक	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	शहर का दूर सिरा	से	एक आदमी

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	सलाहकार (जमा)	से	तेरे लिए	बेशक मैं	पस तू निकल जा	ताकि क़त्ल करडालें तुझे	तेरे बारे में	वह मश्वरा कर रहे हैं

ع ٢ ٨ ٥ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾

21	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचाले	उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार	इन्तिज़ार करते हुए	डरते हुए	वहां से	पस वह निकला

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ

कि मुझे दिखाए	मेरा रब	उम्मीद है	कहा	मदयन	तरफ़	उस ने रुख़ किया	और जब

سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ

से-का	एक गिरोह	उस पर	उस ने पाया	मदयन	पानी	वह आया	और जब	22	सीधा रास्ता

النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ

रोके हुए हैं	दो औरतें	उन से अ़लाहिदा	और उस ने पाया (देखा)	पानी पिला रहे हैं	लोग

قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوْنَا

और हमारे अब्बा	चरवाहे	वापस ले जाएं	जब तक कि	हम पानी नहीं पिलातीं	वह दोनों बोलीं	तुम्हारा क्या हाल है	उस ने कहा

شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ

बेशक मैं	ऐ मेरे रब	फिर अ़र्ज़ किया	साए की तरफ़	फिर वह फिर आया	उन के लिए	तो उस ने पानी पिलाया	23	बहुत बूढ़े

لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ

चलती हुई	उन दोनों में से एक	फिर उस के पास आई	24	मोहताज	कोई भलाई (नेमत)	मेरी तरफ़	तू उतारे	उस का जो

عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ

हमारे लिए	जो तू ने पानी पिलाया	सिला	ताकि तुझे दें वह	तुझे बुलाते हैं	मेरे वालिद	बेशक	वह बोली	शर्म से

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ

से	तुम बच आए	डरो नहीं	उस ने कहा	अहवाल	उस से	और बयान किया	उस के पास आया	पस जब

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۡ اِنَّ خَيْرَ

बेहतर	बेशक	इसे मुलाज़िम रख लो	ऐ मेरे बाप	उन में से एक	बोली वह	25	ज़ालिमों की क़ौम

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

निकाह करदूँ तुझ से	कि	बेशक मैं चाहता हूँ	(बाप) ने कहा	26	अमानत दार	ताक़तवर	तुम मुलाज़िम रखो	जो-जिसे

اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

तम पूरे करो	फिर अगर	आठ (8) साल (जमा)	तुम मेरी मुलाज़िमत करो	कि	(इस शर्त) पर	यह दो (2)	अपनी दो बेटियां	एक

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىْۤ

अ़नक़रीब तुम पाओगे मुझे	तुम पर	कि मैं मशक़्क़त डालूँ	चाहता मैं	और नहीं	तो तुम्हारी तरफ़ से	दस (10)

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ

मुद्दत दोनों में	जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	यह	उस ने कहा	27	नेक (ख़ुश मामला) लोगों में से	इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा)

ع ٣ ٧ ٦ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

28	गवाह	जो हम कह रहे हैं	पर	और अल्लाह	मुझ पर	कोई जब्र (मुतालबा) नहीं	मैं पूरी करूँ

पस वह निकला वहां से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचाले। (21) और जब उस ने मदयन की तरफ़ रुख़ किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22) और जब वह मदयन के पानी (के कुंए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अ़लाहिदा (अपनी बकरियां) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलातीं जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23) तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ़ फिर आया, फिर अ़र्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक जो नेमत तू मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24) फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, बेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम ज़ालिमों की क़ौम से बच आए हो। (25) उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, बेशक बेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26) (बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ़ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक़्क़त डालूँ, अगर अल्लाह ने चाहा तो अ़नक़रीब तुम मुझे ख़ुश मामला लोगों में से पाओगे। (27) मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अ़हद) है, मैं दोनों में से जो मुद्दत पूरी करूँ मुझ पर कोई मुतालबा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ

तरफ़	से	उस ने देखी	साथ अपने घर वाली	और चला वह	मुद्दत	मूसा (अ)	पूरी कर दी	फिर जब

الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ

शायद मैं	आग	बेशक मैं ने देखी	तुम ठहरो	अपने घर वालों से	उस ने कहा	एक आग	कोहे तूर

اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	आग तापो	ताकि तुम	आग से	या चिंगारी	कोई ख़बर	उस से	मैं लाऊँ तुम्हारे लिए

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِی الْبُقْعَةِ

जगह में	दायां	मैदान	किनारे से	निदा दी गई	वह आया उस के पास	फिर जब

الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤی اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿٣٠﴾

30	जहानों का परवरदिगार	अल्लाह	बेशक मैं	ऐ मूसा (अ)	कि	एक दरख़्त से	बरकत वाली

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰی

वह लौटा	सांप	गोया कि वह	लहराते हुए	फिर जब उस ने उसे देखा	अपना असा	डालो	और यह कि

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤی اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۟ اِنَّكَ مِنَ

से	बेशक तू	और डर नहीं	आगे आ	ऐ मूसा (अ)	और पीछे मुड़ कर न देखा	पीठ फेर कर

الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِیْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

से-के	रोशन सफ़ेद	वह निकलेगा	अपने गरेबान	अपना हाथ	तू डाल ले	31	अम्न पाने वाले

غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ

दो (2) दलीलें	पस यह दोनों	ख़ौफ़ से	अपना बाज़ू	अपनी तरफ़	और मिला लेना	बग़ैर किसी ऐब

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	नाफ़रमान	एक गिरोह	हैं	बेशक वह	और उसके सरदार (जमा)	फ़िरऔन	तरफ़	तेरे रब (की तरफ़) से

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

33	कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे	सो मैं डरता हूँ	एक शख़्स	उन (में) से	बेशक मैं ने मार डाला है	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً

मेरे साथ मददगार	सो भेजदे उसे	ज़बान	मुझ से	ज़ियादा फ़सीह	वह	हारून (अ)	और मेरा भाई

يُّصَدِّقُنِیْۤ ۫ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ

हम अभी मज़बूत कर देंगे	फ़रमाया	34	वह झुटलाएंगे मुझे	कि	बेशक मैं डरता हूँ	वह तस्दीक़ करे मेरी

عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

पस वह न पहुँचेंगे	ग़ल्बा	तुम्हारे लिए	और हम अ़ता करेंगे	तेरे भाई से	तेरा बाज़ू

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَاۤ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	ग़ालिब रहोगे	पैरवी करे तुम्हारी	और जो	तुम दोनों	हमारी निशानियों के सबब	तुम तक

معانقة ١١ عند المتأخرين

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (बीवी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ़ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, बेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई ख़बर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)
फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख़्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का परवरदिगार। (30)
और यह कि तू अपना असा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अम्न पाने वालों में से है। (31)
तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐब के बग़ैर, फिर अपना बाज़ू ख़ौफ़ (दूर होने की ग़रज़) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (असा और यदे बैज़ा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, बेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)
और मेरे भाई हारून (अ) ज़बान (के एतिबार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तस्दीक़ करे, बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)
(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अ़ता करेंगे ग़ल्बा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दानों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

एक जादू	मगर	नहीं है यह	वह बोले	खुली-वाज़ेह	हमारी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	आया उन के पास	फिर जब

مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ

और कहा	36	अपने अगले बाप दादा	में	यह-ऐसी बात	और नहीं सुनी है हम ने	इफ़्तिरा किया हुआ

مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ

होगा-है	और जिस	उस के पास से	हिदायत	लाया	उस को जो	खूब जानता है	मेरा रब	मूसा (अ)

لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	और कहा	37	ज़ालिम (जमा)	नहीं फ़लाह पाएंगे	बेशक वह	आख़िरत का अच्छा घर	उस के लिए

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ

पस आग जला मेरे लिए	अपने सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए	नहीं जानता मैं	ऐ सरदारो

يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى

तरफ़	मैं झांकूँ	ताकि मैं	एक बुलन्द महल	फिर मेरे लिए बना (तैयार कर)	मिट्टी पर	ऐ हामान

اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ

और मग़रूर हो गया	38	झूटे	से	अलबत्ता समझता हूँ उसे	और बेशक मैं	मूसा (अ)	माबूद

هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا

हमारी तरफ़	कि वह	और वह समझ बैठे	नाहक़	ज़मीन (दुनिया) में	और उस का लशकर	वह

لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ

दर्या में	फिर हम ने फेंक दिया उन्हें	और उस का लशकर	तो हम ने पकड़ा उसे	39	नहीं लौटाए जाएंगे

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً

सरदार	और हम ने बनाया उन्हें	40	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो

يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

41	वह मदद न दिए जाएंगे	और रोज़े क़ियामत	जहन्नम की तरफ़	वह बुलाते हैं

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ

वह	और रोज़े क़ियामत	लानत	इस दुनिया	में	और हम ने लगादी उन के पीछे

ع ١٤ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने अ़ता की	42	बदहाल लोग (जमा)	से

مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ

(जमा) बसीरत	पहली	उम्मतें	कि हलाक कीं हम ने	उस के बाद

لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़्तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को खूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, बेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फ़िरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झांकूँ, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूँ। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक़ मग़रूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े क़ियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोज़े क़ियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मतें हलाक कीं, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ

हुक्म (वहि)	मूसा (अ) की तरफ़	हम ने भेजा	जब	मग़रिबी जानिब	और आप (स) न थे

وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ

उनकी, उन पर	तवील हो गई	बहुत सी उम्मतें	हम ने पैदा की	और लेकिन हम ने	44	देखने वाले	से	और आप (स) न थे

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ

हमारी आयात	उन पर	तुम पढ़ते	अहले मदयन	में	रहने वाले	और आप (स) न थे	मुद्दत

وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا

जब हम ने पुकारा	तूर	किनारा	और आप (स) न थे	45	रसूल बनाकर भेजने वाले	हम थे	और लेकिन हम

وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ

डराने वाला	कोई	नहीं आया उन के पास	वह क़ौम	ताकि डर सुनाओ	अपने रब से	रहमत	और लेकिन

مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ

कि पहुँचे उन्हें	और एसा न हो	46	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) से पहले

مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ

भेजा तू ने	क्यों न	ऐ हमारे रब	तो वह कहते	उन के हाथ (उन के आमाल)	उस के सबब जो भेजा	कोई मुसीबत

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا

फिर जब	47	ईमान लाने वाले	से	और हम होते	तेरे अहकाम	पस पैरवी करते हम	कोई रसूल	हमारी तरफ़

جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ

जैसा	क्यों न दिया गया	कहने लगे	हमारी तरफ़ से	हक़	आया उन के पास

مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۭ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	मूसा (अ)	उस का जो दिया गया	इन्कार किया उन्हों ने	क्या नहीं	मूसा (अ)	जो दिया गया

قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۣ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	इन्कार करने वाले	हर एक का	हम बेशक	और उन्हों ने कहा	एक दूसरे के पुश्त पनाह	वह दोनों जादू	उन्हों ने कहा

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ

मैं पैरवी करूँ उस की	इन दोनो से	ज़ियादा हिदायत	वह	अल्लाह के पास	से	कोई किताब	पस लाओ	फ़रमा दें

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا

कि सिर्फ़	तो जान लो	तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात)	वह क़ुबूल न करें	फिर अगर	49	सच्चे (जमा)	अगर तुम हो

يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى

हिदायत के बग़ैर	अपनी ख़्वाहिश	उस से जिस ने पैरवी की	ज़ियादा गुमराह	और कौन	अपनी ख़्वाहिशात	वह पैरवी करते हैं

مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٨

50	ज़ालिम लोग (जमा)	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	अल्लाह से (मिन जानिब अल्लाह)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़रिबी जानिब न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाक़े के) देखने वालों में से न थे। (44) और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मतें पैदा कीं, फिर तवील हो गई उन की मुद्दत, और आप (स) अहले मदयन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45) और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अ़ता हुई) ताकि आप (स) इस क़ौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46) और एसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहतेः ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47) फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (मुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्हों ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ब्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्हों ने कहा वह दोनों जादू हैं, वह दोनों एक दूसरे के पुश्त पनाह हैं, और उन्हों ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48) आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (क़ुरआन और तौरेत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49) फिर अगर वह आप (स) की बात क़ुबूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी ख़्वाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ

वह लोग जो	51	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	(अपना) कलाम	उन के लिए	और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा

النصف

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

पढ़ा जाता है उन पर (सामने)	और जब	52	ईमान लाते हैं	वह इस (कुरआन) पर	इस से क़ब्ल	जिन्हें हम ने किताब दी

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	फ़रमांबरदार	इस के पहले ही	बेशक हम थे	हमारे रब (की तरफ़) से	हक़	बेशक यह	हम ईमान लाए इस पर	वह कहते हैं

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ

और वह दूर करते हैं	इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया	दोहरा	उन का अजर	दिया जाएगा उन्हें	यही लोग

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا

वह सुनते हैं	और जब	54	वह ख़र्च करते हैं	हम ने दिया उन्हें	और उस से जो	बुराई को	भलाई से

اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز

तुम्हारे अ़मल (जमा)	और तुम्हारे लिए	हमारे लिए हमारे अ़मल	और कहते हैं	उस से	वह किनारा करते हैं	बेहूदा बात

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ

हिदायत नहीं दे सकते	बेशक तुम	55	जाहिल (जमा)	हम नहीं चाहते	तुम पर	सलाम

مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ

खूब जानता है	और वह	जिस को वह चाहता है	हिदायत देता है	और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	जिस को चाहो

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ

हम उचक लिए जाएंगे	तुम्हारे साथ	हिदायत	अगर हम पैरवी करें	और वह कहते हैं	56	हिदायत पाने वालों को

مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

फल	उस की तरफ़	खिंचे चले आते हैं	हुर्मत वाला मुक़ामे अम्न	उन्हें	दिया ठिकाना हम ने	क्या नहीं	अपनी सरज़मीन से

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	हमारी तरफ़ से	बतौर रिज़्क़	हर शै (क़िस्म)

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ

उन के मस्कन	सो, यह	अपनी मईशत	इतराती	बस्तियां	हलाक कर दीं हम ने	और कितनी

لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	वारिस (जमा)	हम	और हुए हम	क़लील	मगर	उन के बाद	न आबाद हुए

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا

वह पढ़े	कोई रसूल	उस की बड़ी बस्ती में	भेज दे	जब तक	बस्तियां	हलाक करने वाला	तुम्हारा रब	और नहीं है

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	ज़ालिम (जमा)	उन के रहने वाले	मगर (जब तक)	बस्तियां	हलाक करने वाले	और हम नहीं	हमारी आयात	उन पर

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51)

जिन लोगों को हम ने उस से क़ब्ल किताब दी वह इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। (52)

और जब उन के सामने (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, बेशक हम थे पहले से फ़रमांबरदार। (53)

यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया वह उस में से ख़र्च करते हैं। (54)

और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अ़मल तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55)

बेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह खूब जानता है। (56)

और वह कहते है अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हें हुर्मत वाले मुक़ामे अम्न में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ़ खिंचे चले आते हैं फल हर क़िस्म के, हमारी तरफ़ से बतौर रिज़्क़, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57)

और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दीं जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थीं, सो यह हैं उन के मस्कन, न आबाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस। (58)

और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ़) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाक़ी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? **(60)**
सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख़्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े क़ियामत (गिरफ़्तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। **(61)**
और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां हैं? मेरे शरीक जिन्हें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। **(62)**
(फिर) कहेंगे वह जिन पर हुक्मे अ़ज़ाब साबित हो गया कि ऐ हमारे रब! यह हैं वह जिन्हें हम ने बहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) बहकाया जैसे हम (ख़ुद) बहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। **(63)**
और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अ़ज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत याफ़्ता होते। **(64)**
और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? **(65)**
पस उन को कोई बात न सूझेगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। **(66)**
सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। **(67)**
और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। **(68)**
और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। **(69)**
और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(70)**

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا

और जो	और उस की ज़ीनत	दुनियां	ज़िन्दगी	सो सामान	कोई चीज़	और जो दी गई तुम्हें

ع ٦ ٩ عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ

हम ने वादा किया उस से	सो क्या जो	60	सो क्या तुम समझते नहीं?	बाक़ी रहने वाला-तादेर	बेहतर	अल्लाह के पास

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ

वह	फिर	दुनिया की ज़िन्दगी	सामान	हम ने दिया उसे	उस की तरह जिसे	पाने वाला उस को	फिर वह	वादा अच्छा

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ

कहां	पस कहेगा वह	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	61	हाज़िर किए जाने वाले	से	रोज़े क़ियामत

شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गया	वह जो	कहेंगे	62	तुम गुमान करते थे	वह जिन्हें	मेरे शरीक

الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

हम बेज़ारी करते हैं	हम बहके	जैसे	हम ने बहकाया उन्हें	हम ने बहकाया	वह जिन्हें	यह हैं	ऐ हमारे रब	हुक्मे (अ़ज़ाब)

اِلَيْكَ ؗ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

अपने शरीकों को	तुम पुकारो	और कहा जाएगा	63	बन्दगी करते	सिर्फ़ हमारी	वह न थे	तेरी तरफ़ (सामने)

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ

काश वह	अ़ज़ाब	और वह देखेंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	सो वह उन्हें पुकारेंगे

كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ

तुम ने जवाब दिया	क्या	तो फ़रमाएगा	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	64	वह हिदायत याफ़्ता होते

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ

पस वह	उस दिन	ख़बरें (बातें)	उन को	पस न सूझेगी	65	पैग़म्बर (जमा)

لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى

तो उम्मीद है	और उस ने अ़मल किए अच्छे	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की	सो-लेकिन	66	आपस में सवाल न करेंगे

اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ

और वह पसंद करता है	जो वह चाहता है	पैदा करता है	और तुम्हारा रब	67	कामयाबी पाने वाले	से	कि वह हो

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ

जानता है	और तुम्हारा रब	68	उस से जो वह शरीक करते हैं	और बरतर	अल्लाह पाक है	इख़्तियार	उन के लिए	नहीं है

مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और वही अल्लाह	69	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	उन के सीने	छुपा है	जो

لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	और उसी के लिए फ़रमां रवाई	और आख़िरत	दुनिया में	उसी के लिए तमाम तारीफ़ें

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	रात	तुम पर	कर दे (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾

71	तो क्या तुम सुनते नहीं?	रोशनी	ले आए तुम्हारे पास	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	दिन	तुम पर	बनाए (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ

उस में	तुम आराम करो	रात	ले आए तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम आराम करो	और दिन	रात	उस ने तुम्हारे लिए बनाया	और अपनी रहमत से	72	तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	73	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल (रोज़ी)	और ताकि तुम तलाश करो	उस में

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	तुम गुमान करते थे	वह जो	मेरे शरीक	कहां?	तो वह कहेगा	वह पुकारेगा उन्हें

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ

अपनी दलील	तुम लाओ (पेश करो)	फिर हम कहेंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	और हम निकाल कर लाएंगे

ع ١٥ ١٠ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ ع

75	जो वह घड़ते थे	उन से	और गुम हो जाएंगी	सच्ची बात अल्लाह की	कि	सो वह जान लेंगे

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ص وَاٰتَيْنٰهُ

और हम ने दिए थे उस को	उन पर	सो उस ने ज़ियादती की	मूसा (अ) की क़ौम	से	था	क़ारून	बेशक

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ق

ज़ोर आवर	एक जमाअ़त पर	भारी होतीं	उस की कुन्जियां	इतने कि	ख़ज़ानों से

اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

76	ख़ुश होने (इतराने) वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	न ख़ुश हो (न इतरा)	उस की क़ौम	उस को	जब कहा

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ

अपना हिस्सा	और न भूल तू	आख़िरत का घर	तुझे दिया अल्लाह ने	उस से जो	और तलब कर

مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ

और न चाह	तेरी तरफ़ (साथ)	अल्लाह ने एहसान किया	जैसे	और नेकी कर	दुनिया	से

الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

77	फ़साद करने वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	ज़मीन में	फ़साद

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? (71)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? (72)

और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहां हैं वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। (74)

और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे, फिर हम कहेंगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएंगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। (75)

बेशक क़ारून था मूसा (अ) की क़ौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर (भी) भारी होतीं थीं, जब उस को उस की क़ौम ने कहा, इतरा नहीं बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। (76)

और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर (आख़िरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (77)

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से क़ब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअ़तों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख़्त थीं कुव्वत में, और ज़ियादा थीं जमियत में, उन के गुनाहों की बाबत सवाल न किया जाएगा मुज्रिमों से। **(78)** फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ज़ेब ओ ज़ीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो क़ारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, बेशक वह बड़ा नसीब वाला है। **(79)** और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्हों ने कहा अफ़्सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाब (अजर) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अ़मल किया और वह सब्र करने वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। **(80)** फिर हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (ख़ुद) हुआ बदला लेने वालों में से। **(81)** और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुबह के वक़्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दों में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफ़िर फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते। **(82)** यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते ज़मीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है। **(83)** जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुरे अ़मल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। **(84)**

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	वह जानता	क्या नहीं	मेरे पास	एक इल्म की वजह से	मुझे दिया गया है	यह तो	कहने लगा

قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ

और ज़ियादा	कुव्वत में	उस से	वह ज़ियादा सख़्त	जो	जमाअ़तें	से (कितनी)	उस से क़ब्ल	बिला शुबह हलाक कर दिया है

جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पर (सामने)	फिर वह निकला	78	मुज्रिम (जमा)	उन के गुनाह	से (बाबत)	और न सवाल किया जाएगा	जमियत

فِىْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ

हमारे पास होता ऐसा	ऐ काश	दुनिया की ज़िन्दगी	चाहते थे (तालिब थे)	वह लोग जो	कहा	अपनी ज़ेब ओ ज़ीनत	में (साथ)

مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और कहा	79	बड़ा	नसीब वाला	बेशक वह	क़ारून	जो दिया गया

اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

अच्छा	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया	उस के लिए जो	बेहतर	अल्लाह का सवाब	अफ़्सोस तुम पर	दिया गया था इल्म

وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫

ज़मीन	और उस के घर को	उस को	फिर हम ने धंसा दिया	80	सब्र करने वाले	सिवाए	और वह नसीब नहीं होता

فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ

से	और न हुआ वह	अल्लाह के सिवा	मदद करती उस की	कोई जमाअ़त	उस के लिए	सो न हुई

الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

कहने लगे	कल	उस का मुक़ाम	तमन्ना करते थे	जो लोग	और सुबह के वक़्त	81	बदला लेने वाले

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ

और तंग कर देता है	अपने बन्दे	से	जिस के लिए चाहे	रिज़्क़	फ़राख़ कर देता है	अल्लाह	हाए शामत

لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

फ़लाह नहीं पाते	हाए शामत	अलबत्ता हमें धंसा देता	हम पर	एहसान करता अल्लाह	यह कि	अगर न

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ ع ٨ / ١١

उन लोगों के लिए जो	हम करते हैं उसे	आख़िरत का घर	यह	82	काफ़िर (जमा)

لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

83	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम (नेक)	और न फ़साद	ज़मीन में	बड़ाई	वह नहीं चाहते

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

बुराई के साथ	आया	और जो	उस से बेहतर	तो उस के लिए	नेकी के साथ	जो आया

فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	वह करते थे	जो	मगर-सिवा	उन्हों ने बुरे काम किए	उन लोगों को जिन्हों ने	तो बदला न मिलेगा

إِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ

सब से अच्छी लौटने की जगह	ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें	कुरआन	तुम पर	लाज़िम किया	वह (अल्लाह) जिस ने	बेशक

قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ

में	और वह कौन	हिदायत के साथ	आया	कौन	खूब जानता है	मेरा रब	फ़रमादें

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ

किताब	तुम्हारी तरफ़	कि उतारी जाएगी	उम्मीद रखते	और तुम न थे	85	खुली गुमराही

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

86	काफ़िरों के लिए	मददगार	सो तुम हरगिज़ न होना	तुम्हारा रब	से	रहमत	मगर

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किए गए	जबकि	बाद	अल्लाह के अहकाम	से	और वह तुम्हें हरगिज़ न रोकें

وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ

और न पुकारो तुम	87	मुशरिकीन	से	और तुम हरगिज़ न होना	अपने रब की तरफ़	और आप बुलाएं

وقف لازم

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا

सिवा	फ़ना होने वाली	हर चीज़	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के सिवा

ع ٩ ١٢ الثلثة

وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	हुक्म	उसी के लीए-का	उस की ज़ात

آيَاتُهَا ٦٩ ❀ سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ (٢٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकुआत 7 — (29) सूरतुल अन्कबूत मकड़ी — आयात 69

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ

और वह	हम ईमान लाए	उन्हों ने कह दिया	कि	कि वह छोड़ दिए जाएंगे	लोग	क्या गुमान किया है	1	अलिफ़ लाम मीम

لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ

तो ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	उन से पहले	वह लोग जो	और अलबत्ता हम ने आज़माया	2	वह न आज़माए जाएंगे

الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	क्या गुमान किया है	3	झूटे	और वह ज़रूर मालूम करेगा	सच्चे हैं	वह लोग जो

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾ مَنْ

जो	4	जो वह फ़ैसला कर रहे हैं	बुरा है	वह हम से बाहर बच निकलेंगे	कि	बुरे काम	करते हैं

كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٥﴾

5	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	ज़रूर आने वाला	अल्लाह का वादा	तो बेशक	अल्लाह से मुलाक़ात की	वह उम्मीद रखता है

बेशक जिस अल्लाह ने तुम पर कुरआन (पर अ़मल और तब्लीग़) को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर सब से अच्छी लौटने की जगह फेर लाएगा, आप (स) फ़रमा दें मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है। (85) और तुम न थे उम्मीद रखते कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब की रहमत से (नुज़ूल हुआ), सो तुम हरगिज़ हरगिज़ न होना काफ़िरों के लिए मददगार। (86) और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के अहकाम से न रोकें, उस के बाद जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी तरफ़, और आप (स) अपने रब की तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (87) और अल्लाह के साथ न पुकारो कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है, उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1) क्या लोगों ने गुमान कर लिया है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए जाएंगे कि उन्हों ने कह दिया कि हम ईमान ले आए हैं, और वह न आज़माए जाएंगे। (2) और अलबत्ता हम ने उन से पहले लोगों को आज़माया, तो अल्लाह ज़रूर मालूम कर लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम कर लेगा झूटों को। (3) जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्हों ने गुमान किया है कि वह हम से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो वह फ़ैसला (ख़याल) कर रहे हैं। (4) जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात (मिलने) की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला, जानने वाला। (5)

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। **(6)**

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। **(7)**

और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊँगा वह जो तुम करते थे। **(8)**

और जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाख़िल करेंगे। **(9)**

और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्हों ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अ़ज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं बेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह ख़ूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। **(10)**

और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ों को। **(11)**

और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहाः तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, बेशक वह झूटे हैं। **(12)**

और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और क़ियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के बारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। **(13)**

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ

से	अलबत्ता बेनियाज़	बेशक अल्लाह	अपनी ज़ात के लिए	कोशिश करता है वह	तो सिर्फ़	कोशिश करता है	और जो

الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ

अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग	6	जहान वाले

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧

7	वह करते थे	वह जो	ज़ियादा बेहतर	और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें	उन की बुराइयां	उन से

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۭ وَاِنْ جَاهَدٰكَ

तुझ से कोशिश करें	और अगर	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप से	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया

لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۭ

तो कहा न मान उन का	उस का कोई इल्म	तुझे	जिस का नहीं	कि तू शरीक ठहराए मेरा

اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह ईमान लाए	और जो लोग	8	तुम करते थे	वह जो	तो मैं ज़रूर बतलाऊँगा तुम्हें	मेरी तरफ़ तुम्हें लौट कर आना

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝٩ وَمِنَ

और से-कुछ	9	नेक बन्दों में	हम उन्हें ज़रूर दाख़िल करेंगे	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ

बना लिया	अल्लाह की (राह) में	सताए गए	फिर जब	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	जो कहते हैं	लोग

فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

तुम्हारे रब से	कोई मदद	आए	और अगर	जैसे अ़ज़ाब अल्लाह का	लोग	सताना

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

सीनों (दिल) में	वह जो	ख़ूब जानने वाला	क्या नहीं है अल्लाह	तुम्हारे साथ	बेशक हम थे	तो वह ज़रूर कहते हैं

الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा	ईमान लाए	वह लोग जो	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	10	जहान वाले

الْمُنٰفِقِيْنَ ۝١١ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

तुम चलो	उन लोगों को जो ईमान लाए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	11	मुनाफ़िक़ (जमा)

سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ

उन के गुनाह	से	उठाने वाले	हालांकि वह नहीं	तुम्हारे गुनाह	और हम उठा लेंगे	हमारी राह

مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٢ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ

साथ	और बहुत से बोझ	अपने बोझ	और वह अलबत्ता ज़रूर उठायेंगे	12	अलबत्ता झूटे	बेशक वह	कुछ

اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْــَٔـلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣ ع ١٣

13	वह झूट घड़ते थे	उस से जो	क़ियामत के दिन	और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी	अपने बोझ

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ

हज़ार साल	उन में	तो वह रहे	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ) को	और बेशक हम ने भेजा

اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14	ज़ालिम थे	और वह	तूफ़ान	फिर उन्हें आ पकड़ा	साल	पचास	मगर कम

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

15	जहान वालों के लिए	एक निशानी	और उसे बनाया	और कश्ती वालों को	फिर हम ने उसे बचा लिया

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ

यह	और उस से डरो	तुम इबादत करो अल्लाह की	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	और इब्राहीम (अ)

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

से	तुम परस्तिश करते हो	इस के सिवा नहीं	16	तुम जानते हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए

دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

परस्तिश करते हो	वह जिन की तुम	बेशक	झूट	और तुम घड़ते हो	बुतों की	अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

पस तुम तलाश करो	रिज़्क़ के	तुम्हारे लिए	वह मालिक नहीं	अल्लाह के सिवा

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और शुक्र करो	और उस की इबादत करो	रिज़्क़	अल्लाह के पास

تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ

बहुत सी उम्मतें	तो झुटला चुकी हैं	तुम झुटलाओगे	और अगर	17	तुम्हें लौट कर जाना है

مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

18	साफ़ तौर पर	पहुँचा देना	मगर	रसूल	पर (ज़िम्मे)	और नहीं	तुम से पहली

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ

फिर दोबारा पैदा करेगा उस को	पैदाइश	इब्तिदा करता है अल्लाह	कैसे	देखा उन्हों ने	क्या नहीं

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	चलो फिरो	फ़रमा दें	19	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ

उठाएगा	अल्लाह	फिर	पैदाइश	कैसे इब्तिदा की	फिर देखो तुम

النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

20	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	आख़री (दूसरी)	उठान

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

21	तुम लौटाए जाओगे	और उसी की तरफ़	जिस पर चाहे	और रहम फ़रमाता है	जिस को चाहे	वह अज़ाब देता है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (क़ौमे नूह अ को) तूफ़ान ने आ पकड़ा, और वह ज़ालिम थे। (14)

फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)

और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी क़ौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)

इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, बेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़्क़ तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)

और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इब्तिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, बेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)

आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसी पैदाइश की इब्तिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (20)

वह जिस को चाहे अ़ज़ाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। (22)
और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (23)
सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (24)
और इब्राहीम (अ) ने कहाः बेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। (25)
पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), बेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (26)
और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अ़ता फ़रमाए इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और बेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। (27)
और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी क़ौम को, बेशक तुम बेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले जहान वालों में से किसी ने नहीं किया। (28)

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۡ وَمَا

और नहीं	आस्मान में	और न	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले	और न हो तुम

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ ع ٢ ١٤

और वह लोग जिन्हों ने	22	कोई मददगार	और न	कोई हिमायती	अल्लाह के सिवा	तुम्हारे लिए

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ

मेरी रहमत से	वह नाउम्मीद हुए	यही हैं	और उस की मुलाक़ात	अल्लाह की निशानियों का	इन्कार किया

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

उस की क़ौम	जवाब	सो न था	23	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	और यही हैं

اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ۭ

आग से	सो बचा लिया उस को अल्लाह	जला दो उस को	या	क़त्ल करो उस को	उन्हों ने कहा	सिवाए यह कि

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ

तुम ने बना लिए	और (इब्राहीम अ ने) कहा इस के सिवा नहीं	24	जो ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	इस में	बेशक

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया की ज़िन्दगी में	अपने दरमियान (आपस में)	दोस्ती	बुत (जमा)	अल्लाह के सिवा

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	काफ़िर (मुख़ालिफ़) हो जाएगा	क़ियामत के दिन	फिर

وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	और लानत करेगा

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ وقف لازم

हिज्रत करने वाला	बेशक मैं	और उस ने कहा	लूत (अ)	उस पर	पस ईमान लाया	25	कोई मददगार

اِلٰى رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ

इस्हाक़ (अ)	उस को	और हम ने अ़ता फ़रमाए	26	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त ग़ालिब	वह	बेशक वह	अपने रब की तरफ़

وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ

और किताब	नुबुव्वत	उस की औलाद में	और हम ने रखी	और याक़ूब (अ)

وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और बेशक वह	दुनिया में	उस का अजर	और हम ने दिया उस को

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तुम करते हो	बेशक तुम	अपनी क़ौम को	(याद करो) जब उस ने कहा	और लूत (अ)	27	अलबत्ता नेकोकारों में से

الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	जहान वाले	से	किसी ने	उस को	नहीं पहले किया तुम से	बेहयाई

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ

और तुम करते हो	राह	और मारते हो	मर्द (जमा)	अलबत्ता तुम करते हो	क्या तुम वाक़ई

فِیْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا

उन्हों ने कहा	कि	सिवाए	उस की क़ौम का जवाब	सो न था	नाशाइस्ता हरकात	अपनी महफ़िलों में

ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहा	29	सच्चे लोग	से	अगर तू है	अल्लाह का अ़ज़ाब	ले आ हम पर

ع ٣ ٨ ١٥ انْصُرْنِیْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ

हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	आए	और जब	30	मुफ़्सिद (जमा)	क़ौम-लोग	पर	मेरी मदद फ़रमा

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

उस बस्ती	लोग	हलाक करने वाले	बेशक हम	उन्हों ने कहा	ख़ुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا

बेशक उस में	इब्राहीम (अ) ने कहा	31	ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं	उस के लोग	बेशक

لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ

और उस के घर वाले	अलबत्ता हम बचा लेंगे उस को	उस को जो उस में	ख़ूब जानते हैं	हम	वह बोले	लूत (अ)

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ

आए	कि	और जब	32	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	उस की बीवी	सिवा

رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا

और वह बोले	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	परेशान हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते

لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۟ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا

सिवा	और तेरे घर वाले	बेशक हम बचाने वाले हैं तुझे	और न ग़म खाओ	डरो नहीं तुम

امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰۤى اَهْلِ

लोग	पर	नाज़िल करने वाले	बेशक हम	33	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	तेरी बीवी

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	वह बदकारी करते थे	इस वजह से कि	आस्मान से	अ़ज़ाब	इस बस्ती

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَاۤ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ

और मदयन की तरफ़	35	वह अ़क़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	कुछ वाज़ेह निशानी	उस से	और अलबत्ता हम ने छोड़ा

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا

और उम्मीद वार रहो	तुम इबादत करो अल्लाह की	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	शुऐब (अ) को	उन का भाई

الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	फ़साद करते हुए (मचाते)	ज़मीन में	और न फिरो	आख़िरत का दिन

क्या तुम वाक़ई मर्दों से (फ़ेले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफ़िलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्हों ने कहा हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। (29)
लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ़्सिद लोगों पर मेरी मदद फ़रमा। (30)
और जब आए हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर, उन्हों ने कहा बेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, बेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। (31)
इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी है), वह (फ़रिश्ते) बोले हम ख़ूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलबत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (32)
और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, बेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (33)
बेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अ़ज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। (34)
और अलबत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (बाक़ी रखे) जो अ़क़्ल रखते हैं। (35)
और मदयन (वालों) की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। (36)

फिर उन्हों ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़लज़ले ने, पस वह सुबह को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (37)
और (हम ने हलाक किया) आद और समूद को, और तहक़ीक़ तुम पर उन के रहने के मुक़ामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राहे (हक़) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38)
और (हम ने हलाक किया) क़ारून और फ़िरऔन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्हों ने तकब्बुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39)
पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह हैं) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज़ को हम ने ग़र्क़ कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (40)
उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41)
बेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42)
और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43)
और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ, बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ

अपने घर में	पस वह सुबह को हो गए	ज़लज़ला	तो आ पकड़ा उन्हें	फिर उन्हों ने झुटलाया उस को

جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وقفة

उन के रहने के मुक़ामात	तुम पर	वाज़ेह हो गए हैं	और तहक़ीक़	और समूद	और आद	37	औन्धे पड़े हुए

وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

राह	से	फिर रोक दिया उन्हें	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	और भले कर दिखाए

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ لا وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ قف وَلَقَدْ جَآءَهُمْ

और अलबत्ता आए उन के पास	और हामान	और फ़िरऔन	और क़ारून	38	समझ बूझ वाले	हालांकि वह थे

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

और वह न थे	ज़मीन (मुल्क) में	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	खुली निशानियों के साथ	मूसा (अ)

سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ ج فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ج فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ

उस पर	हम ने भेजी	जो	तो उन में से	उस के गुनाह पर	हम ने पकड़ा	पस हर एक	39	बच कर भाग निकलने वाले

حَاصِبًا ج وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا

हम ने धंसा दिया	जो	और उन में से	चिंघाड़	उस को पकड़ा	जो (बाज़)	और उन में से	पत्थरों की बारिश

بِهِ الْاَرْضَ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ج وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

ज़ुल्म करता उन पर	अल्लाह	और नहीं है	जो हम ने ग़र्क़ कर दिया	और उन में से	ज़मीन में	उस को

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

बनाए	वह लोग जिन्हों ने	मिसाल	40	ज़ुल्म करते	खुद अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ج اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ط

एक घर	उस ने बनाया	मकड़ी	मानिंद	मददगार	अल्लाह के सिवा

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ وقف لازم

41	जानते	काश होते वह	मकड़ी का	घर है	घरों में	सब से कमज़ोर	और बेशक

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَىْءٍ ط وَهُوَ

और वह	कोई चीज़	उस के सिवा	से	जो वह पुकारते हैं	जानता है	बेशक अल्लाह

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ج

लोगों के लिए	हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	42	हिक्मत वाला	ग़ालिब ज़बरदस्त

وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पैदा किए अल्लाह ने	43	जानने वाले	सिवा	और नहीं समझते उन्हें

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع ع ٤ ١٦

44	ईमान वालों के लिए	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	हक़ के साथ	और ज़मीन